इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
शिक्षा विद्यापीठ

बी.ई.एस.ई.–131
मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा

खंड

1

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा : उद्‌भव एवं विकास

इकाई 1
ऐतिहासिक विकास 9

इकाई 2
सैद्धांतिक आधार 47

इकाई 3
भारतीय अनुभव 100

इकाई 4
वैश्विक अभ्यास 115

विशेषज्ञ समिति

प्रो. आई. के. बंसल (अध्यक्ष)
भूतपूर्व विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली

प्रो. श्रीधर वशिष्ठ
पूर्व कुलपति, लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ,
नई दिल्ली

प्रो. परवीन सिंक्लेयर
पूर्व निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद,
एवं प्रोफेसर, विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

प्रो. एजाज़ मसीह
शिक्षा संकाय, जामिया मिलिया इस्लामिया
नई दिल्ली

प्रो. प्रत्यूष कुमार मंडल
डी.ई.एस.एस.एच.,राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान
एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली

प्रो. अंजू सहगल गुप्ता
मानविकी विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

प्रो. एन. के. दाश
निदेशक, शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

प्रो. एम. सी. शर्मा (कार्यक्रम समन्वयक-बी.एड.)
शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. गौरव सिंह
(कार्यक्रम सह-समन्वयक, बी.एड.)
शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

विशेष आमंत्रित संकाय सदस्य (शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू)

प्रो. डी. वेंकटेश्वरलू
प्रो. अमिताव मिश्रा
सुश्री. पूनम भूषण
डॉ. आईशा कन्नाड़ी
डॉ. एम. वी. लक्ष्मी रेड्डी
डॉ. भारती डोगरा
डॉ. वंदना सिंह
डॉ. एलिज़ाबेत कुरुविल्ला
डॉ. निराधार डे

पाठ्यक्रम समन्वयक

डॉ. एम. वी. लक्ष्मी रेड्डी
एसोसिएट प्रोफेसर
शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

पाठ्यक्रम योगदान (पुनरीक्षण से पूर्व-अंग्रेजी)

प्रो. एस. पाण्डा
स्ट्राइड, इग्नू, नई दिल्ली

पाठ्यक्रम पुनरीक्षण (अंग्रेजी)

डॉ. एम. वी. लक्ष्मी रेड्डी,
(इकाई 1, 2, 3 एवं 4)
एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

आरूप, विषयवस्तु एवं भाषा संपादन
डॉ. एम. वी. लक्ष्मी रेड्डी
एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

अनुवादक दल (हिन्दी)

अनुवादक
श्री चन्द्रशेखर (इकाई 1)
(पूर्व रिसर्च असिस्टेंट), शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू
डॉ. चम्पा पन्त (इकाई 2), पूर्व संकाय, राष्ट्रीय
शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली
डॉ. आर्ति आनन्द (इकाई 3), पोस्ट डाक्टोरल
फेलो, एच.पी. विश्वविद्यालय, शिम्ला
डॉ. सुनीता सुन्द्रियाल (इकाई 4), असिस्टेंट प्रोफेसर
एच.एल.वी.बी.डी.सी., लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

भाषा पुनरीक्षण एवं प्रूफ रीडिंग
श्री चन्द्रशेखर (पूर्व रिसर्च असिस्टेंट)
शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली
डॉ. एम. वी. लक्ष्मी रेड्डी
एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

सामाग्री निर्माण

प्रो. सरोज पाण्डेय
निदेशक, शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

श्री एस.एस वेंकटाचलम
सहायक कुल सचिव, शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू

फरवरी, 2018

©इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2018

ISBN-978-81-

सर्वाधिकार सुरक्षित, इस कार्य का कोई भी अंश इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

शिक्षा विद्यापीठ एवं इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों के बारे में विश्वविद्यालय कार्यालय मैदान गढ़ी नई दिल्ली से अधिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से निदेशक, प्रो. सरोज पाण्डेय, शिक्षा विद्यापीठ द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।
लेजर टाइप सेटिंग : टेसा मीडिया एण्ड कम्प्यूटर, C-206, A.F.Enclave-II, नई दिल्ली
मुद्रक :

बी.ई.एस.ई.-131 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा

खंड 1 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षाः उद्भव एवं विकास

इकाई 1 ऐतिहासिक विकास

इकाई 2 सैद्धान्तिक आधार

इकाई 3 भारतीय अनुभव

इकाई 4 वैश्विक अभ्यास

खंड 2 दूरस्थ शिक्षणः मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संसाधनों का स्वरूप एवं विकास

इकाई 5 स्व-अधिगम सामग्रियों का स्वरूपण

इकाई 6 मुक्त-एवं दूरस्थ शिक्षा हेतु मीडिया एवं प्रौद्योगिकी

इकाई 7 स्व-अधिगम मुद्रित सामग्रियों का विकास

इकाई 8 ई-अधिगम संसाधनों का विकास

खंड 3 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में विद्यार्थी सहायता सेवाएँ

इकाई 9 दूरस्थ शिक्षार्थी तथा स्व-निर्देशित अधिगम

इकाई 10 दूरस्थ शिक्षण में परामर्श एवं अनुशिक्षण

इकाई 11 शिक्षार्थी निष्पत्ति का आँकलन

इकाई 12 शिक्षार्थी सहायता प्रणाली एवं सेवाएँ

खंड 4 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की योजना एवं प्रबंधन

इकाई 13 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था का प्रबंधन

इकाई 14 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में गुणवत्ता सुनिश्चयन

इकाई 15 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का अर्थशास्त्र

इकाई 16 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में अनुसंधान

बी.ई.एस.ई-131 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा

पाठ्यक्रम की प्रस्तावना

बी.ई.एस.ई-131 "मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा" पाठ्यक्रम में आपका स्वागत हैं; यह बी.एड. (नवीनतम) कार्यक्रम के द्वितीय वर्ष का एक वैकल्पिक पाठ्यक्रम है। यह चार खण्डों तथा 16 इकाइयों में व्यवस्थित है एवं प्रत्येक खण्ड में चार इकाइयाँ हैं। यह पाठ्यक्रम मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के व्यापक परिदृश्य को प्रदान करने का एक प्रयास है जिसमें मुख्यतः इसका उद्भव एवं विकास; विद्यार्थी सहायता सेवाओं सहित दूरस्थ अधिगम एवं शिक्षण से संबंधित इसके पक्षों एवं मुद्दों तथा इसकी योजना एवं प्रबंधन सम्मिलित हैं।

पहला खण्ड, **मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा : उद्भव एवं विकास,** मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के ऐतिहासिक विकास, सैद्धांतिक आधार, नीतिगत परिप्रेक्ष्य तथा औचित्य सहित भारतीय अनुभव एवं वैश्विक अभ्यास का वर्णन करता है।

दूसरा खण्ड, **दूरस्थ शिक्षण : मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संसाधनों का स्वरूप एवं विकास,** स्व-अधिगम सामग्रियों का स्वरूपन, मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा हेतु मीडिया एवं तकनीकी के साथ स्व-अधिगम मुद्रित सामग्रियों का विकास तथा ई-अधिगम संसाधनों के विकास का वर्णन करता है। स्व-अधिगम सामग्रियों के निर्माण के संबद्ध यह विभिन्न अनुदेशनात्मक स्वरूपों, प्रतिमानों तथा सिद्धांतों को आलोकित करता है। यह मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में पीढ़ीगत परिवर्तन लाने में तकनीक-समर्थित शिक्षण तथा अधिगम एवं इनके संगत प्रभावों सहित विभिन्न मीडिया एवं तकनीक की भूमिका पर प्रकाश डालता है। यह स्व-अनुदेशनात्मक मुद्रित सामग्रियों के निर्माण, स्वरूपन तथा संपादन के विभिन्न पक्षों पर विमर्श करता है। यह ई-अधिगम संसाधनों के प्रकारों, पद्धतियों, उपकरणों, संसाधनों तथा विकसित एवं प्रदान करने की विधियों से संपर्क स्थापित करता है।

तीसरा खण्ड, **मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में शिक्षार्थी सहायता सेवाएँ,** में दूरस्थ अधिगमकर्त्ताओं तथा स्व-निर्देशित अधिगम, दूरस्थ शिक्षण में परामर्श एवं शिक्षण तथा विद्यार्थी निष्पत्ति का आंकलन, और मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में विद्यार्थी सहायता पद्धति एवं सेवाओं पर विहंगावलोकन प्रदान करने का प्रयास किया गया है।

खण्ड चार, **मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की योजना एवं प्रबंधन,** मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पद्धति का प्रबंधन, मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की अर्थव्यवस्था के साथ-साथ मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में गुणवता के सुनिश्चयन तथा अनुसंधान की एक रूपरेखा प्रस्तुत करता है।

चूँकि आप बी.एड. कार्यक्रम के द्वितीय वर्ष में हैं जिसे मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा द्वारा प्रदान किया जा रहा है, आप अभी तक शिक्षा के इस नवीन पद्धति एवं माध्यम के साथ पहचान स्थापित कर लिए होंगे। अन्य शब्दों में, आप अभी तक इस वैकल्पिक पाठ्यक्रम **मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा** को न केवल समझने हेतु बल्कि इस पाठ्यक्रम के विभिन्न संदर्भो में विमर्श के साथ इस पर चिंतन करने तथा अपने अनुभव को इससे संबद्ध करने हेतु आवश्यक अनुभव प्राप्त कर लिए होंगे।

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के पश्चात, आप मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा को शैक्षिक नवाचार के रूप में निम्नलिखित प्रकार से समझेंगे :

1) वंचितों हेतु शिक्षा का सुपरिभाषित एवं सुस्थापित माध्यम है;

2) दूरस्थ शिक्षण एवं अधिगम बहुत अधिक मल्टी-मीडिया पर निर्भर है;

3) इसमें विद्यार्थी अधिगम के सतत एवं सत्रांत मूल्यांकन हेतु स्वयं की एक प्रभावी पद्धति है; तथा

4) शैक्षिक एवं राष्ट्रीय विकास हेतु पर्याप्त मानवीय पूँजी निर्माण हेतु एक अर्थसाध्य पद्धति है।

आप यह प्रशंसा करेंगे कि मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा गुणात्मक एवं मात्रामक दोनों दृष्टि से "सभी के लिए शिक्षा", "शैक्षिक अवसरों की समानता" तथा "शिक्षा का लोकतांत्रिकरण" के लक्ष्यों को बढ़ावा देने हेतु शिक्षा का समुचित एवं आवश्यक माध्यम है।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

खण्ड 1 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा : उद्‌भव एवं विकास

खण्ड 1 की प्रस्तावना

इस खण्ड में चार इकाइयाँ हैं जो मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के उद्‌भव एवं विकास से संबंधित चार विशिष्ट प्रकरणों पर केन्द्रित हैं। **इकाई 1, ऐतिहासिक विकास,** वैश्विक एवं राष्ट्रीय स्तर पर मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की वृद्धि एवं विकास; पहुँच, गुणवत्ता, प्रासंगिकता तथा शिक्षा में निवेश की दृष्टि से मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के औचित्य पर एक संहावलोकन प्रस्तुत करता है। क्षेत्रीय, सामाजिक तथा लैंगिक असमानताओं को कम करने के रूप में शिक्षा के लोतांत्रिकरण में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के महत्व को आलोकित करती है।

इकाई 2, सैद्धांतिक आधार, कुछ महत्वपूर्ण पदों सहित मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की अवधारणा पर केन्द्रित है। यह कई सिद्धांतों पर एक रोचक विमर्श प्रस्तुत करती है जो मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के प्रचलित सिद्धांतों की व्यापक तस्वीर प्रस्तुत करती है।

इकाई 3, भारतीय अनुभव, भारत में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के अभ्यास पर समर्पित है। यह मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के उद्‌भव एवं विकास के साथ-साथ उच्च शिक्षा, विद्यालयी शिक्षा तथा शिक्षक शिक्षा में इसके योगदान पर बल देता है। यह एकल पद्धति तथा द्विपद्धति विश्वविद्यालयों की समस्याओं एवं चुनौतियों को भी आलोकित करती है।

इकाई 4, वैश्विक अभ्यास, मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में अंतर्राष्ट्रीय अभिकरणों तथा क्षेत्रीय एवं वैश्विक संगठनों की भूमिका पर प्रकाश डालती है। यह अफ्रीका, एशिया, अमेरिका, आस्ट्रेलिया तथा प्रशांत एवं यूरोप के विशेष संदर्भ के साथ वैश्विक अभ्यासों में क्षेत्रीय परिप्रेक्ष्यों को प्रस्तुत करता है। यह वैश्विक स्तर पर चयनित विश्वविद्यालयों के महत्वपूर्ण अभ्यासों से भी परिचय स्थापित कराता है।

इस खण्ड के अध्ययन के पश्चात, आप :

- राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के उद्‌भव एवं विकास का वर्णन कर सकेंगे;
- मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की अवधारणा की व्याख्या कर सकेंगे तथा प्रयोग से संबंधित विभिन्न पदों में अंतर स्पष्ट कर सकेंगे।
- दूरस्थ शिक्षा के विभिन्न सिद्धांतों की चर्चा कर सकेंगे; तथा
- मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में भारतीय, क्षेत्रीय तथा वैश्विक अनुभवों का विश्लेषण तथा तुलना कर सकेंगे।

इस खण्ड में प्रत्येक इकाई के अनुदेशनात्मक उद्देश्य व्यवस्थित एवं स्व-अनुदेशनात्मक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। इस खण्ड में प्रस्तुत विषय सामग्री तक आपकी पहुँच में सहायता हेतु इकाई संरचना की एक योजनाबद्ध प्रतिनिधित्व की प्रस्तुती नीचे दी गई है।

इकाई X : (शीर्षक)

इकाई संरचना

X.0 प्रस्तावना

X.1 उद्‌देश्य

X.2 भाग-1 (पहला मुख्य प्रकरण)

X.2.1 भाग-1 का उप-भाग 1

X.2.2 भाग-1 का उप-भाग 2

..... प्रगति जाँच हेतु प्रश्न

.....

X.3 भाग 2 (दूसरा मुख्य प्रकरण)

X.3.1 भाग-2 का उप-भाग 1

X.3.2 भाग-2 का उप-भाग 2

.....

..... प्रगति जाँच हेतु प्रश्न

.....

X.n सारांश

X.n+1 ''अपनी प्रगति जाँचें'' प्रश्नों के उत्तर

X.n+2 संदर्भ ग्रन्थ

प्रत्येक इकाई की इकाई संरचना उस इकाई की रूपरेखा प्रस्तुत करती है। यह सुझाव दिया जाता है कि आप इकाई के अध्ययन से पूर्व इकाई सरंचना को ध्यानपूर्वक पढ़िए। यह आपको प्रत्येक इकाई में व्यवस्थित विषयवस्तु की एक झलक प्रदान करेगा।

हमनें सरल अध्ययन एवं बेहतर समझ हेतु इकाइयों को भागों में विभाजित किया है। प्रत्येक भाग बड़े अक्षरों तथा प्रत्येक उप-भाग अपेक्षाकृत छोटे अक्षरों द्वारा स्पष्ट निर्देशित हैं। उप-भागों के महत्वपूर्ण विभाग अधिक बड़े अक्षरों में है ताकि उप-भागों में आप उनके उचित स्थान सरलता से देख सकें तथा जिन तथ्यों पर प्रकाश डाला जाना है वे 1), 2), 3), आदि तथा a) b) c) आदि हैं। समरूपता के अद्देश्य से, हमनें संपूर्ण पाठ्यक्रम के प्रत्येक इकाई में विभाजन हेतु लग-भग समान योजना का अनुकरण किया है।

प्रत्येक इकाई में **उद्देश्य** द्वारा आप से निम्नलिखित की अपेक्षा की जाती है :

- इकाई में हमनें क्या प्रस्तुत किया है; तथा
- इकाई की समाप्ति के पश्चात हम आप से क्या अपेक्षा रखते हैं।

प्रत्येक इकाई के अंत में **सारांश** शीर्षक के अंतर्गत प्रत्यास्मरण तथा उपलब्ध संदर्भ सूची के उद्देश्य हेतु संपूर्ण इकाई को समाप्त किया गया है।

प्रत्येक इकाई के अंत में **अभ्यास** दिए गए हैं। इन अभ्यासों को देने का उद्देश्य है कि आप ने किसी भाग या उप-भाग की विषयवस्तु को कितना समझा है इसकी जाँच में सहायता करना है। इकाई के अंतर्गत कभी कभी आप गतिविधियों को पाते हैं जो आप को इकाई के विशेष भाग में प्रस्तुत विषयवस्तु का बेहतर समझ प्रदान करती हैं। ये गतिविधियाँ अधिकांशतः पठन-पाठन से संबंद्ध हैं तथा उनको इकाई अध्ययन की निरंतरता को भंग किए बिना किया जा सकता है।

इकाई के अध्ययन के समय, आप महत्वपूर्ण बिन्दुओं को लिखिए। पुस्तिका के प्रत्येक पृष्ठ पर बड़ा हाशिया दिया गया है जो आपके नोट को लिखने हेतु प्रदत स्थान है। ताकि

सामग्री के अध्ययन के समय आप अपना नोट्स हाशिए पर लिख सकते हैं। आपके नोट्स आपको पाठ्यवस्तु के साथ चलने में; आत्मसात करने में; स्वयं-जाँच के अभ्यास के उत्तर में, सत्रीय कार्य करने में तथा परीक्षा हेतु पुनरावृत्ति एवं तैयारी में सहायता करेगा।

हम अपेक्षा करते हैं कि प्रगति जाँच के अंतर्गत स्वयं-जाँच प्रश्नों के उत्तर हेतु दिए गए स्थान आपके उत्तर हेतु पर्याप्त हैं तथा आप पुस्तिका के खाली स्थान में उत्तर लिखने का कार्य करेंगे। खाली स्थान में अपने उत्तरों को लिखने के पश्चात, आप अपने उत्तरों की तुलना इकाई के अंत में दिये उत्तरों से कर सकते हैं। जैसे ही आप एक अभ्यास कार्य में आते हैं आप इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों पर एक झलक देखने के लिए इच्छुक हो सकते हैं। परंतु, हम यह आशा करते हैं कि आप प्रलोभन पर नियंत्रण करेंगे तथा अपने उत्तरों को लिखने के पश्चात ही दिए गए उत्तरों (जो आवश्यक रूप से उत्तम नहीं हैं) को देखेंगे।

ये अभ्यास अपनी प्रगति की सामयिक जाँच में सहायता हेतु हैं तथा जाँच, आँकलन या मूल्यांकन हेतु जमा नहीं किए जाएंगे। हम आशा करते हैं कि ये अभ्यास आपके लिए उपयोगी होंगे क्योंकि ये इकाई अध्ययन के समय आपको सही पथ पर रखने में सहायता हेतु उपकरण के रूप में कार्य करेंगे।

प्रत्येक इकाई या खण्ड के अंत में दिया गया **संदर्भ ग्रन्थ** इकाई के प्रकरण से संबंधित पुस्तकों तथा लेखों की एक सूची होती है। उनका अर्थ समृद्ध सामग्री के रूप में होता है। कभी-कभी, संदर्भ ग्रन्थ के अंत में उल्लेखित वेब साइट आपको अपने कम्प्यूटर पर आगामी पठन तथा समझ हेतु तत्काल पहुंच हेतु सक्षम करेगा। हमारा प्रयास यह सुनिश्चित करने हेतु रहा है कि ये सभी आपको सरलतापूर्वक, शीघ्रता पूर्वक, मुक्त या अल्प व्यय में उपलब्ध हो सकें।

इसके अतिरिक्त, पूरक सामग्री के रूप में कुछ श्रव्य तथा दृश्य कार्यक्रम इस पाठ्यक्रम के अंश हैं जो (कार्यक्रम) अध्ययन केन्द्रों पर उपलब्ध हैं।

इस पाठ्यक्रम में एक सत्रीय कार्य भी है जिसे आपको पूर्ण कर कार्यक्रम अध्ययन केन्द्र कार्यक्रम प्रभारी समन्वयक को भेजना है। यह कार्य आप के लिए है यद्यपि आपको भेजा गया प्रासंगिक सत्रीय कार्य भिन्न है तथा यह निश्चित रूप से प्रत्येक वर्ष नामांकित विद्यार्थियों के प्रत्येक बैच हेतु भिन्न होता है। आप को पाठ्यक्रम के अनुरूप दिए गए आवश्यक सत्रीय कार्य को पूर्ण करना है, क्योंकि यह पाठ्यक्रम की गतिविधि का एक आवश्यक भाग है। हम कामना करते हैं कि आप इस पाठ्यक्रम का कार्य प्रभावी ढंग से करेंगे।

इकाई 1 ऐतिहासिक विकास

संरचना

1.0 प्रस्तावना

1.1 उद्देश्य

1.2 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की वृद्धि एवं विकास

1..2.1 वैश्विक : एक परिदृश्य

1.2.2 राष्ट्रीय : एक परिदृश्य

1.3 भारत में नीतिगत परिप्रेक्ष्य

1.3.1 भारतीय शिक्षा आयोग (1964-66) तथा इसके पश्चात

1.3.2 भावी परिप्रेक्ष्य

1.4 दूरस्थ शिक्षा का औचित्य

1.4.1 शिक्षा की पहुँच

1.4.2 शिक्षा की गुणवत्ता

1.4.3 शिक्षा की प्रासंगिकता

1.4.4 शिक्षा की लागत

1.5 शिक्षा का लोकतांत्रिकरण

1.5.1 शेक्षिक अवसरों की समानता

1.5.2 क्षेत्रीय विषमताओं का लघुकरण

1.5.3 सामाजिक एवं लैंगिक विषमताओं का लघुकरण

1.6 सारांश

1.7 ''अपनी प्रगति जाँचें'' प्रश्नों के उत्तर

1.8 संदर्भ ग्रन्थ

1.9 इकाई अंत अभ्यास

1.0 प्रस्तावना

पत्राचार पाठ्यक्रम से आरंभ होकर दूरस्थ शिक्षा विभिन्न चरणों से गुजरी है तथा विगत डेढ़ सौ वर्षों में धीरे-धीरे विकसित हुई है। ज्ञात आवश्यकताओं तथा द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात शिक्षा के लोकतांत्रिकरण हेतु सतत-प्रयासों के कारण एक पद्धति के रूप में दूरस्थ शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण हुई तथा विश्व के लगभग सभी देशों में विस्तृत हुई। अब यह स्वयं को शिक्षा के क्षेत्र में गणनीय मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की व्यापक पद्धति के रूप में स्थापित कर लिया है। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में मुक्त विद्यालय से लेकर मुक्त विश्वविद्यालय तक विभिन्न स्तरों पर दूरस्थ शिक्षा पद्धति द्वारा अपने कार्यक्रमों को प्रदान कर रही है जो अब लोकप्रिय है। इस प्रकार, मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पद्धति शिक्षा की परंपरागत पद्धति के समकक्ष, संपूरक तथा सहायक के रूप में है। यद्यपि, इसकी अवधारणा एवं कार्य सामान्य रूप में सूचना एवं संप्रेषण प्रौद्योगिकी विकास तथा विशेष रूप में शैक्षिक प्रौद्योगिकी के विकास से बहुत अधिक संबंधित रहा है।

इस इकाई में, आपको मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के ऐतिहासिक विकास, राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तरों पर इसके परिदृश्य के साथ इसके औचित्य तथा भावी परिप्रेक्ष्य पर एक

रूपरेखा प्रस्तुत की जाएगी। अब उद्देश्यों पर ध्यान दीजिए जो आपको निर्देश देंगे कि वास्तव में यहाँ आप क्या सीखेंगे।

1.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात, आप :

- मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के उद्भव एवं विकास का वर्णन कर सकेंगे;
- राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के परिदृश्य का चित्रण प्रस्तुत कर सकेंगे;
- भारत में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के औचित्य एवं भावी परिप्रेक्ष्यों की व्याख्या कर सकेंगे;
- भारत में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा हेतु राज्य की नीतियों को प्रस्तुत कर सकेंगे; तथा
- शिक्षा के लोकतांत्रिकरण में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के महत्व की सराहना या कद्र कर सकेंगे।

1.2 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की वृद्धि एवं विकास

इस भाग में, मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की वृद्धि एवं विकास को देखा जाए जो वास्तव में पूर्वर्ती दूरस्थ शिक्षा का रूपांतरित, विकसित तथा लोकप्रिय उपयोग है। दूरस्थ शिक्षा की जड़ें पत्राचार पाठ्यक्रमों में हैं जिनका अर्थ सामान्य रूप में अध्ययन सामग्री जो सामान्यतः व्याख्यात्मक टिप्पणियों के रूप में अध्यापक द्वारा विद्यार्थी को डाक द्वारा भेजी जाती है। यह विचार इंग्लैण्ड में 19वीं शताब्दी में आरंभ हुआ था।

पत्राचार अध्ययन का सूत्रपात्र सन् 1840 में इंग्लैण्ड के बाथ नामक स्थान पर उस समय हुआ जब इशाक पिटमैन ने अपना शार्ट हैन्ड (आशु लिपि) पाठ्यक्रम न्यू पैनी पोस्ट द्वारा आरंभ किया। यू.के. के अंतर्राष्ट्रीय पत्राचार की स्थापना 1880 में हुई; यह वहाँ की सबसे प्राचीन पत्राचार शिक्षा संस्था थी। बीसवीं शताब्दी में यू. के. में अनेक पत्राचार शिक्षा संस्थाएं स्थापित हुईं। इन संस्थाओं से मुख्यतः डिग्री स्तर के उन बाह्य विद्यार्थियों को लाभ हुआ जो अपने घर पर पत्राचार पाठ्यक्रम द्वारा अध्ययन करते थे। फिर भी, कई कारणों से इन संस्थानों को विश्वविद्यालय संबंधित कालेजों के समकक्ष स्थान प्राप्त नहीं था।

1969 में यू. के. में मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ और तत्पश्चात विश्व के विभिन्न देशों में मुक्त विश्वविद्यालयों की स्थापना के बाद दूर शिक्षा का विकास तीव्रता से हुआ; परिणामतः अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इसने अपना वृहद् स्थान बनाया। आइए अब इसके अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य पर दृष्टिपात करें।

1.2.1 वैश्विक : एक परिदृश्य

यू.के. में 1969 ई. में मिल्टन केन्स नामक स्थान पर विश्व के प्रथम मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना थी। वास्तव में, उस समय के लेबर प्रधानमंत्री हेरॉल्ड विलसन को 1950 के दशक में उस समय के सोवियत गणराज्य के दौरे के पश्चात विचार आया कि एक हवा का विश्वविद्यालय खोला जाए। इसे कार्य रूप देने में अन्य दो दशक का समय लगा।

स्वतंत्र या मुक्त प्रवेश, बहु-माध्यम आधारित शिक्षण-अधिगम, क्रेडिट प्रणाली और क्रेडिट हस्तांतरण, गैर-परंपरागत पाठ्यक्रम और सबल सहायक प्रणाली यू.के. के मुक्त विश्वविद्यालय

की अद्भूत विशेषताएँ हैं। यह यूरोप और दुनिया भर में मुकत विश्वविद्यालयों के विकास को प्रेरति करता रहा है।

दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में अमरीकी अनुभव कुछ भिन्न दृश्य प्रस्तुत करता है। इसके वहाँ बहुत से नाम हैं जैसे : घर पर अध्ययन (होम स्टडी), बाह्य अध्ययन (एक्सटर्नल स्टडी), पत्राचार अध्ययन आदि। विभिन्न विश्वविद्यालयों ने पत्राचार शिक्षा कार्यक्रम बीसवीं शताब्दी में आरंभ किए। इनके नाम है : शिकागो विश्वविद्यालय, विस्कोनसाइन विश्वविद्यालय, इल्लीनॉईस वेसलेयन विश्वविद्यालय, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, नेबरासका विश्वविद्यालय, फ्लोरिडा विश्वविद्यालय, पैनसिलवेनिया राज्य विश्वविद्यालय आदि। संयुक्त राज्य अमेरिका में 60 से अधिक विश्वविद्यालय पत्राचार पाठ्यक्रम चला रहे हैं। जो विश्वविद्यालय स्वतंत्र अध्ययन कार्यक्रम प्रदान करते हैं वे नेशनल विश्वविद्यालय सतत शिक्षा संगठन के स्वतंत्र अध्ययन खण्ड से संबंधित हैं।

दूरस्थ शिक्षा को प्रोत्साहन देने वाला एक अन्य प्रमुख देश आस्ट्रेलिया है। आस्ट्रेलिया में दूरस्थ शिक्षा की लोकप्रियता का कारण इसकी भौगोलिक स्थिति है क्योंकि बहुत से द्वीप हैं जो एक दूसरे से दूर-दूर हैं। थोड़ी सी जनसंख्या का बहुत बड़े भाग में द्वीपों पर फैला होना औपचारिक शिक्षा संस्थाओं की कार्य प्रणाली के अनुकूल नहीं होती है। ऑस्ट्रेलिया को प्राथमिक, माध्यमिक तथा तीसरे स्तर (उच्च शिक्षा) पर पत्राचार शिक्षा कार्यक्रम चलाने का बहुत लम्बे समय का अनुभव है। उदाहरण के लिए, पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया पत्राचार विद्यालय बच्चों को पत्राचार पाठ्यक्रमों द्वारा 1 से 10 वर्षों तक की विद्यालयी शिक्षा देता है। उच्चतर माध्यमिक स्तर पर मेट्रिकुलेशन प्रणाली के तहत पृथक विद्यार्थी हैं। उच्च शिक्षा स्तर पर, क्वीन्सलैण्ड विश्वविद्यालय सबसे पुरानी संस्था है जो 1911 से पत्राचार शिक्षा प्रदान कर रही है। आस्ट्रेलिया में पत्राचार शिक्षा की दोहरी कार्य प्रणाली अपनाई गई है। आस्ट्रेलियाई विश्वविद्यालयों के संकायों के सदस्य नियमित संस्थागत विद्यार्थियों को पढ़ाते हैं एवं साथ ही बाह्य असंस्थागत विद्याार्थियों को पत्राचार पाठ्यक्रम भी प्रदान करते हैं। आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैण्ड में द्विपद्वतीय शिक्षा का सफलतापूर्वक अभ्यास किया जा रहा है।

1996 में, क्षेत्रीय मानव विकास में बड़ी भूमिका निभाने हेतु एक नए अध्यादेश का सामना करते हुए, यू डब्लू आई (UWI) द्विपद्धतीय शिक्षा हेतु संक्रांति की प्रक्रिया का आरंभ किया, परंतु प्रक्रिया कठिनाई पूर्ण रही (मॉर्गन 2000 : 108)। कौल (2000 : 236) मूल अवधारणाओं की अवास्ताविक प्रकृति के कारण रूग्न 15 क्षेत्रों की पहचान किया जो मूल नियोजन प्रक्रिया को मजबूती दिया जिसे यहाँ प्रस्तुत करना उपयुक्त होगा (आंड्रिया होप, http://pdfs.semanticscholar.org/bafa/3f3e2a87435f7b3ce53c4eb2e348c972 5c.pdf देखिए)।

1) इस मॉडल का मानना था कि सभी शिक्षकों को 20% अनुपयुक्त समय था जिसे वे दूरस्थ शिक्षा कार्यों हेतु समर्पित कर सकते थे। शिक्षकों ने इस पर विवाद किया कि वे अतिरिक्त भुगतान हेतु अपने अतिरिक्त समय को दूरस्थ शिक्षा कार्य हेतु समर्पित करेंगे।

2) प्रशासनिक इकाइयों ने दूरस्थ शिक्षा संबंधित कार्य उत्तरदायित्व को समान रूप से स्वीकार नहीं किया, कुछ हद तक दूरस्थ शिक्षा के विद्यार्थियों को उन विश्वविद्यालयों में गिनती नहीं की जाती है तथा उनसे उदासीन व्यवहार किया जाता है।

3) विद्यमान नियम तथा निर्देश दूरस्थ शिक्षा के विद्यार्थियों की आवश्यकताओं हेतु असंवेदनशील हैं, जो विद्यार्थियों में कड़वाहट तथा वैमनस्म को बढ़ावा देते हैं।

4) शिक्षकों की उदासीनता या प्रतिरोध व्यवहार दूरस्थ शिक्षा के विद्यार्थियों के लिए कम गुणवत्ता का कारण है तथा एक दृढ़ शिक्षकीय शक्ति आधार परिणाम की माँग हेतु बिना प्राधिकार के दूरस्थ शिक्षा केन्द्र को एक प्रभावहीन परिणाम देता है।

5) सेवाओं की लागत उचित रूप में करने की विफलता तथा दूरस्थ शिक्षा कार्यों हेतु समझ या सरोकार की कमी धन राशियों के अयोग्य उपयोग को प्रेरित करती है।

6) दूरस्थ शिक्षा कार्य हेतु निम्न वरीयता देना विलम्ब को बढ़ावा देता है तथा खराब प्रतिष्ठा में परिणत होता है।

7) दूरस्थ शिक्षा के निरीक्षण हेतु स्थापित विशेष बोर्ड अन्य वरिष्ठ बोर्डों जो संस्थागत प्रकृति के अंतर्गत सर्वमान्य तथा सुस्थापित हैं के अधीन है ताकि परिवर्तन को प्रभावित करने हेतु इसकी शक्ति को दृढ़तापूर्वक अवरोधित किया जा सकता है।

8) दूरस्थ शिक्षा कार्य का विश्वविद्यालय में वृत्तिक उन्नति की योजना में स्थान नहीं दिया जाता है तथा उपहास किया जाता है।

9) शिक्षक तथा अनुदेश निर्माताओं के बीच संघर्ष पाठ्यक्रम के निर्माण तथा प्रदान करने में विलम्ब को बढ़ावा देता है।

10) अधिकृत स्थानीय शिक्षण सहायता सदैव सभी स्थानीय केन्द्रों पर उपलब्ध नहीं होती है।

विद्यार्थियों हेतु परिणाम अपरिहार्य थे :

- नामांकन, पाठ्यक्रम का चयन तथा छूट देने में संशय;
- अध्ययन सामग्री की आपूर्ति में विलम्ब तथा/या आंशिक रूप में आपूर्ति, दोषपूर्ण अनुदेशनात्मक स्वरूप तथा सत्रीय कार्य की निगरानी में संशय,
- टेलीकान्फरेन्स के आयोजन में संशय, पाठ्यक्रम समन्वयकों, स्थानीय शिक्षकों तथा विद्यार्थियों की अनुपस्थिति एवं विद्यार्थियों की जिज्ञासा के प्रति उदासीनता।
- शिक्षकों की विलम्ब से नियुक्ति/अनुपलब्धता तथा शिक्षण समूहों की निरूत्साहित संख्या।
- परीक्षा संचालन में संशय, गलत प्रश्न पत्रों का वितरण, अत्तर पुस्तिकाओं का खोना, उत्तरों के अंकन या पुनरीक्षण में समस्या, परिणामों में अत्यधिक विलम्ब तथा खो जाना।

उचित कार्य हेतु कौल के सझाव में सम्मिलत है :

- शैक्षिक तथा प्रशासनिक कार्यों से संबंधित एक प्रभावी तथा प्रामाणिक गुणवत्ता सुनिश्चयन प्रणाली की स्थापना करना।
- महत्वपूर्ण कार्यों जिन पर दूरस्थ शिक्षा निर्भर है, को सामूहिक प्रयास द्वारा गति देना। जैसे सहायता सेवाएँ, पाठ्यक्रम निर्माण, सामग्री का प्रेषण एवं वितरण, शिक्षकों की भर्ती एवं प्रशिक्षण, टेलीकान्फ्रेस की निश्चित समय निर्धारण तथा डिजिटल नेटवर्क का उच्च स्तरीय कार्य।

- प्रासंगिक नियमों, निर्देशों तथा संबंधित अभ्यासों में परिमार्जन तथा प्रशासनिक संरचनाओं एवं कार्य संस्कृति संबंधित परिवर्तन।
- दूरस्थ शिक्षा में समुचित निवेश को सुनिश्चित करने हेतु समर्पित एवं स्वतंत्र बजट।
- तकनीक आधारित अधिगम के उपयोग में वृद्धि हेतु तकनीक तथा प्रशिक्षण में निवेश; तथा
- एक बोर्ड की स्थापना करना जो नीति निर्माण तथा उनको प्रभावी रूप में क्रियान्वित करने में सक्षम हो।

परिणामतः यू डब्लू आई अपने अभ्यासों में सुधार किया तथा अपने पहुँच का विस्तार किया।

रूस में दूरस्थ शिक्षा ने श्रमिकों की शिक्षा का एक नया आयाम जोड़ा है। 1917 की क्रांति के पश्चात दूरस्थ शिक्षा ने समाजवादी अर्थव्यवस्था और समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उस समय के यू॰एस॰एस॰आर॰ के शैक्षिक सुधार अधिनियम (1958) ने अंशकालिक बाह्य पाठ्यक्रमों तथा पत्राचार पाठ्यक्रमों को सुदृढ़ बनाया। रूस में पत्राचार शिक्षा माध्यमिक विद्यालय, विश्वविद्यालय, पॉलिटेक्निक तथा अन्य स्तरों पर प्रदान की जाती है। रूस के लगभग सभी विश्वविद्यालयों में पत्राचार शिक्षा कार्यक्रम बहुत लोकप्रिय हैं। राज्य के विश्वद्यिालयों के कुल विद्यार्थियों का 30 से 50 प्रतिशत विद्यार्थी पत्राचार कार्यक्रमों में नामांकित हो जाते हैं। वे विश्वविद्यालयों में मल्टीमीडिया शैक्षिक कार्यक्रमों से संबद्ध अल्पकालिक संस्थागत शिक्षा सुविधा का लाभ भी उठाते हैं।

दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में एशिया के देशों का अनुभव मुख्यतः यू॰के॰ मुक्त विश्वविद्यालय के अनुभव से तीन दशकों से प्रभावित रहा है। पाकिस्तान का एल्लामा इकबाल मुक्त विश्वविद्यालय जो 1974 में स्थाति हुआ था, तीसरे स्तर (उच्च स्तर) की दूरस्थ शिक्षा में अग्रणी है। यह यू॰के॰ मुक्त विश्वविद्यालय के अनुरूप दूरस्थ शिक्षा के बहुत से कार्यक्रम चलाता है।

श्रीलंका का मुक्त विश्वविद्यालय (1980) सेवारत व्यक्तियों की शैक्षिक योग्यता बढ़ाने के उद्देश्य से कार्यरत है और साथ ही सतत् एवं जीवनपर्यन्त शिक्षा के अवसर उपलब्ध कराता है। श्रीलंका में दूरस्थ शिक्षा की सुविधाओं का उपयोग विद्यालयी विद्यार्थियों को सार्वजनिक शिक्षा देने के लिए भी है। श्रीलंका का शिक्षा मंत्रालय सेवारत अध्यापकों की शिक्षा हेतु दूरस्थ शिक्षा प्रणाली का उपयोग करता है।

बांग्लादेश ने 1990 में बांग्लादेश मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना की।

थाईलैण्ड ने सुखेथाई थाम्माथरट मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना 1976 में करके एक बड़ा कदम उठाया। इसके लगभग 90 प्रतिशत विद्यार्थी सेवारत वयस्क हैं। यह स्व-अनुदेशनात्मक मुद्रित सामग्री के साथ-साथ श्रव्य कैसेट का उपयोग करता है। रेडियो एवं टेलीविजन कार्यक्रम इस सामग्री के पूरक कार्य करते हैं। उध्ययन केन्द्रों द्वारा कुछ सीमा तक निजी संपर्क की सुविधा दी जाती है।

भारत में, 1962 के दौरान एक पॉयलट परियोजना के रूप में दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा पत्राचार पाठ्यक्रम द्वारा एक साधारण शुरूआत किया गया। इसके उपरांत दूरस्थ शिक्षा के विस्तृत स्वरूप में धीरे-धीरे विकसित हुई तथा मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के रूप में देश के चारो

तरफ फैल गई। आप नीचे उप-भाग 1.2.2 में इसके ऐतिहासिक विकास की एक रूपरेखा प्राप्त कर सकते हैं।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

1) 1969 में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर दूरस्थ शिक्षा की वृद्धि में प्रमुख विकास क्या था?

.....

.....

.....

.....

.....

1.2.2 राष्ट्रीय : एक परिदृश्य

भारत में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली का उदय विश्वविद्यालय स्तर पर हुआ तथा बाद में यह विद्यालय स्तर की ओर अग्रसर हुआ। यह स्पष्टतः अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर दूरस्थ शिक्षा के इतिहास में एक सामान्य विशेषता है। इसकी पृष्टभूमि 1950 के दशक में प्राप्त की जा सकती है। स्वाधीनता के पश्चात उच्च शिक्षा व्यवस्था में एक असमान विस्तार हुआ है जैसे इसके नामांकन, संस्थानों की स्थापना, कार्यक्रमों की विविधता आदि। उच्च शिक्षा विकास की गति-दर, आर्थिक विकास की दर के समान नहीं थी। धीरे-धीरे विस्तार का केन्द्र बिन्दु उच्च शिक्षा से हट कर विद्यालयी शिक्षा पर हो गया। विद्यार्थियों की बढ़ती संख्या हेतु विश्वविद्यालय एवं कॉलेज स्थापित करने में बहुत व्यय होता था जो भारतीय परिस्थितियों में बहुत जटिल तथा कठिन कार्य था। उच्च शिक्षा की औपचारिक प्रणाली में विद्यार्थियों की बढ़ती संख्या के फलस्वरूप पत्राचार पाठ्यक्रमों के आरंभ का मार्ग प्रशस्त हुआ। भारत में पत्राचार शिक्षा कार्यक्रम के रूप में दूरस्थ शिक्षा आरंभ करने के दो उद्‌देश्य थे। एक तो उच्च शिक्षा प्राप्त करने के इच्छुक विद्यार्थियों के समूह के दबाव को पत्राचार शिक्षा कार्यक्रम की ओर बढ़ाना था जिससे शिक्षा पर व्यय में कमी आए। दूसरा, उच्च शिक्षा का लोकतांत्रिकरण करना।

दिल्ली विश्वविद्यालय पहला विश्वविद्यालय था जिसने 1962 में प्रायोगिक परियोजना के रूप में पत्राचार पाठ्यक्रम आरंभ किया। मार्च 1961 में विशेषज्ञ समिति की रिपोर्ट के आधार पर यह कार्य आरंभ किया गया था। बाद में दिल्ली विश्वविद्यालय ने प्रथम डिग्री स्तर पर पत्राचार पाठ्यक्रम आरंभ करने की अनुशंसा करने हेतु एक उप-समिति गठित किया। दिल्ली विश्वविद्यालय की दूरस्थ शिक्षा की सफलता ने अन्य विश्वविद्यालयों और राष्ट्रीय महत्व के संस्थानों को विभिन्न कार्यक्रमों द्वारा पत्राचार पाठ्यक्रम आरंभ करने हेतु प्रेरित किया। इसी बीच विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने पत्राचार पाठ्यक्रमों के मार्गदर्शन हेतु नियम बनाने की पहल की। भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने 1967, 1968, तथा 1971 में तीन शिष्टमंडल यू.एस.एस.आर. में पत्राचार शिक्षा का अध्ययन करने हेतु भेजा। 1969 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने पत्रचार पाठ्यक्रम के मार्गदर्शन हेतु दिशा निर्देश दिए। पत्राचार पाठ्यक्रम का उद्‌देश्य निम्नलिखित वर्गों को शैक्षिक सुविधाएँ उपलब्ध कराना निश्चित किया :

- वे विद्यार्थी जिन्होंने आर्थिक और अन्य कारणों से औपचारिक शिक्षा छोड़ दी थी।
- भौगोलिक दृष्टि से दूर-दराज के क्षेत्र में रहने वाले विद्यार्थी।
- वे विद्यार्थी जिन्होंने अभिरूचि और प्रेरणा के अभाव में शिक्षा छोड़ दी थी, परंतु बाद में प्रेरित हो गए थे।
- वे विद्यार्थी जो नियमित महाविद्यालय या विश्वविद्यालय में प्रवेश नहीं पा सकते या नहीं पाना चाहते, यद्यपि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करने की सभी योग्यताएँ रखते हैं।
- वे लोग जो शिक्षा को जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया समझते हैं तथा अपने ज्ञान को उसी विषय में नया करना चाहते हैं या किसी नए क्षेत्र में ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं (वि. अनु. आयोग, 1988)।

उपरोक्त विकास के परिणामस्वरूप, बहुत से विश्वविद्यालय डिग्री, डिप्लोमा तथा प्रमाणपत्र के विभिन्न क्षेत्रों में पत्राचार पाठ्यक्रमों का आरंभ किए। इस प्रकार, द्विपद्धतीय विश्वविद्यालय जो अपना कार्यक्रम नियमित एवं दूरस्थ दोनों माध्यम से प्रदान कर रहे थे, 1960-70 के दशक में गति प्राप्त किए।

1970 के दशक में, भारत में मुक्त विश्वविद्यालय स्थापना करने का पहल आरंभ हुआ। देश में मुक्त विश्वविद्यालय प्रणाली की शुरूआत 1969 में संयुक्त राज के मुक्त विश्वविद्यालय के निर्माण के साथ संबद्ध किया गया था। अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा वर्ष 1970 के समय शिक्षा तथा सामाजिक कल्याण मंत्रालय ने सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा यूनेस्को के सहयोग हेतु भारतीय राष्ट्रीय आयोग के सहयोग से दिसंबर, 1970 में 'मुक्त विश्वविद्यालय' पर एक सेमिनार आयोजित किए। यह सेमिनार भारत में प्रायोगिक तौर पर एक मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना की अनुशंसा किया। फलस्वरूप, भारत सरकार मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना पर विचार हेतु जी॰ पार्थसारथी की अध्यक्षता में मुक्त विश्वविद्यालय पर आठ सदस्यीय कार्य समूह नियुक्त की। यू॰के॰ मुक्त विश्वविद्यालय के प्रतिरूप का संपूर्ण अध्ययन के पश्चात कार्य समूह ने भारत में एक मुक्त विश्वविद्यालय के निर्माण की अनुशंसा करते हुए 1974 में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत किया। कार्य समूह की अनुशंसा के आधार पर एक राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु केन्द्र सरकार द्वारा एक मसौदा तैयार किया गया। यद्यपि, प्रक्रिया में विलंब हुआ।

इसी बीच, आन्ध्रप्रदेश सरकार ने एक पहल की तथा जी॰ राम रेड्डी की अध्यक्षता में एक विशेषज्ञ समिति की अनुशंसा पर 25 मई, 1982 को एक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना की। आंध्रप्रदेश मुक्त विश्वविद्यालय का नाम बाद में बी॰ आर॰ अम्बेडकर मुक्त विश्वविद्यालय हो गया।

जनवरी 1985 में, केन्द्र सरकार ने एक राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु एक नीति बनाई। इसके परिणाम स्वरूप तथा आवश्यक प्रयासों द्वारा 20 सितम्बर, 1985 को पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी के नाम पर एक राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय अस्तित्व में आया। इसके बाद भारत में दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में मुख्यतः अपनी स्वायत्त चरित्र के कारण मुक्त विश्वविद्यालयी प्रणाली एक अद्वितीय स्थान प्राप्त किया। इस प्रकार, 1980 में केवल दूरस्थ पद्धति द्वारा कार्यक्रम प्रदान करने वाले एकल पद्धतीय विश्वविद्यालयों का एक नया युग आरंभ हुआ। कुछ समय पश्चात, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय दोहरी भूमिका निभाना आरंभ किया : मुक्त विश्वविद्यालय तथा दूरस्थ शिक्षा पद्धति का आरंभ एवं प्रोत्साहन; तथा इस प्रणाली में मानकों के साथ सहयोग एवं निर्धारण। शीघ्र ही पूरे देश में यह अपने संक्षिप्त रूप 'इग्नू' द्वारा लोकप्रिय हुआ।

इसी दौरान बी.आर.ए.ओ.यू. तथा इग्नू की सफलता से प्रेरित अन्य राज्य जैसे राजस्थान, बिहार, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, गुजरात तथा कर्नाटक और अन्य राज्य ने मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना किए। इसी दौरान द्विपद्धतीय विश्वविद्यालयों में पत्राचार पाठ्यक्रम संस्थान दूरस्थ शिक्षा निदेशालय में पुनर्निर्मित या रूपांतरित हुए।

वर्तमान में, कुल मिलाकर 200 से अधिक द्विपद्धतीय तथा एकल पद्धतीय विश्वविद्यालय हैं। हमलोग इन विकास की विस्तृत चर्चा इकाई-3 में करेंगे।

इसके अतिरिक्त, यद्यपि उच्च शिक्षा में दूरस्थ शिक्षा का आरंभ 1962 में हुआ, विद्यालय स्तर पर दूरस्थ शिक्षा आरंभ करने का विचार माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के सम्मेलन की अनुशंसा के द्वारा 1964 में हुआ । राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 इस विचार को प्रोत्साहित किया। आरंभ में इसका प्रमुख उद्देश्य विद्यालय स्तर पर पत्राचार पाठ्यक्रमों के विभिन्न साधनों द्वारा माध्यमिक उच्च माध्यमिक प्रमाणपत्र परीक्षा में विद्यालय छोड़ चुके बाह्य अभ्यर्थियों को शामिल होने का अवसर देना था। कुछ वर्षों के पश्चात, विभिन्न राज्यों एवं केन्द्रशासित प्रदेशों के माध्यमिक शिक्षा के बोर्ड दिल्ली, यू पी, राजस्थान, ओडिसा तथा मध्यप्रदेश में पत्राचार पाठ्यक्रम प्रदान करना आरंभ किए। इस प्रकार यद्यपि दूरस्थ शिक्षा तृतीय स्तर (उच्च शिक्षा स्तर) पर भारत में 1960 के दशक में पहली बार आरंभ हुआ, माध्यमिक स्तर पर पत्राचार पाठ्यक्रम भी 1970 के दशक तक कई राज्यों में आरंभ हुए।

अगस्त 1974 में, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद ने एक कार्यदल की स्थापना की जिसका कार्य क्षेत्र मुक्त विद्यालय की स्थापना की संभावनाओं पर विचार करना था। नवंबर, 1978 में केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड तथा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद ने मुक्त विद्यालय की स्थापना पर विचार विमर्श करने हेतु एक अंतर्राष्ट्रीय गोष्ठी का आयोजन किया जिसकी अनुशंसाओं के आधार पर केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, नई दिल्ली ने जुलाई 1979 में मुक्त विद्यालय की स्थापना की। 1989 में, मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय की स्थापना की तथा मुक्त विद्यालय को इसी के साथ मिला दिया गया। इसके पश्चात, आंध्रप्रदेश मुक्त विद्यालय 1991 में स्थापित किया गया। सन् 1995-96 के दौरान के प्रयासों से उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश और राजस्थान में भी मुक्त विद्यालयों की स्थापना हुई। राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय द्वारा भारत में राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय संघ की स्थापना की जा चुकी है।

हम इकाई 3 में भारत में दूरस्थ शिक्षा के विषय पर विस्तृत चर्चा करेंगे। यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि भारत में दूरस्थ शिक्षा की वृद्धि एवं विकास का आधार विभिन्न शैक्षिक निकायों की विभिन्न अनुशंसाओं एवं अभिव्यक्तियों तथा नीति अभिलेखों में है जो भारत में दूरस्थ शिक्षा का स्पष्ट परिप्रेक्ष्य प्रदान करते हैं। हम भाग 1.3 में भारत में दूरस्थ शिक्षा की नीतिगत परिप्रेक्ष्य की विस्तारपूर्वक चर्चा करेंगे जो अग्रलिखित है।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

2) i) भारत में मुक्त विश्वविद्यालय पद्धति के विकास के क्रम को लिखिए।

.....

.....

ii) भारत में मुक्त विश्वविद्यालयों की सामान्य विशेषताएँ क्या हैं?

.....

.....

.....

iii) विद्यालय स्तर पर दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों को निर्मित करने का मुख्य कारण क्या है?

.....

.....

.....

iv) दूरस्थ शिक्षा द्वारा शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों का आयोजन क्यों किया जाना चाहिए?

.....

.....

.....

1.3 भारत में नीति परिप्रेक्ष्य

छठे दशक के आरंभ से ही भारत सरकार की दूरस्थ शिक्षा नीति लगातार अनुकूल बना रही है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद उच्च शिक्षा की माँग बढ़ी और इसके परिणाम स्वरूप शैक्षिक सुविधाओं का विस्तार हुआ, जिसके कारण योजना आयोग ने इस संबंध में अपनी कार्यनीतियाँ इन शब्दों में स्पष्ट की :

".....उच्च शिक्षा की सुविधाएँ बढ़ाने के साथ-साथ सांध्य कालेज खोलने, पत्राचार पाठ्यक्रम शुरू करने तथा बाह्य डिग्री देने के प्रस्ताव विचाराधीन हैं।" (भारत सरकार 1960 : 589)

1.3.1 भारतीय शिक्षा आयोग (1964–66) तथा उसके पश्चात्

परिणामस्वरूप, केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड (सी.ए.बी.ई) ने निश्चय किया कि इस मामले का विस्तृत अध्ययन किया जाए। तब शिक्षा मंत्रालय ने डॉ. डी. एस. कोठारी की अध्यक्षता में एक विशेषज्ञ समिति गठित की, जिसने पत्राचार पाठ्यक्रम की प्रकृति, सीमा और साधनों के संबंध में अपनी सिफारिशें दी। यादव और पांडा (1996) ने इस समिति की कुछ मुख्य सिफारिशों का निम्न प्रकार से संक्षेपण किया है:

i) पत्राचार पाठ्यक्रमों जो डिग्री स्तर अथवा समतुल्य स्तर की योग्यता प्रदान करते हैं, का संचालन विश्वविद्यालयों के द्वारा ही किया जाय।

ii) वर्तमान में पत्राचार पाठ्यक्रम विश्वविद्यालय की प्रथम डिग्री तक ही सीमित रहें।

iii) पत्राचार पाठ्यक्रम के अन्तर्गत अध्यापक और विद्यार्थियों के बीच व्यक्तिगत सम्पर्क कक्षाएँ होनी चाहिए। ये कक्षाएँ भाषण आधारित नहीं होनी चाहिए, अपितु अनुशिक्षणीय आधार पर होनी चाहिए।

iv) शैक्षिक स्तर को बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि पाठ्यक्रम-निर्माण और पाठ्यपुस्तकों के चयन के कार्यों में शीर्ष कोटि के विद्वानों और शिक्षकों को शामिल

किया जाए। इसके अतिरिक्त इसमें कुछ ऐसी स्थाई व्यवस्था हो ताकि कार्य की गुणवत्ता में निरंतर सुधार होता रहे।

v) पत्राचार-विधियों का प्रयोग विज्ञान और मानविकी दोनों क्षेत्रों में संभव है। पर फिलहाल संगठनात्मक कठिनाइयों को देखते हुए कला और वाणिज्य में ही पत्राचार पाठ्यक्रम शरू किए जाएँ। आगे चलकर विज्ञान पाठ्यक्रमों को भी यथाशीघ्र शरू किया जाए।

vi) प्रथम डिग्री के लिए, पत्राचार पाठ्यक्रम में नियमित कॉलेजों की तुलना में अधिक समय दिया जाए, यानी नियमित कॉलेज में 3 वर्ष लगते हैं तो पत्राचार में 4 वर्ष की अवधि रखा जाए। यद्यपि यह बात अलग है कि उत्कृष्ट विद्यार्थियों 3 वर्ष अवधि में ही डिग्री पूति करने की क्षमता हो सकती है। इस शिक्षण-प्रणाली को कार्यरूप देने के लिए इसमें आवश्यकतानुसार लचीलापन रखने की कड़ी सिफारिश की जाती है।

vii) इस पाठ्यक्रम में आवेदन करने वालों की शुल्क प्रथम वर्ष में अधिक होनी चाहिए, परन्तु दूसरे और तीसरे वर्ष में क्रमशः कम होती रहे और यदि सम्भव हो तो चौथे वर्ष में शुल्क ली ही न जाए।

viii) दो संपूरक सहायक साधनों यानि (a) पुनश्चर्या पाठ्यक्रम और (b) रेडियो एवं टी वी का उपयोग, सुझाया गया है। मानकों को बढ़ाने के लिए यह वांछनीय है मौखिक अभिव्यक्ति का स्तर सुधरे और लिखित शब्दों पर कम आश्रित रहा जाए।

ix) पत्राचार पाठ्यक्रम सर्वप्रथम कोई एक विश्वविद्यालय, उदाहरणार्थ, दिल्ली विश्वविद्यालय शरू करे। पाठ्यक्रम में शामिल किए जाने वाले विषयों का निर्धारण तथा प्रशासनिक कार्य दिल्ली विश्वविद्यालय की कार्यकारणी, समिति निश्चित करेगी।

x) यह निश्चित करना होगा कि यह कार्यक्रम लागत प्रभावी हो। यह तभी सम्भव है जब नियमित कॉलेजों में होने वाले व्यय की कई मदों को कम कर दिया जाए और पर्याप्त संख्या में छात्र इस पत्राचार पाठ्यक्रम में प्रवेश लेंगे तो बड़े पैमाने वाले संगठन के सभी लाभ मिल सकेंगे (भारत सरकार, 1962)।

शिक्षा आयोग (1964-66)

1962 में देश में पहली बार दिल्ली विश्वविद्यालय स्तर पर पत्राचार पाठ्यक्रम शुरू किया था। हालांकि विश्वविद्यालय स्तर पर दूरस्थ शिक्षा पत्राचार पाठ्यक्रम के बारे में सर्वप्रथम स्पष्ट और औपचारिक अनुशंसा शिक्षा आयोग (1964-66) ने की, जिसमें कहा गया किः

> *उन करोड़ों लोगों के लिए काई-न-कोई शिक्षा का माध्यम अवश्य हो जो अपने प्रयास से और अपनी सुविधा के समय में पढ़ कर शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं। हमारे विचार में इसका उपयुक्त तरीका पत्राचार या गृह-अध्ययन पाठ्यक्रम ही हो सकता है।*
>
> *पत्राचार या गृह-अध्ययन पाठ्यक्रम एक आजमाई हुई या पूर्व परीक्षित तकनीक है। संयुक्त राज्य अमरीका, स्वीडन, सोवियत संघ, जापान और आस्ट्रेलिया जैसे देशों में लम्बे समय तक के अनुभव और दिल्ली विश्वविद्यालय के सीमित अनुभव के आधार पर इस प्रणाली की व्यापक अद्देश्यों की प्राप्ति के लिए प्रयोग करने की हम सिफारिश करते हैं। पत्राचार शिक्षा पद्धति को किसी भी प्रकार से नियमित स्कूल और कॉलेज शिक्षा पद्धति से घटिया मानने का कोई आधार नही है। विदेशों के अनुभव और भारत में किए गए परीक्षण के आधार पर जो परिणाम प्राप्त हुए हैं उनसे पत्राचार शिक्षा पद्धति को बल मिला है।*

शिक्षा आयोग ने आगे कहा है :

"यह स्पष्ट है कि पत्राचार पाठ्यक्रम की व्यवस्था केवल विश्वविद्यालयों में ही नहीं होनी चाहिए। पत्राचार पाठ्यक्रम की व्यवस्था भारत सरकार के कृषि, उद्योग, सहकारिता और स्वास्थ्य विभागों के स्तिार सेवा विकास विभागों में भी हो। ऐसा करना शिक्षित और नए साक्षर लोगों को उन्नत तकनीक की जानकारी देने के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।"

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1968)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1968) में शिक्षा आयोग की सिफारिशों को इन शब्दों में समाविष्ट कर लिया गया :

".... (13) अंशकालिक शिक्षा और पत्राचार पाठ्यक्रम : विश्वविद्यालय स्तर पर अंशकालिक शिक्षा और पत्राचार पाठ्यक्रम बड़े पैमाने पर विकसित किए जाएँ। ऐसी सुविधाएँ माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों, अध्यापकों तथा कृषि एवं औद्योगिक और अन्य श्रमिकों के लिए भी उपलब्ध की जाएँ। अंशकालिक और पत्राचार पाठ्यक्रम को वही दर्जा दिया जाए जो पूर्णकालिक शिक्षा को दिया जाता है। ऐसी सुविधाएँ मिल जाने पर स्कूल छोड़ने के तुरंत बाद जीवनोपयोगी कार्य शुरू करना सरल हो जाएगा। साथ ही शिक्षा को भी प्रोत्साहन मिलेगा और ऐसे बहुत से लोगों को शिक्षा के अवसर मिल जाएँगे जो आगे बढ़ना तो चाहते हैं परन्तु पूर्णकालिक शिक्षा के अभाव में ऐसा नहीं कर पाए।"

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की निर्देशिका

1974 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने दूरस्थ शिक्षा/पत्राचार पाठ्यक्रम संबंधी मार्गदर्शक सिद्धांत जारी किए। आयोग ने कहा कि :

पत्राचार पाठ्यक्रम वाली शिक्षा का उद्देश्य शिक्षा के प्रति अभिरूचि रखने वाले ऐसे बहुत से लोगों को वैकल्पिक शिक्षा-साधन उपलब्ध कराना है जो अपने ज्ञान को और व्यावसायिक योग्यता को बढ़ाना चाहते हैं। पत्राचार पाठ्यक्रम जिनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करेंगे, वे हैं : (क) उन विद्यार्थियों की, जिन्होंने आर्थिक व अन्य कारणों से औपचारिक शिक्षा छोड़ दी है; (ख) उन विद्यार्थियों की, जो भैगोलिक दृष्टि से दूर-दराज के क्षेत्रों में बसे हुए हैं; (ग) उन विद्यार्थियों की, जिन्होंने अभिरूचि व अभिप्रेरणा के अभाव में पहले अपनी शिक्षा छोड़ दी परन्तु बाद में फिर अभिप्रेरित हो गए; (घ) उन विद्यार्थियों की, जिन्हें पर्याप्त योग्यता होने के बावजूद या तो नियमित कॉलेजों में प्रवेश नहीं मिल पाया या वे जो नियमित कॉलेज या विश्वविद्यालय में प्रवेश लेना नहीं चाहते; (ङ) उन विद्यार्थियों की, जो शिक्षा को जीवन पर्यन्त चलने वाली कार्यकलाप मानते हैं और आगे अद्यतन ज्ञान को प्राप्त करना चाहते हैं।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना

संसद द्वारा पारित एक अधिनियम के अधीन इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना 1985 में हुई। इसके उद्देश्यों में एक महत्वपूर्ण उद्देश्य यह रखा गया कि यह विश्वविद्यालय दूरस्थ शिक्षा के स्तर को बनाए रखने में भी अपनी अतिरिक्त भूमिका का निर्वाह करे। स्पष्ट शब्दों में कहा गया है कि "इस विश्वविद्यालय का यह कर्त्तव्य होगा कि मुक्त विश्वविद्यालय और दूरस्थ शिक्षा प्रणाली की प्रसार व वृद्धि के लिए तथा इस प्रणाली

में अध्यापन, मूल्यांकन तथा शोध के स्तरों का निर्धारण करने के लिए, जिन्हें वह ठीक मानता हो ऐसे सभी कदम उठाए तथा इस विशिष्ट प्रकार्य के निष्पादन के लिए विश्वविद्यालय के पास ऐसी शक्तियाँ होंगी जिसमें कुछ विशिष्ट कॉलेजों या किसी अन्य विश्वविद्यालय अथवा उच्च शिक्षा की किसी संस्था को अनुदान आवंटित करना और उसका संवितरण करना भी सम्मिलित है। यह आवश्यक नहीं कि ये कॉलेज या संस्थाएँ इसके विशेषाधिकार में आती ही हों।"

नई शिक्षा नीति (1986)

1986 में, भारत सरकार ने नई शिक्षा नीति की घोषणा की जिसमें दूरस्थ शिक्षा और मुक्त अधिगम प्रणाली पर विशेष बल दिया गया। नई शिक्षा नीति के कुछ उद्धरण दिए जा रहे हैं :

पैरा 3.11 शिक्षा प्रक्रिया का महत्वपूर्ण उद्देश्य जीवन पर्यन्त शिक्षा है। इसकी पूर्वधारणा सार्विक साक्षरता है। युवाओं, गृहिणियों, कृषि में लगे लोगों, औद्योगिक श्रमिकों और व्यावसायिकों को उनकी पसंद की शिक्षा के अवसर उनके लिए अनुकूल गति से उपलब्ध कराना। इस प्रकार भविष्य में मुक्त और दूरस्थ अधिगम पर बल होगा।

पैरा 4.13 प्रौढ़ और सतत् शिक्षा का एक वृहत कार्यक्रम विभिन्न भागों और साधनों के द्वारा कार्यान्वित करना होगा जिसमें ....(9) दूरस्थ अधिगम कार्यक्रम शामिल करना होगा।

पैरा 5.35 शिक्षा के लोकतांत्रिकरण के साधन के रूप में उच्च शिक्षा के अवसरों को बढ़ाने के दृष्टिकोण से मुक्त विश्वविद्यालय प्रणाली का आरंभ किया गया।

पैरा 5.36 इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति के लिए 1985 में स्थापित इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय को और अधिक सबल बनाया जाएगा।

पैरा 5.37 यह शक्तिशाली उपकरण ध्यानपूर्वक तथा सावधानी सहित विकसित करना होगा।

पैरा 6.6 परंपरागत पाठ्यक्रमों को वर्तमान प्रवेश संबंधी कठोर शर्तों के मद्दे नजर, जिसके कारण बहुत सारे व्यक्ति तकनीकी तथा प्रबंधकीय शिक्षा से वंचित रह जाते हैं, दूरस्थ अधिगम प्रक्रिया के माध्यम से कार्यक्रम चलाए जाएंगे जिनमें दूर संचार माध्यमों का उपयोग किया जाएगा। तकनीकी एवं प्रबंधकीय शिक्षा कार्यक्रम, जिनमें बहु-तकनीकी शिक्षा सम्मिलित होगी, क्रेडिटों के आधार पर एक लचीले माड्यूलर ढांचे के रूप में होंगे तथा इनमें बहु-बिंदु प्रवेश (multipoint entry) का प्रावधान भी होगा। एक सुदृढ़ निर्देशन व परामर्श सेवा भी प्रदान की जाएगी।

पैरा 8.10 आधुनिक संचार प्रौद्योगिकियों में यह क्षमता है कि ये पूर्वदशकों के अनुभव की सामने आई विकास प्रक्रिया की कई अवस्थाओं तथा अनुक्रमों को पार कर सकती हैं। समय और स्थान की बाधाएँ बिल्कुल नियंत्रित हो जाती हैं। सरंचनात्मक दोहरेपन से बचने के लिए, आधुनिक शैक्षिक प्रौद्योगिकी तुलनात्मक समृद्धि और तैयार उपलब्धता के क्षेत्रों के साथ-साथ दूर क्षेत्रों में रहने वाले और वंचित वर्गों के लाभार्थियों तक पहुँचना होगा।

दूरस्थ शिक्षा परिषद की स्थापना

मई 1991 में, इग्नू के प्रबन्धन बोर्ड ने दूरस्थ शिक्षा परिषद की स्थापना के लिए एक संविधि (Statute) पारित की। इसका उद्देश्य मुक्त विश्वविद्यालय और दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था की प्रसार वृद्धि करने, समन्वयन करने और स्तर को बनाए रखना था जो इग्नू का एक मुख्य उद्देश्य है। दूरस्थ शिक्षा परिषद को सौंपे गए कार्य है :

i) मुक्त विश्वविद्यालय और दूरस्थ शिक्षा प्रणाली की प्रसार वृद्धि करना, समन्वयन करना और स्तर निर्धारण करना,

ii) मुक्त विश्वविद्यालयों और दूर शिक्षा संस्थाओं का एक नेटवर्क स्थापित करना,

iii) उन प्राथमिकता देने योग्य क्षेत्रों की पहचान करना जिनमें दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों की व्यवस्था की जानी चाहिए और उन्हें संगठित करने में सहायता देना,

iv) अध्येता-समूहों और उनके लिए संगठित किए जाने वाले कार्यक्रमों के प्रकार और स्वरूपों की पहचान करना।

v) दूरस्थ शिक्षा कार्मिकों के लिए प्रशिक्षण की व्यवस्था करना, तथा

vi) मुक्त विश्वविद्यालयों और दूरस्थ शिक्षा संस्थाओं के विकास में और विशिष्ट परियोजनाएँ चलाने में वित्तीय सहायता की व्यवस्था करना।

संशोधित राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1992)

भारत सरकार ने 1992 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) का संशोधन किया। दूरस्थ शिक्षा के संदर्भ में संशोधित राष्ट्रीय शिक्षा नीति की विशिष्ट सिफारिशें निम्नलिखित हैं :

पैरा 4.13 नवसाक्षरों और उन युवाओं के लिए जिन्होंने प्राथमिक शिक्षा तो प्राप्त कर ली है पर जो चाहते हैं कि अपने साक्षरता कौशलों को बनाए रखें, उन्हे उन्नत कर सकें तथा अपने जीवन-स्तर एवं कार्य करने की दशा सुधारें, उनके लिए साक्षरता के बाद के और सतत शिक्षा के व्यापक कार्यक्रम उपलब्ध कराने होंगे। इन कार्यक्रमों में सम्मिलित हैं.... (9) दूरस्थ अधिगम कार्यक्रम।

पैरा 5.35 शिक्षा के लोकतांत्रीकरण के साधन के रूप में और इसे एक जीवन-पर्यन्त प्रक्रिया का रूप देने के लिए तथा उच्च शिक्षा के अवसरों को बढ़ाने के उद्देश्य से मुक्त अधिगम प्रणाली का आरंभ किया गया है। हमारे देश के नागरिकों के लिए, जिनमें व्यावसायिक धारा में अध्ययनरत व्यक्ति भी सम्मिलत हैं, मुक्त अधिगम प्रणाली का लचीलापन तथा नवीनता विशेष रूप से उपयुक्त हैं।

पैरा 5.36 इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय का, जो 1985 में इन्हीं उद्देश्यों से स्थापित किया गया था, सबल किया जाएगा। राज्यों में जो मुक्त विश्वविद्यालय स्थापित किए जाएँगे, इसमें इग्नू सहयोग देगा।

पैरा 5.37 राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय को सबल किया जाएगा और देश के सभी भागों में मुक्त अधिगम की सुविधाएँ धीरे-धीरे माध्यमिक स्तर पर बढ़ाया जाएगा।

दूरस्थ शिक्षा पर शिक्षा के केन्द्रीय सलाहकार बोर्ड की समिति

1995 में, शिक्षा के केन्द्रीय सलाहकार बोर्ड की समिति ने दूरस्थ शिक्षा के अन्तर्गत प्रत्येक राज्य में एक मुक्त विश्वविद्यालय स्थापित करने की सिफारिश की। इसने यह भी प्रस्ताव रखा कि मुक्त विश्वविद्यालय का एक नेटवर्क बिछाया जाए, जिसका मुख्य उद्देश्य हो :

संसाधनों की साझेदारी, कार्यों की पुनरावृत्ति को कम से कम करना, एक समान स्तर निश्चित करना, विद्यार्थियों की गतिशीलता को प्रोत्साहन देना और प्रभावी विद्यार्थी सहायता सेवा की व्यवस्था करना। समिति ने अपनी अनुशंसाओं में यह प्रस्तावित किया कि मुक्त विश्वविद्यालय का नेटवर्क निम्नलिखित विचारों के आधार पर होना चाहिए।

i) विभिन्न संस्थाओं द्वारा बनाए और प्रसारित किए जाने वाले कार्यक्रमों में पुनरावृत्ति न हो।

ii) किसी संस्था द्वारा बनाया गया अच्छा कार्यक्रम सभी मुक्त विश्वविद्यालयों/संस्थानों को आपसी सहमति से निर्धारित शर्तों पर उपलब्ध होना चाहिए। प्रयोक्ता संस्थानों से ऐसे पाठ्यक्रमों के विकास पर हुए व्यय की पूर्ति की माँग नहीं की जानी चाहिए।

iii) वे संस्थान जो स्वयं उच्च स्तर का कार्यक्रम नहीं बना पाएँ, वो इस नेटवर्क के साधनों का उपयोग पाठ्यक्रमों के संयुक्त विकास के लिए करें।

iv) विभिन्न राज्यों के चुने हुए संस्थानों को चाहिए कि वे नेटवर्क के पाठ्यक्रमों और कार्यक्रमों का अनुवाद अपनी-अपनी विभिन्न भाषाओं में करें और उन विद्यार्थियों का पंजीयन करें जो स्थानीय भाषाओं में इन कार्यक्रमों का उपयोग करना चाहते हैं।

v) यदि बहुत सी संस्थाएँ उसके साथ कार्य करें तो विद्यार्थी सहायता सेवा बहुत प्रभावी तथा विकेंद्रीकृत आधार पर आयोजित की जा सकती है। तब हर संस्था में कम अलग से विद्यार्थी सहायता सेवा की व्यवस्था किया जा सकता है, जिससे व्यय में भी कमी आएगी। इसी प्रकार संयुक्त अध्ययन केंद्रों और स्टूडियों सुविधाओं की साझेदारी की सम्भावनाओं की तलाश की जा सकती है।

vi) मुक्त विश्वविद्यालयों के कार्यक्रमों का प्रसार करते समय यह नेटवर्क औपचारिक शिक्षा से संबंधित संस्थानों को भी कार्यक्रम बनाने और नेटवर्क में सम्मिलित कर सकता है। ऐसी भागीदारी से परम्परागत पाठ्यक्रमों और दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों की दूरी समाप्त हो सकती है और इसका एक सुखद परिणाम यह होगा कि उच्च शिक्षा प्रणाली भी सार्थक रूप में पुनर्व्यवस्थित हो सकेगी।

vii) जब इस प्रकार का नेटवर्क बन जाएगा यह दायित्वों का विभाजन के द्वारा बड़ी संख्या में विद्यार्थियों का समर्थन कर सकता है (जैसे कार्यक्रमों के प्रकार, शिक्षा की माध्यम भाषाओं, भौगोलिक/क्षेत्रीय विभाजन आदि) (सी.ए.बी.ई.,1995)।

राष्ट्रीय ज्ञान आयोग (2006-2009)

अपनी संक्षिप्त अनुशंसाओं में राष्ट्रीय ज्ञान आयोग मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा तथा मुक्त शैक्षिक संसासधनों का बहुत महत्व दिया है।

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा तथा मुक्त शिक्षा संसाधन : मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा तथा मुक्त शिक्षा संसाधनों का विकास उच्च शिक्षा में विस्तार, उत्कृष्टता तथा समावेशन के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु अत्यावश्यक है। उच्च शिक्षा में नामांकित विद्यार्थियों के पाँचवां हिस्सा से अधिक मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा शाखा में है। दूरस्थ शिक्षा पर राष्ट्रीय ज्ञान आयोग की अनुशंसाएं एक राष्ट्रीय सूचना एवं संप्रेषण प्रौद्योगिकी की आधारभूत सरंचना, नियामक सरंचना का सुधार, वेब-आधारित सामान्य संसाधनों का विकास, एक क्रेडिट बैंक की स्थापना तथा एक राष्ट्रीय जाँच सेवा प्रदान करने पर केन्द्रित हैं। इसे संपूरित करने हेतु राष्ट्रीय ज्ञान आयोग ने यह भी अनुशंसा किया कि गुणवत्तापूर्ण विषय वस्तु का उत्पादन तथा वैश्विक मुक्त शिक्षा संसाधान के उत्थान में एक व्यापक ढंग से ध्यानाकृष्ट करने की आवश्यकता है। हमें सभी

सामग्री के मुक्त पहुँच को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है जैसे - शोध पत्र, पुस्तकें, पत्रिकाएँ, आदि (भारत सरकार, 2009, पृ.15)।

दूरस्थ शिक्षा ब्यूरो (DEB) 2012

उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, 29.12.2012 द्वारा निर्गत निर्देशों के अनुसार, उच्च शिक्षा में दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों के संबंध में नियामक कार्य अब विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के साथ संनिहित हैं। दूरस्थ शिक्षा परिषद जो पूर्व में दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों का नियंत्रक था, इसे भंग कर दिया गया है तथा सभी नियंत्रक कार्य विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा किया जा रहा है। (http://www.u9c.ac.in/debl) आप जानते हैं कि मई, 1992 में इग्नू का प्रबंधन की बोर्ड भारत में मुक्त विश्वविद्यालय तथा दूरस्थ शिक्षा पद्धति के प्रोत्साहन, समन्वयन तथा मानकों को बनाए रखने हेतु दूर शिक्षा परिषद की स्थापना हेतु संविधि बनाया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2016 – नई शिक्षा नीति विकास के लिए समिति का प्रतिवेदन

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2016 के व्यापक उद्देश्यों में एक वैश्विक संसार में शिक्षा एवं प्रौद्योगिकी का महत्व पर बल दिया तथा यह निम्नलिखित को व्यक्त करता है।

3.2.11 राष्ट्रीय शिक्षा नीति को वैश्विक, डिजिटल विश्व में प्रासंगिक रहने हेतु विद्यार्थियों को सुसज्जित एवं सक्षम करने का होना चाहिए।

यह मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम/शिक्षा की भूमिका, स्थान तथा महत्व पर भी बल देता है जो इस प्रकार है :

7.10.1 मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम (ODL), जो परंपरागत कक्षाकक्ष के एक वैकल्पिक पद्धति का विचार प्रस्तुत करता है, विश्व के बहुत से भागों में स्वीकार्य हो रहा है। यह दूरस्थ स्थान से अधिगम को नियमित रखने के साथ कार्य या नौकरी की नियमितता हेतु लचीलापन प्रदान करता है। अभी हाल में, भारत में ऑनलाइन प्रणाली में शामिल इग्नू तथा कुछ राज्य मुक्त विश्वविद्यालयों द्वारा प्रदान किए गए पाठ्यक्रमों; हाल के वर्षों में, कई संस्थान तथा विश्वविद्यालयों के साथ 'संस्थाएँ' विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु निर्मित हुए हैं।

7.10.8 सूचना प्रौद्योगिकी की क्षमता, सूचना प्रौद्योगिकी का जुड़ाव तथा मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा को प्रोत्साहित करने में अग्रणी विश्वविद्यालयों तथा संस्थाओं द्वारा व्यक्त विपुल रूचि के रूप में भारत की वर्तमान तथा संभावित शक्ति के कारण द्विपद्धतीय विश्वविद्यालयों तथा वृहत ऑनलाईन मुक्त पाठ्यक्रमों द्वारा मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम समुचित उत्कृष्टता के अनुरूप होना चाहिए।

7.10.9 मानव संसाधन विकास मंत्रालय तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग पहले ही एक भारतीय MOOC (Massive Open Online Coures) प्लेटफार्म "SWAYAM" को प्रायोजित करने हेतु अग्रसर हो चुके है।

7.10.10 मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम/वृहद मुक्त ऑनलाईन कार्यक्रमों की माँग भविष्य में बढ़ने वाली है, जिसके माध्यम से विद्यार्थियों की तरफ से तकनीक के समर्थन की आवश्यकता होगी, जो कि अभी भी सार्वजनिक मुद्दे हैं; यह अनुशंसित है कि इस क्षेत्र में विकास को ध्यानपूर्वक देखा जाना चाहिए।

उपरोक्त बिन्दु आने वाले वर्षों में भारत में मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम/शिक्षा के परिप्रेक्ष्य को प्रस्तुत करते हैं।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

3) भारत में दूरस्थ शिक्षा से संबंधित नीतिगत निर्णयों की गणना कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

1.3.2 भावी परिप्रेक्ष्य

भावी परिप्रेक्ष्य को समझने हेतु बारहवीं पंचवर्षीय योजना में निर्धारित निम्नलिखित लक्ष्यों पर एक नजर डालना बेहतर होगा (http://planningcommission.nic.in/plans/planed/fiveyr/12th/pdf/12fyp_vol3.pdf):

1) सार्वभौमिक पहुँच को सुनिश्चित करना तथा शिक्षा का अधिकार अधिनियम के पत्र तथा आत्मा को ध्यान में रखते हुए, 6 से 14 वर्ष के आयु समूह के सभी बच्चों को गुणवत्तापूर्ण निःशुल्क तथा अनिवार्य शिक्षा प्रदान करना।

2) प्रारंभिक स्तर पर उपस्थिति में सुधार करना तथा विद्यालय छोड़ने के दर को 10 प्रतिशत से कम करना एवं सभी राज्यों में सभी सामाजिक, आर्थिक तथा अल्पसंख्यक समूहों के लिए प्रारंभिक स्तर पर विद्यालय से बाहर के बच्चों का विद्यालय छोडने के दर को 2 प्रतिशत से नीचे करना।

3) शिक्षा के उच्च स्तर पर नामांकन में वृद्धि करना तथा माध्यमिक स्तर पर सकल नामांकन अनुपात को 90 प्रतिशत के उपर बढ़ाना एवं उच्च माध्यमिक स्तर पर 65 प्रतिशत से उपर बढ़ाना;

4) कुल साक्षरता दर को 80 प्रतिशत से उपर उठाना तथा साक्षरता में लैंगिक अंतर को 10 प्रतिशत से कम करना;

5) सभी वर्गों को विशेषकर शैक्षिक रूप से पिछड़े प्रखण्डों के प्राथमिक विद्यालयों में कम-से-कम एक वर्ष का सुसमर्थित/साधन संपन्न पूर्व विद्यालयी शिक्षा प्रदान करना; तथा

6) सभी बच्चों को दूसरी कक्षा तक पठन तथा गणना कौशल प्रदान कराना तथा कक्षा पाँच तक समीक्षात्मक सोच, अभिव्यक्ति तथा समस्या समाधान के कौशलों में प्रवीणता को सुनिश्चित करने के विशेष ध्यान के साथ विद्यालयी शिक्षा के सभी स्तरों पर स्वतंत्रापूर्वक मापन, पर्यवेक्षण तथा रिपोर्ट किए गए अधिगम परिणामों को बढ़ाना।

उपरोक्त के आलोक में, देश में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के मात्रात्मक विस्तार हेतु विशाल अवसर है। 21वीं सदी का आरंभ प्राथमिक, माध्यमिक तथा तृतीय (उच्च) स्तरों पर दूरस्थ शिक्षा के अद्वितीय विस्तार का साक्षी रहा। मुक्त विद्यालयों को प्रारंभिक स्तर से उच्च माध्यमिक स्तर तक अपने क्षेत्र को विस्तृत करना होगा। व्यावसायिक शिक्षा, कार्यात्मक साक्षरता तथा सतत शिक्षा उच्च वरीयता प्राप्त कर सकते हैं।

विश्वविद्यालय स्तरीय कार्यक्रम संक्रमण के चरण से गमन करेंगे। नामांकन का विस्तार दर संभवतः गति प्राप्त करेगा। उच्च शिक्षा व्यवस्था के कुल नामांकन का लगभग 50 प्रतिशत मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों द्वारा समायोजित किया जा सकता है। मात्रात्मक विस्तार पर बल देने के अतिरिक्त, मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था को गुणवतापूर्वक मजबूत किया जायेगा।

द्वितीय पद्धति संस्था स्तर पर पत्राचार शिक्षा प्रणाली को मल्टीमीडिया आधारित स्व-अधिगम सामग्रियों, विद्यार्थी सहायता सेवाएँ, टेलीकम्यूनिकेशन-आधारित मीडिया सुविधाओं को अपनाने, सतत मूल्यांकन व्यवस्था आदि जो मुक्त विश्वविद्यालयों में प्रचलित हैं पर अधिक बल देते हुए दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में रूपांतरित किया जाएगा।

चूँकि परंपरागत विश्वविद्यालय अपने मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों के आधार को विस्तृत करेंगे, प्रत्येक राज्य में मुक्त विश्वविद्यालयों का धीरे-धीरे विस्तार होगा। इग्नू पूरे देश में उच्च शिक्षा स्तर पर मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में एक प्रमुख भूमिका निभाता रहेगा। अखिल भारतीय स्तर पर एक सामूहिक उपागम बहुसंख्य नवाचारी एवं आवश्यकता-आधारित कार्यक्रमों को सम्मिलित करते हुए मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के संसाधनों को साझा करने में एक बड़ा महत्व प्राप्त करेगा तथा इस उपागम द्वारा कार्यक्रमों को आरंभ किया जाएगा।

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली की क्षमता को अग्रसर करने हेतु आगे मल्टीमीडिया आधारित-अधिगम के विस्तार हेतु विभिन्न मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थान, मीडिया संस्थान, दूरदर्शन, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन तथा कॉमनवेल्थ आफ लर्निंग के साथ सहयोग एवं समन्वय की वृद्धि होगी। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2016 शीघ्र ही एक वास्तविकता होगी तथा इसके क्रियान्वयन के उत्तरवर्ती प्रयासों से मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पद्धति को सबल करने की दिशा में सभी प्रयास प्रेरित करने की अपेक्षा है।

इस संदर्भ में, यह देखना आवश्यक है कि निम्नलिखित राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2016, (नई शिक्षा नीति विकास के लिए समिति की रिपोर्ट) के नीतिगत प्रावधान शिक्षा नीति निर्माण एवं क्रियान्वयन के क्रम में कौन-सी दिशा लेता है, क्योंकि भारत में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पर इसके लिए अधिक निर्धारक प्रभाव होगा।

8.5.13 यह समिति उल्लेख करती है कि दूरस्थ विद्यालयी शिक्षा का क्षेत्र आने वाले वर्षों में त्वरित विस्तार से गुजरेगा। निजी क्षेत्र पहले से ही इस क्षेत्र में आ चुका है, क्योंकि यह इसे एक वित्तीय अवसर के रूप में देखता है। यह आवश्यक है कि जैसे कि क्षेत्र का उद्‌भव होता है सरकार को घटनाओं के पश्चात ग्रहण नहीं करना चाहिए क्योंकि इसकी संस्थाएँ इसके आगे निकल चुकी हैं, जैसा उच्च शिक्षा के क्षेत्र में हो चुका था। यद्यपि, एक परिवर्तित राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान विद्यालयी सामग्री के प्रचार, परीक्षा संचालन आदि हेतु प्रमुख राष्ट्रीय अभिकरण हो सकता है (उच्च शिक्षा क्षेत्र में बहुत हद तक इग्नू की तरह), विकास की दिशा की जानकारी रखने, किसी सरकारी पहल पर विधिक स्वरूप प्रदान करने, समुचित निजी पहल की सहायता, बढ़ावा तथा दिशाबोध देने हेतु एक उपयुक्त नियंत्रक प्राधिकार को स्थापित करने हेतु कुछ विचार की आवश्यकता है।

8.5.14 समिति अनुशंसा करती है कि एक उत्क्रमित राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान या कोई अन्य प्राधिकृत संस्था को कक्षा 10 तथा कक्षा 12 के समकक्ष उपलब्धि को प्रमाणपत्र देने हेतु दो नवीन राष्ट्रीय परीक्षा प्रणाली को निर्मित करना चाहिए जिसे विश्वसनीय, भरोसामंद तथा निर्दिष्ट होना चाहिए। ये व्यवस्थाएँ विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति करेंगी, न केवल औपचारिक शिक्षा व्यवस्था द्वारा संबोधित यद्यपि विभिन्न

प्रकार के अंतिम उपयोगकर्ताओं द्वारा भी उपयोग किया जा सकता है। किसी भी स्थान पर उल्लेखित उच्च शिक्षा हेतु 10 लाख नए छात्रवृत्ति का प्रस्ताव उचित वर्गीकरण के साथ अभ्यर्थियों के चयन में एक आधार चिन्ह के रूप में कक्षा 12 परीक्षा का उपयोग कर सकता है। यह भी प्रस्तावित है कि कक्षा 12 परीक्षा प्रणाली कक्षा 10 परीक्षा के पश्चात यथासंभव निर्मित किया जा सकता है।

8.3.2 विश्वविद्यालय अनुदान आयोग वर्तमान में तीन प्राथमिक कार्य कर रहा है : यह भारत में विश्वविद्यालयों/कॉलेजों को अनुदान के वितरण का देखरेख करता है; दूसरा, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग 80,000 से अधिक लाभार्थियों को वार्षिक छात्रवृत्ति प्रदान करता है; तथा इसका तीसरा मुख्य कार्य विश्वविद्यालयों को मान्यता देना तथा देश में विश्वविद्यालयों तथा कॉलेजों द्वारा इसके निर्देशों हेतु सुनिश्चयन की निगरानी करना है।

8.3.3 यद्यपि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग वर्षों से कॉलेजों तथा विश्वविद्यालयों की उत्तम गुणवत्ता तथा प्रभावी प्रबंधन की प्राप्ति हेतु कई निर्देशक नियमावली निर्गत किया है, यह उन निर्देशों के प्रभावी क्रियान्वयन की सुनिश्चितता हेतु सक्षम नहीं रहा है। समिति को सूचित किया गया कि संस्थानों एवं पाठ्यक्रमों के अनुमोदन प्रदान करने में व्यापक अनियमितताएँ थीं। विशाल संख्या में कॉलेजों/ विश्वविद्यालयों द्वारा दिए जा रहे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के विषय में गंभीर सरोकार हैं; उच्च शिक्षा संस्थानों में शिक्षा के मानकों का पर्यवेक्षण विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का उत्तरदायित्व है तथा यह सुनिश्चित करने में यह सफल नहीं हुआ है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की विश्वसनीयता विशाल संख्या में निम्न मानक वाले कॉलेजों तथा डीम्ड विश्वविद्यालयों को दिए अनुमोदनों से गंभीरतापूर्वक कम हुआ है।

8.3.4 एक विशेषज्ञ समिति हाल में ही विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की अतीत, वर्तमान तथा भविष्य की आद्‌योपांत भूमिका का परीक्षण किया, जिसका रिपोर्ट मंत्रालय के परीक्षण के अधीन है। यह माना जाता है कि यह रिपोर्ट इस निष्कर्ष पर पहुँचा है कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के पास उच्च शिक्षा क्षेत्र में एक प्रभावी नियंत्रण बल के रूप में आवश्यक गुणवत्ता के पर्याप्त कर्मचारियों की संख्या नहीं है। यह अनुशंसा की जाती है कि चूँकि एक नया व्यापक उच्च शिक्षा प्रबंधन विधि अधिनियमित है, जिसको समिति सुझाव देती है कि इसे शीघ्र होना चाहिए, यू.जी.सी. अधिनियम को समाप्त करना चाहिए।

8.3.5 यह समिति कहीं पर अनुशंसा की है कि छात्रवृत्ति के भुगतान हेतु एक पृथक व्यवस्था होनी चाहिए। यू.जी.सी को पुनर्निर्मित, पर्याप्त लचीला बनाया जा सकता है तथा बिना किसी प्रोन्नति या नियंत्रक कार्य किए प्रस्तावित राष्ट्रीय उच्च शिक्षा छात्रवृत्ति कार्यक्रम के प्रशासन हेतु केन्द्र बिन्दु हो सकता है।

अब हम दूरस्थ शिक्षा के औचित्य पर विमर्श करेंगे।

1.4 दूरस्थ शिक्षा का औचित्य

एक कल्याणकारी राज्य के रूप में, भारत सरकार भारतीय संविधान के अनुच्छेद 45 के अनुसार 14 वर्ष के आयु समूह तक के सभी बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा देने के लिए बाध्य है। इस बाध्यता की पूर्ति करने हेतु कई कार्यक्रम जैसे प्रारंभिक शिक्षा का सार्वभौमिकरण, सभी के लिए शिक्षा आदि आरंभ किए गए हैं। यद्यपि, स्थिति संतोषजनक नहीं है। यहाँ तक कि घटनाक्रम जैसे संविधान का 86वाँ संशोधन 2002 जो अनुच्छेद 21,

45 तथा 51A को संशोधित किया तथा बच्चों के निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा के अधिकार अधिनियम 2009, जो शिक्षा का अधिकार अधिनियम से लोकप्रिय है की क्रियाशीलता का मार्ग प्रशस्त किया। यह भी अपनी निर्धारित तिथि 31 मार्च, 2015 तक संतोषजनक परिणाम नहीं दिया। इसे आगे बढ़ाया गया तथा ऐसे विस्तार भविष्य में भी हो सकते हैं। फिर भी, भारत में शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति का अच्छा पक्ष है कि 1951-2011 के दौरान साक्षरता दर में छः गुणा 12 प्रतिशत से 74 प्रतिशत की वृद्धि हुई तथा प्राथमिक विद्यालय स्तर पर बच्चों का नामांकन सार्वभौगिक है। यद्यपि कई दशकों में साक्षरता दर में वृद्धि रही है तथा राष्ट्रीय साक्षरता दर 75 के स्तर के निकट पहुँची है, स्थिति अभी भी 272,290,015 असाक्षरों के साथ भयावह है। इस प्रकार, असाक्षरों की इसकी गणना जो विश्व में सबसे अधिक (यानी एक तिहाई से अधिक, विद्यालय शिक्षा के स्तर पर छोड़ने का दर तथा शिक्षा की गुणवत्ता भारत के लिए गंभीर चिंता का भी विषय है। उच्च शिक्षा क्षेत्र में भी स्थिति भिन्न नहीं हैं। वर्षों से उच्च शिक्षा की माँग में वृद्धि रही है। अधिकांश लोग विभिन्न कारणों से उच्च शिक्षा के पहुँच के लिए सक्षम नही हैं। उक्त आयु समूह के केवल 10 प्रतिशत लोगों का उच्च शिक्षा में पहुंच है। इसके अतिरिक्त, शिक्षा के सभी संस्थानों में शिक्षा की गुणवत्ता एक समान नहीं है। अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुसार बहुत कम उत्कृष्ट संस्थान हैं जबकि हम गुणवत्ता की बात करते हैं तो अधिकांश संस्थान पिछड़े हैं। परंतु, विगत समय में स्थिति खराब हुई है जब विश्व के उत्कृष्ट 500 विश्वविद्यालयों में भारत का एक भी उच्च शिक्षा संस्थान नहीं आ पाया, यद्यपि इसके बाद भी भारतीय विज्ञान संस्थान, बैंगलोर विश्व के विश्वविद्यालयों की शैक्षिक कोटि 2013 द्वारा कोटि निर्धारण में 300 से 400 के बीच कहीं आया। देश में उपलब्ध कई शैक्षिक अवसर अप्रासंगिक पाठ्यचर्या के कारण अनुपयोगी हैं, जिसकी इसके सहायता करने वाली जनसंख्या के लिए कोई उपयोगिता नहीं है। इस संदर्भ में, तीन विशिष्ट शीर्षकों के अंतर्गत दूरस्थ शिक्षा के औचित्य/आवश्यकता पर विमर्श किया जाए।

- बढ़ती संख्या तथा शिक्षा के सीमित पहुँच की समस्या
- शिक्षा की गुणवत्ता
- शिक्षा की प्रासंगिकता

1.4.1 शिक्षा की पहुँच

देश हाल के वर्षों में शिक्षा की पहुँच के सुधार में महत्वपूर्ण प्रगति किया है। कामकाजी आबादी के (15 वर्ष की आयु के ऊपर) विद्यालयी शिक्षा के औसत वर्ष 2000 में 4.19 वर्ष से 2010 में 5.12 वर्ष तक बढ़ा है। प्रौद्योगिक शिक्षा चरण में बच्चों का नामांकन अब सार्वभौमिक स्तरों पर पहुंच गया है। प्राथमिक शिक्षा स्तर पर बच्चों का नामांकन की वृद्धि 1990 के दशक में 4.3 प्रतिशत प्रतिवर्ष से 2009-10 के अंत में 6.27 प्रतिशत प्रति वर्ष तक बढ़ा। युवा साक्षरता 1983 में 60 प्रतिशत से 2009-10 में 91 प्रतिशत तक बढ़ा एवं वयस्क साक्षरता 2001 में 64.8 प्रतिशत से 2011 में 74 प्रतिशत तक सुधार हुआ (भारत सरकार, 2013, पृ.47-48)।

शिक्षा की पहुँच के मुद्दे की परीक्षण किया जाए। वयस्क साक्षरता दर 1991-2011 के मध्य 52 प्रतिशत, 74 प्रतिशत तक बढ़ा। साक्षर लोगों की प्रतिशतता के रूप में, यद्यपि राष्ट्रीय औसत 74 है, महिला साक्षरता दर बिहार में 51 प्रतिशत तथा राजस्थान में 52 प्रतिशत एवं केरल में 92 प्रतिशत की एक व्यापक भौगोलिक विषमता रही है। इस प्रकार लैंगिक विषमता अधिक सचेतक है क्योंकि महिला साक्षरता दर 65.5 प्रतिशत पुरूष साक्षरता दर 84.1 प्रतिशत की तुलना में कम है। (तालिका 1.1 देखिए)

तालिका 1.1 : राज्य एवं केन्द्र शासित प्रदेशों के अनुसार साक्षरता दर : 1991-2011

क्र. सं.	राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश	साक्षरता दर								
		1991			2001			2011		
		महिला	पुरुष	कुल	महिला	पुरुष	कुल	महिला	पुरुष	कुल
1	अंडमान एवं निकोबार द्वीप	65.5	79.0	73.0	75.2	86.3	81.3	82.4	90.3	86.6
2	आंध्रप्रदेश	32.7	55.1	44.1	50.4	70.3	60.5	59.1	74.9	67.0
3	अरुणाचल प्रदेश	29.7	51.5	41.6	43.5	63.8	54.3	57.7	72.6	65.4
4	असम	43.0	61.9	52.9	54.6	71.3	63.3	66.3	77.8	72.2
5	बिहार	22.0	51.4	37.5	33.1	59.7	47.0	51.5	71.2	61.8
6	चण्डीगढ़	72.3	82.0	77.8	76.5	86.1	81.9	81.2	90.0	86.0
7	छत्तीसगढ़	27.5	58.1	42.9	51.9	77.4	64.7	60.2	80.3	70.3
8	दादर एवं नगर हवेली	27.0	53.6	40.7	43.0	73.3	60.0	64.3	85.2	76.2
9	दमन एवं दीव	59.4	82.7	71.2	70.4	88.4	81.1	79.5	91.5	87.1
10	दिल्ली	67.0	82.0	75.3	74.7	87.3	81.7	80.8	90.9	86.2
11	गोवा	67.1	83.6	75.5	75.4	88.4	82.0	84.7	92.6	88.7
12	गुजरात	48.6	73.1	61.3	58.6	80.5	70.0	69.7	85.8	78.0
13	हरियाणा	40.5	69.1	55.9	45.7	78.5	67.9	65.9	84.1	75.6
14	हिमाचल प्रदेश	52.1	75.4	63.9	67.4	85.4	76.5	75.9	89.5	82.8
15	जम्मू एवं कश्मीर	NA	NA	NA	43.0	66.6	55.5	56.4	76.8	67.2
16	झारखण्ड	-	-	-	38.9	67.3	53.6	55.4	76.8	66.4
17	कर्नाटक	44.3	67.3	56.0	56.9	76.1	66.6	68.1	82.5	75.4
18	केरल	86.1	93.6	89.8	87.9	94.2	90.9	92.1	96.1	94.0
19	लक्षद्वीप	72.9	90.2	81.8	80.5	92.5	86.7	87.9	95.6	91.8
20	मध्यप्रदेश	29.4	58.5	44.7	50.3	76.1	63.7	59.2	78.7	69.3
21	महाराष्ट्र	52.3	76.6	64.9	67.0	86.0	76.9	75.9	88.4	82.3
22	मणिपुर	47.6	71.6	59.9	60.5	80.3	70.5	72.4	86.1	79.2
23	मेघालय	44.9	53.1	49.1	59.6	65.4	62.6	72.9	76.0	74.4
24	मिजोरम	78.6	85.6	82.27	86.8	90.7	88.8	89.3	93.3	91.3
25	नागालैण्ड	54.8	67.6	61.7	61.5	71.2	66.6	76.1	82.8	79.6
26	ओडिसा	34.7	63.1	49.1	50.5	75.4	63.1	64.0	81.6	72.9
27	पुडुचेरी	65.6	83.7	74.7	73.9	88.6	81.2	80.7	91.3	85.8
28	पंजाब	50.4	65.7	58.5	63.4	75.2	69.7	70.7	80.4	75.8

29	राजस्थान	20.4	55.0	38.6	43.9	75.7	60.4	52.1	79.2	66.1
30	सिक्किम	46.7	65.7	56.9	60.4	76.0	68.8	75.6	86.6	81.4
31	तमिलनाडु	51.3	73.8	62.7	64.4	82.4	73.5	73.4	86.8	80.1
32	त्रिपुरा	49.7	70.6	60.4	64.9	81.0	73.2	82.7	91.5	87.2
33	उत्तरप्रदेश	24.4	54.8	40.7	42.2	68.8	56.3	57.2	77.3	67.7
34	उत्तराखण्ड	41.6	72.8	57.8	59.6	83.3	71.6	70.0	87.4	78.8
35	पश्चिम बंगाल	46.6	67.8	57.7	59.6	77.0	68.6	70.5	81.7	76.3
	भारत	**39.3**	**64.1**	**52.2**	**53.7**	**75.3**	**64.8**	**65.5**	**82.1**	**74.0**

नोट : 1) साक्षरता दर 7 वर्ष की आयु की तथा इसके उपर की जनसंख्या से संबंधित है।

2) 1991 की साक्षरता दर में जम्मू कश्मीर सम्मिलित नहीं है तथा 2002 एवं 2011 में मणिपुर के सेनापत जिला के माओ माराम, पाओमाता तथा पुरूल तहसील सम्मिलित नहीं हैं।

स्रोतः महापंजीयक कार्यालय, भारत (http://mospi.nic/mospi_new/uload/man_and_women/chapter%203.pdf)।

जैसा कि उपर उल्लेखित है, भारत कुल वैश्विक असाक्षरों का 37 प्रतिशत (287 मिलियन) असाक्षर वयस्कों की विशाल जनसंख्या का गृह है। विद्यालयी बाह्य बच्चों का 47.78 प्रतिशत लड़कियाँ हैं। अगली जनगणना में वे असाक्षर महिलाओं के रूप में सम्मिलित की जाएँगी तब यह उनके बच्चों की शिक्षा पर एक तरंगित प्रभाव होगा। भारत महिला साक्षरता दर में 135 देशों में 123 वाँ स्थान पर है। विद्यालय शिक्षकों की कुल संख्या में महिलाओं का प्रतिशत 1991 में 29.3 प्रतिशत से 2015-14 में 47.16 प्रतिशत तक पहुँचा है (https://www. oxfamindia. org/education/10-facts-on-illiteracy-in-India-that-you-must-know)।

भारत में 1.4 मिलियन विद्यालय तथा 7.7 मिलियन शिक्षक हैं। 98 प्रतिशत बस्तियों में एक किलोमीटर के अन्दर एक प्राथमिक विद्यालय (कक्षा I-V) है एवं 92 प्रतिशत बस्तियों में पैदल दूरी पर तीन किलोमीटर के अन्दर एक उच्च प्राथमिक विद्यालय (कक्षा VI-VIII) है (https://www.brokkings.edu/opinions/primary-education-in-india-progress-and-challenges)। अद्यतन U-DISE आंकड़ा (NUEPA, 2016) के अनुसार सभी स्तरों पर 1,522,346 विद्यालय हैं।

इसके अतिरिक्त, विद्यालयों में बच्चों का रूकावट अभी भी एक मुद्दा है तथा विद्यालय छोडने का दर उच्च होना जारी है। राष्ट्रीय स्तर पर प्राथमिक विद्यालय के पाँच वर्ष पूर्ण करने के पूर्व 29 प्रतिशत बच्चे विद्यालय छोड़ देते हैं तथा 43 प्रतिशत उच्च प्राथमिक विद्यालय पूर्ण करने के पहले विद्यालय छोड़ देते हैं। उच्च विद्यालय पूर्ण करने का प्रतिशत 42 है (अर्थात इस स्तर को पूर्ण किए बिना 58 प्रतिशत विद्यालय छोड़ते है)। यह भारत को 6 से 11 वर्ष के 1.4 मिलियन विद्यालय नहीं जाने वाले बच्चों की संख्या के साथ प्राथमिक विद्यालय की आयु के विद्यालय के बाहर के बच्चों के शीर्ष पाँच राष्ट्रों में स्थापित करता है। केवल 53 प्रतिशत विद्यालयों में महिला शौचालय तथा 74 प्रतिशत में पेयजल की सुविधा है (https://www.brookings.edu/opinions/primary-education-in-india-progress-and-challenges/)।

ये सभी विद्यालयी शिक्षा के पर्याप्त पहुँच की कमी को दर्शाते हैं। यह मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा द्वारा विद्यालय शिक्षा की माँग करते हैं।

उच्च शिक्षा की पहुँच

उच्च शिक्षा का क्षेत्र स्वाधीनता के समय से विश्वविद्यालयों/विश्वविद्यालय स्तरीय संस्थान तथा कॉलेजों की संख्या में जबरदस्त वृद्धि का साक्षी रहा है। विश्वविद्यालयों की संख्या 1950 में 20 से 2014 में 677 तक 34 गुणा बढ़ी है। इस क्षेत्र में 45 केन्द्रीय विश्वविद्यालय जिसमें 40 मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अंतर्गत हैं, 318 राज्य विश्वविद्यालय, 185 राज्य निजी विश्वविद्यालय, 129 डीम्ड विश्वविद्यालय, राष्ट्रीय महत्व के 51 संस्थान मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन (आई आई टी.-16, एन आई टी-30, तथा आई आई एस ई आर-5) तथा चार संस्थाओं (विभिन्न राज्य, विधान सभाओं द्वारा स्थापित हैं)। कॉलेजों की संख्या 1950 में केवल 500 से बढ़कर 31 मार्च 2013 तक 37,204 पहुंची, अर्थात 74 गुणा की बहुस्तरीय वृद्धि दर्ज की गई है (https://www.brookings.edu/opinions/primary-education-in-india-progress-and-challenges/)।

भारत में उच्च शिक्षा निःसंदेह एक महत्वपूर्ण विस्तार का गवाह रहा है। संस्थानों की संख्या, विद्यार्थियों का नामांकन तथा सकल नामांकन अनुपात भी बढ़ा है। शिक्षा पर व्यय भी वर्षोंपरांत बढ़ा है। परंतु, यह सकल राष्ट्रीय उत्पाद के व्यय के प्रतिशत के रूप में नही है। उदाहरण के लिए, सकल राष्ट्रीय उत्पाद के प्रतिशत के रूप में शिक्षा पर सरकारी व्यय भारत में विकसित एवं विकासशील देशों की तुलना में कम (4 प्रतिशत) है (सारिणी 1.2 देखिए)।

सारिणी 1.2 : सकल राष्ट्रीय उत्पाद के प्रतिशत के रूप में शिक्षा पर सरकारी व्यय का रूझान (विकसित तथा विकासशील राष्ट्र बनाम भारत)

देश	विकसित					देश	विकासशील				
	1985	1996	1999	2006	2008		1985	1996	1999	2006	2008
कनाडा	6.6	7.0	6.0	5.1	5.0	मैक्सिको	3.9	4.9	4.5	5.6	4.9
यूएसए	4.9	5.4	5.0	5.3	5.5	मलेसिया	6.6	5.2	6.1	6.6	4.6
जापान	4.9	3.6	3.5	3.5	3.4	कोलंबिया	2.9	4.4	4.5	4.9	4.1
आस्ट्रेलिया	5.6	3.6	5.1	4.7	4.9	थाईलैण्ड	3.8	4.1	5.1	4.3	6.3
यूके	4.9	5.4	4.6	5.5	5.5	रूस गणराज्य	3.2	4.1	….	3.9	4.0
फ्रांस	5.8	6.1	5.7	5.7	5.5	ब्राजील	3.8	5.2	4.4	4.1	5.3
फिनलैण्ड	5.4	7.6	6.3	6.4	5.9	जमैका	5.7	5.2	….	5.6	6.6
जर्मनी	5.4	4.8	4.5	4.6	4.4	जांबिया	4.7	2.2	2.0	2.1	1.5
डेनमार्क	7.2	8.2	8.2	8.3	7.8	बांग्लादेश	1.9	2.9	2.3	2.6	2.2
कोरिया गण.	4.5	3.7	3.8	4.6	4.2	पाकिस्तान	2.5	3.0	2.6	2.7	2.9
नीदरलैण्ड	6.4	5.2	4.8	5.2	5.4	दक्षिण अफ्रीका	6.0	7.9	6.2	5.5	5.6
इटली	5.0	4.7	4.8	4.5	4.3	चीन	2.5	2.3	1.9	….	….
भारत	**3.4**	**3.4**	**4.0**	**3.3**	**3.2**	**भारत**	**3.4**	**3.4**	**4.0**	**3.3**	**3.2**

नोटः '.....' आँकड़े की अनुपलब्धता का सूचक है।

स्रात : i) यू एन डी पीः मानव विकास रिपोर्ट 1999

ii) ग्लोबल मॉनिटरिन्ग रिपोर्ट (जी एम आर) 2008, 2009, तथा 2011 (http://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/40610/12/15_chapter6.pdf देखें)

यद्यपि योजना तथा व्यय वर्षोपरांत बढ़े हैं। सारिणी 1.3 शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों को सम्मिलित करते हुए प्रथम से दसवीं पंचवर्षीय योजना तक 50 वर्षों का आँकड़ा प्रस्तुत करती है। **यह प्रारंभिक शिक्षा की तुलना में उच्च शिक्षा पर व्यय के प्रतिशत में कमी को सूचित करता है।**

सारिणी 1.3: पंचवर्षीय योजना में शिक्षा पर परिव्यय एवं व्यय (केन्द्र तथा राज्य /के.प्र.) (रूपये लाख में)

पंचवर्षीय योजना		प्रारंभिक शिक्षा	प्रौढ़ शिक्षा	माध्यमिक शिक्षा	उच्च शिक्षा	अन्य	तकनीकि शिक्षा	कुल
1th	योजना	930(55)	50(3)	220(13)	**150(9)**	110(6)	230(14)	1690(100)
योजना	व्यय	850(56)	50(3)	200(13)	**140(9)**	90(6)	200(13)	1530(100)
2nd	योजना	930(34)	50(2)	490(18)	**470(17)**	280(10)	510(19)	2730(100)
योजना	व्यय	950(35)	40(1)	510(19)	**480(18)**	230(9)	490(18)	2700(100)
3rd	योजना	2090(37)	60(1)	880(15)	**820(15)**	230(5)	1420(25)	5500(100)
योजना	व्यय	2010(35)	20(0.3)	1030(17.7)	**870(15)**	640(11)	1250(21)	5820(100)
4th	योजना	2560(32)	80(1)	1180(15)	**8130(22)**	1190(15)	1060(15)	8090(100)
योजना	व्यय	2390(31)	60(1)	1400(18)	**1950(25)**	880(11)	1060(14)	7740(100)
5th	योजना	4100(33)	180(1)	2500(20)	**2920(23)**	1220(10)	1560(13)	12480(100)
योजना	व्यय	3170(36)	230(4)	1560(18)	**2050(23)**	660(7)	1070(12)	8840(100)
6th	योजना	9050(37)	1280(5)	3980(16)	**4860(20)**	2450(10)	2780(12)	24400(100)
योजना	व्यय	8900(32)	1534(6)	7430(27)	**5370(19)**	1326(5)	3180(11)	27740(100)
7th	योजना	19640(36)	5490(10)	6680(12)	**4200(8)**	11740(21)	6830(13)	54480(100)
योजना	व्यय	28280(37)	6098(8)	18290(24)	**11900(16)**	632(1)	10850(14)	76050(100)
8th	योजना	92010(47)	15550(8)	34980(18)	**15160(8)**	10440(5)	27860(14)	196000(100)
योजना	व्यय	124240(49)	11707(5)	57890(22)	**23610(9)**	11513(5)	25180(10)	254140(100)
9th	योजना	273630(55)	11020(2)	95260(19)	**43500(9)**	26780(5)	47790(10)	497980(100)
योजना	व्यय	268110(54)	8905(2)	93840(19)	**42890(9)**	33105(7)	46900(9)	493750(100)
10th	योजना	452651(53)	17734(2)	161936(19)	**77112(9)**	61690(7)	85197(10)	856320(100)
योजना	व्यय	649951(67.5)	14037(1.5)	109013(11)	**69543(7.5)**	63670(6.5)	59457(6)	965672(100)

नोटः कोष्टक में आकृति कुल शिक्षा की **योजना** एवं व्यय के प्रतिशत को सूचित करती है।

स्रोत :

1) *Budgetary Resources for Education 1951-52 to 1993-94.* Department of education, MHRD, Government of India.

2) *Analysis of Budgeted Expenditure on Education – Government of India: 1994-95 to 2002.* Department of Education, Ministry of Human Resource Development, New Delhi.

3) *Analysis of Annual Plans of Education Sector during Seventh Plan and Eighth Plan: Education.* Planning Commission, New Delhi.

4) *Financial Progress of Education Sector during Ninth and Tenth Plans.* Education Division, Planning Commission, New Delhi.

5) *Analysis of Budgeted Expenditure on Education: 2002-03 to 2004-05, 2003-04 to 2005-06, 2004-05 to 2006-07.* MHRD, Government of India.

(See IGNOU. 2009: *Five-Year Plans and Adult Education,* Blcok-1 of MAE-002 of MAAE programme. New Delhi: IGNOU).

AISHE (2013-14) के अनुसार 723 विश्वविद्यालय, 36,634 कॉलेज तथा 11,664 संस्थान थे। उच्च शिक्षा में कुल नामांकन 17.5 मिलियन बालक तथा 14.8 मिलियन बालिकाओं के साथ 32.3 मिलियन का अनुमान किया गया है। कुल नामांकन में 46 प्रतिशत बालिकाएँ हैं। भारत में उच्च शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात (स.ना.अनु.) 23.0 है जिसकी गणना 18-23 वर्ष के आयु समूह के लिए की जाती है। पुरूष जनसंख्या का सकल नामांकन अनुपात 23.9 है तथा महिला का 22.0 है। राष्ट्रीय सकल नामांकन अनुपात 23.0 की तुलना में अनुसूचित जाति क 17.1 तथा अनुसूचित जनजाति का 11.3 है। लगभग 79 प्रतिशत विद्यार्थी स्नातक स्तरीय कार्यक्रम में नामांकित हैं। स्नातक स्तर पर विद्यालयों की उच्च संख्या (40.4 प्रतिशत) कला/मानवीकि/सामाजिक विज्ञान तथा इंजीनियरिंग एण्ड टेक्नॉलॉजी (17.4 प्रतिशत) वाणिज्य (13.9 प्रतिशत) तथा विज्ञान (13.8 प्रतिशत) में नामांकन है। केवल 107,890 विद्यार्थी शोध में नामांकित हैं जो उच्च शिक्षा में कुल नामांकन का 12.15 प्रतिशत दूरस्थ शिक्षा नामांकन है जिसमें 45.39 प्रतिशत छात्राएँ हैं (भारत सरकार, 2015) 0.4 प्रतिशत से कम है। उच्च शिक्षा में कुल नामांकन में।

सारिणी 1.4 में आप ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में नामांकन दर की वृद्धि देख सकते हैं।

सारिणी 1.4: ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में नामांकन की वृद्धि

संस्थान	नामांकन (लाख में)			वृद्धि दर (प्रतिशत)
	2006-07	2011-12	वृद्धि	
इग्नू	4.68	6.97	2.29	8.3
राज्य मुक्त विश्वविद्यालय	7.77	10.80	3.03	6.8
दूरस्थ शिक्षा संस्थान	14.96	24.24	9.28	10.1
कुल	**27.41**	**42.01**	**14.60**	**8.9**

स्रोत : दूरस्थ शिक्षा परिषद (भारत सरकार, 2013, पृ. 93) (http://planningcommission.nic.in/plans/planned/siveyr/12th/pdf/pdfyp_vo13.pdf)।

भारत सरकार बारहवीं पंचवर्षीय योजना में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा को बहुत महत्व दिया है, जैसा कि शिक्षा हेतु योगदान में इसकी सहभागिता की उच्च अपेक्षा से प्रमाण मिलता है (देखिए सारिणी 1.5)।

सारिणी 1.5 : बारहवीं पंचवर्षीय योजना हेतु स्तर /प्रकार द्वारा निर्धारित नामांकन (विद्यार्थियों की संख्या लाख में)

स्तर/प्रकार	2011-12 अनुमान	2016-17 लक्ष्य	वृद्धि दर (प्रतिशत)
पी.एच.डी.	1	3	24.6
पी.जी. सामान्य	17.3	33.2	13.9
पी.जी तकनीक	.5	12.2	19.5
यू.जी सामान्य	116.6	128	1.9
यूजी तकनीक	45	66	8.0
उप-योग	**184.9**	**242.4**	**5.6**

डिप्लोमा	33	65	14.5
कुल	**217.9**	**307**	**7.1**
मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम	42	52	4.4
कुल योग	**259.9**	**359.4**	**6.7**
जनसंख्या (18-23 वर्ष)	1451.2	1.427.4	–0.1
सकल नामांकन अनुपात (प्रतिशत)	17.9	25.2	

स्रोत : प्लानिंग कमिशन एस्टिमेट्स / टारगेट्स (भारत सरकार, 2013, पृ. 96 (http://planningcommission.nic.in/plan/planned/fiveyr/12th/pdf/12fyp-vo/3.pdf)।

इस स्तर पर, उपरोक्त सारिणी को देखने के बाद आप शायद आश्वस्त हैं कि ये सांख्यिकीय आंकड़े आपके समक्ष क्यों प्रस्तुत किए गए हैं। कुछ निश्चित कारण हैं क्योंकि वे आपको कुछ स्पष्ट करते हैं :

- शैक्षिक संस्थानों एवं सुविधाओं की संख्या में वृद्धि के बावजूद उक्त आयु समूह के केवल 6 प्रतिशत विद्यार्थी उच्च शिक्षा प्राप्त करते हैं;
- उच्च शिक्षा हेतु बजट कम होता रहा है तथा प्रारंभिक शिक्षा पर सरकार बल दे रही है; तथा
- प्रारंभिक तथा माध्यमिक शिक्षा पर बल में वृद्धि के साथ संभवतः उच्च शिक्षा की माँग अधिक से अधिक बढ़ेगी।

इस स्थिति में; क्या आप सोचते हैं कि सीमित संसाधनों तथा नियमित कक्षाकक्ष का प्रचलित अभ्यास बढ़ती हुई संख्या को पहुँच प्रदान करने की चुनौतियों को पूर्ण करने में अकेले सक्षम होना संभव हो सकता है? उत्तर स्पष्टतः 'नहीं' है। क्योंकि घटते संसाधनों के कारण अधिक नियमित संस्थानों को खोलना संभव नहीं है जो भवन तथा उपकरणों जैसे विशाल आधारभूत आवश्यकताओं के कारण खर्चीला है। परंतु, कोई भी लोकतांत्रिक सरकार अपने लोगों हेतु उच्च शिक्षा के अवसरों के विस्तार के दबाव को प्रतिसिद्ध नहीं कर सकती है। इसका उत्तर केवल दूरस्थ शिक्षा में निहित है क्योंकि यह केवल अर्थसाध्य न हीं है (उप-भाग 1.4.4 को देखिए। इस की चर्चा खण्ड-4 की इकाई 15 में विस्तार से की गई है।) बहुसंख्य विद्यालयों का समान पहुँच तथा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने की क्षमता एवं लचीलापन है :

- सभी ग्रामीण, जनजातीय तथा नगरीय क्षेत्र,
- समाज के आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग जो सामान्यतः वित्तीय बाधाओं के कारण कॉलेज जाने में असमर्थ हैं;
- महिला सहित सभी वंचित समूह जो अपनी सामाजिक, भौगोलिक या भौतिक परिस्थितियों के कारण नियमित कॉलेजों में जाने में बहुत कठिनाई महसूस करते हैं; तथा
- कार्यरत व्यक्ति जो बिना मजदूरी या वेतन एवं समय नष्ट किए अपने कौशल, योग्यताओं आदि में सुधार करना चाहते हैं।

इस प्रकार, दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में क्षेत्रीय, लैंगिक तथा विषमताओं को पाटने में सहायता हेतु आवश्यक क्षमता एवं विशेषता है; जिसकी चर्चा हम भाग 1.5 में करेंगे।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

4) उच्च शिक्षा की पहुँच हेतु दूरस्थ शिक्षा क्यों आवश्यक हैं? व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

1.4.2 शिक्षा की गुणवत्ता

शिक्षा की गुणवत्ता एक सापेक्ष अवधारणा है और इसकी परिभाषा गुणवत्ता की अवधारणा के संदर्भ में ही दी जा सकती है। "गुणवत्ता" शब्द आजकल व्यापक रूप से चर्चित है और इस पर काफी वाद-विवाद हुआ है। कई लेखकों ने इस अवधारणा की अनियत प्रकृति (amorphic nature) का उल्लेख करते हुए पिर्सिग (1974) को उद्‌धृत किया है :

"गुणवत्ता ..... आप जानते हैं कि यह क्या होती है, फिर भी आप नहीं जानते कि वास्तव में यह क्या है। यह कथन स्व-विरोधात्मक लगता है। परन्तु कुछ चीजें अन्य चीजों से अच्छी होती हैं। इसका अर्थ यह है कि गुणवत्ता अधिक है। परन्तु जब आप यह कहने का प्रयास करते हैं कि निरपेक्ष रूप में गुणवत्ता क्या है, अर्थात उन चीजों का संदर्भ के बिना जिनमें यह मिलती है, तो यह प्रश्न गड्‌ढे में गिरने के समान है। संदर्भ बताए बिना इसके संबंध में कुछ भी नहीं कहा जा सकता। परन्तु यदि आप यह नहीं बता सकते कि गुणवत्ता क्या है तो आप कैसे जानेंगे कि गुणवत्ता क्या होती है, अर्थात वास्तव में इसका कोई अस्तित्व है भी या नहीं? यदि कोई नहीं जानता कि यह क्या है तो व्यावहारिक दृष्टि से यह है ही नहीं। परन्तु वास्तविकता यह है कि व्यावहारिक तौर पर इसका अस्तित्व है... आप कितना ही मानसिक विश्लेषण करते रहें, यह पता नहीं चलता है कि गुणवत्ता किस चिड़िया का नाम है (पृ. 179)।"

अतः गुणवत्ता विभिन्न लोगों के लिए विभिन्न अर्थ रखती है। गुणवत्ता भी सुन्दरता की भांति है, जो देखने वाले की आँख में निहित होती है। बहरहाल, उच्च शिक्षा में गुणवत्ता का अर्थ पाँच विभिन्न ढंगो से देखा जा सकता है :

- अतिविशिष्ट उच्च मानक के रूप में;
- निरन्तर शून्य दोष युक्त;
- उद्देश्यों के अनुरूप - अर्थात उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक;
- लगाए गए धन की मूल्य-प्राप्ति; और
- रूपान्तकारी, जिसका अर्थ है प्रतिभागियों का रूपांतरण।

शैक्षिक अर्थ में इसकी व्याख्या और निदर्शन निम्न प्रकार से किए जा सकते हैं :

ज्ञान और कौशलों में मानक प्राप्त करने का अर्थ यह होगा कि विद्यार्थी ने दोनों बातों में कुछ हद तक किसी न किसी विषय में निपुणता प्राप्त कर ली है। निपुणता सोचने, बोलने,

लिखने और कार्य करने द्वारा निदर्शित हो सकती है। उदाहरणार्थ, एक व्यक्ति जिसने एम. ए. अर्थशास्त्र में किया है उससे आशा की जाती है कि वह अपनी निपुणता बोलकर या लिखकर या सीखे हुए ज्ञान का प्रयोग कर निदर्शित करे। यदि वह इनमें से कुछ भी नहीं कर सके तो उसकी डिग्री का कोई अर्थ नहीं है और यह माना जाना चाहिए कि जिस संस्था ने उसे डिग्री दी है उसका भी कोई स्तर नहीं है। दूसरे शब्दों में, पिर्सिग के उपर्युक्त उत्तेजनात्मक कथन का, जिसमें वह गुणवत्ता को परिभाषित करने में आने वाली कठिनाइयों का जिक्र करता है, यह अर्थ नहीं लेना चाहिए कि "गुणवत्ता" और "मानक" का अस्तित्व होता ही नहीं। "गुणवत्ता" की अन्य विशेषताएँ सार्थक ढंग से सामाजिक-शैक्षिक संदर्भ में परिभाषित की जा सकती हैं और ज्यादातर, मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संदर्भ में।

भारत में शिक्षा को हम चाहे जिस भी ढंग से देखें-परखें, यह निश्चित है कि हम स्पष्ट रूप में यह नहीं कह सकते कि देश भर सभी जगह शिक्षा का स्तर बराबर है। इसमें संस्था से संस्था और शहरी क्षेत्र से ग्रामीण क्षेत्र की तुलना करें तो अंतर दिखाई पड़ता है। देश में कुछ विशेष विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय हैं जो बहुत अच्छे हैं और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बहुत अच्छे भी कहे जा सकते हैं। परन्तु, बहुत ही कम लोग ऐसे हैं जो इन संस्थाओं में शिक्षा प्राप्त करने में समर्थ हैं। सभी सरकारी संस्थाएँ भी समान स्तर के नहीं कहे जा सकते। सबकी गुणवत्ता में अन्तर मिलता है और यह भी नही देखा गया है कि उच्च गुणवत्ता वाली संस्थाएँ शहरी क्षेत्र के कुछ विशेष भागों में ही स्थित हैं। इसके अतिरिक्त, इन संस्थाओं में सम्पन्न वर्ग के लोग ही प्रवेश पा सकते हैं। दूसरे शबदों में गुणवत्ता केवल अभिजात वर्ग के संस्थानों तक ही सीमित है। इसके विपरीत, दूरस्थ शिक्षा के द्वारा सभी के लिए समान गुणवत्ता वाली शिक्षा उपलब्ध करवाई जा सकती है, क्योंकि इसके द्वारा एक ही प्रकार की अनुदेश सामग्री भिन्न-भिन्न संचार माध्यमों से सभी अध्येताओं को उपलब्ध कराई जाती है। यदि हमें सबको एक ही गुणवत्ता वाली शिक्षा देनी है तो साधनों की सीमितता को ध्यान में रखते हुए हमें उच्च शिक्षा की पारंपरिक कार्यनीतियों से भिन्न कार्यनीतियाँ अपनानी पड़ेगी।

1.4.3 शिक्षा की प्रासंगिकता

परम्परागत शिक्षा-प्रणाली पर लगाए जाने वाले कुछ आरोप निम्नलिखित हैं :

- प्रचलित शिक्षा-कार्यक्रम/पाठ्यक्रम वर्तमान सामाजिक आवश्यकताओं के अनुरूप नही हैं;
- उच्च वेतन पाने वाले अध्यापक कुछ सुविधासंपन्न विद्यार्थियों को ही पढ़ाते हैं;
- कक्षा में पढ़ाने की सदियों से चली आ रही शिक्षण विधियाँ पुरानी और प्रभावहीन हो गई हैं;
- पाठ्यक्रम की अवधि, कक्षा में उपस्थिति आदि के संबंध में कठोरता अछूता रहा, और
- उच्च और बढ़िया (स्तरीय) शिक्षा का लाभ कुछ अभिजात वर्ग के लोग ही उठा रहे हैं।

विद्यमान परम्परागत शिक्षा-प्रणाली में सामाजिक-आर्थिक और शैक्षिक आवश्यकताओं के बीच कोई मेल नहीं है। उसी का परिणाम है यह आलोचना; जहाँ अधिक तकनीकी शिक्षा की आवश्यकता है वहाँ कला की शिक्षा दी जा रही है; जहाँ हमें मध्यम स्तर के तकनीशियनों की आवश्यकता है, वहाँ शुद्ध शैक्षिक रूचि वाले स्नातक तैयार किए जा रहे हैं; और जहाँ हमें आवश्यकता है सतत शिक्षा की, जिससे कि व्यावसायिक व्यक्ति अपने ज्ञान को और कौशलों को बढ़ा सकें, उन्हें अद्यतन कर सकें, वहाँ हम सामान्य शिक्षा की व्यवस्था कर रहे हैं।

आगे संकायगत 1995-96 की पंजीयन संख्या दी जा रही है जिससे स्पष्ट है कि जहाँ कुल पंजीयन का 40.4 प्रतिशत कला पाठ्यक्रमों में है वहाँ केवल 1.1 प्रतिशत कृषि और 2.3 प्रतिशत शिक्षा में है। (तालिका संकायगत स्त्रियों की दशा भी सोचनीय लगती है; जहाँ 20. 1 प्रतिशत विज्ञान में और केवल 1.2 प्रतिशत इंजीनियरींग और तकनीकी पाठ्यक्रम में हैं। (तालिका 1.6))।

तालिका 1.6 : विश्वविद्यालयों में विद्यार्थियों का पंजीयन (संकायगत) 1991-92 से 1995-96

संकाय	1991-92		1992-93		1993-94		1994-95		1995-96		वार्षिक वृद्धिदर*
	पंजीयन	कुल %	पंजीयन	कुल %	पंजीयन	कुल %	पंजीयन	कुल %	पंजीयन	कुल %	
कला (प्राच्य विद्या सहित)	2129418	40.4	2238626	40.4	2352970	40.4	2473027	40.4	2592925	40.4	**4.4**
विज्ञान	1033614	19.6	1086353	19.6	1141680	19.6	1199830	19.6	1260200	19.6	**4.4**
वाणिज्य	1154804	21.9	1213688	21.9	1275478	21.9	1340560	21.9	1410119	21.9	**4.4**
शिक्षा	121115	2.3	127304	2.3	133797	2.3	140620	2.3	147720	2.3	**4.4**
इंजीनियरिंग / प्रौद्योगिक	258028	4.9	271213	4.9	285045	4.9	299583	4.9	315720	4.9	**4.5**
चिकित्सा विज्ञान	179040	3.4	188189	3.4	197786	3.4	207874	3.4	219918	3.4	**4.6**
कृषि	55292	1.1	58120	1.1	61091	1.1	64200	1.1	67990	1.1	**4.6**
पशु चिकित्सा	13356	0.3	13840	0.3	14550	0.3	15288	0.3	16201	0.3	**4.3**
विधि	279092	5.3	293353	5.3	308314	5.3	324038	5.3	342440	5.3	**4.5**
अन्य	42127	0.8	44280	0.8	46538	0.8	48912	0.8	52401	0.8	**4.9**
कुल	**5265886**	**100.0**	**5534966**	**100.0**	**5817249**	**100.0**	**6113929**	**100.0**	**6425624**	**100.0**	**4.4**

नोटः वार्षिक वृद्धि दर पृथक रूप से गणना कर सम्मिलित किया गया है, यह सारिणी के स्रोत के आँकड़ों पर आधारित है।
स्रोतः विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, वार्षिक रिपोर्ट 1995-96

यदि हम सारिणी 1.6 तथा 1.7 में आँकड़ों की तुलना करते हैं, हम देख सकते हैं कि, दस वर्षों में नामांकन की संख्या अध्ययन / शास्त्रों के सभी क्षेत्रों में 1995-96 से 2006-07 तक लगभग दुगुना हो गई है, तथा 1991-92 एवं 1995-96 की तुलना में 2006-07 तथा 2011-12 में इंजीनियरिंग में छः गुणा वार्षिक वृद्धि हुई है, शिक्षा तथा चिकित्सा में तीन गुणा वृद्धि, वाणिज्य एवं प्रबंधन में दो गुणा, अन्य में चार गुणा वृद्धि के साथ शेष क्षेत्र में बहुत कम परिवर्तन है।

शिक्षा की मुख्य आलोचना हैः शिक्षा में अनुप्रयोगात्मक पक्ष का अभाव। ज्यों-ज्यों प्रौद्योगिकी और औद्योगिक विकास के कारण माँग बढ़ती है त्यों-त्यों विद्यालयों और माहविद्यालयों को चाहिए कि वे ऐसी पाठ्यचर्चा का अभिकल्पन करें जो समाज की आवश्यकता और समय के अनुरूप हो। आज व्यवसायवाद का युग है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी में हो रहे निरंतर परिवर्तन के कारण कार्यबल को सतत शिक्षा तथा प्रशिक्षण देने की आवश्यकता है। आज के सामाजिक-आर्थिक, पर्यावरणीय और औद्योगिक विकास का बल इन बातों पर है :

- अंशकालिक शिक्षा जिसमें अधिगम के लिए अधिक लचीली व्यवस्था हो ताकि युवा वर्ग और प्रौढ़ वर्ग नौकरी करने के साथ-साथ पढ़ भी सकें;
- सेवारत लोगों के लिए विशेषीकृत पाठ्यक्रम;
- प्रौढ़ों के लिए बौद्धिक उत्प्रेरण
- परंपरागत (परीक्षा) प्रणाली की औचारिकताओं को पूरा किए बिना प्रमाणीकरण ।

सारिणी 1.7 : ग्यारहवीं योजना के दौरान अध्ययन क्षेत्र-वार नामांकन में वृद्धि (लाख में)

संकाय	2006-07		2011-12		**वृद्धि दर**
	नामांकन	कुल का प्रतिशत	नामांकन	कुल का प्रतिशत	(प्रतिशत)
कला	54.86	39.6	65.78	30.2	3.7
विज्ञान	25.43	18.4	30.57	14.0	3.8
वाणिज्य एवं प्रबंधन	22.87	16.5	34.34	15.8	8.5
शिक्षा	6.21	4.5	13.00	6.0	15.9
इंजीनियरिंग	18.06	13.0	54.68	25.0	24.8
चिकित्सा, नर्सिंग तथा फार्मेसी	5.98	4.3	12.02	5.5	15.0
कृषि एवं पशु चिकित्सा	0.93	0.7	1.21	0.6	5.4
विधि	3.00	2.2	3.48	1.6	3.0
अन्य	1.16	0.8	2.78	1.3	19.1
कुल	**138.5**	**100**	**217.86**	**100**	**9.5**

स्रोत : UGC, AICTE, NCTE एवं INC (भारत सरकार, 2013, पृ. 94)

(http://planningcommission.nic.in/plans/planned/fiveyr/12th/pdf/12fyp_vol3.pdf)

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में उपर्युक्त आवश्यकताओं और माँगों को पूरा करने की क्षमता है। भारत के मुक्त विश्वविद्यालय अध्येताओं के विभिन्न समूहों की आवश्यकताओं के अनुरूप कई प्रकार के पाठ्यक्रम चला रहे हैं। यश्वंतराव चौहान मुक्त विश्वविद्यालय, नासिक में तो किसानों के लिए भी पाठ्यक्रम उपलब्ध है। इग्नू, नई दिल्ली कंप्यूटर, इंजीनियरिंग तथा प्रौद्योगिकी, प्रबंधन, स्वास्थ्य विज्ञान, शिक्षा, दूरस्थ शिक्षा आदि के पाठ्यक्रम समाज की आवश्यकतानुसार उपलब्ध कराता है।

1.4.4 शिक्षा की लागत

परंपरागत प्रणाली में शिक्षा की लागत दूरस्थ शिक्षा की तुलना में निश्चित रूप से महंगा है। यह एक सर्वविदित तथा सर्व स्वीकार्य तथ्य है। इसके लिए संस्थागत स्तर तथा विद्यार्थी विशेष स्तर दोंनो में सम्मिलित लागत की प्रकृति एवं प्रकार उत्तरदायी हो सकते हैं। परंपरागत विश्वविद्यालयों/संस्थानों द्वारा निर्धारित शिक्षण शुल्क तथा अन्य शुल्क अत्यधिक हैं, तथा इस तरह शिक्षा उन सभी के पहुँच में नहीं है जो इसे वहन नहीं कर सकते हैं। इसके विपरीत, दूरस्थ अधिगम कार्यक्रमों का शुल्क व्यापक रूप में संस्थान के अंदर तथा संस्थानों के अनुसार भिन्न होते हैं, लेकिन, मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों द्वारा

शिक्षा की लागत सदैव परंपरागत संस्थानों से बहुत कम होता है। इसके अतिरिक्त, दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के विद्यार्थी आवास के व्यय तथा नियमित आवागमन के व्यय से मुक्त रहते हैं। सबसे अधिक, मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली से भिन्न परंपरागत पद्धति के विद्यार्थियों द्वारा लागत या आय के अवसर को त्याग दिया जाता है जो एक महत्वपूर्ण कारक है। दूरस्थ शिक्षार्थी बड़ा लाभ पाते हैं क्योंकि वे अधिगम के दौरान आमदनी भी करते हैं। इस प्रकार, दूरस्थ शिक्षा विद्यार्थियों द्वारा अपनी शिक्षा में निवेश का एक उत्तम विकल्प तथा निश्चित रूप से अधिक अर्थसाध्य है।

संस्थागत स्तर पर, लागत में शिक्षा प्रदान करने हेतु प्राप्त, उपयुक्त तथा रखरखाव के लिए आवश्यक विभिन्न संसाधन सम्मिलित हैं। आवश्यक संसाधनों में मानव, वस्तु तथा सूचना एवं संप्रेषण तकनीक सहित यंत्र हैं। ये लागत मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं – भूमि, भवन, उपकरण, फर्नीचर आदि पर लागत पूँजी– जो उनके अपेक्षित जीवन की वार्षिक निश्चित लागत हैं तथा राजस्व लागत जो स्वाभाविक रूप से आवर्ती है।

रूम्बल (2001) के अनुसार, किसी व्यवस्था का समष्टि स्तर पर लागत निम्नलिखित कारकों के युग्म द्वारा लिए जाते हैं जिसमें सभी प्रबंधन नियंत्रण के लिए स्वीकार्य हैं :

- प्रदान किए गए पाठ्यक्रमों की संख्या
- पाठ्यक्रम का जीवन काल
- चयनित मीडिया एवं प्रौद्योगिकी
- लागत-उत्प्रेरण की कार्य सीमा, उदाहरण के लिए प्रतिलिप्याधिकार सामग्री के उपयोग से बच के रहना।
- जिस सीमा तक विद्यार्थियों पर लागत रखा जाता है या तो शिक्षण के रूप में या व्यवस्था की सीमाओं को परिवर्तित कर ताकि जिन गतिविधियों का संस्थान एक भुगतान कर चुका है अब वह विद्यार्थियों द्वारा किया जाएगा (जैसे शिक्षण तथा पुस्तकालय सेवा का पहुंच)।
- जिस सीमा तक संस्थान पाठ्यक्रम निर्माण तथा विद्यार्थियों के अध्यापन हेतु सेवा (वैतनिक पद) के लिए संविदा पर लोगों को नियुक्त करता है बजाए कि सेवा की संविदा (अस्थायी श्रमिक के रूप में नियुक्त जिसे पांडुलिपि/लिपि/शिक्षण समय/अंकन आदि के आधार पर भुगतान होगा।
- जिस सीमा तक संस्थान कार्य अभ्यास को अपनाता है जो श्रम मूल्य को कम करता है, उदाहरण के लिए, नई सामग्री निर्माण के बजाए वर्तमान पाठ्यपुस्तक से सामग्री ग्रहण कर पाठ्यक्रम निर्माण करना तथा वृहद पाठ्यक्रम दल प्रतिरूप के बजाए पाठ्यक्रम निर्माण का लेखक-संपादक प्रतिरूप उपयोग।
- प्रति शिक्षक या प्रशासक का विद्यार्थी भार बढ़ाने हेतु तकनीक का उपयोग।
- अन्य कार्यों के साथ शैक्षिक कर्मचारी के शिक्षण भार में वृद्धि करना, उदाहरण के लिए– शोध एवं लोक सेवा, तथा
- श्रमिक स्थानापन्न हेतु श्रमिक-कर्मचारी के खर्च के रूप में विद्यार्थी तथा सहायक श्रमिक द्वारा शैक्षिक श्रम व्यय का प्रतिस्थापन।

एक पूर्णतःविकसित ई-एजुकेशन प्रणाली के संस्थागत व्यय में निम्नलिखित सम्मिलित हो सकता है :

- ई-सामग्री का विकास
- शिक्षार्थियों को ऑनलाईन अध्यापन (तथा आँकलन)
- वेब साइट की पहुँच
- विद्यार्थी को ऑनलाईन प्रभावित करना
- आधारभूत संरचना तथा सहायता प्रदान करना जिसमें ई-शिक्षा चल सकता है: तथा
- समष्टि स्तर पर ई-शिक्षा की योजना एवं प्रबंधन।

हल्समैन (2000) तथा रूम्बल (2001) द्वारा मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में अध्ययन उचित संदेह के बाहर स्थापित करता है कि इंटरनेट आधारित पाठ्यसामग्री मुद्रित पाठ्यसामग्री से महंगा (दो गुणा) है; सस्ते मुद्रित एवं श्रव्य मीडिया के साथ।

परंपरागत शिक्षा के साथ मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों या मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों की मूल्य प्रभावकता की तुलना में उपरोक्त सभी कारकों को ध्यान में रखना आवश्यक है।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

5) दूरस्थ शिक्षा किस प्रकार सामाजिक रूप से प्रासंगिक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करती है? व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

1.5 शिक्षा का लोकतांत्रिकरण

भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में लोग केवल शिक्षा व्यवस्था के लोकतांत्रिकरण द्वारा प्रगति कर सकते हैं। लोकतंत्र की सफलता इसके नागरिकों की शिक्षा पर निर्भर करती है। एक सिद्धांत के रूप में यह बल दिया जाता है कि उच्च शिक्षा सहित शिक्षा को इसके महत्वाकांक्षियों को समान अवसर प्रदान करने के लोकतांत्रिक साधनों को अपनाना चाहिए।

1.5.1 शैक्षिक अवसरों की समानता

भारत का संविधान देश के सभी नागरिकों को शैक्षिक अवसरों की समानता प्रदान किया है। सभी व्यक्तियों को प्रगति के लिए उनकी आकांक्षाओं को पूरा करने, उच्च स्तर, स्थिति, और वेतन पाने तथा समग्र व्यक्तित्व विकास को उनकी पूरी सीमा तक पूर्ण करने हेतु शैक्षिक अवसर करने हेतु प्रदान करने की आवश्यकता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को क्षमता एवं

समानता के आधार पर शिक्षा का अवसर होना चाहिए। इसे उनकी उर्ध्वाधर गतिशीलता, शैक्षिक व्यवसाय एवं अन्य हेतु मार्ग प्रशस्त करना चाहिए।

इस तरह शैक्षिक अवसर की समानता किसी के धर्म, जाति, पंथ, लिंग तथा निवास के आधार पर भेद किए बिना सभी के शिक्षा के प्रावधान को सम्मिलित करता है। इसका अर्थ सभी के लिए शैक्षिक अवसर की समरूपता नहीं है परंतु इसका अर्थ प्रत्येक विद्यार्थी की बुद्धि तथा अभिवृत्ति के अनुरूप सर्वोत्तम रूप से उपयुक्त अवसर है। अतः राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 बल देती है कि शिक्षा की समानता का अर्थ हो सभी को न केवल पहुँच यद्यपि सफलता हेतु स्थिति में समान अवसर प्रदान करना है। यह आवश्यक है क्योंकि भौतिक, सामाजिक, लैंगिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक तथा अन्य कारक हैं जो व्यक्तियों के शैक्षिक अवसरों की क्षमता एवं समानता को प्रभावित करते हैं। ये सभी आयु, लिंग तथा शारीरिक योग्यता (निर्योग्यता सहित), व्यक्ति एवं परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्तर, वहन क्षमता आदि है। इस प्रकार, हम असमानता के कई कारण देख सकते हैं।

भारत में शैक्षिक अवसरों की असमानता के महत्वपूर्ण कारणों में सम्मिलित हैं।

a) प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च शैक्षिक संस्थानों की समुचित संख्या की अनुपलब्धता।

b) वर्तमान परंपरागत विद्यार्थियों, महाविद्यालयों तथा उच्च शिक्षा संस्थानों के मानकों में भिन्नता।

c) लोगों में निर्धनता तथा अपनें स्वयं तथा अपने बच्चों हेतु शिक्षा के व्यय का वहन करने की उनकी अक्षमता।

d) शिक्षा के सभी स्तरों पर शिक्षा में लैंगिक विषमता।

e) समाज के विभिन्न वर्गों विशेषतः अनु. जाति/अनु.जन.जा. सीमांतकों तथा अन्य पिछड़े वर्गों में शैक्षिक विकास की विषमता।

f) वंचित, अलाभन्वित तथा विभिन्न प्रकार से सक्षम बच्चों की विशेष आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु कमजोर शैक्षिक प्रावधान।

g) शिक्षा की बढ़ती माँग को पूरा करने हेतु परंपरागत शिक्षा प्रणाली की अनुभूत अक्षमता।

जैसा कि आप भाग 1.2.2 से याद कर सकते हैं कि विभिन्न आयोगों, नीतियों तथा समितियों के रिपोर्ट ने समाज के सभी जरूरतमन्द वर्गों हेतु समान अवसर का बढ़ाना तथा इस संबंध में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की भूमिका पर बल दिया है। भाग 1.4 से आप इस तथ्य को स्वीकार करेंगे कि मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा विभिन्न वर्गों के आजीवन अधिगम, शैक्षिक आवश्यकताओं, आकांक्षाओं आदि की पूर्ति के साथ-साथ समता एवं समानता के आधार पर शैक्षिक प्रावधान करने हेतु लोकतांत्रिकरण को प्रोत्साहित करना आवश्यक है।

1.5.2 क्षेत्रीय विषमताओं का लघुकरण

स्वतंत्रता के पश्चात का काल नामांकन, संस्थानों की स्थापना, कार्यक्रमों की विविधता आदि के रूप में उच्च शिक्षा व्यवस्था का असमान विस्तार किया। उच्च शिक्षा की वृद्धि दर अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर के साथ तालमेल नहीं बनाया। धीरे-धीरे विस्तार की प्रधानता उच्च शिक्षा से विद्यालयी शिक्षा के विस्तार की ओर चला गया। बहुसंख्य जरूरतमन्द विद्यार्थियों हेतु विश्वविद्यालय तथा कॉलेजों की स्थापना में भारी व्यय का सम्मिलित होना एक जटिल एवं कठिन कार्य था। जैसा कि आप जानते हैं कि उच्च शिक्षा के औपचारिक प्रणाली पर भारी दबाव पत्राचार पाठ्यक्रम को आरंभ करने का मार्ग प्रशस्त किया बाद में दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम तथा वर्तमान एवं लोकप्रिय रूप मे मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम।

तथापि, माध्यमिक तथा तृतीय (उच्च) स्तर पर शिक्षा की बढ़ी हुई पहुँच के बावजूद क्षेत्रीय विषमताएँ इन स्तरों पर निरंतर रहीं। माध्यमिक स्तर पर अपेक्षाकृत निम्न सकल नामांकन अनुपात (स.ना.अनु.) में व्यापक क्षेत्रीय तथा अंतर्राज्यीय विविधताएँ हैं। प्रमुख राज्यों में माध यमिक स्तर पर स.ना.अन. सबसे कम झारखण्ड में 29 प्रतिशत तथा बिहार में 35 प्रतिशत तथा सबसे अधिक 80 प्रतिशत हिमाचलप्रदेश में तथा 98 प्रतिशत केरल में है जो राष्ट्रीय स्तर (62.7 प्रतिशत) की तुलना में है। उच्च माध्यमिक स्तर पर स.ना.अनु. सबसे कम झारखण्ड में 6.5 प्रतिशत तथा असम में 13 प्रतिशत तथा हरियाणा में 60 प्रतिशत तथा सबसे अधिक हिमाचल प्रदेश में 69 प्रतिशत है। इसके अतिरिक्त कुछ राज्यों जैसे राजस्थान तथा मध्यप्रदेश में सकल नामांकन अनुपात में लैंगिक अंतराल सबसे अधिक 20 प्रतिशत है (भारत सरकार, 2013, पृ. 69)।

सभी स्तरों पर शिक्षा में क्षेत्रीय विषमताएँ कम करने में भारत सरकार की अपेक्षाओं के अनुसार मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा को एक आशाजनक भूमिका निभानी है।

1.5.3 सामाजिक एवं लैंगिक विषमताओं का लघुकरण

शिक्षा की पहुँच में सामाजिक-आर्थिक असमानता में एक महत्वपूर्ण कमी तथा अनु.जा. /अनु.जन.जा. तथा अन्य सामाजिक समूहों में अंतराल की कमी की प्राप्ति की जा चुकी है (भारत सरकार, 2013, पृ. 48)। भारत में उच्च शिक्षा में अभी भी अनुमानित सकल नामांकन अनुपात (GER) 23 प्रतिशत है जो 18-23 वर्ष के आयु समूह के लिए गणना की गई है। अनुसूचित जाति के लिए यह 17.1 प्रतिशत तथा अनुसूचित जनजाति के लिए यह 11.3 प्रतिशत है। अखिल भारतीय स्तर पर पुरूष जनसंख्या के लिए स.ना.अनु. 23.9 प्रतिशत है जबकि अनु.जा. पुरूषों के लिए यह 17.7 प्रतिशत तथा अनु.जन. पुरूषों के लिए यह 12.5 प्रतिशत है। उसी तरह अखिल भारतीय स्तर पर महिला जनसंख्या के लिए स.ना.अनु. 22.0 प्रतिशत है जबकि अनु.जा. महिलाओं के लिए यह 16.4 प्रतिशत है एवं अनु.जन. महिलाओं के लिए यह 10.2 प्रतिशत है। सभी वर्गों में महिलाओं का स.ना.अनु. सबसे अधिक चण्डीगढ़ में 65.6 प्रतिशत है। दिल्ली, गोवा, मणिपुर, पुडुचेरी, तमिलनाडु, तेलांगना तथा उत्तराखण्ड में भी महिला जनसंख्या का 30 प्रतिशत से अधिक स.ना.अन. है। अंतर्राष्ट्रीय तुलना में, स.ना.अनु. 18-22 वर्ष की जनसंख्या को सम्मिलित करते हुए गणना की गई है तथा यह अखिल भारतीय स्तर पर 26.6 है (भारत सरकार, 2015)।

AISHE 2013-14 सर्वे (भारत सरकार, 2015) के प्रमुख परिणाम भी स्पष्ट करता है कि उच्च शिक्षा में महत्वपूर्ण प्रगति है। भारत में उच्च शिक्षा में कुल नामांकन 32.3 मिलियन है जिसमें 17.5 मिलियन बालक तथा 14.8 मिलियन बालिकाएँ हैं। कुल नामांकन में 46 प्रतिशत बालिकाएँ हैं। उच्च शिक्षा में कुल नामांकन का 12.15 प्रतिशत दूरस्थ शिक्षा का है जिसमें अखिल भारतीय स्तर पर 45.39 प्रतिशत छात्राएँ हैं। प्रति 100 पुरूष शिक्षकों के लिए केवल 65 मिहिला शिक्षक हैं। प्रति 100 गैर-शैक्षणिक कर्मी में महिलाओं की औसत संख्या लगभग 40 है।

उच्च शिक्षा में वर्तमान लैंगिक अंतराल को और कम करने हेतु, शिक्षा क्षेत्र में व्यय प्रतिशत के यथावश्यक पुनर्वरीयता के साथ सभी शैक्षिक प्रावधानों में सुधार करना आवश्यक है। इसे एक तरफ अनौपचारिक प्रौढ़ शिक्षा एवं साक्षरता कार्यक्रमों द्वारा बुनियादी शिक्षा हेतु आवंटन में वृद्धि द्वारा संभव बनाया जा सकता है तथा दूसरी तरफ महिला वृहत नामांकन को प्रोत्साहित करने हेतु उच्च स्तरों पर आवंटन को बढ़ाने के साथ बालिका विद्यालय तथा महिला शिक्षा दोनों के प्रत्यक्ष एवं अवसर लागत को कम करने हेतु आवश्यक रणनीतियों द्वारा संभव हो सकता है।

इस इकाई में विमर्श की दृष्टि से भारत तथा विदेश में भावी विकास अधिक उज्जवल हैं।

1.6 सारांश

इस इकाई में, आपने सरकारों की अनुभूत आवश्यकताओं तथा दूरस्थ शिक्षा के प्रोत्साहन में उनके प्रयासों को जाना। यह भारत तथा विदेश में दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम के उद्भव तथा विस्तार के स्वरूप के साथ आपका परिचय स्थापित कराया। भारत में दूरस्थ शिक्षा बहुसंख्य लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु अपरिहार्य माना जाता है। यह लाखों लोगों के उच्च शिक्षा ग्रहण करने का एक साधन है। इसके अतिरिक्त, यह समय एवं स्थान के भेद के बिना सभी को सामाजिक रूप से प्रांसगिक, सस्ती तथा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करती है।

यह भारत में दूरस्थ शिक्षा के नीति-परिप्रेक्ष्य के साथ इसमें निहित औचित्य, शिक्षा के लोकतांत्रिकरण को भी प्रस्तुत किया है। आप विश्लेषण कर सकतें हैं कि भारत में विगत आधी सदी में दूरस्थ शिक्षा संस्थान किस प्रकार धीरे-धीरे अपना क्षेत्र विस्तार किए हैं।

हमने यह भी देखा है कि दूरस्थ शिक्षा के प्रति भारत सरकार की नीति सदैव संरक्षणात्मक रही है। शिक्षा के एक स्वीकार्य माध्यम के रूप में दूरस्थ पद्धति की मान्यता से वर्षोंपरान्त नेटवर्किन्ग तथा संसाधन की साझेदारी के साथ माध्यमिक तथा उच्च दोनों स्तरों पर पूरे देश में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पद्धति को स्थापित तथा मजबूत करने में नीति अग्रसर रही। भारत में दूरस्थ शिक्षा के इतिहास में मुक्त विश्वविद्यालयों, मुक्त विद्यालयों की स्थापना तथा दूरस्थ शिक्षा परिषद का गठन वर्तमान का दूरस्थ शिक्षा ब्यूरो महत्वपूर्ण विकास है। यह निष्कर्ष पर पहुँचाता है कि दूरस्थ शिक्षा का भारत तथा विदेश में एक पद्धति के रूप में उज्जवल भविष्य है।

1.7 "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर

1) मिल्टन किन्स, यू.के. में 1969 में विश्व में पहला मुक्त विश्वविद्यालय का निर्माण अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर दूरस्थ शिक्षा के इतिहास में एक प्रमुख विकास था। यह विकास विभिन्न प्रकार के दूरस्थ शिक्षा संस्थानों द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों में प्रवेश हेतु अवसरों में खुलापन तथा मल्टीमीडिया आधारित स्व-अनुदेशित सामग्री उपयोग के कारण था।

2) i) APOU की स्थापना को इग्नू तथा अन्य राज्य विश्वविद्यालयों द्वारा अनुकरण किया गया।

   ii) भारत में मुक्त विश्वविद्यालयों की सामान्य विशेषताओं में उच्च शिक्षा की स्वायत्त संरचना है जो मुख्यालय, क्षेत्रीय केन्द्रों तथा अध्ययन केन्द्रों के व्यापक तंत्र के साथ तीन स्तर में कार्यरत हैं।

   iii) विद्यालय स्तर पर दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम निर्माण का मुख्य उद्देश्य विद्यालय से वंचित वर्गों, विद्यालय छोड़ने वाले तथा बाहरी विद्यार्थियों को वैकल्पिक अवसर प्रदान करने के लिए था।

   iv) दूरस्थ शिक्षा द्वारा शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम आयोजित करने की आवश्यकता है,
   - सेवारत शिक्षकों की सतत वृतिक विकास हेतु, तथा
   - क्षमता निर्माण द्वारा अप्रशिक्षित शिक्षकों को क्षमता प्रदान करना।

3) स्वाधीनता के वर्षों बाद दूरस्थ शिक्षा के प्रति सतत एवं सहायक नीति रही है। निम्नलिखित प्रमुख नीतिगत विकास हैं :

- 1961 में केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड दूरस्थ शिक्षा का सुझाव दिया तथा डॉ. डी.एस कोठारी की अध्यक्षता में एक विशेषज्ञ समिति ने दिल्ली विश्वविद्यालय में पत्राचार पाठ्यक्रम आरंभ करने की अनुशंसा की जो 1962 में आरंभ हुआ।
- शिक्षा आयोग (1964-65) पत्राचार शिक्षा का सुझाव दिया।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1968) शिक्षा आयोग की अनुशंसाओं पर पुनरोक्ति दिया।
- यू.जी.सी. ने 1974 में पत्राचार पाठ्यक्रम हेतु दिशा निर्देश जारी किया।
- भारत में दूरस्थ शिक्षा के शीर्ष विकास के रूप में 1985 में इग्नू की स्थापना हुई।
- नई शिक्षा नीति (1986) मुक्त अधिगम पद्धति पर विशेष बल दिया।
- दूरस्थ शिक्षा परिषद (1991) भारत में दूरस्थ शिक्षा को प्रोन्नत, समन्वय तथा मानकों को कायम रखने हेतु इग्नू के अन्दर स्थापित किया गया।
- संशोधित नई शिक्षा नीति (1992) मुक्त अधिगम पद्धति पर बल को दोहराया तथा राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय का भी उल्लेख किया।
- दूरस्थ शिक्षा पर CABE समिति (1995) संसाधनों की साझेदारी हेतु भारत में मुक्त विश्वविद्यालय तथा दूरस्थ शिक्षा संस्थानों के एक तंत्र की स्थापना का सुझाव दिया।

4) उच्च शिक्षा में बढ़ती संख्या का मुद्दा तथा माँग में बढ़ोतरी प्रथम कारण है जिसे परंपरागत व्यवस्था पूर्ण करन में असमर्थ थी। इस समस्या का समाधान दूरस्थ शिक्षा में है। इसके अतिरिक्त, दूरस्थ शिक्षा दूरस्थ क्षेत्रों में उच्च शिक्षा हेतु पहुँच में सहायता करती है, इसमें महिला तथा समाज के अन्य सामाजिक तथा आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों जैसे वंचित समूहों की पहुँच को प्रदान करने की क्षमता है।

5) जब हम सामाजिक रूप से प्रासंगिक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की बात करते हैं, हमारा निश्चित सरोकार प्रायोगिक या व्यवहारिक मूल्य वाली शिक्षा से होता है। इसका अर्थ ज्ञान के अतिरिक्त कौशल वाली शिक्षा का अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष है। दूरस्थ शिक्षा समाज की आवश्यकताओं को समझकर तथा कार्यक्रमों को विकसित कर यह संभव बनाता है जो सामाजिक रूप से प्रासंगिक तथा आर्थिक रूप से अर्थसाध्य भी होते हैं।

1.8 संदर्भ ग्रंथ

Association of Indian Universities. (1997). *Handbook of Distance Education.* AIU, New Delhi.

Association of Indian Universities. (1998). *University News.* 36(13).

CABE. (1995). *Report of the Committee on Distance Education.* New Delhi

Distance Education Council. (1995). *Open Universities in India.* IGNOU, New Delhi.

Government of India. (1962). *Report of the Expert Committee on Correspondence Courses.* Ministry of Education, New Delhi.

Government of India. (1966). *Education and National Development: Report of the Education Commission, 1964-66.* NCERT, New Delhi.

Government of India. (1986). *National Policy on Education – 1986.* Ministry of Education, New Delhi, p. 29.

Government of India. (1992). *Programme of Action -- 1992, National Policy on Education, 1986 (Revised 1992).* (Reprinted) UGC, New Delhi, p.250.

Government of India. (2009). *National Knowledge Commission — Report to the Nation 2006-2009*. New Delhi.

Government of India. (2013). *Twelfth five year plan (2012-2017): Social Sectors - Volume III.* Planning Commission, New Delhi.

Government of India. (2013). (See http://planningcommission.nic.in/plans/planrel/fiveyr/12th/ pdf/12fyp_vol3.pdf — Retrieved on 11-09-2016).

Government of India. (2015). *All India Survey on Higher Education (2013-2014).* Ministry of Human Resource Development, Department of Higher Education, New Delhi. Available at http://aishe.nic.in/aishe/viewDocument.action?documentId=196.

Government of India. (2016). *National Policy on Education 2016: Report of the Committee for Evolution of New Education Policy*. Ministry of Human Resource Development, New Delhi.

http://mhrd.gov.in/university-and-higher-education — Retrieved on 10-04-2017.

http://mospi.nic.in/Mospi_New/upload/man_and_women/Chapter%203.pdf — Retrieved on 12-04-2016.

http://planningcommission.nic.in/plans/planrel/fiveyr/12th/pdf/12fyp_vol3.pdf — Retrieved on 17-09-2016.

http://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/40610/12/15_chapter6.pdf — Retrieved on 10 September, 2016.

http://www.hindustantimes.com/education/experts-worried-about-lack-of-indian-representation-in-global-university-rankings/story-PnB8AeIYbrAEUxobloFpiP.html — Retrieved on 05-02-2017.

http://www.teindia.nic.in/mhrd/50yrsedu/r/2p/8r/2p8r0602.htm — Retrieved on 07-03-2017.

http://www.ugc.ac.in/deb/ — Retrieved on 12-04-2016.

http://www.university.careers360.com/articles/list-of-approved-distance-education-universities-in-india — Retrieved on 27-08-2016.

https://pdfs.semanticscholar.org/bafd/3f3e3e2a87435f7b3ce53c4eb2e348c9725c.pdf — Retrieved on 21-04-2017.

https://www.oxfamindia.org/education/10-facts-on-illiteracy-in-India-that-you-must-know — Retrieved on 20-09-2016.

Hülsmann, T. The Costs of Open Learning: A Handbook, Oldenburg, Bibliothecks-und Informationssystem der Carl von Ossietsky Universität Oldenburg, 2000, quoted in Rumble (2001) mentioned below.

IGNOU. (1985). *IGNOU Act, 1985.* IGNOU, New Delhi.

Koul, B. N. et. al. (1988). *Studies in Distance Education.* AIU, IGNOU, New Delhi.

Koul, B. N. (2000). "Dystopia to Utopia and Beyond: A Case for Distance Education (DE) in Small States" in Proceedings of the University of West Indies Small States Conference, 27-28 July 2000, Ocho Rios, Jamaica. Available at www.col.org/resources/publications/ SmallStates00/2_conf_proc_master.pdf.

Morgan, P. (2000). "Strengthening the Stakes: Combining Distance and Face to Face Teaching Strategies – Preliminary Discussion issues", in conference proceedings of Distance Education in Small States, July 27-28 2000 in Ocho Rios, Jamaica. University of the West Indies/Commonwealth of Learning, 2001. Available at www.col.org/resources/publications/ SmallStates00/2_conf_proc_ Morgan.ppt

Pirsig, R. M. (1974). *Zen and the Art of Motorcycle Maintenance*. Morrow, New York.

Rumble, Greville. (1986). *The Planning and Management of Distance Education,* Croom Helm, London.

Rumble, Greville. (2001). "The costs and costing of networked learning", *JALN*, Volume 5, Issue 2, September, pp.75-96.

Sahoo. P. K. (1994). *Open Learning System,* Uppal, New Delhi.

UNESCO. (1993). *Distance Education in Asia and the Pacific: Country Papers.* NIME, Tokyo.

UNESCO. (1994). *Statistical Yearbook.* UNESCO, Paris.

Yadav, M. S., and Panda, S. K. (1996). Distance Higher Education in India: A Historical Overview, *Journal of Higher Education,* 19(3).

1.9 इकाई अंत अभ्यास

इकाई अंत प्रश्न

यहाँ दिए गए प्रश्नों के उत्तर आप अपनी इच्छानुसार संक्षिप्त टिप्पणी अथवा विस्तृत रूप में लिख सकते हैं। इस प्रकार की टिप्पणियाँ अथवा उत्तर परीक्षा हेतु तैयारी के समय आपकी सहायता कर सकते हैं।

1) भारत तथा विश्व में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में ऐतिहासिक विकास के संक्षिप्त स्वरूप को लिखिए। (1000 शब्द)

2) भारत में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के नीति-प्ररिप्रेक्ष्य का वर्णन कीजिए। (1000 शब्द)

3) भारत में दूरस्थ शिक्षा की प्रोन्नति या विकास के औचित्य की व्याख्या कीजिए। (500 शब्द)

4) भारत में शिक्षा का लोकतांत्रिकरण कैसे किया जा सकता है? चर्चा करें (500 शब्द)

समीक्षात्मक चिंतन हेतु प्रश्न

1) "भारत में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के विकास में कुछ विरूपता रही है।" इस पर अपने चिंतन के साथ कथन को सही ठहराने का प्रयास करें।

2) क्या आप सोचते हैं कि मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा विश्व में कहीं भी परंपरागत पद्धति के पूर्णतः समानांतर पद्धति हो सकती है? अपने उत्तर को न्यायसंगत ठहराइए।

गतिविधि

भाग 1.5 के आलोक में तथा गूगल सर्च द्वारा वेबसाईट्स से अन्य पठन द्वारा शिक्षा में विभिन्न क्षेत्रीय, सामाजिक तथा लैंगिक विषमताओं को सूचीबद्ध कीजिए। दूरस्थ शिक्षा द्वारा इन विषमताओं को कम करने हेतु अपने विचारणीय सुझाव लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

इकाई 2 सैद्धांतिक आधार

सरंचना

2.0 प्रस्तावना

2.1 उद्देश्य

2.2 दूरस्थ शिक्षा की परिभाषा

- 2.2.1 बेडेमेयर
- 2.2.2 मूर
- 2.2.3 डोहमेन
- 2.2.4 पीटर्स
- 2.2.5 होमबर्ग
- 2.2.6 कीगन

2.3 प्रासंगिक पदों की व्याख्या

- 2.3.1 अनौपचारिक शिक्षा
- 2.3.2 डी-स्कूलिंग
- 2.3.3 पत्राचार शिक्षा
- 2.3.4 दूरस्थ अधिगम
- 2.3.5 मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम
- 2.3.6 मुक्त शिक्षा
- 2.3.7 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा
- 2.3.8 आजीवन अधिगम/शिक्षा
  - 2.3.8.1 अवधारणा
  - 2.3.8.2 सिद्धांत एवं विशेषताएँ
  - 2.3.8.3 कार्यान्वयन के निहितार्थ

2.4 दूरस्थ शिक्षा के सिद्धांत

- 2.4.1 दूरस्थ शिक्षा सिद्धांत का विकास : एक परिदृष्टि
- 2.4.2 स्वतंत्र अध्ययन सिद्धांत
- 2.4.3 संव्यवहार दूरी एवं शिक्षार्थी स्वायत्तता सिद्धांत
- 2.4.4 शिक्षण का औद्योगीकरण सिद्धांत
- 2.4.5 मार्गदर्शित शैक्षिक संवाद सिद्धांत
- 2.4.6 द्वि-मार्गीय डाकसंचार सिद्धांत
- 2.4.7 सरोकार की निरंतरता का सिद्धांत
- 2.4.8 संप्रषण एवं शिक्षार्थी नियंत्रण सिद्धांत
- 2.4.9 शिक्षण एवं अधिगम क्रियाओं के पुनर्समाकलन का सिद्धांत
- 2.4.10 अधिगम-अनुभवों की समानता का सिद्धांत
- 2.4.11 दूरस्थ शिक्षा सिद्धातों का मूल्यांकन

2.5 सारांश

2.6 ''अपनी प्रगति जाँचें'' प्रश्नों के उत्तर

2.7 संदर्भ

2.8 इकाई अंत अभ्यास

2.0 प्रस्तावना

इकाई-1 में आपने मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के राष्ट्रीय और अनतर्राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर ऐतिहासिक विकास पर एक परिदृष्टि प्राप्त किया। आप जानते हैं कि दूरस्थ शिक्षा सदियों पुरानी परम्परागत शिक्षा प्रणाली की तुलना में अत्यधिक नवीन है। दूरस्थ शिक्षा का विकास उन परिवर्तनशील स्थितियों जिनमें इसका अभ्यास हैं के आधार पर हो रहा है। इसके अपने स्वयं के मानदंड हैं और यह अपने उपागमों तथा विधियों का अनुसरण करती है, जो परम्परागत शिक्षा प्रणाली से भिन्न हैं। यह असमानुरूपी और अपरंपरागत प्रकृति की है। यह अपने शिक्षकों और शिक्षार्थियों के बीच शैक्षिक अंतःक्रिया हेतु विभिन्न साधनों और विधियों को सम्मिलित कर दूरस्थ शिक्षार्थियों को अनुदेश प्रदान करने हेतु पर्याप्त प्रावधान करता है।

हम जानते हैं कि दूरस्थ शिक्षा एक शिक्षा प्रणाली है जो पारम्परिक शिक्षा प्रणाली की संपूरक, अनुपूरक और वैकल्पिक है। आज यह जिस रूप में विद्यमान है, यह एक स्वतंत्र शिक्षा-प्रणाली के रूप में विकसित है, संप्रेषण तकनीकी और संज्ञानात्मक विज्ञानों के विकास का धन्यवाद है, जो शिक्षणशास्त्रीय प्रयोजनों के लिए तकनीक के उपयोग के लिए पर्याप्त लचीला हैं। यह समाज की बढ़ती हुई और विविध शैक्षिक आवश्यकताओं और माँगों जो एक ओर बदलती हुई सामाजिक, आर्थिक और अन्य परिस्थितियों तथा दूसरी ओर तकनीकों का विकास के परिणाम हैं की पूर्ति हेतु एक शैक्षिक नवाचार है।

आपको दूरस्थ शिक्षा की अवधारणा और सैद्धांतिक आधारों को समझने की आवश्यकता है ताकि आप इसके सापेक्षिक गुणों, अन्य प्रासंगिक पदों के साथ इसकी भिन्नता तथा शैक्षिक प्रणाली में इसकी पकड़ की प्रशंसा कर सकें। यह इकाई आपके लिए दूरस्थ शिक्षा की अवधारणा और सिद्धांत का एक परिदृश्य, जो इस क्षेत्र के विभिन्न विचारकों के परिप्रेक्ष्य से है, को प्रस्तुत करती है।

2.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप :

- दूरस्थ शिक्षा की अवधारणा की व्याख्या कर सकेंगे;
- दूरस्थ शिक्षा और अन्य संबंधित पदों के बीच अंतर कर सकेंगे; और
- दूरस्थ शिक्षा के विभिन्न सिद्धांतों का विश्लेषण कर सकेंगे।

2.2 दूरस्थ शिक्षा की परिभाषा

दूरस्थ शिक्षा अपने संकेतार्थ और भावाअर्थ दोनों के संदर्भ में एक विस्तृत पद है। ज्ञान, समझ और विचारधारा के आधार पर विभिन्न व्यक्तियों ने दूरस्थ शिक्षा को भिन्न-भिन्न प्रकार से परिभाषित किया है। अतः एक व्यापक परिभाषा तक पहुँचना बहुत कठिन है, जो इसके सभी संकेतार्थों और भावार्थों को सम्मिलित करे। यद्यपि दूरस्थ शिक्षा की एक संक्षिप्त और वैश्विक रूप से मान्य परिभाषा निर्मित करना कठिन है, तथापि दूरस्थ शिक्षा के विविध व्यक्तियों द्वारा प्रस्तुत विभिन्न पक्षों पर आधारित परिभाषाएं हमें दूरस्थ शिक्षा की व्यापक छवि प्रदान करेंगी।

दूरस्थ शिक्षा स्टाफ प्रशिक्षण एवं शोध संस्थान (इग्नू, 1995) ने वेडेमेयर, मूर, डोहमेन, पीटर्स और होमबर्ग द्वारा दी गई परिभाषाओं को उन पर संक्षिप्त टिप्पणी के साथ प्रस्तुत किया।

आइए हम इन परिभाषाओं का अध्ययन करें, क्योंकि ये दूरस्थ शिक्षा की परिभाषा निर्माण के विस्तृत पक्षों को प्रस्तुत करते हैं।

2.2.1 वेडमेयर

वेडेमेयर (1977) ने अपने कार्यों में 'मुक्त अधिगम', 'दूरस्थ शिक्षा' और 'स्वतंत्र अध्ययन' शब्दों का उपयोग किया, परन्तु अंतिम शब्द को निरन्तर समर्थन किया। उसने 'स्वतंत्र-अध्ययन को निम्न प्रकार से परिभाषित किया है :

> ''स्वतंत्र अध्ययन में शिक्षण-अधिगम व्यवस्थाओं के विभिन्न रूप सम्मिलित हैं, जिसमें शिक्षक और शिक्षार्थी एक दूसरे से अलग रहते हुए विविध प्रकार के संप्रेषण द्वारा अपने आवश्यक कार्यों और उत्तरदायित्वों का निर्वहन करते हैं। इसके उद्देश्य हैं कैम्पस या आंतरिक शिक्षार्थियों को अनुचित कक्षा या प्रारूप से मुक्त करना, कैम्पस के बाहर या बाह्य शिक्षार्थियों को उनके स्वयं के वातावरण में अधिगम को सतत बनाए रखने का अवसर प्रदान करना, और सभी शिक्षार्थियों में स्व-निर्देशित अधिगम करने की क्षमता का विकास करना, जो एक शिक्षित व्यक्ति के लिए आवश्यक अंतिम परिपक्वता है''।

ध्यान दीजिए कि इसमें दो प्रकार के 'स्वतंत्र-अध्ययन' के लिए सुझाव है : एक कैम्पस के अंदर के शिक्षार्थी के लिए जो व्याख्यानों में नियमित उपस्थिति नहीं चाहता/आवश्यक नहीं मानता; दूसरा कैम्पस के बाहर के शिक्षार्थी के लिए जो किसी भी प्रकार से स्वयं पर ही निर्भर है। परन्तु, ये दोनों ही शिक्षा के अंतिम सामाजिक उद्देश्य के विशेष गंभीर विचार-सामाजिक कल्याण के लिए उदार शिक्षा के अधीन हैं। अतः यह समझना कठिन नहीं है कि संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में 'स्वतंत्र अध्ययन' शब्द का उपयोग 'पत्राचार' और 'दूरस्थ शिक्षा' दोनों के लिए व्यापक रूप से क्यों किया जाता है। इसके अतिरिक्त, यह अभिव्यक्ति 'मुक्त अधिगम' की भी समर्थन करती है, क्योंकि वास्तविक रूप में 'शिक्षित व्यक्ति' बनने के लिए उसे शिक्षा तक मुक्त पहुँच की आवश्यकता होती है।

2.2.2 मूर

मूर (1972 और 1973) दूरस्थ शिक्षा की विशेषताओं के संबंध में अधिक स्पष्ट विचार रखते हैं। उनके अनुसार, दूरस्थ शिक्षा को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है :

''अनुदेशनात्मक विधियों का एक परिवार जिसमें शिक्षण व्यवहारों का निष्पादन अधिगम व्यवहारों से अलग होता है। इसमें वे व्यवहार भी सम्मिलित हैं जो सन्निहित स्थितियों में शिक्षार्थी की उपस्थिति में निष्पादित होते, ताकि शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच संप्रेषण को मुद्रित, इलैक्ट्रोनिक, यांत्रिक या अन्य यंत्रों द्वारा सरलीकृत किया जा सके। उसकी परिभाषा में दूरस्थ शिक्षा की कम से कम तीन विशेषताएं स्पष्ट दृष्टिगोचर होती हैं–

i) शिक्षण व्यवहार अधिगम व्यवहार से पृथक रहता है (उदाहरणः पत्राचार पाठ्यक्रम)।

ii) आमने-सामने शिक्षण-अधिगम प्रणाली का एक अंग बनता है (उदाहरणः संपर्क कार्यक्रम)।

iii) इलैक्ट्रॉनिक और अन्य मीडिया का उपयोग शिक्षण और अधिगम को प्रभावी बनाने के लिए किया जा सकता है (उदाहरणः ऑडियो और वीडियो कैसेट्स का उपयोग)।

इनमें से पहली दो विशेषताएं उनके समान हैं जो वेडेमेयर ने व्यक्त की है। और यदि हम वेडेमेयर की अभिव्यक्ति 'विविध प्रकार से संप्रेषण' की व्याख्या करें : यहाँ तक कि विस्तृत रूप से उक्तलिखित तीसरी विशेषता का स्थान भी उसकी (वेडेमेयर) परिभाषा में निहित है। मूर संप्रेषणात्मक (शिक्षण-शास्त्रीय) पक्ष को प्रकाशित करता है, जबकि वेडेमेयर समाजशास्त्रीय पक्ष को केन्द्रित करता है।

2.2.3 डोहमेन

डोहमेन (1977) दूरस्थ शिक्षा को इस प्रकार परिभाषित करता है; ''एक व्यवस्थित रूप से संगठित स्व-अध्ययन का रूप, जिसमें विद्यार्थी परामर्श, अधिगम-सामग्री का प्रस्तुतीकरण और विद्यार्थी की सफलता का संरक्षण एवं पर्यवेक्षण शिक्षकों की एक टीम द्वारा किया जाता है, जिनमें से प्रत्येक पर उत्तरदायित्व होते हैं। यह दूरस्थ शिक्षण में मीडिया के माध्यम से संभव होता है जो लम्बी दूरियों को सम्मिलित कर सकता है।''

यह परिभाषा स्व-अध्ययन पर अधिक बल देती है। दूरस्थ शिक्षा की इस विशेषता पर वेडेमेयर की परिभाषा में भी बल दिया गया है। वेडमेयर और मूर की भांति ही डोहमेन ने भी उचित रूप से मीडिया के उपयोग पर बल दिया है; जो दूरस्थ शिक्षा को शिक्षा के उपभोक्ताओं तक पहुंचाने में सक्षम बनाता है।

हम देखते हैं कि उपरोक्त सभी तीनों विचारकों ने दूरस्थ शिक्षा के दो मुख्य पक्षों की स्पष्टता या अस्पष्टता पर ध्यान केन्द्रित किया है :

i) स्व-अध्ययन

ii) शैक्षिक संप्रेषण के लिए मीडिया का उपयोग

मुख्य बात यह है कि यह परम्परागत प्रकार की कक्षा-कक्ष शिक्षण में उपयोग किए जाने वाले मैखिक संप्रेषण के विपरीत है, जो एक स्व-अध्ययन की प्रक्रिया नहीं है। दूरस्थ-शिक्षा मुद्रित, इलैक्ट्रॉनिक मीडिया और आमने-सामने या मौखिक स्थितियों का उपयोग स्व-अध्ययन के लिए करती है, जो दूरस्थ शिक्षा का आधार है।

आइए, अब एक अन्य परिभाषा को देखते हैं जो दूरस्थ शिक्षा की संपूर्ण प्रक्रिया के लिए एक सैद्धांतिक ढाँचा प्रस्तुत करती है।

2.2.4 पीटर्स

पीटर्स (1973) दूरस्थ शिक्षा को इस प्रकार परिभाषित करते हैं; ''ज्ञान, कौशलों और अभिवृत्तियों प्रदान करने की एक विधि है जिसको श्रम के विभाजन और संगठनात्मक सिद्धांतों, साथ ही तकनीकी मीडिया के व्यापक उपयोग द्वारा तर्कसंगत सिद्ध किया गया है। विशेषरूप से उच्च कोटि की शिक्षण-सामग्री के पुनरोत्पादन हेतु, जो एक ही समय में अधिक संख्या में विद्यार्थियों को, जहाँ भी वे रहते हों निर्देशित करने को सम्भव बनाता है। यह शिक्षण और अधिगम का एक औद्योगिक रूप है।''

पीटर्स की परिभाषा रोचक है क्योंकि, तकनीकी मीडिया और जन शिक्षा के उपयोग के अतिरिक्त, वह एक विशिष्ट प्रकृति पर बल देता है जो दूरस्थ शिक्षा को औद्योगिक समाज की प्रकृति से जोड़ता है। यह भी संभव है कि दूरस्थ शिक्षा को एक ऐसी प्रणाली के रूप में देखा जाए जो औद्योगिक समाज की नई और विशिष्ट आवश्यकताओं से उत्पन्न हो रही है जिसमें शिक्षा सहित लगभग सभी क्रियाकलापों को समय-सारिणी के अनुकूल होना है जो कार्य करने और अधिगम स्थितियों के लिए अधिक कठोर बनाई गई हैं।

2.2.5 होल्मबर्ग

होल्मबर्ग (1981) दूरस्थ शिक्षा को इस प्रकार परिभाषित करते हैं जिसमें सम्मिलित है:

''सभी स्तरों पर अध्ययन के विभिन्न रूप जो एक ही परिसर के व्याख्यान कक्षों में अपने विद्यार्थियों के साथ ट्यूटर्स के निरंतर और तत्काल पर्यवेक्षण के अधीन नहीं होते, परंतु फिर भी एक ट्यूटोरियल व्यवस्था के संचालन, मार्गदर्शन और ट्यूशन से लाभान्वित होते हैं''।

होलम्बर्ग की परिभाषा के बारे में क्या रोचक है कि दूरस्थ शिक्षा को एक ***'संगठित शैक्षिक कार्यक्रम'*** के रूप में देखा जा रहा है।

आइए अब हम कीगन द्वारा प्रस्तुत परिभाषा को देखते हैं; जिसने विभिन्न परिभाषाओं में पाए गए दूरस्थ शिक्षा के विभिन्न पक्षों को चुना और उन्हें एक साथ एक परिभाषा में रखा।

2.2.6 कीगन

कीगन (1986) ने दूरस्थ शिक्षा की व्यापक परिभाषा दी है जो सभी आवश्यक तत्वों को इंगित करती है। उसने दूरस्थ शिक्षा को शिक्षा के एक ऐसे रूप में परिभाषित किया है, जिसकी विशेषताएं हैं :

- शिक्षक और शिक्षार्थी का संपूर्ण अधिगम प्रक्रिया के दौरान अर्द्ध-स्थायी रूप से पृथक होना; यह इसे परंपरागत आमने-सामने की शिक्षा से भिन्न बनाता है;
- अधिगम सामग्री की योजना और निर्माण तथा विद्यार्थी सहायता सेवाओं दोनों में एक शैक्षिक संगठन का प्रभाव, जो इसे निजी अध्ययन और स्वयं-शिक्षण कार्यक्रमों से भिन्न बनाता है;
- तकनीकी मीडिया का उपयोग; शिक्षक और शिक्षार्थी को जोड़ने तथा पाठ्यक्रम सामग्री को पहुंचाने में मुद्रित, ऑडियो, वीडियो या कंप्यूटर का उपयोग;
- द्विमार्गीय संप्रेषण का प्रावधान, ताकि विद्यार्थी इसका लाभ उठा सके या वार्ता की पहल भी कर सके; इससे यह शिक्षा में तकनीकी के अन्य उपयोगों से भिन्न बनता है;
- अधिगम प्रक्रिया की संपूर्ण अवधि के दौरान अधिगम समूह की अर्द्ध-स्थाई अनुपस्थिति, ताकि शिक्षार्थियों को शैक्षिक और समाजीकरण प्रक्रियाओं दोनों के लिए आकस्मिक बैठक की संभावनाओं के साथ व्यक्तिगत रूप से शिक्षित किया जाय, न कि समूहों में;

कीगन की इस व्यापक परिभाषा में दूरस्थ शिक्षा के सभी आवश्यक तत्व, पक्ष और विशेषताएं सम्मिलित हैं, जो कि उपरोक्त सभी परिभाषाओं में पाई जा सकती हैं। जैसा कि कीगन (1986) ने बताया है – यह कहना महत्वपूर्ण है कि क्या दूरस्थ शिक्षा को उसी के समान या भिन्न कहा जा सकता है जैसे बिना दिवारों का विश्वविद्यालय, अतिरिक्त मौलिक अध्ययन, अनुभवात्मक अधिगम, कैम्पस के बाहर शिक्षा, मुक्त अधिगम, विस्तारत-कैम्पस आदि। कीगन ने इस क्षेत्र में संप्रेषण और सिद्धांत निर्माण के सभी आधुनिक विकासों को सम्मिलित किया है।

इन शब्दों और कुछ अन्य संबंधित शब्दों के बारे में आप संक्षेप में आगे के भाग में जानेंगे।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

1) किस विचारक ने कहा कि एक औद्योगीकृत शिक्षण-अधिगम प्रणाली में मानव सहायता की आवश्यकता होती है?

.....

.....

.....

2) वेडमेयर, मूरे और डोहमेन की परिभाषाओं में क्या सामान्य है?

.....

.....

.....

.....

.....

2.3 प्रासंगिक पदों की व्याख्या

कई व्यक्तियों द्वारा 'दूरस्थ शिक्षा' को कुछ शब्दों जैसे अनौपचारिक शिक्षा, अपारम्परिक शिक्षा, मुक्त शिक्षा, पत्राचार-शिक्षा आदि शब्दों के पर्याय के रूप में गलत समझा गया है। यहाँ आप कीगन और अन्य विचारकों द्वारा उपयोग किए गए अन्य शब्दों का पुनः स्मरण कर सकते हैं जो पूर्व के भागों में दिए गए हैं। वर्तमान समय में उपयोग हो रहे ये सभी शब्द उनके सही अर्थ के बारे में संदेह उत्पन्न करते हैं। विशेषरूप से यह तब होता है, जब इन शब्दों को अनुपयुक्त ढंग से परिभाषित किया जाता है और/या अनुचित तरीके से समझा जाता है।

मुझे विश्वास है कि शायद आप 'दूरस्थ शिक्षा' शब्द की अवधारणा और उपयोग के विषय में स्पष्ट हो गए हैं और उपरोक्त पैराग्राफ में दिए गए संबंधित शब्दों के साथ भ्रमित नहीं हैं। यदि आप अभी भी भ्रमित हैं तो चिंता मत कीजिए। इन संबंधित शब्दों पर निम्नलिखित संक्षिप्त चर्चा आपके भ्रम को दूर करेगी।

2.3.1 अनौपचारिक शिक्षा

अनौपचारिक शिक्षा, जैसा शब्द से बोध होता है, यह औपचारिक या परंपरागत प्रणाली से बाहर कई शिक्षार्थियों की पहुंच के लिए उपलब्ध होना माना जाता है। यह इंगित करता है कि यह एक ऐसी शिक्षा है जो औपचारिकताओं से मुक्त या सुगम औपचारिकताओं के साथ शिक्षा की विभिन्न प्रकार के शिक्षार्थियों तक अधिक पहुंच बनाती है।

कुछ लोग अनौपचारिक शिक्षा को अपारंपरिक शिक्षा कहते हैं। हार्टनैट (1972) के अनुसार *अपारंपरिक शिक्षा* शिक्षण अनुभवों का एक युग्म है जो समय और स्थान की सीमाओं से मुक्त है। कूमब्स तथा अन्य (1973) ने अनौपचारिक शिक्षा को इस प्रकार परिभाषित किया है: ''स्थापित औपचारिक प्रणाली के बाहर कोई संगठित शैक्षिक क्रियाकलाप – स्वतंत्र रूप से परिचालित या किसी विस्तृत क्रियाकलाप के एक अंग के रूप में परिचालित - जिसका प्रयोजन पहचान योग्य अधिगम ग्राहकों और अधिगम उद्देश्यों के लिए कार्य करना है।'' इस परिभाषा को स्पष्ट करने के लिए उन्हीं लेखकों ने औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा के बीच भेद किया। अनौपचारिक शिक्षा ''वास्तविक रूप में एक आजीवन प्रक्रिया, जिसके द्वारा प्रत्येक व्यक्ति दैनिक अनुभवों, और अपने वातावरण के शिक्षाप्रद अनुभवों एवं प्रभावों और संसाधनों से, परिवार एवं पड़ोसियों से, कार्य एवं खेलों से, बाजार से, पुस्तकालय एवं जन मीडिया से अभिवृत्तियों, मूल्यों, कौशलों और ज्ञान को अर्जित करता है।'' उनके द्वारा औपचारिक शिक्षा को इस प्रकार परिभाषित किया गया है ''पदानुक्रमित संरचित, कालक्रमानुसार श्रेणीबद्ध 'शिक्षा प्रणाली' जो प्राथमिक विद्यालय से विश्व-विद्यालय तक चलती है और सामान्य शैक्षिक अध्ययन के अतिरिक्त, पूर्णकालिक व्यावसायिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण हेतु विविध विशेषीकृत कार्यक्रम और संस्थानों को सम्मिलित करती है।''

यद्यपि, राडक्लीफ और कोल्लेट्टा (1989) ने कहा – ''व्यवहारिक रूप में औपचारिक, अनौपचारिक और निरौपचारिक शिक्षा के बीच सीमांकन की कोई कठोर रेखा नहीं है। बहुत से क्रियाकलाप मात्र एक वर्ग में रखे जा सकते हैं, जबकि कई दो या सभी क्षेत्रों को साझा करते हैं।'' दूसरे शब्दों में, यह बोध होता है कि औपचारिक, अनौपचारिक और निरौपचारिक शिक्षा के बीच सैद्धांतिक अंतर मान्य है।

अनौपचारिक शिक्षा को विद्यालयों में प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक किसी भी स्तर पर संगठित किया जा सकता है। विश्व विद्यालयों या उच्च शिक्षा संस्थानों में मुक्त विश्वविद्यालय आजकल अधिक प्रचलित पद (शब्द) है जिसको एक ऐसे संस्थान हेतु उछाला गया है जो उच्च शिक्षा को अनौपचारिक और मुक्त ढ़ंग से प्रदान कर रहा है। यह विविध आवश्यकताओं और रुचियों के शिक्षार्थियों के लिए प्रासंगिक, लचीली, व्यवस्थित और विविध प्रकार की शिक्षा प्रदान करने की संभावनाओं में वृद्धि करती है।

2.3.2 डी-स्कूलिंग

डी-स्कूलिंग एक दर्शन है जो अनौपचारिक शिक्षा की अवधारणा को रेखांकित करता है। सरल शब्दों में इसका अर्थ है शिक्षा को विद्यालय के सीमाओं से बाहर लाना। दूसरे शब्दों में, यह औपचारिक प्रणाली की सभी कठोरताओं से हटकर मुक्त शिक्षा का समर्थन करता है जैसे– एक समय पर प्रवेश, निश्चित कक्षा-कक्ष, नियमित उपस्थिति, निर्धारित और सामान्य पाठ्यक्रम, कठोर समय/शिक्षण और अधिगम के कालांश, परीक्षा आदि।

सन् 1970 के प्रारम्भ में, ईवान इलिच एक शैक्षिक भविष्य की कल्पना कर रहे थे जिसमें पारंपरिक कक्षा-कक्ष के स्वामित्व ज्ञान संबंधों को परिवर्तित किया गया। एक मुख्य भ्रांति जिस पर विद्यालय प्रणाली आधारित है, वह है कि 'अधिकांश अधिगम शिक्षण का परिणाम होता है। यह सत्य है कि नियत परिस्थितियों के अर्न्तगत शिक्षण कुछ निश्चित प्रकार के अधिगम में योगदान करता है। परन्तु, अधिकांश व्यक्ति अपने अधिकांश ज्ञान का अर्जन विद्यालय के बाहर से करते हैं और विद्यालय में मात्र विद्यालय से प्राप्त ज्ञान, और यह उनके जीवन के बढ़ते हुए भाग के दौरान परिरोध का स्थान बन जाता है। अधिकांश अधिगम आकस्मिक रूप से संपन्न होता है, यहां तक कि अधिकांश इच्छानुसार अधिगम क्रमादेशित निर्देश का परिणाम नहीं होता है (http://newlearningonline. com/new-learning/chapter-2/ivan-illich-on-deschooling)।

अब देखना है कि अनौपचारिक शिक्षा, डी-स्कूलिंग और मुक्त अधिगम में क्या अंतर है? वास्तव में, ये शब्द पर्यायवाची हैं और एक ही दर्शन का समर्थन करते हैं। अनौपचारिक शिक्षा, शैक्षिक प्रक्रिया को औपचारिकताओं/कठोरताओं से मुक्त रखने पर बल देती है, जबकि डी-स्कूलिंग शिक्षा को विद्यालय के भौतिक वातावरण से बाहर लाने पर बल देती है जिसमें मुख्य रूप से सभी शैक्षिक संस्थान सम्मिलित होते हैं।

क्या पत्राचार शिक्षा इस दिशा में एक कदम है? इसका उत्तर जानने के लिए आइए समझते हैं कि पत्राचार शिक्षा क्या है?

2.3.3 पत्राचार शिक्षा

पत्राचार शिक्षा की साधारण शुरुआत को सन् 1840 में ढूंढा जा सकता है, जब आइजेक पिटमैन ने डाक द्वारा आशु लिपि (शार्टहैंड) का शिक्षण प्रारम्भ किया (मोरिस, 2011; रौन्ट्री 1992)। पिटमैन ने अपने कई शिक्षार्थियों तक पहुंचने के लिए डाक का उपयोग किया जो उसी माध्यम द्वारा उसके पास वापस जाते थे। प्रारम्भ के इस अनुभव के बाद पत्राचार शिक्षा

पूरे विश्व में फैली और शीघ्र ही सभी प्रकार के विषय और पाठ पत्राचार शिक्षा द्वारा पढ़ाए जाने लगे।

आइए, पत्राचार शिक्षा की कुछ प्रगतिशील परिभाषाओं और अभ्यास पर दृष्टि डालते हैं। पत्राचार शिक्षा में सम्मिलित है ''विद्यार्थी के पास भेजे गए अध्ययन-सामग्री के बैच, जो तब आवश्यक पठन और अभ्यासों को पूरा करता है और उसे नियत व्यक्तिगत ट्यूटर द्वारा आँकलन हेतु महाविद्यालय के पास वापस भेजता है। अभ्यासों की जांच होती है और विद्यार्थी टिप्पणी, सलाह और सामानय मार्गदर्शन प्राप्त करता है'' (लेग्गे, 1982)।

उपरोक्त परिभाषा में, निम्नलिखित आवश्यक तत्वों का अवलोकन किया जा सकता है :

i) डाक द्वारा विद्यार्थियों को अध्ययन सामग्री की आपूर्ति;

ii) विद्यार्थियों द्वारा पठन एवं लेखन अभ्यास/सत्रीयकार्य; तथा

iii) विद्यार्थियों को ट्यूटर द्वारा उनके अभ्यासों/सत्रीयकार्य पर आँकलन और प्रतिपुष्टि।

यद्यपि यह परिभाषा आमने-सामने संपर्क की आवश्यकता की उपेक्षा करती है, फिर भी यह इंगित करती है कि वहां डाक द्वारा संगठित निर्देश और शिक्षा होते हैं।

पत्राचार शिक्षा वह शिक्षा है जो शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच बिना आमने-सामने संपर्क के डाक द्वारा संचालित होती है। शिक्षण शिक्षार्थी को भेजी गई लिखित या टेप द्वारा रिकार्ड की गई सामग्री द्वारा होता है, जिसकी प्रगति का पर्यवेक्षण शिक्षक को भेजी गई लिखित या टेप-रिकॉर्डेड सामग्री द्वारा की जाती है। शिक्षक उनमें सुधार करता है और उन्हें आलोचना और परामर्श के साथ शिक्षार्थी के पास वापस भेजता है। इसे पत्राचार अध्ययन भी कहा जाता है (टिटमस, 1989) हम देख सकते हैं कि यह परिभाषा भी आमने-सामने संपर्क और मानव-तत्व पर खामोश है। परंतु यह इस भाव से अधिक नवीन है कि यह इलैक्ट्रोनिक मीडिया को पत्राचार शिक्षा की सीमा के अंदर लाती है।

उक्त परिभाषाओं से एक चीज पत्राचार शिक्षा के बारे में बहुत स्पष्ट होती है कि यह उनके लिए शिक्षा का एक माध्यम है जो लिखित भाषा में प्रवीणता के साथ साक्षर हैं और पहले से ही कुछ शैक्षिक योग्यताओं और कौशलों को धारण करते हैं। साधारणतः ये साक्षर व्यक्ति अपेक्षाकृत अधिक परिपक्व होते हैं और इस स्थिति में होते हैं कि उनके पास भेजी गई सामग्री के स्व-अध्ययन या स्वयं की समझ द्वारा अपने आप सीख सकते हैं और वहाँ शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच आमने-सामने संपर्क के प्रावधान भी हो सकता है और नहीं भी हो सकता है। सामान्यतया, यह मुद्रित अधिगम सामग्री कुछ प्रशिक्षित विषय-विशेषज्ञों द्वारा तैयार की जाती है और शिक्षार्थियों के पास उनके पढ़ने के लिए डाक द्वारा भेजी जाती है, साथ ही उन्हें कुछ लिखने के सत्रीय कार्य भी दिए जाते हैं। सामान्य रूप से, शिक्षार्थियों को औपचारिक विद्यालय/कक्षा-कक्ष के वातावरण का अनुभव विकसित करने के लिए किसी सुविधाजनक स्थान पर संपर्क कक्षाएं/कार्यक्रम संचालित किए जाते हैं, जहाँ पर शिक्षक और शिक्षार्थियों को अंतःक्रिया का अवसर मिलता है। पाठ्यक्रम के अंतिम समय में परीक्षाओं का संचालन किया जाता है और योग्य अभ्यर्थियों/शिक्षार्थियों को प्रमाण-पत्र, डिप्लोमा, और/या डिग्री प्रदान किए जाते हैं।

पत्राचार शिक्षा, दूरस्थ शिक्षा से किस प्रकार भिन्न है?

पत्राचार शिक्षा और दूरस्थ शिक्षा में अंतर

भाग 2.2 और उपभाग 2.3.3 का संयुक्त रूप से अध्ययन के बाद, हमारे लिए पत्राचार शिक्षा और दूरस्थ शिक्षा में अंतर करना सरल हो जाता है। पत्राचार शिक्षा में, मुद्रण अनुदेश का

एकमात्र साधन है और मुद्रित सामग्री/पाठ, शिक्षक और विद्यार्थियों के बीच एवं विद्यार्थियों में आमने-सामने संपर्क के प्रावधान के साथ या बिना प्रावधान के, अधिगम का एकमात्र साधन है। दूरस्थ शिक्षा में, प्रिंट मीडिया के अतिरिक्त ऑडियो, वीडियो, रेडियो, टेलीविजन, टेलीफोन, कंप्यूटर्स आदि अनुदेश का माध्यम बनाते हैं। पत्राचार एवं दूरस्थ शिक्षा दोनों में सामग्री को डाक द्वारा भेजा जाता है, परन्तु दूरस्थ शिक्षा में मल्टीमीडिया उपागम का उपयोग होता है, जिसमें मानव संपर्क (आमने-सामने) का उपयोग अनुदेशनात्मक प्रयोजनों के लिए सम्मिलित है। पत्राचार शिक्षा की तुलना में दूरस्थ शिक्षा में विद्यार्थी सहायता सेवाएं अधिक संशोधित हैं। पत्राचार शिक्षा और दूरस्थ शिक्षा दोनों ही प्रमाण-पत्र प्रदान करने के लिए नियत ज्ञान देती है, परंतु दूरस्थ शिक्षा के विविध लक्ष्य हैं जिनमें सम्मिलित हैंः बेहतर रोजगार संभावनाओं के लिए प्रशिक्षण और रोजगार वृद्धि, अभिवृत्तियों में परिवर्तन, व्यक्तिगत विकास आदि। यद्यपि प्रवेश और परीक्षा विधि पत्राचार शिक्षा और दूरस्थ शिक्षा दोनों में समान है, तथापि पहली शिक्षा साधारणतः पारंपरिक महाविद्यालय/विश्वविद्यालय के विस्तार के रूप में प्रस्तुत की जाती है, जबकि दूसरी उन संस्थानों द्वारा प्रस्तुत की जाती है, जो अधिकतर स्वतंत्र और स्वायत्त होते हैं। इस प्रकार, आपने ध्यान दिया कि पत्राचार और दूरस्थ शिक्षा में अंतर का आधार उनके उद्देश्य, उपागम, विधियाँ, मीडिया और अभिविन्यास है।

क्या दूरस्थ शिक्षा और दूरस्थ अधिगम एक तथा समान है?

2.3.4 दूरस्थ अधिगम

दूरस्थ शिक्षा में शिक्षण और अधिगम दोनों पर बल होता है। अर्थात्, वहाँ दूरस्थ शिक्षार्थियों में अधिगम को बढ़ावा देने के लिए संगठित शिक्षण होता है। दूरस्थ-अधिगम में अधिगम पर अधिक बल होता है न कि शिक्षण पर। दूरस्थ अधिगम यह मानता है कि एक शैक्षिक उद्यम में अधिगम का उत्तरदायित्व शिक्षार्थियों पर अधिक होता है, जबकि एक दूरस्थ शिक्षक मात्र अधिगम को बढ़ावा देने वाले या सुविधाप्रदाता की भूमिका का निर्वाह करता है, जो सामान्यतः शिक्षार्थी से समय, स्थान और दूरी द्वारा पृथक होता हे। इस प्रकार, दूरस्थ शिक्षा में दूरस्थ शिक्षक शिक्षार्थियों की सहायता हेतु विधि, मीडिया, सामग्री और सहायता सेवाओं को चुनने में स्वतंत्र होता है। दूरस्थ अधिगम मानता है कि अधिगम का उत्तरदायित्व मुख्य रूप से दूरस्थ शिक्षार्थी पर है जिसमें शिक्षार्थी एक विशेष पाठ्यक्रम/या कार्यक्रम के नामांकन हेतु चयन और निर्णय स्वयं करता है। साथ ही मीडिया का चयन भी उसी का होता है; जिसके द्वारा क्या, कैसे और किस गति से सीखना है।

अधिकांश मनोवैज्ञानिक यह मानते हैं कि अधिगम का अर्थ सूचना और ज्ञान का अर्जन है जिसका परिणाम व्यवहार में परिवर्तन होता है (यही शिक्षा का लक्ष्य और दूरस्थ शिक्षा का उद्देश्य है)। परंतु, दूरस्थ शिक्षा शिक्षार्थी के लिए प्रस्तुत सूचना और सामग्री को उसकी स्वयं की समझ के आधार पर अध्यारोपित करने का स्थान रखती है, जोकि सुविधाप्रदाता द्वारा प्रस्तुत प्रयोजन की समझ से भिन्न हो सकती है। इसके अतिरिक्त, शिक्षार्थी को यह स्वतंत्रता होती है कि वह अपनी समझ और प्रस्तुत सूचना का उपयोग किसी भी रचनात्मक तरीके से परिस्थितियाँ और वातावरण जो उसकी इच्छा के अनुकूल हो, बिना उस सुविध ाप्रदाता या संस्थान, जिसने अधिगम सामग्री सृजित की है, का आश्रय लिए हुए के द्वारा कर सकता है (http://cdn.intechopen.com/pdfs-wm/39188.pdf)। इस प्रकार, दूरस्थ शिक्षा संगठित शिक्षण और अधिगम की पूर्वमान्यता है, दूरस्थ अधिगम शिक्षार्थी को स्वतंत्रता और उत्तरदायित्व की अनुमति देती है।

तब 'दूरस्थ अधिगम,' 'मुक्त और दूरस्थ अधिगम' से किस प्रकार भिन्न है?

2.3.5 मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम

दूरस्थ अधिगम को बिल्कुल भी मुक्त होने की आवश्यकता नहीं है (राउनट्री, 1992: 30)। यह सुझाता है कि 'मुक्त अधिगम' और 'दूरस्थ अधिगम' में अंतर है। कई दशकों तक ''दूरस्थ अधिगम'' का वर्णन दूर से संगठित, वितरित और अर्जित अधिगम के रूप में किया गया है। बीसवीं शताब्दी के अंत तक 'मुक्त' शब्द दूरस्थ अधिगम के साथ पूर्व में जुड़ गया। यह तीन महत्त्वपूर्ण विकासों: औपचारिक विद्यालयी प्रणाली के विरोध में आलोचनाओं, जी. ए.टी.टी. (जनरल एग्रीमेंट ऑन टेरिफ्स एंड ट्रेड्स) और वैश्वीकरण के परिणाम स्वरूप हुआ (http://cdn.intechopen.com/pdfs-wm/39188.pdf)। इसका अर्थ है दूरस्थ अधिगम मुक्त या अधिक औपचारिक हो सकता है।

वर्ष 1994 में, जब जनरल एग्रीमेंट ऑन टैरिफ्स एंड ट्रेड्स (जी.ए.टी.टी) ने शिक्षा को अन्तर्राष्ट्रीय विक्रेय वस्तु बनाया, तो इस समझौते का मुक्त और दूरस्थ अधिगम के विकास पर गहरा सकारात्मक प्रभाव पड़ा और इससे भी अधिक उन समाजों में शैक्षिक परस्पर क्रिया को बढ़ावा देने में, जोकि विशाल भौगोलिक दूरी के परिणाम स्वरूप एक दूसरे से पृथक हैं और उन्होंने कभी भी शैक्षिक सहयोग के बारे में कल्पना नहीं की (प्रीसे और बियो, 2011)।

इस प्रकार, पृथ्वी के बहुत से निवासियों के लिए अधिगम अवसरों को आरंभ किया उनकी भौगोलिक अवस्थिति के भेदभाव के बिना यह पूर्व में कभी नहीं किया था। मुक्त अधिगम की अवधारणा तब शैक्षिक पदावली में प्रवेश किया एवं दूरस्थ से किए जा रहे अधिगम प्रबंधन के अतिरिक्त ''दूरस्थ अधिगम'' को द्योतित करने हेतु ''मुक्त'' उपसर्ग जोड़ा गया, यह ''मुक्त अधिगम'' के समान ही है, जिसमें ''मुक्त अधिगम'' को निम्नलिखित होना समझा जाता है'

> ''... व्यक्तियों को ऐसा समय, स्थान और जगह जो उनकी परिस्थितियों एवं आवश्यकताओं को संतुष्ट करती है पर अधिगम हेतु सक्षम बनाने के लिए व्यवस्थाएं उन बाधाओं जो भौगोलिक अलगाव, व्यक्तिगत कार्य प्रतिबद्धताओं या पारंपरिक पाठ्यक्रम संरचना का परिणाम है, जिन्होंने वयक्तियों की प्रायः उनकी आवश्यकताओं के अनुसार प्रशिक्षण तक पहुंच को रोका है को दूर करके अवसरों को खोलने पर बल है।'' (राउनट्री, 1992, http://cdn.intechopen.com/pdfs-wm/39188.pdf)।

और होने के लिए :

> ''... अधिगम अवसरों की वृहद श्रृंखला, जिसका दो लक्ष्य शिक्षार्थियों को ज्ञान और कौशल प्राप्त करने में सहायता देना है जो अन्यथा प्राप्त नहीं होते और शिक्षार्थियों को उनके स्व-अधिगम पर नियंत्रण का अनुकूलतम अंश प्रदान करना।'' (डिक्सॉन, 1987; http://cdn.intechopen.com/pdfs-wm/39188.pdf)।

मुक्त अधिगम की एक आवश्यक विशेषता पहुँच और अधिगम में जो बाधाएँ समय, स्थान, गति और तकनीकी के संदर्भ में है को दूर करना है। आर्दश रूप में कहा जाय तो, किसी भी व्यक्ति को मुक्त दूरस्थ अधिगम कार्यक्रम की पहुंच से वंचित नहीं किया जा सकता। परन्तु, वास्तव में कोई भी मुक्त दूरस्थ अधिगम कार्यक्रम पूर्णरूप से सही अर्थ में मुक्त नहीं होता। दूसरे शब्दों में, 'मुक्त अधिगम, और 'दूरस्थ अधिगम' लचीलेपन की मात्रा के आधार पर पैमाने बढ़ाने लायक होने चाहिए जो दिए गए संदर्भों में संभव होता है।

2.3.6 मुक्त शिक्षा

हम सब जानते हैं कि औपचारिक शिक्षा संस्थाओं की अपनी औपचारिकताएं तथा प्रतिबंध होते हैं, जो प्रवेश, सीटों की संख्या, पाठ्यक्रम अवधि, निर्देश, परीक्षा एवं अन्य प्रविधियां हैं। यदि इन प्रतिबंधों और औपचारिकताओं को लचीला कर दिया जाय या हटा दिया जाय तो अधिगम और शिक्षा अधिक लचीली तथा मुक्त बन सकती है।

जरविस (1990) के अनुसार ''मुक्त शिक्षा एक ऐसा शीर्षक है जो शिक्षण और अध्ययन की अधिक लचीली विधियों के लिए दिया गया है। इसमें पहुंच, विषय वस्तु, संचालन प्रणाली और आँकलन में स्वतंत्रता होती है। कुछ महाविद्यालय या प्रदाता-आधारित प्रणाली हैं, जिनमें शिक्षार्थी केन्द्रों पर उपस्थित होते हैं; कुछ स्थानीय-आधारित प्रणाली हैं जो अध्ययन में लचीलापन और सहायता रखते हैं, परंतु यहाँ पर अधिगम शिक्षार्थियों द्वारा उनके घर पर संचालित होता है और दूरस्थ अधिगम प्रणाली। वास्तव में मुक्तता की विशेषता है : लचीलापन या बिना कठोरता के प्रवेश, योग्यता, व्यक्ति की स्वयं की गति और सुविधा के अनुसार अधिगम, पाठ्यक्रम के चयन में लचीलापन, आधुनिक और उपयुक्त शैक्षिक एवं संप्रेषण तकनीकी का उपयोग। मुक्त अधिगम/शिक्षा दूरस्थ अधिगम प्रणाली या संस्पर्शी/पारंपरिक प्रणाली के माध्यम से उसमें स्वतंत्रता और लचीलेपन के समावेश द्वारा भी प्रदान की जा सकती है। अतः यह एक दर्शन या उपागम को संदर्भित करता है, जो दोनों स्थितियों में प्रयुक्त हो सकता है।

एस्कोटेट (1983) मुक्त शिक्षा और दूरस्थ शिक्षा में अंतर करते हैं। उनके लिए मुक्त शिक्षा की मुख्य विशेषता है : प्रतिबंधों, पर्यटनों और विशेष अधिकारों से मुक्त करने का दर्शन विद्यार्थियों के पूर्व अनुभवों का प्रमाणन, समय चर के प्रबंधन में लचीलापन और प्रोफेसर्स एवं विद्यार्थियों के बीच पारंपरिक संबंधों में ठोस परिवर्तन। दूसरी ओर, दूरस्थ शिक्षा एक ऐसा साधन है, जो शिक्षार्थियों को स्वयं के निवास स्थान या कार्य-स्थान से अधिगम के अवसर प्रदान करती है। इस प्रकार, दूरस्थ शिक्षा का प्रयोजन मुक्त शिक्षा को प्रोत्साहन देना है।

अब, शायद आप दो अवधारणाओं के बारे में स्पष्ट हो गए होंगे – दूरी और मुक्तता। 'दूरी' पद्धति को संदर्भित करती है, जबकि 'मुक्तता' दर्शन को। मुक्तता को लचीलेपन या सुविधाजनक या प्रतिबंधों के अभाव के संदर्भ में देखा जाता है। जबकि औपचारिक/पारंपरिक शिक्षा आवश्यक नहीं है कि अवरुद्ध या बन्द हो, दूरस्थ शिक्षा मुक्त हो सकती है और नहीं भी। मुक्त शिक्षा पारंपरिक और दूरस्थ शिक्षा संस्थाओं दोनों के द्वारा संभव है। लेकिन, व्यवहारिक रूप में यह सत्य है कि अपनी प्राकृतिक विशेषताओं के कारण औपचारिक संस्थान प्रतिबंधों में उस सीमा तक छूट नहीं दे सकते जितना कि दूरस्थ शिक्षा संस्थान, यह छूट प्रवेश, पाठ्यक्रम का चयन, पाठ्यक्रम के संयोजन, मूल्यांकन आदि में होती है।

कुछ अन्य शब्द भी हैं जैसे गृह अध्ययन, स्वतंत्र अध्ययन, कैम्पस के बाहर अध्ययन, सीमा के बाहर अध्ययन जो प्रायः दूरस्थ शिक्षा या मुक्त शिक्षा के पर्यायवाची के रूप में उपयोग में लाए जाते हैं। इन शब्दों की संक्षेप में व्याख्या निम्न हैं :

i) **गृह अध्ययन :** यह एक ऐसी शिक्षा है जो विद्यार्थियों के लिए घर पर अध्ययन के लिए रूपांकित की गई है। यह शब्द मुख्य रूप से यूरोप तक सीमित है, शायद यह स्वीडिश स्कूल ऑफ कौरेस्पोंडेंस कोर्सेस के प्रभाव के कारण हो सकता है। तथापि, यह कनाडा और संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के कई स्थानों पर भी उपयोग में लाया जा रहा है।

ii) **स्वतंत्र अध्ययनः** हमने वेडेमेयर द्वारा दी गई स्वतंत्र अध्ययन की परिभाषा के बारे में पढ़ा है जो स्पष्ट रूप से वर्णित है। वास्तव में यह उनके लेखों द्वारा ही आज उत्तरी अमेरिका में प्रचलित हो गया है।

iii) **कैम्पस के बाहर अध्ययन :** यह कैम्पस के अंदर परंपरागत प्रकार के अध्ययन के विपरीत है और प्रशांत (पेसिफिक) क्षेत्रों – ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण एशियाई देशों – में विस्तृत रूप से उपयोग में लाया जाता है।

iv) **बाह्य अध्ययन :** इसका उपयोग ऑस्ट्रेलिया में होता है। यह व्यक्ति को भ्रमित कर सकता है जब कोई व्यक्ति इसे 'वाह्य प्रणाली' समझता है, जैसा कि वर्षों पूर्व यह लंदन में क्रियान्वित था। लंदन का 'बाह्य प्रणाली' मॉडल ने शिक्षार्थियों के लिए मान्य परीक्षाओं में बैठना संभव बनाया, परंतु शिक्षण प्रणाली के साथ आवश्यक रूप से संबद्ध नहीं है। ऑस्ट्रेलिया ने इस शब्द को स्पष्ट कारणों से अपनाया। यह भी स्पष्ट है कि यह शब्द उन सबका भाव नहीं बताता जो आज 'दूरस्थ शिक्षा' शब्द का अर्थ समझे जाते हैं।

v) **दीवार के बारह अध्ययन :** यह अभिव्यक्ति न्यूजीलैंड में उपयोग की जाती है जो यह संप्रेषित करता है कि दूरस्थ शिक्षा का अर्थ अधिकांश व्यक्तियों के लिए क्या है।

vi) **दिवार रहित विश्वविद्यालयः** यह अमेरिका में एक 'मुक्त अधिगम' आंदोलन है जो जीविका और जीवन अनुभवों के लिए शैक्षिक साख (क्रेडिट) प्रदान करता है और शिक्षण एवं अधिगम कोर्सेस का संगठन करता है।

इन शब्दों की स्थानीय प्रचलन को सम्मान देते हुए, निस्संदेह ये सभी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जाने गए शब्दों के भाग हैं जो मुक्त और दूरस्थ शिक्षा (ओ.डी.ई.) को संदर्भित करते हैं।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

2) दूरस्थ शिक्षा, पत्राचार शिक्षा से कैसे भिन्न है? इस संदर्भ में 'दूरस्थ' एवं 'मुक्त' पदों की व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2.3.7 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा, मुक्त शिक्षा/मुक्त अधिगम और दूरस्थ शिक्षा का संयुक्त प्रभाव है। इसका अर्थ है *दर्शन* (मुक्त शिक्षा या मुक्त अधिगम के अन्तर्गत) और *पद्धति* (दूरस्थ शिक्षा के अन्तर्गत) का संयोजन। अर्थात् मुक्त और दूरस्थ शिक्षा। इसका तात्पर्य है – दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से मुक्त शिक्षा। इसका आशय यह भी है कि दूरस्थ शिक्षा सदैव 'दूरी' और 'मुक्तता' के वास्तविक संदर्भ में मुक्त हो, यह आवश्यक नहीं है। क्योंकि कार्यक्रम की मुक्तता एक सापेक्षिक विशेषता है, अतः सभी दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों को समान मात्रा में मुक्त होना आवश्यक नहीं है और न ही हो सकते हैं। दूसरे शब्दों में, दूरस्थ शिक्षा भी अधिक पारंपरिक प्रकृति की हो सकती है, यदि यह कठोर मापदंडों पर आधारित हो। इस प्रकार, स्पष्ट है कि दूरस्थ शिक्षा *'मुक्त दूरस्थ शिक्षा'* या *'पारंपरिक दूरस्थ'* शिक्षा हो सकती है। तथापि एक भी दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम ऐसा नहीं है जो पूर्णतया मुक्त हो, क्योंकि इसे हमेशा अन्य कार्यक्रमों के साथ इसके संबंध के रूप में माना और व्यक्त किया जाता है।

उपर्युक्त पदों के बीच समानताएं और भिन्नताएँ : अधिक स्पष्टता के लिए, हमें सदैव इन शब्दों – मुक्त अधिगम, लचीला अधिगम, ऑनलाइन /वर्चुवल लर्निंग, मुक्त शिक्षा और दूरस्थ शिक्षा को उनके सापेक्षिक और तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य में समझने की आवश्यकता है। क्योंकि ये शब्द कई व्यक्तियों द्वारा प्रायः समान अर्थ के लिए प्रयुक्त किए जाते हैं; यद्यपि इनके बीच कुछ महत्त्वपूर्ण अंतर है। अतः इन शब्दों में अंतर और समानताएं उनकी मुक्तता, दूरी, लचीलापन, ऑनलाइन और वर्चुवलिटी के संदर्भ में है।

2.3.8 आजीवन अधिगम/शिक्षा

यह मान्यता नयी नहीं है कि शिक्षा एक आजीवन प्रक्रिया है और बालपन एवं युवावस्था तक सीमित नहीं है। इसका कारण यह सत्य है कि एक व्यक्ति अपनी प्रौढ़ावस्था में बचपन और युवावस्था की तुलना में अधिग वर्ष व्यतीत करता है तथा जिन क्रियाकलापों में वह संलग्न रहता है, उसमें उसका निष्पादन, उसकी कार्यात्मक क्षेत्रों में शिक्षा की गुणवत्ता पर निर्भर करता है। पारंपरिक शिक्षा प्रणाली कई क्षेत्रों में निष्फल रही है और विविध व्यक्तियों की बदलती हुई आवश्यकताओं और माँगों की पूर्ति करने में असफल सिद्ध हुई है। इनमें से कुछ महत्त्वपूर्ण हैं: सीमित लक्ष्य और उद्देश्य, शिक्षाप्रद प्रक्रिया में असुविधाएँ और कमियाँ, अप्रासंगिक पाठ्यक्रम और पूर्ण रूप से पारंपरिक प्रणाली की असफलता। परिणाम स्वरूप शिक्षा में संकट उत्पन्न हो गया और यह प्रणाली व्यक्तियों को उनके आधुनिक और परिवर्तनशील जीवन की चुनौतियों का सामना करने के योग्य नहीं बना सकीं। संकट के समाधानों को ढूंढ़ने की प्रक्रिया में और एक अधिगमशील समाज या एक शिक्षात्मक समाज की ओर प्रयासरत रहने के लिए 'आजीवन शिक्षा' को पूरे विश्व में बढ़ती हुई मान्यता और स्वीकार्यता प्राप्त हुई।

यूनेस्को की रिपोर्ट 'लर्निंग टू बी' (फारे, 1972), आजीवन शिक्षा पर एक महत्त्वपूर्ण अग्रणी दस्तावेज है। इसमें व्यक्ति, शिक्षा और समाज के बारे में विकसित सुसंगत दर्शन सम्मिलित है, जिसका संबंध आजीवन अधिगम से है। समाज को परिवर्तित करने के लिए यह शिक्षा के प्रति एक आशावादी विचार अपनाता है। सीखने की उत्सुकता, *'लिबिडो सेडी'* मानव प्रकृति में गहरी जड़ें रखता है और एक बार बाह्य बाधाओं को दूर कर दिया तो यह आजीवन अधिगम के लिए आवश्यक प्रेरणा प्रदान करेगा। भावी समाज अधिगमशील समाज होगा और भावी समाज की संस्कृति *'वैज्ञानिक मानववाद'* होगी। रिपोर्ट के अनुसार ''प्रत्येक व्यक्ति इस स्थिति में होना चाहिए कि वह अपने जीवन पर्यन्त सीखना जारी रख सके? आजीवन शिक्षा का विचार अधिगमशील समाज की कुंजी है। आने वाले समय में आजीवन

शिक्षा विकसित और विकासशील दोनों देशों में शिक्षा नीतियों के लिए मुख्य अवधारणा होगी।

2.3.8.1 अवधारणा

अवधारणा की बेहतर समझ के लिए आइए हम आजीवन शिक्षा की कुछ परिभाषाओं का अवलोकन करें। यूनेस्को (1976) परिभाषित करता है, आजीवन शिक्षा एक प्रक्रिया है, जो एक वयक्ति के बचपन में आरम्भ होती है और उसके जीवन भर निरंतर चलती है। इसमें सम्मिलित हैं व्यक्ति द्वारा प्राप्त की जाने वाली औपचारिक, अनौपचारिक और निरौपचारिक शिक्षा। शैक्षिक और अधिगम प्रक्रिया जिसमें सभी आयु के बच्चे, युवा और प्रौढ़ अपनी जीवनयात्रा के दौरान संलग्न रहते हैं, वे जिस रूप में भी हो, सभी को समग्र रूप में समझा जाना चाहिए। दवे (1976) आजीवन शिक्षा को इस प्रकार मानते हैं : ''व्यक्तियों और उनके समुदाय दोनों के जीवन की गुणवत्ता में वृद्धि हेतु उनकी संपूर्ण जीवन अवधि के दौरान व्यक्तिगत, सामाजिक और व्यावसायिक विकास के संपूर्ति की प्रक्रिया है। यह एक व्यापक और एकीकृत विचार है, जिसमें व्यक्ति के जीवन की विभिन्न अवस्थाओं में संभावित पूर्ण विकास की प्राप्ति हेतु ज्ञानार्जन और उसमें वृद्धि हेतु औपचारिक, अनौपचारिक और निरौपचारिक अधिगम सम्मिलित हैं। यह वयक्तिगत प्रगति और सामाजिक विकास दोनों से संबंधित है''। जारविस (1990) के अनुसार; आजीवन शिक्षा घटनाओं की नियोजित श्रृंखला है, जिसके मानवीय आधार हैं, जो प्रतिभागियों के अधिगम और समझ की ओर दिशा-निर्देशित हैं, जो जीवन अवधि की किसी भी अवस्था में हो सकते हैं। कुछ नियत उपागमों और उसके अन्तर्गत दर्शनों के पुनरावलोकन द्वारा वह व्यक्त करते हैं कि आजीवन शिक्षा एक अवधारणा और आदर्श है जो तब तक निरर्थक रहता है, जब तक कि इसे वास्तव में क्रियान्वित नहीं किया जाता।

यद्यपि परिभाषाओं की शब्दावली भिन्न है, तथापि हम आजीवन शिक्षा को एक अवधारणा के रूप में समझ सकते हैं, जो :

- सभी आयु वर्ग के सभी व्यक्तियों की शिक्षा के सभी प्रकार और प्रक्रियाओं को सम्मिलित करती है।
- पूर्णकालिक शिक्षा के प्रारंभिक चक्र तक सीमित सभी अनुभवों, जो बचपन से शुरू होते हैं, को एक बार में समाहित करने का प्रयोजन नहीं रखती, परंतु एक प्रक्रिया है जो एक व्यक्ति के जीवन पर्यन्त निरंतर चलनी चाहिए।
- निरंतर अधिगम प्रक्रिया है, जो प्रत्येक व्यक्ति को जीवन-पर्यंत आगे की ओर नई शिक्षा के व्यावसायिक और सामान्य क्षेत्रों में अवसर प्रदान करती है।
- वयक्ति को अपनी परिस्थितियों (विवाह, अभिभाविकी, व्यावसायिक स्थिति, वृद्धावस्था, आदि) के परिवर्तनों को अपनाने और अपने स्वयं के विकास हेतु अपनी पूर्ण क्षमता प्राप्त करने हेतु तकनीकी और सामाजिक परिवर्तनों से अवगत कराने का प्रयास करती है।
- व्यक्ति के प्रयोजनात्मक और आकस्मिक दोनों प्रकार के अनुभवों को समाहित करती है।

क्रोप्ले (1982) ने आजीवन शिक्षा की उभरती अवधारणा का तीन शब्दों में बदल दिया है जिसमें बदलाव और जोर के मुख्य दिशा निर्देश हैं– विस्तार नवाचार और एकीकरण। ***विस्तार*** का अर्थ है – समय पर अधिगम, शिक्षार्थी की संपूर्ण जीवन अवधि में अधिगम स्थितियों के गुणज सभी अवस्थाओं एवं रूपों को समाहित करना और सभी प्रकार के

अवसर प्रदान करना। *नवाचार* में अधिगम की वैकल्पिक संरचनाएं एवं प्रारूप, सामान्य और व्यावसायिक शिक्षा के बीच सार्थक परस्पर संबंध प्रदान करना तथा नवीन आवश्यकताओं के अनुसार वर्तमान प्रथाओं को अपनाना आते हैं। *एकीकरण* इनको संदर्भित करता है– शैक्षिक प्रक्रिया को अधिक प्रभावशाली बनाने और नई अधिगम स्थितियों अन्तर्विषयी के अतिरिक्त, के सृजन हेतु घर की शिक्षात्मक क्षमताएं, स्थानीय समुदाय, वृहद् समाज, कार्य संसार और मीडिया का उपयोग।

अब समझ सकते हैं, कि आजीवन शिक्षा में वृहद् रूप से सम्मिलित है वे सभी प्रक्रियाएं जिनके द्वारा व्यक्ति अपने आवश्यक व्यावसायिक विकास और मूल्यवान निजी समृद्धि हेतु आजीवन शिक्षा निरंतर अर्जित करता है। इसका अर्थ यह है कि, विद्यालयी शिक्षा में सीमित समय की उपस्थिति के अतिरिक्त अधिगम जीवन भर चलना चाहिए जिसमें सभी प्रकार के कौशलों और ज्ञान शाखाओं का संमिलन, सभी व्यक्तियों को उनके व्यक्तित्व के समग्र विकास हेतु सभी संभव माध्यमों का उपयोग और अवसर प्रदान करना सम्मिलित है।

तथापि, 'education permanente' 'आजीवन शिक्षा' के लिए प्रयुक्त एक फ्रैंच शब्द है, जो स्पष्ट करता है कि उच्च शिक्षा, औपचारिक विद्यार्थियों, साथ ही उन परिपक्व विद्यार्थियों, जिन्हें पहले उच्च शिक्षा का अवसर प्राप्त नहीं हुआ, यहां तक कि उनमें प्रवेश के लिए आवश्यक योग्यताएं भी न हों, दोनों के लिए उच्च शिक्षा मुक्त होनी चाहिए। इसका आशय यह है कि व्यक्तियों की आजीवन परंतु बाधित आवश्यकताओं जो सामाजिक, शैक्षिक और व्यावसायिक जीवन में पुनरावृत्ति हो सकती हैं, की पूर्ति हेतु शिक्षा प्रणाली के पुनर्निमाण की आवश्यकता है।

सामयिक साहित्य में आजीवन शिक्षा के दो उपागम दिखाई देते हैं। एक है जो प्रारंभिक शिक्षा को आगे बढ़ाने पर बल देती है – जिसको कहते हैं *'आगे की शिक्षा'*, और दूसरा *निरंतर शिक्षा* के विचार का उपयोग करते हुए इसे जीवन भर चलाने पर जोर देता है। आजीवन शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए, ''प्रत्येक व्यक्ति को उसके बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक और व्यावसायिक धरातलों पर साथ ही दो लिंगों के बीच में अभिभावकों, माता-पिता और बच्चों के बीच और इसी तरह आगे संबंधों में स्वयं को व्यक्त करने की संभावनाओं में वृद्धि करना होना चाहिए'' (टिट्मस, 1989)।

इस प्रकार, आजीवन शिक्षा वह है जहां व्यक्ति के जीवनभर में शैक्षिक अनुभवों का प्रावधान और उपयोग हो। इसका निहितार्थ है जीवन भर सीखना। अतः यह एक समग्र योजना है जिसका लक्ष्य वर्तमान शैक्षिक प्रणाली की पुनर्रचना और शैक्षिक प्रणाली के भीतर और बाहर पूर्ण शैक्षिक योग्यता का विकास करना, दोनों को दर्शाती है। इसके अन्तर्गत संगठन में मूल-परिवर्तन आंतरिक रूप से सम्मिलित है; शिक्षा के अन्य सभी चरणों के रूपों और विषय वस्तु में। इसका आशय यह भी है कि यह गैर-शैक्षिक संस्थाओं जैसे व्यापार, औद्योगिक, और कृषि कंपनियों के शैक्षिक कार्यों को अधिक मान्यता देती है।

2.3.8.2 सिद्धांत और विशेषताएं

आजीवन शिक्षा के वैश्विक संदर्भ में आजीवन शिक्षा अपने उद्देश्यों, संरचनाओं, पाठ्यक्रमों और विधियों में ठोस परिवर्तन की मांग करती है। क्योंकि एक संपूर्ण घटक में शिक्षा और जीवन के सभी क्षेत्र परस्पर बुने हुए हैं, इसलिए महत्त्वपूर्ण परिवर्तन न केवल प्रथम चरण में ही आवश्यक है बल्कि इसे एक सुसंगठित प्रणाली बनाने के लिए प्रौढ़-शिक्षा में भी आवश्यक है।

अधिकांश लोग अपने जीवन का अधिक समय बचपन की तुलना में वयस्कता में व्यतीत करते हैं और प्रौढ़ावस्था में अधिगम एक आवश्यक भूमिका अदा करता है। अतः यह स्पष्ट है कि किसी भी आजीवन शिक्षा प्रणाली या योजना में प्रौढ़ शिक्षा एक मुख्य अंग होना चाहिए। टिट्मस (1989) के अनुसार, आजीवन शिक्षा के मुख्य सिद्धांत हैं :

a) आजीवन शिक्षा की प्रविधियों को बढ़ावा देने के लिए इसे शिक्षा प्रणाली का अभिन्न अंग होना चाहिए;

b) विद्यालयों और विश्वविद्यालयों के समान ही शिक्षा के सभी अंशों का स्तर भी होना चाहिए; और

c) सभी प्रौढ़ों को प्राकृतिक और सामान्य रूप से अधिगम में संलग्न होना चाहिए – जिस प्रकार बच्चों के लिए सार्वभौमिक शिक्षा है, उसी प्रकार प्रौढ़ों के लिए सार्वभौमिक शिक्षा।

ये सभी सिद्धांत एक व्यापक और समेकित/एकीकृत शिक्षा प्रणाली का आह्वान करते हैं जो समाज को एक अधिगमशील समाज बनाने के लिए सभी व्यक्तियों को निरंतर अधिगम प्रक्रिया में संलग्न रख सकती है।

आजीवन शिक्षा की विशेषताओं पर एक विचार इस अवधारणा की बेहतर समझ प्रदान कर सकता है। दवे (1973) द्वारा आजीवन शिक्षा की प्रासंगिक पारिभाषिक विशेषताएं संक्षेप में म्निलिखित हैं :

a) व्यवस्था में तथा सेवा प्राप्त ग्राहकों की समग्रता और सार्वभौमिकता;

b) शिक्षण और अधिगम विधियों और सामग्री में गतिशीलता और विविधता; तथा

c) शिक्षार्थियों में आजीवन अधिगम हेतु आवश्यक व्यक्तिगत विशेषताओं के बढ़ावा पर बल (अभिप्रेरणा, स्व-छवि, मूल्य, अभिवृत्तियां और अन्य)।

परंतु, क्रोप्ले (1982), आजीवन शिक्षा की मुख्य विशेषताओं को एक विस्तृत रूप में रखते हैं। उनके अनुसार, आजीवन शिक्षा प्रदान करती है :

i) *जीवनपर्यंत निरन्तर अधिगम* – बचपन और युवावस्था के अतिरिक्त संपूर्ण प्रौढ़ावस्था में शिक्षा को जारी रखने के लिए;

ii) *बाल्यावस्था की आवश्यकताएं* – युवा लोगों के लिए चिंता के साथ; क्योंकि उनकी शिक्षा भावी मनोवैज्ञानिक विकास का आधार बनाती है;

iii) *प्रौढ़ों की आवश्यकताएं* – प्रौढ़ों की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु उनके निरंतर विकास के लिए उच्च स्तरीय पहलों को बढ़ावा देना;

iv) *मनोवैाानिक क्षेत्रों का समन्यवयन* – व्यक्ति की मनोवैज्ञानिक कार्यात्मकता के कई क्षेत्रों को समन्वित करने के लिए समस्तरीय एकीकरण के सिद्धांत का अनुसरण करना;

v) *व्यक्तिगत वृद्धि हेतु शिक्षा* – अन्तरव्यक्तिगत/अन्तर-मानसिक वृद्धि को प्रोत्साहन देना।

vi) *सामाजिक विकास हेतु शिक्षा* – विविध भूमिकाओं और उनकी बदलती हुई प्रकृति के बारे में शिक्षित करना तथा बदली हुई भूमिकाओं को अपनाने के लिए योग्यता में वृद्धि करना; तथा

vii) *समता शिक्षा* – सभी व्यक्तियों का सभी अवस्थाओं पर शिक्षा की समान पहुंच प्रदान करना।

'इंटरनेशनल कमीशन ऑन एजुकेशन फॉर टवंटी फर्स्ट सैन्चुरी' पर यूनेस्कों की रिपोर्ट ''लर्निंग : द ट्रेजर विथिन'' (यूनेस्को, 1996) के अनुसार, शिक्षा की पुनर्रचना के लिए निम्नलिखित चार स्तम्भ बुनियादी सिद्धांत हैं :

- ***जानने के लिए सीखना :*** संसार और उसकी जटिलताओं को बेहतर रूप से समझने के लिए आवश्यक ज्ञानात्मक उपकरण प्रदान करना तथा भावी अधिगम हेतु उपयुक्त और पर्याप्त आधार प्रदान करना।
- ***करने के लिए सीखना :*** वैश्विक अर्थव्यवस्था और समाज में प्रभावशाली ढंग से सहभागिता हेतु व्यक्तियों को सक्षम बनाने के कौशल प्रदान करना।
- ***एक साथ मिलकर रहने के लिए सीखना :*** व्यक्तियों और समाजों को शांति और भाईचारे के साथ रहने में सक्षम बनाने के लिए उन्हें मानवाधिकारों, लोकतांत्रिक सिद्धांतों, समाज के सभी स्तरों पर अन्तर्सांस्कृतिक समझ, आदर और शांति एवं मानव संबंधों का सम्मान में निहित मूल्यों के प्रति व्यक्तियों को जागरूक करना।
- ***अपने अस्तित्व के लिए सीखना :*** व्यक्तियों को सम्पूर्ण व्यक्ति' बनने के लिए अपनी पूर्ण क्षमता – मनोसामाजिक, भावात्मक और साथ ही शारीरिक – को विकसित करने में सक्षम बनाने के लिए आत्मविश्लेषणात्मक और सामाजिक कौशल प्रदान करना।

उपयुर्क्त चर्चा द्वारा आप स्पष्ट रूप से समझ गए होंगे कि आजीवन शिक्षा को शिक्षा की अवधारणा में संपूर्ण परिवर्तन की आवश्यकता है और आधुनिक मानव के जीवन की अभी अवस्थाओं में आवश्यक शिक्षा और प्रशिक्षण के सभी रूपों में आमूल परिवर्तन की भी आवश्यकता है। संपूर्ण शिक्षा प्रणाली को सुधारने की प्रक्रिया सरल कार्य नहीं है, क्यांकि प्रणाली के विभिन्न अंगों के लिए इसके कई निहितार्थ हैं। उनमें से कुछ को हम यहां समझेंगे।

2.3.8.3 कार्यान्वयन के निहितार्थ

यद्यपि इस अवधारणा को सैद्धांतिक रूप से बड़ी स्वीकार्यता मिली है परंतु व्यवहार में अभी भी यह सिद्धांत की तुलना में बहुत पीछे है। इसका कारण यह है कि आजीवन शिक्षा के शिक्षार्थियों और अधिगम प्रक्रियाओं, शिक्षकों और अनुदेशनात्मक विधियों, शैक्षिक संस्थानों और आजीवन अधिगम का मूल्यांकन पर व्यापक निहितार्थ है। नेप्पर और क्रोप्ले (1985) और यूनेस्को (1996) ने इन निहितार्थों की चर्चा वैश्विक ग्राम को शिक्षित करने के प्रयासों में विस्तृत रूप से बुनियादी शिक्षा से लेकर विश्वविद्यालयी शिक्षा तक की। इन निहितार्थों का विस्तृत विवरण बहुत ही सामान्य रूप में आपकी स्पष्ट समझ के लिए निम्नलिखित है।

i) शिक्षार्थी और अधिगम प्रक्रियाएं

सभी शिक्षार्थी जब अपने जीवन में विभिन्न क्रियाकलापों में संलग्न होते हैं तो वे अधिगम की औपचारिक, निरौपचारिक और अनौपचारिक प्रक्रियाओं द्वारा शिक्षा अर्जित करते हैं। यद्यपि विभिन्न प्रकार के क्रियाकलापों में व्यय समय की मात्रा एक शिक्षार्थी और दूसरे शिक्षार्थी के लिए भिन्न हो सकती है। इस प्रकार की व्यापक गतिविधियों या अनुभवों के प्रावधान के लिए पाठ्यक्रम की पुनर्रचना की आवश्यकता है दैनिक जीवन की शिक्षा के सभी रूपों और सभी प्रकार के जिसमें पाठ्यक्रम-अनुभवों का उपयुक्त ऊर्द्धवाधर और क्षैतिक एकीकरण के साथ शिक्षार्थियों–पूर्णकालिक और अंशकालिक, पारंपरिक और गैर-पारंपरिक, वृद्ध और युवा इसी प्रकार अन्य के सभी को सम्मिलित किया जाएगा।

ii) **शिक्षक एवं अनुदेशनात्मक विधियाँ**

विषमजातीय समूहों के शिक्षार्थियों में आजीवन शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए प्रयुक्त की जाने वाली अनुदेशनात्मक रणनीतियां वास्तविक रूप से उनकी आयु, पृष्ठभूमि, अनुभव, ज्ञान आदि के लिए विभिन्न, विविध तथा धारणीय होनी चाहिए। सस्ता, व्यक्तिगत एवं जन अनुदेशनात्मक रणनीतियां और विधियां जो अधिगम के समय और स्थान की भौतिक बाधाएँ कम उत्पन्न करती हैं। तथा शिक्षा एवं कार्य को संबद्ध करती हैं उनको अनुदेशन हेतु उपयोग में लाने की आवश्यकता है इसके अनुरूप शिक्षकों की बदलती हुई भूमिकाओं एवं उत्तरदायित्वों को पुनर्परिभाषित करना और इनकी स्वीकार्यता को बढ़ावा देना, इस सुधार के संदर्भ में बहुत महत्त्वपूर्ण है।

iii) **शैक्षिक संस्थान**

शैक्षिक संस्थानों के लिए शिक्षण और अधिगम प्रक्रियाओं की प्रकृति और लक्षणों में परिवर्तन, शिक्षकों और शिक्षार्थियों की भूमिकाओं और कार्यों में परिवर्तनों के स्वयं के निहितार्थ हैं। इसमें वर्तमान संस्थानों का परिवर्तन और/या एकीकरण की उपयुक्त कार्यविधि के साथ नए प्रकार के संस्थानों का प्रारम्भ सम्मिलित हो सकता है। व्यवहारिक समस्याएं और कठिनाइयां जो प्रवेश की नीतियों और प्रविधियों, शिक्षण-अधिगम सुविधाओं का प्रावधान, संस्थानों के विभिन्न इकाइयों के बीच और विभिन्न संस्थानों के बीच समन्वयन प्राप्त करना, और विभिन्न कार्यों का नियोजन, वित्तीयकरण तथा प्रशासन आदि में परिवर्तन लाने की संदर्भ में हैं को ध्यान में रखना होता है।

iv) **मूल्यांकन**

चूँकि आजीवन शिक्षा में शैक्षिक संस्थानों का विशेष रूप से उच्च शिक्षा संस्थानों का परिवर्तन सम्मिलित है – अतः यह शिक्षार्थियों के मूल्यांकन, शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाएं, कार्यक्रम, प्रविधियां और समग्र रूप में व्यवस्था/संस्थान हेतु नवाचार की मांग करता है। यह आजीवन शिक्षा प्रणाली पर पुनर्विचार करने, पुनर्निदेशन और आगे सुधार हेतु सहायता करेगी।

हम समझ सकते हैं कि दूरस्थ और मुक्त विश्वविद्यालयों एवं पूरे विश्व में सभी प्रकार के उच्च शिक्षा संस्थानों द्वारा प्रयुक्त व्यक्तिगत अधिगम पर प्रकाश के साथ अनुदेशनात्मक उपागम जैसे दूरस्थ और मुक्त अधिगम में आजीवन शिक्षा के कुछ सिद्धांत समाहित हैं। यद्यपि यह तथ्य स्पष्ट है कि आजीवन शिक्षा का अभ्यास इसके सिद्धांत से बहुत पीछे है, तथापि यह भी सत्य है कि आजकल आजीवन शिक्षा काफी हद तक वास्तविकता बन गई है और शैक्षिक नीति के लिए मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में पहचानी गई है।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

3) पूर्व के भाग में आपके द्वारा अध्ययन किए गए विभिन्न शब्दों के साथ 'आजीवन शिक्षा' शब्द को आप कैसे संबंधित करते हैं? आजीवन शिक्षा के क्रियान्वयन के निहितार्थों को स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

2.4 दूरस्थ शिक्षा के सिद्धांत

आप जानते हैं कि दूरस्थ शिक्षा की जड़ें 'पत्राचार पाठ्यक्रम' से संबंधित परंपरागत अभ्यासों में है जिसने एक नई कार्यविधि (मोडस औपरेंडी) को जन्म दिया। परिणाम स्वरूप शिक्षण और अधिगम अभ्यासों का व्यापक स्तर पर पुनरोत्पादन हुआ। इस घटना के कारण, औद्योगीकृत शिक्षा की अवधारणा के साथ दूरस्थ शिक्षा का एक नया मॉडल उभरा। इसका मूल आधार उत्पादन के मानकीकरण और शिक्षा के वितरण की प्रक्रियाओं के माध्यम से अर्थव्यवस्थाओं का व्यापक पैमाना का सृजन था।

दूरस्थ शिक्षा के सैद्धांतिक आधारों पर चर्चा आपको अधिकांश सामान्य मुद्दों और दूरस्थ शिक्षा के सिद्धांतों से परिचित कराएगी। आपको दूरस्थ शिक्षा के इस विषय से संबंधित महत्त्वपूर्ण विचार और विचारधाराओं की विविध स्पष्ट पंक्तियों का अवलोकन कराने के लिए हम दूरस्थ शिक्षा पर प्राथमिक साहित्य का अवलोकन करेंगे। भाग 2.3 ने आपको प्रासंगिक शब्दावली सहित दूरस्थ शिक्षा अवधारणा की संपूर्ण समझ प्रदान की है। इस भाग में प्रस्तुत विचारधाराओं की स्पष्ट पंक्तियाँ आपको दूरस्थ शिक्षा के सिद्धांत और दर्शन से परिचित होने में सक्षम बनाएंगी और शिक्षण एवं अधिगम के दूरस्थ माध्यम की प्रभावकारिता के प्रति उपयोगी अर्न्तदृष्टि का विकास करेंगी।

शोध और सिद्धांत के एक मजबूत आधार के बिना दूरस्थ शिक्षा पारंपरिक शैक्षिक समुदाय द्वारा मान्यता के लिए संघर्षरत रही (गेरिसन, 1990, हेस 1990, http://www.aect.org/edtech/ed1/13/13-03.html)। हालांकि 1970 के दशक के प्रारम्भ से, जब ब्रिटिश ओपन यूनिवर्सिटी, दूरस्थ और मुक्त शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण संदर्भ बनी, शैक्षिक अनुसंधान के एक बढ़ते निकाय ने दूरस्थ शिक्षा पर शोध के संबंध में सिद्धांत निर्माण के साथ काम किया है (इबांस एण्ड नेशन, 1990; गैरिसन, 1993, 2000; होलम्बर्ग, 1983, 1995; कीगन, 1993; मूरे 1973; 1990; पीटर्स, 1983, 1989; 1993 http://www.aect.org/edtech/ ed1/13/13-03.html)।

इवान्स और नेशन (2003, पृ. 789) के अनुसार, शैक्षिक प्रयासों की कोई भी उपयोगी समझ के लिए सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनैतिक संदर्भों जिसमें वे संपन्न होते हैं, की गहन मीमांसा की आवश्यकता होती है। यहां पर विश्लेषित सभी सिद्धांत बताते हैं कि दूरस्थ शिक्षा को सामाजिक, आर्थिक और बीसवीं शताब्दी की अन्य विशिष्ट परिस्थितियों से उत्पन्न होने वाली घटना के रूप में समझा जाना चाहिए।

2.4.1 दूरस्थ शिक्षा सिद्धांत का विकास : एक परिदृष्टि

यह एक स्थापित सत्य है कि शोध और सिद्धांत के मजबूत आधार के बिना दूरस्थ शिक्षा ने पारंपरिक शैक्षिक समुदाय द्वारा मान्यता पाने के लिए संघर्ष किया है। क्योंकि दूरस्थ शिक्षा उपयुक्त सैद्धांतिक ढांचों की पहचान के लिए संघर्षरत है, अतः कार्यान्वयन का मुद्दा भी अधिक महत्त्वपूर्ण बन जाता है। इन मुद्दों में शिक्षार्थी, निर्देशक (शिक्षक) और तकनीक सम्मिलित हैं। पारंपरिक रूप से, दूरस्थ शिक्षा में सैद्धांतिक निर्माणों और शोध अध्ययनों दोनों को शैक्षिक उपक्रम के संदर्भ में समझा गया है जो मानक, कक्षाकक्ष-आधारित एवं मान्य निर्देशात्मक मॉडल से पूर्णतया भिन्न था। अतः यहां हमारा प्रयास सुसंगत, दृढ़ और वैध सिद्धांत या सिद्धांतों को समझना है जो दूरस्थ शिक्षा अभ्यास का आधार बने जिसके द्वारा पूरे विश्व में विद्यार्थी नामांकन और दूरस्थ शिक्षा संस्थानों की संख्या के संदर्भ काफी वृद्धि हुई।

दूरस्थ शिक्षा के सैद्धांतिक आधार हमें इसके अभ्यास के बारे में वर्णन और सूचना देते हैं और इसके भावी विकासों के बारे में मार्गदर्शन हेतु प्राथमिक साधन प्रदान करते हैं। आपको दूरस्थ शिक्षा के आधारभूत सिद्धातों और दर्शनों का एक विहंगावलोकन प्रदान करने के विचार से महत्वपूर्ण सिद्धांतों को चुनकर उनकी चर्चा नीचे की गई है। इनमें से कुछ सिद्धांत और उनके समर्थक नीचे दिए गए हैं।

तालिका 2.1: दूरस्थ शिक्षा : विचारक और सिद्धांत

क्र.सं.	विचारक का नाम	मुख्य सैद्धांतिक योगदान
1.	चार्ल्स ए वेडेमेयर	स्वतंत्र अध्ययन
2.	माइकेन जी मूर	स्वतंत्र अध्ययन (पुनरावलोकित) • 'दूर': 'संवाद' और 'निश्चयीकरण' का कार्य • शिक्षार्थी स्वायत्तता
3.	ओट्टो पीटर्स	शिक्षण का औद्योगीकृत रूप i) श्रम विभाजन ii) बड़े पैमाने पर उत्पादन iii) व्यवस्थापन, तथा iv) भवनों की संरचना
4.	बोर्जे होलम्बर्ग	निर्देशित व्यवहारिक वार्तालाप
5.	जॉन ए बॉथ	द्विमार्गीय डाक संप्रेषण i) प्रभावशाली ट्यूटर-टिप्पणी, तथा ii) नामांकन-पूर्व परामर्श
6.	डेविड सेवार्ट	सरोकार की निरंतरता • शिक्षण और अधिगम के औद्योगिक रूप में मानव तत्व
7.	गेरिसन और बेयंटन	संप्रेषण और शिक्षार्थी नियंत्रण • समष्टि-संरचनात्मक स्तरीय तत्व • व्यष्टि-संरचनात्मक संचालक तत्व
8.	कीगन	शिक्षण और अधिगम कार्यों का पुनः एककीकरण • समय एवं स्थान में अधिगम कार्यों से शिक्षण कार्यों का पृथकीकरण • शिक्षण एवं अधिगम कार्यों का पुनःएकीकरण
9.	साइमनसन और स्क्लोस्सर	अधिगम अनुभवों की समतुल्यता • स्थानीय शिक्षार्थी • दूरस्थ शिक्षार्थी

आइए अब हम दूरस्थ शिक्षा के प्रासंगिक सिद्धांतों की चर्चा विस्तार पूर्वक करते हैं, जो इसे नई शैक्षिक घटना के रूप में उभरने में सहायता किए।

2.4.2 स्वतंत्र अध्ययन सिद्धांत

यह सिद्धांत चार्ल्स ए. वेडेमेयर द्वारा रचा गया, जो विस्कोंसिन-मैडीसन विश्वविद्यालय में शिक्षा के प्रोफेसर थे – स्वतंत्र और दूरस्थ अधिगम के क्षेत्र में प्रथम अन्वेषक थे और अधुनिक दूरस्थ शिक्षा के पिता माने जाते हैं।

1965 के शुरुआत में ही वेडेमेयर ने आज की ई-लर्निंग की भविष्यवाणी की (http://www.uwex.edu/disted/ conference/wedemeyer/aboutcw.cfm)।

> ''...भविष्य के विस्तार विद्यार्थियों संभवतः कक्षा में उपस्थित न हों; परंतु, अधिगम के अवसर और प्रक्रियाएं उसके पास आएंगी। वह घर में, कार्यालय में, कार्य पर फैक्ट्री में, भंडार या विक्रय कक्ष या कृषि भूमि में सीखेगा''

> ''... शिक्षक, विद्यार्थियों तक केवल अपने राज्य और क्षेत्र में ही नहीं बल्कि पूरे देश में पहुंचेगे, क्योंकि उसके द्वारा शिक्षण में अपनाए गए मीडिया और विधियाँ, अधिगम में स्थान और समय की बाधाओं को दूर कर देंगे।''

'स्वतंत्र अध्ययन, शब्द का उपयोग वेडेमेयर के द्वारा (1973; mentioned at http://www.uwex.edu/disted/conference/wedemeyer/aboutcw.cfm) महाविद्यालय और विश्वविद्यालय स्तर पर दूरस्थ शिक्षा का वर्णन करने के लिए किया गया था। उसने विद्यार्थी की स्वतंत्रता को दूरस्थ शिक्षा का मूल तत्व माना और इस प्रकार दूरस्थ शिक्षा के लिए 'स्वतंत्र अध्ययन' शब्द को प्राथमिकता दिया। वह उच्च शिक्षा के समकालीन प्रतिरूप के प्रति गम्भीर थे, जो आधुनिक तकनीकों का उपयोग उन तरीकों से करने में असफल रहे जो एक संस्थान को परिवर्तित कर सकते थे।

वेडेमेयर ने शिक्षण को अधिगम से इस प्रकार अलग करने का प्रस्ताव दिया जिससे शिक्षा की ''स्थान-समय की बाधाएं'' खत्म हो जाएं। उन्होंने स्वतंत्र अध्ययन प्रणाली की छः विशेषताएं सुझाईं (http://www.c3l.uni-oldenburg.de/cde/found/simons99.htm)।

1) विद्यार्थी और शिक्षक पृथक होते हैं।
2) शिक्षण और अधिगम की सामान्य प्रक्रियाएं लिखकर या कुछ अन्य माध्यम द्वारा संपन्न होती हैं।
3) शिक्षण निश्चयीकृत होता है।
4) अधिगम विद्यार्थी क्रियाकलाप द्वारा संचालित होता है।
5) विद्यार्थी के लिए अधिगम उसके स्वयं के वातावरण में सुविधाजनक बनाया जाता है।
6) शिक्षार्थी अधिगम की गति को स्वतंत्रता के साथ किसी भी समय पर शुरु और समाप्त करने का उत्तरदायित्व लेता है।

वेडेमेयर ने प्रत्येक शिक्षण अधिगम स्थिति के चार सामान्य तत्व बताए हैं : एक शिक्षक, एक शिक्षार्थी या कई शिक्षार्थी, संप्रषण प्रणाली या पद्धति और शिक्षण या अधिगम हेतु कुछ विषय वस्तु। उसने इन तत्वों के पुनर्गठन को प्रस्तावित किया, जो भौतिक स्थान का समायोजन करेगा और अधिक शिक्षार्थी-स्वतंत्रता संपन्न होने देगा। यही दूरस्थ शिक्षा की सफलता की कुंजी है।

वेडेमेयर उदार दृष्टिकोण वाले हैं, जो दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में इनके कार्य में स्पष्ट होता है। दूरस्थ शिक्षा के सैद्धांतिक आधारों में उनके योगदान में सम्मिलित हैं : दूरस्थ शिक्षा और

पारंपरिक आमने-सामने की शिक्षा के बीच अंतर का उसके द्वारा विश्लेषण। दोनों के बीच मुख्य अंतरों पर प्रकाश डालते समय उसका विश्लेषण तीन मुख्य विचार प्रस्तुत करता है :

i) शिक्षार्थी की स्वयात्तता;

ii) शिक्षण और शिक्षार्थी के बीच दूरी; तथा

iii) संरचना प्रणाली

जो अब दूरस्थ शिक्षा की संपूर्ण अवधारणा के मुख्य आधार बन गए हैं। हम इन तीनों विचारों की चर्चा करेंगे और इस प्रकार आपको वेडमेयर का 'स्वतंत्र अध्ययन' का परिचय कराएंगे।

a) शिक्षार्थी की स्वायत्तता

वेडमेयर की स्वतंत्र अध्ययन की परिभाषा (उपभाग 2.2.1 देखें) शिक्षार्थी स्वायत्तता की अवधारणा को समझने के लिए संकेत देती है। उनके अनुसार, शिक्षण/अधिगम व्यवस्थाएं इस प्रकार होनी चाहिए कि शिक्षक और शिक्षार्थी एक दूसरे से दूर रहें और कैम्पस के अंदर एवं कैम्पस के बाहर, दोनों प्रकार के विद्यार्थियों की अधिगम गतिविधियों की सुविधा हेतु शैक्षिक संप्रषण विविध प्रकार से होना चाहिए। ऐसी व्यवस्थाओं को शिक्षार्थी की स्वयं की परिचित स्थिति में अधिगम अवसर प्रदान करने चाहिए और साथ ही यह व्यक्ति को स्व-निर्देशित अधिगम द्वारा परिपक्वता के निर्माण में सहायता करे जो एक शिक्षित व्यक्ति की विशेषता है।

स्वतंत्र अध्ययन का स्पष्ट आधार 'निरतंर शिक्षा' के लिए वेडेमेयर का उदार शैक्षिक दर्शन है। उनका विचार है कि कुछ कारकों जैसे भौगोलिक सुदूरता, निर्धनता या अन्य किसी प्रकार का अभाव, खराब स्वास्थ्य या हानिकारक भौतिक स्थितियां, या कोई मनोवैज्ञानिक स्थितियां, जो एक व्यक्ति को संस्थागत शिक्षा से रोकते हों, को किसी भी प्रकार से एक व्यक्ति के शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति के मार्ग में नहीं आना चाहिए। ऐसे दर्शन का तत्‌काल शिक्षणशास्त्रीय आशय है कि हम उनके लिए जो शिक्षित होने के इच्छुक हैं, शिक्षा के अरूढ़िवादी साधनों और तरीकों को देखें। यदि कोई अपनी आर्थिक या शारीरिक परिस्थितियों के कारण अपने कार्य स्थल या निवास स्थान से दूर नहीं जा सकता, यदि कोई कक्षा में उपस्थित नहीं हो सकता, क्योंकि उसके लिए कक्षा-कक्ष का वातावरण मनोवैज्ञानिक या सामाजिक रूप से प्रतिकूल है, या मात्र सामाजिक प्रतिबद्धताओं की विवशता के कारण एक व्यक्ति शिक्षा के पारंपरिक विद्यालय, महाविद्यालय या विश्वविद्यालय के तरीकों में समायोजित नहीं हो सकता, तो राज्य को उसकी रुचि के अनुसार उसके दरवाजों तक शिक्षा को लाना चाहिए। यह तभी संभव होता है, जब उस अरूढ़िवादी प्रणाली की मूल विशेषता शिक्षकों के एक दूसरे से अलग काम करने की अनुमति देना है। इस बनुयादी विशेषता को स्वीकार करने के फलस्वरूप, हमें यह स्वीकारना पड़ेगा कि इस प्रणाली में मौखिक संवाद संप्रषण का प्रमुख माध्यम/ साधन नहीं हो सकता। तात्पर्य है कि, शिक्षक-शिक्षार्थी संप्रषण विभिन्न रूपों में होना आवश्यक है; मुद्रित शब्द, फोन द्वारा बातचीत, रेडियो द्वारा बातचीत आदि। विद्यार्थी को अपने शैक्षिक लक्ष्यों का चयन करने के योग्य होना चाहिए और अधिगम के लिए अपनी स्वयं की गति और तरीके से कार्य करे और यह भी निश्चित करे कि उसकी उपलब्धियों का आँकलन किस प्रकार किया जाए।

उपर्युक्त विवरण वाला विद्यार्थी, ***स्वायत्त विद्यार्थी*** है – शब्द के वास्तविक भाव में एक शिक्षित व्यक्ति। शिक्षण का यह दूरस्थ प्रणाली ही है जो उपर्युक्त विद्यार्थी विशेषताओं के लिए है।

b) **शिक्षार्थी और शिक्षक के बीच दूरी**

जैसा उपर इंगित किया गया है, विद्यार्थी स्वायत्तता के कई शिक्षण शास्त्रीय प्रभाव हैं। इन सबमें से सर्वाधिक मजबूत यह है कि शिक्षार्थी शिक्षक से अलग रहकर सीखता है।

एक कक्षा-कक्ष स्थिति में पाँच अंग सम्मिलित हैं :

i) शिक्षक;

ii) शिक्षार्थी;

iii) विषय-सामग्री जिसे पढ़ाना और सीखना है;

iv) एक संप्रषण प्रणाली; तथा

v) कक्षा-कक्ष अर्थात् शिक्षण शास्त्रीय स्थान।

वेडेमेयर इस विवरण को संक्षिप्त रूप से निम्नलिखित रेखाचित्र द्वारा स्पष्ट करते हैं।

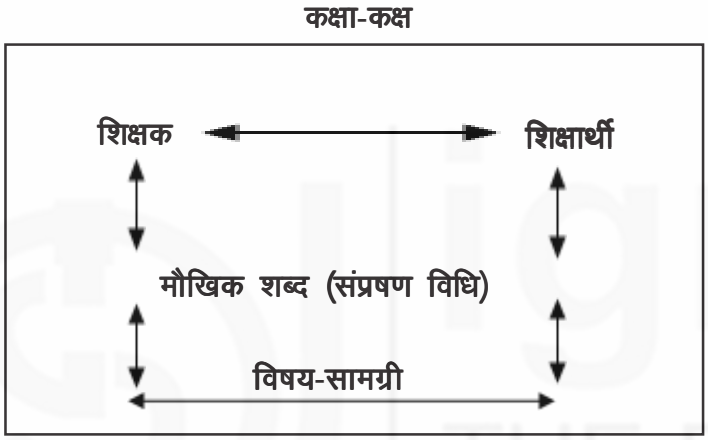

चित्र 2.1: औपचारिक कक्षा-कक्ष की स्थिति

शिक्षण और अधिगम के इस मॉडल की एक प्रतिष्ठा है, जो सदियों से सामाजिक रूप से मान्य अभ्यास का परिणाम है। यह एक सार्वभौमिक प्रमाणित सामाजिक-शैक्षिक मानदंड है।

उपरोक्त नए प्रस्ताव में शिक्षार्थी स्वायत्तता के अंतर्गत वेडेमेयर पुराने सामाजिक-शैक्षिक मानदंड को चुनौती देते हैं – एक सांस्कृतिक कलाकृति जिसमें शताब्दियों से अपने अस्तित्व के कारण किसी परिवर्तन या विकल्पों की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती है।

वेडेमेयर सामाजिक विकास की क्रमिक परंतु निश्चित विकास प्रक्रिया का संकेत देते हैं, जिसने इस प्रबल सांस्कृतिक कलाकृति के लिए व्यवहार्य विकल्प बनाया है। जैसे उनके द्वारा उल्लेख किया गया है सामाजिक विकास की इस प्रक्रिया में सम्मिलित है।

i) ***लेखन*** के आविष्कार ने संप्रषण के माध्यम के रूप में भाषण या वाणी के पूर्ण एकाधिकार को ध्वस्त किया। इसके अतिरिक्त, लेखन ने संप्रषणों को रिकार्ड करना और उन्हें समय और स्थान के पार स्थानान्तरित करना भी संभव बनाया।

ii) ***मुद्रण*** के आविष्कार ने एकल-प्रति-लेखन संप्रषण के एकाधिकार को समाप्त किया। मुद्रण द्वारा यह संभव हुआ कि एक ही संप्रषण को एक ही या भिन्न समयों पर, कितनी ही दूरियों पर एक व्यक्ति जितने प्राप्तकर्ताओं को भेजना चाहे भेज सकता है।

iii) ***टेलीकम्यूनिकेशन*** के विकास ने समय और स्थान के आयामों को समाप्त किया और जब इसे शिक्षा में उपयोग किया गया तो इसने अब तक शिक्षक शिक्षार्थी संपर्क को अज्ञात संभावनाओं को खोला है।

iv) ***लोकतंत्रात्मक दर्शनों*** के विकास ने शिक्षा के संभ्रांतवादी और संप्रादायिक स्वरूप को समाप्त किया।

v) ***पत्राचार शिक्षा*** का प्रारम्भ मात्र सामाजिक आवश्यकताओं और दबावों का परिणाम था। आरम्भ में यह न तो राज्य द्वारा प्रायोजित आंदोलन था और न ही शिक्षाविदों द्वारा व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से किए गए प्रयासों का परिणाम था।

vi) ***क्रमादेशित अधिगम*** और ***शिक्षण मशीनों*** के विकास ने स्व-निर्देश और शिक्षार्थी आधारित शिक्षा की संभावनाओं को इंगित किया।

इन परिवर्तनों ने यह संभव बनाया कि शिक्षण और अधिगम को संगठित करने के तरीके उन तरीकों से काफी भिन्न हैं जो चित्र 2.1 में दर्शाये गए माडल में प्रस्तुत किए गए हैं। शिक्षण और अधिगम को संगठित करने के संभव नए तरीकों में से एक निम्नलिखित रूप (चित्र 2.2) में प्रस्तुत किया जा सकता है।

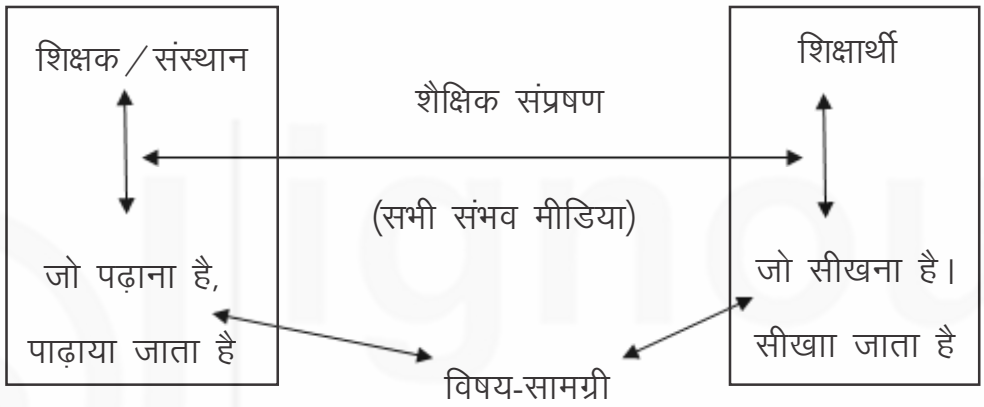

चित्र 2.2: औपचारिक कक्षा-कक्ष की स्थिति से प्रस्थान

पारंपरिक सामाजिक शैक्षिक मानदंडों में सुधार : ऊपर दिए गए रेखाचित्र (चित्र 2.2) से यह समझा जा सकता है कि एक शिक्षण-अधिगम स्थिति में शामिल आवश्यक अंग हैं : शिक्षक, शिक्षार्थी, विषय सामग्री और शिक्षण अधिगम संप्रषण का तरीका सभी अक्षुण्ण हैं। इसमें सुझाया गया अंतर यह है कि अब हमारे पास एक बॉक्स (चित्र 2.1 देखें) के स्थान पर दो बॉक्स (चित्र 2.2) हैं, दोनों एक दूसरे से स्वतंत्र हैं और दोनों बॉक्सों की दूरी को गैर-पारंपरिक शैक्षिक संप्रेषणों के माध्यम से भरा गया है, जो आमने-सामने (एक बॉक्स) के पारंपरिक संप्रषण साधनों से पूर्णतया भिन्न नहीं है। इस प्रकार, उपरोक्त मॉडल चित्र 2.2 में दिखाए गए चित्र से भिन्न नहीं है, जहां तक कि शिक्षण अधिगम स्थिति के बुनियादी अंगों और उनकी उद्देश्यपूर्ण परस्पर क्रिया का संबंध है। परन्तु, यदि हम स्थिति की विशेषता के लिए इन अंगों की निकटता को मुख्य मापदंड के रूप में उपयोग में लाए तो उपर्युक्त मॉडल पारंपरिक कक्षा-कक्ष माडल से पूर्ण प्रस्थान को चिन्हित करता है, जो आमने-सामने शैक्षिक संप्रषण का सुविधाजनक सहगामी है। स्पष्ट रूप से 'तब' यदि आमने-सामने शैक्षिक संप्रेषण के जुनून को रोक दिया जाये, अर्थात् संप्रषण के एक न्यायसंगत प्रकार को अपनाया जाय और शिक्षण शास्त्रीय रूप में प्रभावी बनने के लिए निपुणता से उपयोग किया जाय तो कक्षा-कक्ष की सीमाओं को तोड़ा जा सकता है, और शिक्षार्थियों के लिए यह संभव हो जाएगा कि वे शिक्षकों से दूरस्थ रहकर स्वयं सीखें और शिक्षकों के लिए पढ़ाना यहाँ तक कि जब वे शिक्षार्थियों से दूर भी हों। यह स्थिति, जो मूल रूप से शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच दूरी द्वारा चिन्हित की जाती है; संपूर्ण शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के लिए महत्त्वपूर्ण प्रभाव रखती है। इसमें से कुछ अधिक महत्वपूर्ण निम्नलिखित हैं :

i) शिक्षार्थी को अपनी अधिगम गतिविधियों को प्रारम्भ करने, उसकी गति और समाप्त करने की स्वतंत्रता होती है – वह अपनी प्रगति और असफलता के लिए स्वयं ही उत्तरदायी होती/ता है;

ii) शिक्षार्थी के लिए यह आवश्यक नहीं है वह पूरी तरह अपने वातावरण से अलग हो जाय – भौतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और भौगोलिक;

iii) बोलने के अतिरिक्त अन्य मीडिया जैसे मुद्रित सामग्री, श्रव्य-दृश्य आदि का उपयोग शिक्षक और शिक्षार्थी के लाभ के लिए किया जाता है; तथा

iv) अधिगम को शिक्षार्थी की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुसार अधिक से अधिक प्रासंगिक बनाया जा सकता है और यह अधिगम क्रियाकलाप ही है जो शिक्षण-प्रयास की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण बन जाता है।

इस प्रकार, दूरस्थ शिक्षा शिक्षार्थी संस्कृति और शिक्षक संस्कृति दोनों में परिवर्तन को आवश्यक मानती है। शिक्षार्थी को ऐसे उत्तरदायित्व और भूमिकाओं का निर्वाह करना पड़ता है जो पारंपरिक रूप से उसकी संस्कृति से संबंधित नहीं होते और यही बात शिक्षक के लिए भी है।

c) संरचनात्मक प्रणाली

उपरोक्त सुझाए हुए अपेक्षित सांस्कृतिक परिवर्तन स्पष्ट रूप से असन्निहित शैक्षिक संप्रषण को शिक्षण शास्त्रीय रूप में प्रभावशाली बनाने के लिए शिक्षक, शिक्षार्थी और शिक्षा प्रणाली की विशेषताओं को पुनः परिभाषित करने की आवश्यकता बताते हैं। दूरस्थ शिक्षा की इस विशेषता का अर्थ यह है कि शिक्षार्थी, शिक्षक से शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के दौरान कुछ समय, कुछ अधिक समय या पूरे समय के लिए शारीरिक रूप से एक लम्बी दूरी पर होता है, इसके वितपरीत, कक्षा-कक्ष की स्थिति में शैक्षिक संप्रषण सन्निहित होता है। इन विशेषताओं की ऐसी पुनर्परिभाषा एक ऐसी प्रणाली का आधार बनाते हैं जो संरचनात्मक रूप से पारंपरिक, औपचारिक शैक्षिक प्रणाली से भिन्न होती है। यह नई प्रणाली निम्नलिखित विशेषताओं में दृष्टिगोचर होती है :

i) शिक्षार्थी को पहले की अपेक्षा अधिगम की अधिक जिम्मेदारी लेनी पड़ती है;

ii) शिक्षार्थी को विषय वस्तु और विधियों दोनों में चयन के विस्तृत अवसर दिए जाते हैं;

iii) शिक्षार्थियों के बीच व्यक्तिगत विभिन्नताओं को पहचानना ही नहीं जाता बल्कि इनका ध्यान भी रखा जाता है;

iv) पाठ्यक्रम के द्वारा अपने कार्य को पूरा करने के लिए शिक्षार्थियों को अपनी गति से काम करने की अनुमति दी जाती है – वे अपनी सुविधा और योग्यताओं के अनुसार पाठ्यक्रम को शुरू, रोकना या पूरा कर सकते हैं;

v) विद्यार्थी निष्पादन का मूल्यांकन परिणाम, विधियों और स्थान से स्वतंत्र होना चाहिए।

vi) शिक्षकों को सामाजिक और प्रशासनिक कार्यों से अलग होकर शैक्षिक कार्यों पर केंद्रित होना चाहिए – उन्हें सही सूचना और/या ज्ञान के पारंपरिक स्रोत के रूप में नहीं बल्कि शैक्षिक सामग्री के प्रबंधकों के रूप में अधिक कार्य करना चाहिए।

vii) शिक्षकों को मीडिया की भूमिका को अपनी भूमिका के संपूरक के रूप में स्वीकार करना चाहिए – आशय यह है कि पाठ्यक्रम सामग्री पर पुनर्विचार और उसे नए प्रकार से स्वरूपित करना।

viii) शैक्षिक संचालन को एक न्यायसंगत मीडिया मिश्रण प्रभाव होना चाहिए – पाठ्यक्रम स्वरूप और उत्पादन का मुख्य सिद्धांत सभी मीडिया और विधियों का उपयोग करना होना चाहिए;

ix) जहाँ कहीं भी शिक्षार्थी हों, प्रणाली संचालित होनी चाहिए – इसे स्थाई निवासी और शिक्षार्थियों की समूहन विशेषताओं से स्वतंत्र होना चाहिए।

इस प्रकार, वैडेमेयर के अनुसार, एक शिक्षा प्रणाली जो उपर्युक्त विशेषताओं को सम्मिलित करने के लिए संरचित की गई है, वह एक 'स्वतंत्र अध्ययन प्रणाली, है।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

4) एक 'स्वतंत्र अध्ययन प्रणाली' में यह दावा क्यों किया जाता है कि इसमें शिक्षार्थियों और शिक्षकों की संस्कृति में परिवर्तन लाने की क्षमता होती है? दो कारण लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

इस अभ्यास को पूरा करने के बाद आइए अब दूसरी विचारधारा की ओर मुड़ते हैं।

2.4.3 संव्यावहार दूरी एवं शिक्षार्थी स्वायत्तता सिद्धांत

यह वास्तव में स्वतंत्र अध्ययन का यूरोपियन सिद्धांत है। इसे पुनर्रचित स्वतंत्र अध्ययन या स्वतंत्र अध्ययन पुनरावलोकित या स्वतंत्रता और नियंत्रण का सिद्धांत भी कहा जाता है। माइकेल जी मूर इस सिद्धांत के प्रतिपादक हैं, जो नोवा स्कोटिया विश्वविद्यालय और विसकोंसिन विश्वविद्यालय, मेडीसन में कार्य किया है। दूरस्थ शिक्षा के सिद्धांत में इनका योगदान नई अवधारणा के प्रस्तुतीकरण में नहीं मिलता, परंतु एक अधिक अंतर्दृष्टिपूर्ण और विश्लेषणात्मक मॉडल में है जो आवश्यक रूप से वेडेमेयर के विचारों की पुष्टि करते हुए स्वतंत्र अध्ययन के विविध स्तर और प्रकारों को मानने के लिए विस्तृत वर्गीकरण हेतु उन्हें तीव्र बनाता है।

स्वतंत्र अध्ययन पर मूर का विचार

मूर के लिए, स्वतंत्र अध्ययन एक सामान्य शब्द है जो इन सभी शैक्षिक संचालनों का वर्णन करते हैं जो 'दूरी' या/और 'स्वायत्तता' इन दो चरों के संदर्भ में परंपरागत औपचारिक शिक्षा से भिन्न किए जा सकते हैं। उसके लिए, वे सभी शैक्षिक संव्यवहार जिनमें ये दोनों चर होते हैं, वे स्वतंत्र अध्ययन के रूप होते हैं। ये मुक्त विश्वविद्यालय कार्यक्रम, पत्राचार पाठ्यक्रम, बाह्य डिग्री कार्यक्रम या स्वयं को पढ़ाएं कार्यक्रम, हो सकते हैं। इस प्रकार,

सभी शैक्षिक संव्यवहारों को इन दो चरों के संदर्भ में वर्गीकृत किया जा सकता है। इन्हें स्वतंत्र अध्ययन प्रणाली की दो मुख्य विशेषताओं के आधार पर अबाधक्रम या सतति के रूप में अभिव्यक्त या प्रस्तुत किया जा सकता है –

- संवाद, तथा
- निश्चयीकरण

यह संवाद और निश्चयीकरण के स्तर में अंतर है जो एक दूरस्थ शिक्षक, दूरस्थ शिक्षार्थी और दूरस्थ शिक्षण/अधिगम को पारंपरिक औपचारिक शिक्षा में अपने समकक्षों से भिन्न करता है। हमें इस पर विस्तार से चर्चा करनी चाहिए।

i) **संवाद :** 'संवाद' शब्द का उपयोग परस्पर क्रिया या परस्पर क्रियाओं की श्रृंखला का वर्णन करने के लिए किया जाता है जिसमें सकारात्मक गुण होते हैं, जो शायद दूसरी परस्पर क्रियाओं में न हों। एक संवाद उद्देश्यपूर्ण, रचनात्मक और प्रत्येक दल द्वारा मूल्यवान माना जाता है। संवाद में प्रत्येक दल एक सक्रिय श्रोता होता है, प्रत्येक दल, दूसरे दल या दलों के लिए योगदान करता है। परस्पर क्रियाएं नकारात्मक और तटस्थ भी हो सकती हैं। परंतु, संवाद शब्द सकारात्मक परस्पर क्रियाओं के लिए आरक्षित है। एक शैक्षिक संबंध में संवाद की दिशा विद्यार्थी की संशोधित समझ की ओर होती है (मूर, 1997)। इस प्रकार, यह एक विस्तृत शब्द है जिसकी सर्वोत्तम व्याख्या 'शैक्षिक परस्पर क्रिया' के रूप में व्यक्त की जा सकती है। इसका लक्ष्य है : शिक्षण और अधिगम को प्रभावित करना; शिक्षण जहाँ तक कि शिक्षक और संस्थान का संबंध है, और अधिगम जहां तक कि शिक्षार्थी का संबंध है। यह संवाद आमने-सामने की स्थिति में, वयक्तिगत या समूह-टेलीफोन द्वारा, व्यक्तिगत या सामूहिक पत्राचार द्वारा अथवा एक तरफा भी हो सकता है, जैसा कि कम्प्यूटर समर्थित अनुदेश, कार्यक्रमित अनुदेश, टेलीविजन, रेडियो और विषय सामग्री में।

ii) **निश्चयीकरण :** एक शैक्षिक कार्यक्रम उच्च रूप से व्यक्तिकृत माना जाता है, यदि इसके पाठ्यक्रम घटक जैसे उद्देश्य, विधियां, सामग्री और मूल्यांकन का शिक्षार्थी के अधिगम-कार्यक्रम के घटकों के साथ बहुत उच्च सह-संबंध हो। हम समझते हैं कि कार्यक्रम के शैक्षिक उद्देश्य, शिक्षण रणनीतियां और मूल्यांकन की विधियों की संरचना, कार्यक्रम की कठोरता या लचीलेपन को व्यक्त करती है। पारंपरिक शैक्षिक कार्यक्रम इस प्रकार उच्च रूप से 'संरचित' है। अर्थात उनके पाठ्यक्रम अंग यानी उद्देश्य, विधियाँ, सामग्री और मूल्यांकन सामान्यतया पूर्व-निश्चित होते हैं, बिना यह ध्यान में रखे कि एक विशेष शिक्षार्थी की क्या आवश्यकताएं हो सकती हैं। इसके विपरीत, एक शैक्षिक कार्यक्रम जो विविध शिक्षार्थी विशेषताओं और आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु पर्याप्त रूप से लचीला है, उसकी संरचना कठोर नहीं हो सकती। वह कार्यक्रम जिसमें इस संरचना (जिस भाव से इस शब्द का उपयोग ऊपर किया गया है) का अभाव होता है, वह अधिगम का 'निश्चयीकरण' संभव बनाएगा। इसका अर्थ यह है कि संरचना का अभाव 'व्यक्तिकरण' को सुनिश्चित करता है। दूसरे शब्दों में, यह बताता है कि एक शैक्षिक कार्यक्रम प्रत्येक शिक्षार्थी की व्यक्तिगत आवश्यकताओं को किस सीमा तक समायोजित कर सकता है या उसके लिए उत्तरदायी होता है।

इस सिद्धांत के अनुसार, दूरस्थ शिक्षा में ***संव्यवहारिक दूरी*** शिक्षकों और शिक्षार्थियों के बीच मात्र भौगोलिक पृथक्करण नहीं है बल्कि अधिक महत्त्वपूर्ण रूप से यह एक शिक्षण शास्त्रीय अवधारणा है। यह एक अवधारणा है जो शिक्षक-शिक्षार्थी संबंधों के संसार का वर्णन करती है, जो शिक्षार्थी और शिक्षक को स्थान और/या समय द्वारा पृथक होने के कारण बनते हैं।

संबंधों के इस संसार को एक समान अध्ययन के क्रम में रखा जा सकता है, जो क्षेत्र के अधिकांश प्रारंभिक निर्माणों द्वारा बनता है, जैसे अनुदेशनात्मक कार्यक्रमों की संरचना शिक्षार्थियों और शिक्षकों के बीच परस्पर क्रिया (संवाद) और शिक्षार्थी का 'स्वनिर्देशन' या स्वायत्तता की प्रकृति और स्तर। क्या ***अनुदेशनात्मक संवाद*** इसका स्तर और प्रकृति संपन्न होता या नहीं है को पाठ्यक्रम के स्वरूप के लिए उत्तरदाई व्यक्ति या समूह के शैक्षिक दर्शन, शिक्षक और शिक्षार्थी के व्यक्तियों, पाठ्यक्रम की विषय वस्तु और वातावरण के कारकों द्वारा निर्धारण होती है। संव्यवहार दूरी को किस सीमा तक कम किया जा सकता है का एक प्रमुख निर्धारक है – क्या शिक्षार्थियों और अनुदेशकों के बीच अनुदेशनात्मक संवाद सम्भव है और किस स्तर तक इसे प्राप्त किया जा सकता है? क्योंकि संवाद के साथ संरचना एक गुणात्मक चर है और एक कार्यक्रम में संरचना की मात्रा का निर्धारण मुख्य रूप से प्रयुक्त किए जाने वाले संप्रषण मीडिया के प्रकृति द्वारा होता है, परन्तु शिक्षकों की दर्शन और भावनात्मक विशेषताओं, शिक्षार्थियों के व्यक्तित्वों और अन्य विशेषताओं तथा शैक्षिक संस्थानों द्वारा अधिरोपित प्रतिबंधों द्वारा भी होता है। ***कार्यक्रम संरचना*** चर, चरों के एक दूसरे युग्म का निर्माण करती है संव्यवहार दूरी का निर्धारण करता है, और इसके अन्तर्गत पाठ्यक्रम के स्वरूप के तत्व या वे तरीके जिनके द्वारा शिक्षण कार्यक्रम की संरचना की गई है ताकि इसे विविध संप्रषण मीडिया द्वारा संचालित/प्रस्तुत किया जा सके। संरचना कार्यक्रम के शैक्षिक उद्देश्यों, शिक्षण रणनीतियों और मूल्यांकन विधियों की कठोरता या लचीलापन को व्यक्त करती है। यह बताती है कि एक शैक्षिक कार्यक्रम किस स्तर तक प्रत्येक शिक्षार्थी की व्यक्तिगत आवश्यकताओं को समायोजित कर सकता है या उनका उत्तरदायित्व लेता है (मूर, 1997; http://www.c3l.uni-oldenburg.de/cde/found/moore93.pdf)।

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों के परिवार के अन्तर्गत संव्यवहार दूरी के कई विभिन्न स्तर हैं। संव्यवहार दूरी सापेक्षिक है न कि निरपेक्ष चर। एक शैक्षिक कार्यक्रम में स्व्यवहार दूरी चरों के तीन युग्म का कार्य है : शिक्षण में, अधिगम में और शिक्षण एवं अधिगम की परस्पर क्रिया में। चरों के इन समूहों के नाम हैं: ***संवाद, संरचना*** और ***शिक्षार्थी स्वायत्तता*** (मूर, 1997, ओप सिट)।

मूर दावा करते हैं कि परंपरागत सामाजिक-शैक्षिक मानदंडों की पुनर्रचना की आवश्यकता वांछित ही नहीं बल्कि अनिवार्य है। इस लक्ष्य को दूरस्थ शिक्षा के अभ्यास द्वारा प्राप्त किया जा सकता है क्योंकि यह शिक्षार्थी स्वायत्तता को बढ़ावा देता है। वे सुझाते हैं कि दूरस्थ शिक्षा की अवधारणा को समझने में भौतिक दूरी ही अकेले महत्त्वपूर्ण नहीं है। इसके अतिरिक्त, निश्चयीकरण और 'संवाद' चरों का भी महत्व है, क्योंकि इन दोनों चरों की बहुत उच्च स्तर एक पाठ्यक्रम/कार्यक्रम को शिक्षण शास्त्रीय रूप से *कम दूरी* का बनाती है और, इसके विपरीत, इन दोनों चरों का कम स्तर एक पाठ्यक्रम/कार्यक्रम को *अधिक दूरी* का बनायेगी। इस संदर्भ में, हम व्याख्या करते हैं कि मूर संवाद और निश्चयीकरण से क्या समझते हैं।

उनके लिए, ***संवाद*** 'एक दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम में संप्रषण माध्यम शिक्षार्थी-शिक्षक परस्पर क्रिया को किस स्तर तक अनुमति देता है, का माप है', और ***निश्चयीकरण*** 'व्यक्तिगत शिक्षार्थी के उद्देश्यों के प्रति एक शिक्षण कार्यक्रम की उत्तरदायित्व की सीमा का माप है'। इस प्रकार, एक ***शैक्षिक कार्यक्रम,*** जिसमें ***अधिगम कार्यक्रम, शिक्षण कार्यक्रम*** से समय और स्थान के संदर्भ में अलग संपन्न होता है, जो अधिगम उद्देश्यों, अधिगम उपकरण, विधियाँ और मूल्यांकन पर ***शिक्षार्थी नियंत्रण*** (भिन्न भिन्न स्तर पर) को स्वीकारता है, वह एक ***स्वतंत्र अध्ययन*** कार्यक्रम हैं। मूर का ***'संवाद'*** और ***'निश्चयीकरण'*** एवं ***संरचना*** के विचार

उनके 'स्वतंत्र अध्ययन' के विचार के विश्लेषण में अध्ययन के बाद' हम आपको बताएंगे कि उन्होंने इस विचार को ***'दूरी'*** और ***'स्वायत्तता'*** की व्याख्या करने में किस प्रकार उपयोग किया।

A) दूरी : संवाद और निश्चयीकरण का एक प्रकार्य

एक शैक्षिक कार्यक्रम में ***'संवाद'*** और ***'संरचना'*** की विशेषताओं का एक विशेष संयोग इसे इसके स्वयं का एक स्वरूप प्रदान करेगा और इन विशेषताओं का भिन्न संयोग हमें शैक्षिक कार्यक्रमों की भिन्न श्रेणियां प्रदान करेगा। कुछ अक्षर संकेत +D उच्च संवाद के लिए, –D संवाद के अभाव के लिए, –S संरचना के अभाव के लिए, +S उच्च रूप से संरचित के लिए का उपयोग करके मूर ने संभव शैक्षिक कार्यक्रमों को निम्नलिखित रूप से वर्गीकृत किया (तालिका 2.2 देखें)।

तालिका 2.2: 'संवाद' और 'संरचना' के संदर्भ में कार्यक्रमों के प्रकार

दूरी एक चर	प्रकार	कार्यक्रम के प्रकार	उदाहरण
सर्वाधिक दूरी ↕ सबसे कम दूरी	–D +S	1. बिना संवाद, परंतु संरचना के साथ कार्यक्रम	ऐसे कार्यक्रम जिनमें संप्रषण विधि रेडियो और टेलीविजन होते हैं।
	–D –S	2. बिना संवाद और बिना संरचना के कार्यक्रम	स्वतंत्र पठन/अध्ययन कार्यक्रम-स्व-निर्देशित प्रकार के
	+D +S	3. संवाद और संरचना के साथ कार्यक्रम	द्वि-मार्गीय संप्रषण विधियों का उपयोग वाले कार्यक्रम
	+D –S	4. संवाद के साथ परंतु बिना संरचना के कार्यक्रम	एक ट्यूटोरियल कार्यक्रम

इस प्रकार, मूर ने इन चरों, ***संवाद*** और ***निश्चयीकरण,*** को न केवल शैक्षिक कार्यक्रमों के वर्गीकरण के लिए किया बल्कि दूरी के अपने विचार की रचना के लिए भी किया। उनके अनुसार, शिक्षार्थी और शिक्षक/संस्थान के बीच की वास्तविक दूरी को उन दोनों के बीच स्थान की दूरी के संदर्भ में नहीं मापा जा सकता, परंतु *संवाद* और *निश्चयीकरण* के संदर्भ में मापा जा सकता है, जिसे शैक्षिक कार्यक्रमों द्वारा प्रदान किया जाता है। संवाद और निश्चयीकरण की परिवर्तनशीलता के आधार पर दूर शिक्षण/अधिगम विधियों का यह वर्गीकरण यह स्पष्ट करता है कि दूरी शब्द को भौतिक समीपता के साथ भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए। उदारहण के लिए, शिक्षार्थी X अपने शिक्षण संस्थान से 400 मील की दूरी पर है और शिक्षार्थी Y मात्र 4 मील दूर अपने शिक्षण संस्थान से है। परंतु, वहां ऐसी व्यवस्थाएं बनी हैं कि शिक्षार्थी X अपने शिक्षक/संस्थान के साथ परस्पर क्रिया टेलीफोन के द्वारा एक दिन में जितनी बार चाहे, उतनी बार कर सकता है। इसके विपरीत, शिक्षार्थी Y को पूर्ण रूप से पाठ्य सामग्री पर निर्भर रहना है जो उसके संस्थान ने उसके पास भेजी है और संस्थान ने अतिरिक्त शैक्षिक परस्पर क्रिया हेतु अन्य कोई वयवस्थाएं नहीं की है। ऐसी स्थिति में, हम कहेंगे कि शिक्षार्थी Y अपने संस्थान से शिक्षार्थी X की तुलना में अधिक दूर है। इस प्रकार, इस संदर्भ में दूरी को संवाद और निश्चयीकरण के एक कार्य

के रूप में देखना चाहिए। कहने का तात्पर्य है कि, संवाद और निश्चयीकरण का स्तर जितना ऊँचा होगा, शिक्षार्थी अपने शिक्षक/संस्थान से कम दूरी पर होगी/होगा और संवाद एवं निश्चयीकरण का स्तर जितना कम होगा, शिक्षार्थी अपने शिक्षक/संस्थान से अधिक दूरी पर होगा।

अब तक हमने मूर की 'दूरी' की अवधारणा की चर्चा दूरस्थ शिक्षा की एक विशेषता के रूप में की, अब हम इसकी दूसरी विशेषता 'शिक्षार्थी स्वायत्तता' की ओर बढ़ते हैं।

B) शिक्षार्थी स्वायत्तता

मूर के अनुसार, शिक्षार्थी स्वायत्तता वह सीमा है जिससे शिक्षण अधिगम संबंध में लक्ष्य निर्धारण, अधिगम अनुभवों और अधिगम कार्यक्रम के मूल्यांकन संबंधी निर्णय, शिक्षार्थी न कि शिक्षक द्वारा निश्चित किए जाते हैं। दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों की जांच यह देखने के लिए कि प्रमुख शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं को शिक्षक या शिक्षार्थी किस सीमा तक नियंत्रित करते हैं और उसके बाद शिक्षार्थी स्वायत्तता के स्तर (प्रत्येक कार्यक्रम में) के अनुसार वर्गीकृत किए जाते हैं। उसने संव्यवहारिक दूरी और शिक्षार्थी स्वायत्तता में एक संबंध पाया कि उच्च क्षमता वाले विद्यार्थी, स्वायत्त शिक्षार्थियों के रूप में कम संवाद और छोटी संरचना वाले कार्यक्रमों के साथ काफी सुविधापूर्ण दिखाई दिए, अधिक आश्रित शिक्षार्थियों ने अधिक संवाद वाले कार्यक्रमों की प्राथमिकता दी। कुछ ने अधिक संरचना की इच्छा की, जबकि अन्य ने एक निर्देशक के निकट संबंध में प्रदत्त निरौपचारिक संरचना में विश्वास को प्राथमिकता दी।

हमने संक्षेप में व्याख्या किया कि शिक्षार्थी स्वायत्तता क्या है। यह एक अच्छा विचार होगा कि हम इस पर एक झलक डालें। पारंपरिक शिक्षा प्रणाली में शिक्षार्थियों पर शिक्षा का जोर ऊपर से था, जो एक *ऊपर से नीचे* का मॉडल है। पाठ्यचर्या घटकों का चयन और/या निर्धारण संस्थान और/या शिक्षक द्वारा किया जाता है, जो शिक्षार्थियों द्वारा पालन किए जाने वाले निर्देशों को निर्धारित करते हैं। हमें इस बिंदु पर विस्त्रत बताएं।

हमने पहले इंगित किया है कि पाठ्यचर्यागत इकाई की रचना एक कार्यक्रम के उद्देश्यों के प्रस्तुतीकरण, इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए उपयोग की जाने वाली विधियां, इन विधयों के लिए उपयुक्त सामग्री और मूल्यांकन प्रणाली जो उन उद्देश्यों को सुझायी गई विधियों और सामग्री द्वारा प्राप्त करने में सहायक होते हैं। तदनुसार, एक शैक्षिक कार्यक्रम जिसके लिए उद्देश्य, विधियां, सामग्री और मूल्यांकन का निर्धारण संस्थान/शिक्षक द्वारा किया जाता है, उन्हें ***'संस्थान/शिक्षक-निर्धारित'*** कहा जाता है। इस पृष्ठभूमि के विपरीत, एक ऐसे कार्यक्रम को दृष्टिगत करना कठिन नहीं होना चाहिए जिसे *'शिक्षार्थी-निर्धारित'* कहा जा सकता है। हम एक कार्यक्रम को ***'शिक्षार्थी निर्धारित'*** कह सकते हैं, जब इसके उद्देश्य विधि ायां, सामग्री और मूल्यांकन (सभी चार पाठ्यअंग) का निर्धारण शिक्षार्थी द्वारा स्वयं किया जाता है। इसे भिन्न प्रकार से ऐसे कहा जा सकता है, एक शिक्षार्थी की निर्धारति कार्यक्रम में ***'शिक्षार्थी स्वायत्तता'*** स्वीकार्य है। किसी विशेष कार्यक्रम में शिक्षार्थी स्वायत्तता की स्तर के आधार पर हम इसे ***'शिक्षार्थी-निर्धारित'*** या 'स्वायत्त' से ***संस्थान/शिक्षक-निर्धारति*** या ***'गैर-स्वायत्त'*** तक में वर्गीकृत कर सकते हैं। इस संबंध में एक उदाहरण निम्नलिखित है।

तालिका 2.3 दर्शाती है कि अधिगम कार्यक्रमों की सीमा 3N प्रकार से 3A प्रकार तक हो सकती है। आइए इसकी आगे व्याख्या करने के लिए उदाहरण के रूप में एक बी.एड. कार्यक्रम को लेते हैं। इस कार्यक्रम के उद्देश्य एनसीटीई द्वारा पूर्व निर्धारित होते हैं या संबंधित विश्वविद्यालय द्वारा तय किए जाते हैं। इस प्रकार, जहां तक कार्यक्रम के उद्देश्यों

का संबंध है जो शिक्षार्थियों को स्वायत्तता प्रदान नहीं करते उन्हें हम इसे 'N' अक्षर (गैर-स्वायत्त) से इंगित करते हैं। शिक्षा को प्रभावित करने वाली विधियां और सामग्री जो उपयोग की जाती है, भी विश्वविद्यालय और/या शिक्षक द्वारा निर्धारित किए जाते हैं; अतः इसमें भी शिक्षार्थी को कोई स्वायत्तता नहीं दी जाती तो पुनः हम इसे N अक्षर द्वारा चिन्हित करते हैं। यही स्थिति मूल्यांकन के साथ भी है, जिसका निर्धारण भी विश्वविद्यालय द्वारा किया जाता है। इस प्रकार एक BEd कार्यक्रम गैर-स्वायत्त कार्यक्रम है जो पूरी तरह से 3N प्रकार का है। दूसरी ओर, एक शिक्षित इंजीनियर अपने व्यवसाय में व्यक्तिगत सुधार हेतु एक कोर्स में प्रवेश ले सकता है। अर्थात् स्वयं को अपने व्यवसाय क्षेत्र की विशेषता में नवीनतम क्या हो रहा है, उससे परिचित रखने के लिए। यह मानते हुए कि ऐसे कई कोर्स उपलब्ध हैं, यह इंजीनियर अपनी आवश्यकताओं और/या रुचियों को ध्यान में रखकर कोर्स का चयन करेगा। अर्थात, वह कोर्स के उद्देश्यों, विधियों और सामग्री को अपनी रुचि के अनुसार निश्चित करेगी/करेगा। अंत में, वह निर्धारित करेगा कि उसके उद्देश्य प्राप्त हुए या नहीं। उसके प्रकार का यह कोर्स पूर्णतया 'स्वायत्त' होगा और हम इसे 3A प्रकार का कार्यक्रम कह सकते हैं। उपरोक्त उदाहरणों के दो प्रकारों के बीच पाठ्यक्रम/कार्यक्रम के प्रकारों की श्रेणी हो सकती है – अन्य की तुलना में कुछ अधिक स्वायत्त और कुछ कम हो सकते हैं।

तालिका 2.3: शिक्षार्थी स्वायत्तता के संदर्भ में कार्यक्रम के प्रकार

कार्यक्रम प्रकारों की सीमा	क्रं. सं.	कार्यक्रम के प्रकार	उद्देश्यों का निर्धारण	प्रविधि (विधियां +सामग्री)	मूल्यांकन
शिक्षक-निर्धारित (गैर-स्वायत्त) N	1.	भारत में अधिकांश पत्राचार कोर्सेस	N	N	N
	2.	कई निजी अध्ययन कोर्सेस	N	A	N
	3.	ऐसे अध्ययन जिनमें शिक्षार्थी केवल मूल्यांकन को नियंत्रित करता है।	N	N	A
	4.	अध्ययन, जिनमें शिक्षार्थी कोर्स की विषय वस्तु और मूल्यांकन को नियंत्रित करता है।	N	A	A
	5.	कार चलाना सीखना	A	N	N
	6.	खेल कौशल सीखना	A	N	A
शिक्षार्थी-निर्धारित (स्वायत्त) (A)	7.	व्यक्तिगत सुधार के लिए अध्ययन	A	A	A

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

5) आइटम 5, अर्थात् 'कार चलाना सीखना' (तालिका 2.3 में) को ANN प्रकार के कार्यक्रम के रूप में क्यों वर्गीकृत किया गया है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2.4.4 शिक्षण का औद्योगीकरण सिद्धांत

शिक्षण का औद्योगीकरण का सिद्धांत या शिक्षण और अधिगम का औद्योगीकृत रूप का प्रतिपादन होटटो पीटर्स द्वारा किया गया। वह 1975 में फर्न विश्वविद्यालय (पश्चिमी जर्मनी-एर्स्टव्हाइल का मुक्त विश्वविद्यालय) के प्रथम उपकुलपति थे। इससे पूर्व उन्होंने पूर्व संघीय गणतंत्र, जर्मनी में जर्मन इंस्टीयूटी ऑफ डिस्टेंस एजुकेशन में कार्य किया, जहाँ उन्होंने दूरस्थ शिक्षा प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण अर्न्तदृष्टियां विकसित की। उनका विश्वास था कि उच्च विकसित औद्योगिक समाज ने शिक्षा के लिए आवश्यकता की व्यापक विविधताओं को जन्म दिया। उनके अनुसार इस तथ्य ने जनसंख्या विस्फोट की घटना के साथ मिलकर शिक्षा की पारंपरिक प्रणाली को प्रतिपादित किया, जो शिक्षार्थियों की बढ़ती हुई संख्या की शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अपर्याप्त थीं। अतः उन्होंने तर्क दिया कि नए उपागमों की खोज की आवश्यकता है, नई तकनीकों का विकास और उपयोग हेतु उपलब्ध कराई गई- इन सबको औद्योगिक विशेषताओं वाला होना चाहिए क्योंकि इनकी आवश्यकता औद्योगीकरण के परिणाम स्वरूप उत्पन्न हुई।

सिद्धांत का तर्काधार : शिक्षा में घटनात्मक परिवर्तन

पीटर्स (1973) ने अपनी पुस्तक – 'द डाइडेक्टिकल स्टक्चर ऑफ डिस्टेंस टीचिंग : इनवेस्टीगेसंस टूवर्ड्स एन इंडस्टीएलाइज्ड फॉर्म ऑफ टीचिंग एंड लर्निंग द्वारा दूरस्थ शिक्षा के सिद्धांत में अपना प्रमुख योगदान दिया। (यह पुस्तक मूल रूप से जर्मन भाषा में लिखी गई) उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि 'दूरस्थ अधिगम/शिक्षण, शिक्षण और अधिगम का एक औद्योगिक रूप है। तथापि उसने इन निष्कर्षों तक पहुंचने में पारंपरिक सैद्धांतिक अवधारणाओं की उपेक्षा नहीं की। उन्होंने इन इनपुटों का उपयोग अपने इस विचार को सुदृढ़ करने हेतु किया कि दूरस्थ शिक्षा, शिक्षा का एक औद्योगीकृत रूप है। उदाहरण के लिए जर्मन सिद्धांतवादियों जैसे हनीमन और शल्ज द्वारा औपचारिक शिक्षा के लिए विकसित अवधारणाएं: 'उद्देश्य' (इंटेंशन), 'विषय वस्तु' (कौन्टेंट), 'विधि' (मैथोडोलौजी), 'माध्यम का चयन' (चोइस ऑफ मीडिया), 'व्यक्तिगत विशेषताएं और सामाजिक सांस्कृतिक स्थिति', जब दूरस्थ शिक्षा प्रक्रिया के लिए उपयोग की जाती है, तो यह दर्शाती है कि दूरस्थ शिक्षा एक घटना है जो पारंपरिक शिक्षा से बहुत भिन्न है। हम इस बिंदु पर यहां विस्तार से चर्चा करेंगे:

i) एक दूरस्थ शिक्षक का **शैक्षिक संकल्प** निश्चित रूप से उच्च ज्ञानात्मक क्षेत्र का होना चाहिए; परंतु मनोगत्यात्मक और भावनात्मक पक्षों में निम्नतम स्तर का।

ii) पारंपरिक शिक्षा प्रणाली की भांति दूरस्थ शिक्षा में **विषय वस्तु** का चयन विस्तृत और

विविध नहीं हो सकता है। (आमने-सामने या नियमित शिक्षा– के घटकों को शामिल करने की आवश्यकता है, यदि विभिन्न प्रकार के प्रयोग, विषय वस्तु के अंग बनाते हैं।)

iii) **शिक्षण विधि** और माध्यमों के चयन में भी परिवर्तन होता है, क्योंकि सभी पारंपरिक विधियों का उपयोग दूरी के लिए नहीं किया जा सकता।

iv) शिक्षार्थियों की **व्यक्तिगत विशेषताओं** और **सामाजिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों** में अंतर भी अपारंपरिक है - प्रथम पीढ़ी के शिक्षार्थी पारंपरिक रूप से उत्कृष्ट वर्ग के साथ प्रतियोगी होते हैं, मध्यम आयु वर्गीय शिक्षार्थी स्वयं को युवा शिक्षार्थियों के साथ समूह में पाते हैं आदि .....।

इस विश्लेषण से पीटर ने निष्कर्ष निकाला कि पारंपरिक शैक्षिक संरचना के विश्लेषण हेतु प्रस्तावित वर्ग, दूरस्थ शिक्षा की संरचना और/या प्रक्रियाओं के विश्लेषण के लिए उपयुक्त नहीं है।

पीटर्स (1988) ने 'औद्योगिक' सिद्धांत और व्यवहार' के वर्गों की सहायता से दूरस्थ शिक्षा का विश्लेषण किया और निष्कर्ष निकाला कि दूरस्थ शिक्षा को प्रभावी बनाने के लिए ***'श्रम के विभाजन का सिद्धांत'*** *एक गम्भीर तत्व है।* ***'औद्योगीकरण'*** *के सिद्धांत में शिक्षण प्रक्रिया को धीरे-धीरे यांत्रीकरण और स्वचालन के माध्यम से पुनर्रचित किया जाता है। पीटर ने निम्नलिखित बिंदुओं का उल्लेख* किया :

- दूरस्थ अध्ययन कोर्स का विकास उसी प्रकार मात्त्वपूर्ण है जिस प्रकार उत्पादन प्रक्रिया से पूर्व तैयारी का कार्य होता है।
- शिक्षण प्रक्रिया की प्रभाविकता विशेष रूप से नियोजन और संगठन पर आश्रित होती है।
- पाठ्यक्रमों को औपचारिक रूप देना चाहिए और विद्यार्थियों से अपेक्षाएं मानकीकृत की जानी चाहिए।
- शिक्षण प्रक्रिया वृहद रूप से वस्तुनिष्ठ है।
- दूरस्थ शिक्षण का कार्य पारंपरिक शिक्षण में विश्वविद्यालय शिक्षकों की तुलना में काफी परिवर्तित हो गया है।
- दूरस्थ अध्ययन तभी मितव्ययी हो सकता है जब उपलब्ध संसाधनों का उपयोग और केन्द्रीय प्रशासन हो।

पीटर्स के अनुसार जब दूरस्थ शिक्षा में शिक्षण और अधिगम प्रक्रियाओं के बारे में निर्णय लिए जाएं तो औद्योगिक संरचनाएं और दूरस्थ शिक्षण की विशेषताओं को ध्यान में रखा जाना चाहिए।

दूर शिक्षण की औद्योगिक विशेषताएं : समानान्तरता

यहाँ हम दूरस्थ शिक्षा की कुछ विशेषताओं की चर्चा करेंगे जो औद्योगिक क्षेत्र के समांतर हैं।

i) **श्रम का विभाजन :** दूरस्थ शिक्षा के लिए शिक्षण सामग्री का उत्पादन एक औद्योगीकृत प्रक्रिया है। विशेषज्ञों की एक संपूर्ण श्रेणी : विषय विशेषज्ञ, कोर्स लिखने वाले और संपादकों से लेकर अनुदेशन स्वरूपक, मुद्रक आदि तक परंपरागत पुस्तकों से सीखने

के लिए उपयोग किए जाने वाले तरीकों से भिन्न सामग्री के उत्पादन के लिए औद्योगिक तरीकों से कार्य करते हैं। इसमें संलग्न बुनियादी सिद्धांत हैं – 'श्रम का विभाजन', यह सिद्धांत केवल सामग्री उत्पादन में ही लागू नहीं होता बल्कि अन्य शिक्षणशास्त्रीय प्रक्रियाओं में भी उपयोग होता है। जो सूचना और शैक्षिक कार्य तैयार करते हैं वे उसको आपूर्ति या संप्रेषण नहीं करते, जो इनकी आपूर्ति/संप्रेषण करते हैं उनका सीधा संबंध पढ़ाने या परामर्श से नहीं होता, जो ट्यूटरिंग और परामर्श में संलग्न होते हैं, वे शिक्षार्थी की प्रगति का मूल्यांकन या उनके निष्पादन का आँकलन करने वाले से भिन्न हो सकते हैं। सारांश के रूप में, प्रत्येक कार्य का ध्यान एक विशेषज्ञ द्वारा रखा जाता है।

ii) **शिक्षण सामग्री का व्यापक पैमाने पर उत्पादन :** बड़े पैमाने पर उत्पादन, स्पष्ट रूप से उद्योगों की घटना है। यदि ऐतिहासिक विचार से देखा जाय तो उद्योग और दूरस्थ शिक्षा के बीच स्पष्ट समानताएं नजर आती हैं। उदाहरण के लिए उद्योग की वृद्धि व्यक्तिगत श्रमिक से लेकर सामूहिक प्रयास तक दिखाई देती है और अधिक मांगों की पूर्ति हेतु बड़े पैमाने पर उत्पादन करना होता है। यही केस दूरस्थ शिक्षा के उद्‌भव के साथ भी है। हम उपकरणों के प्रारंभिक उपयोग से सरल यंत्रीकरण द्वारा स्वचालीकरण और कंप्यूटरीकरण तक की प्रगति में भी समानताएं देख सकते हैं यह समानता बड़ी अदभूत है।

iii) **कार्य प्रक्रियाओं का व्यवस्थीकरण :** औद्योगीकरण और दूरस्थ शिक्षा के परिणामों के बीच स्पष्ट परिलक्षणीय समानताएं हैं। उदाहरण के लिए यह माना गया है कि औद्योगीकरण की भांति दूरस्थ शिक्षा में भी सफलता, काफी मात्रा में निम्नलिखित पर निर्भर करती है :

- 'नियोजन' जो वैज्ञानिक प्रकृति का होता है;
- प्रक्रियाओं का औपचारिकरण;
- उत्पादों का मानकीकरण;
- संपूर्ण प्रक्रिया का व्यवस्थीकरण;
- 'यंत्रीकरण' जिसका उद्देश्य प्राप्ति के लिए प्रयुक्त मानव शक्ति में सामाजिक और दृष्टिकोण परिवर्तन का आशय है;
- केन्द्रीकरण पर भारी निर्भरता।

iv) **खाका (Layout) :** यद्यपि इमारतों के स्वरूप में भी समानताएं ढूंढना नगण्य है परंतु यह महत्वपूर्ण है। हम कहना चाहते हैं कि एक मुक्त विश्वविद्यालय का कैम्पस एक विशिष्ट पारंपरिक विश्वविद्यालय से पूर्णतया भिन्न होता है। पहले में संरचनाएं लगभग एक उद्योग के सामन होती हैं जिसमें 'उत्पादन', 'स्वरूप' आदि के अनुभाग अलग अलग होते हैं और शिक्षकों की भूमिका प्रायः प्रबंधकों के समान होती है।

यह संभव है कि इसमें और अधिक समानताएं जोड़ी जा सकती हैं। तथापि हमारा उद्देश्य एक विस्तृत सूची प्रस्तुत करना नहीं है। जो यहां प्रस्तुत किए गए हैं वे उदाहरण हैं जिन्होंने पीटर्स को प्रभावित किया। दूरस्थ शिक्षा और उद्योग के बीच समानताओं को देखने के बाद हमें यह भी जानना चाहिए कि शिक्षा का यह औद्योगीकृत रूप शिक्षा की आमने-सामने की प्रणाली से भिन्न है।

पीटर्स ने दूरस्थ शिक्षा के अपने सैद्धांतीकरण में इन समानताओं को उच्चतम मूल्य प्रदान किया।

दूरस्थ शिक्षा : शिक्षा का सर्वाधिक औद्योगिक रूप

पीटर्स का निष्कर्ष था कि शिक्षा के सभी रूपों में दूरस्थ शिक्षा सर्वाधिक औद्योगीकृत रूप है; और औद्योगीकरण के सिद्धांत के साथ वहां पर प्रयुक्त शोधकर्ताओं का वर्ग इस नई शैक्षिक घटना की व्याख्या हेतु सर्वोत्तम साधन हैं। पीटर्स पारंपरिक शिक्षा में होने वाले सैक्षिक संप्रेषण में भेद करते हैं, जिसके लिए माना जाता है कि वह अर्न्तवैयक्तिक संप्रेषण पर आधारित होना चाहिए और दूरस्थ शिक्षा में संप्रेषण अप्रत्यक्ष होता है। अर्थात वह संप्रेषण अधिकांशतः विविध मीडिया द्वारा प्रभावित होता है।

पीटर के सिद्धांत के शिक्षण शास्त्रीय पक्ष

पीटर के सिद्धांत के कुछ महत्त्वपूर्ण शिक्षण शास्त्रीय पक्ष निम्नलिखित हैं :

i) दूरस्थ शिक्षा में शैक्षिक संप्रेषण कृतिम होता है क्योंकि संपूर्ण संप्रेषण कुछ अंगों में टूटा हुआ है – मुद्रित, श्रृव्य, दृश्य आदि जो यांत्रिक रूप से प्रभावित हैं। शैक्षिक संप्रेषण में इस प्रकार के रूपांतरण ने शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों को नई भूमिकाएं सौंप दी है। शिक्षण क्रियाएं और अधिगम क्रियाएं भी शिक्षक और शिक्षार्थी के उत्तरदायित्वों के साथ परिवर्तित हो गई हैं।

ii) शिक्षक सूचना का एक भंडार और व्याख्याकर्ता या उद्घोषक की अपेक्षा एक 'प्रबंधक' अधिक है। तब शिक्षक का प्रथम कार्य इस नई भूमिका को स्वीकारना है और स्वयं को दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के अनुकूल बनाना है। उसे ऐसी स्थिति का सामना करना है जहां संपूर्ण शिक्षण प्रक्रिया और शिक्षण सामग्री कई भागों में वितरित हैं। उसमें से प्रत्येक का निष्पादन और प्रबंधन विभिन्न व्यक्तियों और उपकरणों द्वारा किया जाता है जो प्रणाली की रचना करते हैं। इस नई प्रणाली को अपनाने के लिए सदियों पुराने व्यावसायिक प्रतिरूप को तोड़ने की आवश्यकता है।

iii) दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में आने वाले अधिकांश शिक्षार्थियों के पास परंपरागत शिक्षा प्रणाली का आधार होता है। उन्हें दूरस्थ शिक्षा आकर्षक लगती है, क्योंकि यह उन्हें अपने तरीके से काम करने के अवसर देती है- अनुदेशन समयबद्ध, स्थानबद्ध या व्यक्तिबद्ध नहीं होता है। वे अपने लिए विशाल विविध विकल्पों में से चयन कर सकते हैं, अपने समयानुसार पाठ्यक्रम पूर्ण कर सकते हैं, पाठ्यक्रम कार्य करने के लिए स्वयं का स्थान चुन सकते हैं। इन लाभों के होने से दूरस्थ शिक्षार्थियों के उतरदायित्व केवल बढ़े ही नहीं बल्कि उनकी प्रकृति भी परिवर्तित हुई। शिक्षार्थी इस औद्योगीकृत प्रणाली का सामना करने में कठिनाई का अनुभव करती/ता है और छोड़कर चला जाती/ता है।

शिक्षा के औद्योगीकरण के परिणामों के प्रभाव को जैसा उन्होंने देखा, क्रियान्वयन द्वारा शिक्षाविदों के नए वर्ग का प्रादुर्भाव होना चाहिए जो शिक्षा के औद्योगीकृत प्रणाली को अधिक मानोचित, शिक्षक को स्वयं को समायोजित करने में सहायक और शिक्षार्थी को इस नई शैक्षिक स्थिति से अधिकतम लाभ उठाने में सहायक हो। यह प्रक्रिया जैसा आज देखा जाता है पहले ही गहरी जड़ें ले चुकी है और पूरे विश्व में फैल चुकी है।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

6) एक मुक्त विश्वविद्यालय और एक उद्योग में सामान्य चार विशेषताएं लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2.4.5 मार्गदर्शित शैक्षिक संवाद सिद्धांत

दूरस्थ शिक्षा के सिद्धांत में चौथा महत्त्वपूर्ण योगदान 'मार्गदर्शित' शैक्षिक संवाद की अवधारणा है, जो वोर्जे होलम्बर्ग द्वारा प्रतिपादित किया गया, उन्होंने एक अंग्रेजी प्रवक्ता से कार्य आरम्भ किया और 1956 में दूरस्थ शिक्षा की ओर मुड़े और हरमोड्स - माल्यों में एक स्वीडिश अग्रणी पत्राचार संस्थान में कार्य किया। जहां वे 1965 में निदेशक बने। वे दूरस्थ शिक्षा के प्रोफेसर, फर्न यूनीवर्सिटेट, हेगन में सेवानिवृत्त होने के पूर्व तक रहे।

मार्गदर्शित शैक्षिक संवाद – एक व्याख्या

एक सफल लेखक और सिद्धांत प्रेमी, होलम्बर्ग का विचार है कि शिक्षा का मूल '**व्यक्तिगत शिक्षार्थियों द्वारा अधिगम**' है। इस पर दृढ़ रहते हुए उनका विश्वास है कि दूरस्थ शिक्षा को शिक्षा का एक उपयुक्त तरीका स्वीकार किया जाना चाहिए, विशेषकर व्यक्तिगत अधिगम के लिए उपयुक्त; क्योंकि यह शिक्षार्थी के लिए संभव बनाता है कि वह अपने स्वयं के कार्य पर निर्भर रहे, जो आवश्यक रूप से आमने सामने के प्रत्यक्ष शिक्षण से सवतंत्र है। दूरस्थ शिक्षार्थी उसके लिए उपलब्ध विविधि सहायक सुविधाओं रेडियो और टीवी कार्यक्रम, औडियो और वीडियो कैसेट्स, टेलीफोन और कम्प्यूटर, यहां तक कि संपर्क कार्यक्रमों में आमने सामने का शिक्षण आदि में से चुनने के लिए स्वतंत्र है परन्तु अधिगम या शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति का दायित्व उसका स्वयं का है। वह जिसमें संलग्न रहता है, वह **स्व-अध्ययन या 'स्वतंत्र अध्ययन'** कहलाता है। ध्यान में रखने योग्य महत्त्वपूर्ण बिंदु यह है कि स्व-अध्ययन में संलग्न शिक्षार्थी अकेला नहीं होता है। वह अपने अध्ययन को पूर्णतया अकेले नहीं करती/करता है। उसके पास प्रशासकों, लेखकों, मीडिया उत्पादकों, शिक्षक, मूल्यांकनकर्ता, टयूटर्स, शिक्षाविदों, परामर्शदाताओं आदि की एक संपूर्ण टीम होती है जो उसके साथ कार्य करते हैं। परंतु उन सबकी सहायक भूमिकाएं होती हैं, वे व्यक्तिगत-अधिगम या स्व-अध्ययन का समर्थन करते हैं। (यहां पर एक चेतावनी आवश्यक है। भारतीय परिस्थिति में एक वयक्ति ऐसे अभ्यर्थियों के संपर्क में आ सकती/सकता है, जो कुछ स्थानों पर विश्वविद्यालय परीक्षाओं में निजी रूप से शामिल होते हैं वे 'वाह्य-अभ्यार्थी' कहलाते हैं। ऐसे निजी/बाह्य अभ्यार्थी को उस प्रकार के अभ्यार्थियों के साथ भ्रमित न किया जाय जिन्हें हमने ऊपर परिभाषित करने का प्रयास किया है। होलम्बर्ग के लिए एक निजी/वाह्य शिक्षार्थी पूर्ण रूप से स्वयं के लिए है। वह एक अकेली/ला है; परंतु एक दूरस्थ शिक्षार्थी के पास उसके स्व-अध्ययन के लिए सभी सहायता उपलब्ध हैं।)

जिस प्रकार की सहायता के लिए हमने पहले बात की है, उसे मुक्त विश्वविद्यालय/पत्राचार संस्थान या जो भी नाम हम इसके लिए चुनते हैं इन्हें उपलब्ध कराना चाहिए। इस

शैक्षिक सहायता का सारांश यह है कि व्यक्तिगत शिक्षार्थी और सहायता प्रदान करने वाले संस्थान के बीच 'शैक्षिक रूप से लाभदायक संबंध बनाना। होलम्बर्ग के अनुसार यह संबंध की विशेषता है जिसे वह 'मार्गदर्शित शैक्षिक वार्तालाप' कहते हैं।

शैक्षिक वार्तालाप के प्रकार

होलम्बर्ग (1981) अपनी पुस्तक 'स्टेटस एंड ट्रेंड्स ऑफ डिस्टेंट एजुकेशन' में वार्तालाप के इस प्रकार को प्रस्तुत करते हुए कहते हैं:

''विद्यार्थियों, ट्यूटर और संगठन के अन्य सहायकों के बीच एक प्रकार का वार्तालाप द्विमार्गीय यातायात के रूप में लिखित और टेलीफोन द्वारा परस्पर क्रिया के माध्यम से संपन्न होता है। अप्रत्यक्ष रूप से अध्ययन सामग्री के प्रस्तुतीकरण द्वारा वार्तालाप होता है, क्योंकि यह एक मार्गीय संप्रेषण विद्यार्थियों के लिए विषय वस्तु के साथ स्वयं चर्चा करने का कारण बनता हैं वार्तालाप इस प्रकार वास्तविक और कृतिम दोनों प्रकार का होता है। लेविस कहते हैं- सिमुलेटेड (कृतिम) वार्तालाप विषय सामग्री के अध्ययन के कारण अंतर्निहित वार्तालाप मात्र नहीं है, बल्कि कोर्स विकसित करने वालों और विद्यार्थियों के बीच एक संबंध है, जो सरल रूप में पठनीय और उचित बोलचाल की शैली में प्रस्तुति द्वारा रचित हो, तथा कोर्स का निजी वातावरण सतही रूप से चिन्हित हो। उदाहरण के लिए लेखक स्वयं को संदर्भित करने के लिए 'मैं' या 'हम' और विद्यार्थियों जिनसे बात हो रही हो, के लिए तुम/आप का उपयोग करते हैं। मैं अनुशंसा करता हूँ कि आप विद्यार्थियों की विदित समस्याओं हेतु प्रश्न एवं उत्तर, सुझाव एवं संदर्भ यहाँ संबद्ध होते हैं। प्रस्तुतीकरण की यह शैली, क्रियाकलाप को प्रेरित करती है और विद्यार्थियों के पूर्व-अनुभवों को संबंधित करते हुए तर्क, पक्ष एवं विपक्ष की चर्चा का संकेत देती है और इस प्रकार विचार श्रृंखला में बाधा को दूर करती है। पुनरावृत्ति कार्य एवं स्वयं जांच अभ्यास भी छदन वार्तलाप से संबंधित होते हैं।

उपरोक्त अंश में अन्य बिन्दुओं के साथ होलम्बर्ग दो प्रकार के शिक्षात्मक वार्तालापों की पहचान करते हैं:

i) वास्तविक

ii) छद्म

इन्हें चित्र द्वारा निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। (चित्र 2.3)

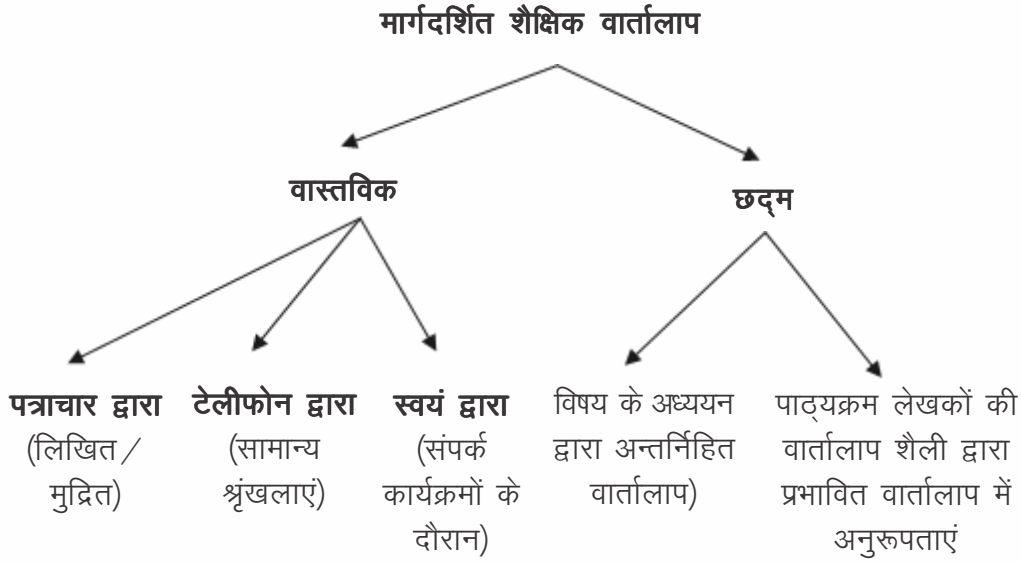

चित्र 2.3: मार्गदर्शित शैक्षिक वार्तालाप

शैक्षिक वार्तालाप की विशेषताएं

होलम्बर्ग (1981) के अनुसार शैक्षिक वार्तालाप की निम्नलिखित विशेषताएं हैं:

i) अध्ययन सामग्री का सरलता से पहुंचने योग्य प्रस्तुतीकरणः लिखने में प्रिय, कुछ बोलचाल की भाषा, सरलता से पठनीय विषय यदि विषय मुद्रित हो; सूचना का सीमित घनत्व हो।

ii) विद्यार्थियों को स्पष्ट राय और सुझावा, जैसे क्या करना, क्या नहीं करना है, कहां और कब विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है .....।

iii) प्रश्नों, क्या स्वीकारना है और क्या नहीं .... आदि पर विचारों के आदान-प्रदान के लिए आमंत्रण।

iv) विद्यार्थियों को भावनात्मक रूप से संलग्न करने के प्रयास ताकि वे विषय और इसकी समस्याओं पर व्यक्तिगत रुचि ले सकें।

v) व्यक्तिवाचक एवं संबंधवाचक सर्वनामों के उपयोग के साथ व्यक्तिगत शैली;

vi) स्पष्ट कथनों द्वारा प्रक्रण के परिवर्तनों को चिन्हित करना; टंकण के साधन या अभिलेखित, मौखिक संप्रेषण वक्ताओं में परिवर्तन द्वारा उदाहरण के लिए पुरुष के बाद महिला, या विरामों द्वारा (यह वार्तालाप की अपेक्षा मार्गदर्शन की विशेषता है।)

'मार्गदर्शित शैक्षिक संवाद' की उपरोक्त विशेषताएं स्पष्ट रूप से सुझाती हैं कि दूरस्थ अधिगम को सफलता पूर्वक प्रभावित करने के लिए पाठ्यक्रम स्वरूपकर्ताओं और पाठ्यक्रम लेखकों को क्या करना चाहिए।

> इस प्रकार 'मार्गदर्शित शैक्षिक संवाद' की अवधारणा को प्रस्तुत करने और कोर्स सामग्री के योजना और विकास में इसके प्रभावों को भी प्रदर्शित करने के बाद होलम्बर्ग (1981), अपनी परिकल्पना को संपेक्ष में निम्न प्रकार से प्रस्तुत करते हैं:
>
> ''मार्गदर्शित शैक्षिक संवाद' की विशेषताएं जितनी मजबूत होती हैं, विद्यार्थियों में उनके और सहायक संगठन के बीच व्यक्तिगत संबंध की भावना उतनी ही प्रबल होती है। विद्यार्थियों की भावना कि सहायक संगठन अध्ययन सामग्री को वयक्तिगत रूप से उनके लिए प्रासंगिक बनाने के लिए इच्छुक हैं, जितनी प्रबल होती है, उतनी ही अधिक उनकी व्यक्तिगत संलग्नता होती है। विद्यार्थियों में यह सहायक संगठन के साथ उनके व्यक्तिगत संबंध और अध्ययन सामग्री के साथ उनकी व्यक्तिगत संलग्नता जितनी मजबूत होती है, उतनी ही मजबूत उनमें प्रेरणा और अधिक प्रभावशाली अधिगम होता है।''

इस प्रकार **'मार्गदर्शित शैक्षिक संवाद'** की अवधारणा की सहायता से होलम्बर्ग सुझाते हैं कि दूरस्थ शिक्षा क्या है, दूरस्थ शिक्षा की शिक्षण सामग्री की प्रकृति क्या होनी चाहिए, और अंत में किस प्रकार की दूरस्थ शिक्षण विधि सफल सिद्ध होगी।

सन् 1995 में होलम्बर्ग ने अपने दूरस्थ शिक्षा के सिद्धांत को महत्त्वपूर्ण तरीके से विस्तृत किया। यह व्यापक सिद्धांत कई भागों में विभाजित है। जो ठीक पूर्व में बताया गया सिद्धांत और यह विश्वास की दूरस्थ शिक्षा विविध शिक्षार्थियों के लिए कार्य करती है, जो आमने-सामने के शिक्षण का उपयोग नहीं कर सकते या नहीं करना चाहते, की ओर इंगित करता

है। इस प्रकार दूरस्थ शिक्षा विद्यार्थियों की चयन की स्वतंत्रता एवं आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देती है। व्यक्तिगत शिक्षार्थियों के लिए एक ओर दूरस्थ शिक्षा की उदार अध्ययन सुविधाओं के प्रावधान से और दूसरी ओर व्यावसायिक प्रशिक्षण से समाज लाभान्वित होता है। दूरस्थ शिक्षा, आर्वतक और आजीवन अधिगम तथा अधिगम अवसरों और समानताओं तक निःशुल्क पहुंच के लिए एक उपकरण है। होलम्बर्ग के अनुसार दूरस्थ शिक्षा की विशेषताएं निम्नलिखित कथनों से स्पष्ट होती हैं :

- सभी प्रकार का अधिगम जो संज्ञानात्मक ज्ञान और कौशलों के अर्जन साथ ही भावात्मक अधिगम और कुछ मनोगत्यात्मक अधिगम से संबंधित है, दूरस्थ शिक्षा द्वारा प्रभावशाली ढंग से प्रदान किया जाता है।
- 'अधिगम एक व्यक्तिगत क्रियाकलाप है, दूरस्थ शिक्षा इस तथ्य पर आधारित है। अधि ागम का मार्गदर्शन और समर्थन असन्निहित माध्यमों द्वारा होता है।
- दूरस्थ शिक्षा अधिगम के व्यवहारवादी, ज्ञानवादी, रचनावादी और अन्य पद्धतियों के लिए मुक्त है।
- व्यक्तिगत संबंध अध्ययन का आनन्द और विद्यार्थियों तथा जो उन्हें सहायता दे रहे हैं (शिक्षक, परामर्शदाता), के बीच परानुभूति दूरस्थ शिक्षा में अधिगम के केन्द्र पर है। परानुभूति और लगाव की भावना विद्यार्थियों में सीखने की प्रेरणा को बढ़ावा देती है जो अधिगम को सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं।
- यद्यपि दूरस्थ शिक्षा प्रशिक्षण का प्रभावशाली तरीका है, तथापि इसमें मात्र तथ्यों का अधिगम और स्वीकृत सत्यों के पुनरोत्पादन की आशंका बन जाती है। फिर भी इसे इस प्रकार संगठित और संपन्न किया जा सकता है कि विद्यार्थी अपनी स्वयं की स्थिति को खोजने समीक्षा करने और पहचानने के लिए प्रोत्साहित हो जाएं।

होलम्बर्ग का विस्तृत सिद्धांत दूरस्थ शिक्षा का विवरण मात्र ही नहीं परन्तु इसकी व्याख्या शक्ति भी प्रस्तुत करता है। यह लाभदायक है कि एक सामान्य उपागम की पहचान की जाय जो शिक्षण अधिगम प्रयासों के अनुकूल तथा अधिगम के भी अनुकूल हो।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

7) होलम्बर्ग ने वार्तालाप को 'मार्गदर्शित' और 'शिक्षात्मक' क्यों कहा?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2.4.6 द्विमार्गीय डाक-संचार सिद्धांत

स्वीडेन के जॉन ए.बाथ., जिन्होंने माल्मों में हरमोड्स पर कार्य किया, पत्राचार/दूरस्थ शिक्षा में मुख्य रूप से द्विमार्गीय संप्रेषण से संबंधित रहे। तथापि हम दूरस्थ शिक्षा के प्रतिमान (माडल्स) पर उनकी अन्तर्दृष्टि का वर्णन भी संक्षेप में करेंगे।

यह कहा जा सकता है कि बहुत आरम्भ से बाथ के विचार होलम्बर्ग से भिन्न नहीं हैं। यदि कोई अंतर है तो वह बाथ का ''द्विमार्गीय संप्रेषण'' पर जोर देना है जैसे दूरस्थ शिक्षा सामग्री के माडल्स। बाथ स्वीकारते हैं कि पत्राचार/दूरस्थ शिक्षा, शिक्षा के औद्योगीकरण द्वारा जन शिक्षा का साधन बन गई है और इस कारण भी कि दूरस्थ अध्ययन आवश्यक रूप से **'व्यक्तिगत अध्ययन'** है। तथापि एक लेखक, संपादक, ट्यूटर और कोर्स डिजाइनर के रूप में उनके अनुभवों ने उन पर प्रभाव डाला कि 'एक पत्राचार शिक्षक, रचनात्मक आलोचना, प्रोत्साहन और व्यक्तिगत विद्यार्थी की अधिगम समस्यों में निजी संलग्नता द्वारा अपने विद्यार्थियों में अभूतपूर्व सुधार हेतु उन्हें उत्तेजित कर सकता है'' (बार, 1980), उसने यह भी स्पष्टतः पाया कि ''शिक्षण प्रणाली में द्विमार्गीय डाक संप्रेषण की मात्रा को कम करने की स्पष्ट प्रवृत्ति थी।'' उपभाग 4.4.5 में ऊपर हमने जो प्रस्तुत किया है, उसे हम विस्तृत करेंगे।

शिक्षक टिप्पणियों का शिक्षण शास्त्रीय महत्त्व

यह स्पष्ट है कि पत्राचार/दूरस्थ शिक्षा में शिक्षक टिप्पणियां सत्रीय कार्य से संबंधित हैं जो दूरस्थ शिक्षार्थियों द्वारा संपन्न किए जाते हैं। ''सुझाव यह है कि शिक्षार्थी के निष्पादन में ''महत्वपूर्ण सुधार'' लाने के लिए दूरस्थ शिक्षा में शिक्षक टिप्पणी (सत्रीय कार्य आधारित कार्यों द्वारा प्रोत्साहित) एक बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस प्रकार शिक्षक टिप्पणियां दूरस्थ शिक्षा के उच्च वांछित शिक्षण शास्त्रीय अंगों का निर्माण करती हैं परंतु शिक्षक टिप्पणियों को शैक्षिक सहायता के 'औद्योगिक' प्रकार की संपूर्ण योजना में कहीं स्थान नहीं मिलता, जो दूरस्थ शिक्षार्थियों को प्रदान की जाती है। शिक्षक टिप्पणी द्विमार्गीय संप्रेषण की श्रृंखला में मात्र एक संधि के रूप में आ सकती है, जो पत्राचार/दूरस्थ शिक्षा संस्थान द्वारा कोर्स सामग्री के द्वारा आरम्भ किया जाता है। यदि सत्रीय कार्य पर कार्य करने और उन्हें पत्राचार/दूरस्थ शिक्षक द्वारा आँकलन हेतु प्रेषित करने के लिए द्विमार्गीय संप्रेषण की श्रृंखला में एक द्वितीय संधि संपर्क प्रदान करने के लिए बाध्य होता है। शिक्षक द्वारा किया गया आँकलन द्विमार्गी संप्रेषण में तीसरा संपर्क/संधि है। चौथा, शिक्षक द्वारा किए गए आँकलन के प्रत्युत्तर में शिक्षार्थियों द्वारा उठाए गये प्रश्न और शंकाएं हो सकता है। परंतु आइए उपरोक्त तीसरे संपर्क पर दूसरी नजर डालें।

अनुभवों ने दर्शाया है (और यह अभिन्न रूप से सभी केसों पर लागू होता है उदाहरण के लिए भारतीय संदर्भ में पत्राचार/दूरस्थ शिक्षा) कि ट्यूटर्स का शिक्षार्थियों के प्रत्युत्तरों की जांच का एक मात्र प्रत्यक्ष संकेतक एक ग्रेड (बिंदु स्केल/पैमाना पर) या अंक (प्रतिशत में) जो उत्तर पुस्तिका के सबसे ऊपर लिखा जाता है। इस प्रकार का ग्रेड या अंक शिक्षार्थी के लिए कुछ संप्रेषण या क्रिया को प्रेरित कर सकती है, परंतु यह शिक्षण शास्त्रीय रूप से अधिक कार्य नहीं कर सकता, क्योंकि इस प्रकार के केस में टयूटर ने एक पत्राचार/दूरस्थ शिक्षक की तुलना में एक 'परीक्षक' के रूप में अधिक कार्य किया है। उसका ट्यूटोरियल इनपुट द्विमार्गीय संप्रेषण की श्रृंखला वास्तविक तीसरे संपर्क में संरचनात्मक आलोचना, प्रोत्साहन आदि सम्मिलित होने चाहिए। इसके लिए टिप्पणियां, मात्र ग्रेड्स/अंक नहीं, महत्त्वपूर्ण हैं जो शिक्षार्थी निष्पादन को सुधारे।

बाथ, ट्यूटर टिप्पणियों के शिक्षण शास्त्रीय महत्त्व पर जोर देते हैं, जो पत्राचार/दूरस्थ शिक्षा में द्विमार्गीय संप्रेषण श्रृंखला में निर्णायक संपर्क बनाता है। दूसरा इनका यह अनुभव कि सत्रीय कार्य के शिक्षण शास्त्रीय महत्त्व के अतिरिक्ति डाक द्विमार्गीय संप्रेषण की मात्रा को कम करने की प्रवृत्ति है। हम यह विश्वास कर सकते हैं कि यह एक खतरनाक प्रवृत्ति है। इसके विकल्प पाए जा सकते हैं, जैसा कि बाथ ने किया **"सामग्री में ही कुछ प्रकार का द्विमार्गीय संप्रेषण"** निर्मित करके स्वयं जांच अभ्यास विस्तृत आदर्श/नमूना उत्तर आदि के रूप में परंतु इस चर्चा से उत्पन्न महत्त्वपूर्ण प्रश्न बिंदु यह है कि शिक्षार्थी निष्पादन में सुधार के लिए द्विमार्गीय संप्रेषण की आवश्यकता है।

अब हम बाथ द्वारा प्रस्तुत दूसरे महत्त्वपूर्ण बिंदु की ओर बढ़ते हैं।

नामांकन पूर्व परामर्श

कुछ प्रसिद्ध शिक्षण माडल्स (जैसे स्किनर, रूथकोफ, औसबोल, ब्रूनर, रोजर्स आदि द्वारा प्रस्तुत के आधार पर दूरस्थ शिक्षा के विश्लेषण पर अपने महत्त्वपूर्ण कार्य में बाथ कुछ अन्य बातों के साथ सुझाते हैं कि हम विस्तृत रूप से दूरस्थ शिक्षण के दो माडल्स की बात कर सकते हैं।

i) वे प्रतिमान जो निश्चित लक्ष्यों (शैक्षिक) की ओर अधिगम का अधिक कठोर नियंत्रण दर्शाते हैं।

ii) वे माडल्स जो निश्चित (शैक्षिक) लक्ष्यों की ओर अधिगम का कम नियंत्रण दर्शाते हैं।

इन दो विस्तृत प्रतिमान की पहचान के बाद उन्होंने पाया कि पहला प्रतिमान शिक्षण अधिगम सामग्री पर केन्द्रित है– जितना संभव हो उन्हें कई प्रकार से स्वयं में पर्याप्त बनाना और शिक्षार्थी एवं शिक्षक/संस्थान के बीच संपूर्ण शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में द्विमार्गीय संप्रेषण को नगण्य स्थिति तक हटा देना। जबकि दूसरा प्रतिमान शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में द्विमार्गीय शैक्षिक संप्रेषण को महत्त्वपूर्ण भूमिका प्रदान करता है। इन दोनों प्रतिमानों पर बिना कोई मूल्य निर्णय किए बाथ यह सुझाने में व्यवहारिक है कि निःसंदेह शिक्षण अधिगम सामग्री का डिजाइन महत्त्वपूर्ण है। (क्योंकि उनमें द्विमार्गीय संप्रेषण बनाया जा सकता है।), परंतु द्विमार्गीय संप्रेषण कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। इसके अपने गुण हैं। चाहे यह मेल द्वारा, टेलीफोन या आमने सामने की स्थिति में हो दूरस्थ शिक्षा की सफलता के लिए इन दो मुख्य कारकों का उत्तरदायित्व है। वे इसमें एक और कारक जो जोड़ते हैं जिसका नाम है 'नामांकन पूर्व परामर्श' उन्होंने इस कारक को इसलिए जोड़ा क्योंकि अधिगम प्रविधियों पर उनका विश्लेषण दर्शाता है कि शिक्षार्थी विशेषकर प्रौढ़ शिक्षार्थियों को निम्नलिखित में सहायता की आवश्यकता होती है।

i) उनके अधिगम लक्ष्यों को परिभाषित करने और पहचानने में;

ii) पहचाने गए लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए उपयुक्त सामग्री के चयन में;

iii) उनकी शैक्षिक कठिनाइयों के समाधान और उनकी प्रेरणा को बढ़ावा देने में या बनाए रखने में।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

8) द्विमार्गीय संप्रेषण को प्रभावित करने के लिए दूरस्थ शिक्षक कैसे कार्य करता है।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2.4.7 सरोकार की निरन्तरता का सिद्धांत

इस भाग में हम डेविड सेवार्ट के विचारों को जानेंगे, जो दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में ब्रिटिश ओपन यूनीवर्सिटी में 1973 में आए ट्यूटोरियल सेवाओं में उनके अनुभवों जो विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय और अध्ययन केन्द्रों में उपलब्ध थे, उन्हें विश्वास दिलाया कि इन सेवाओं का अत्यधिक महत्त्व इस सीमा तक है कि वे मानते हैं कि दूरस्थ शिक्षण का सार दूरी पर सीखने वाले विद्यार्थियों के लिए सरोकार की निरंतरता' है। 'सरोकार की निरंतरता' की अभिव्यक्ति शिक्षा के भिन्न प्रकार के 'औद्योगीकृत रूप में एक मानव तत्व को प्रस्तावित करती है। एक भाव से सेवार्ट, बाथ के विचार को पुनर्बलित करते हैं, परंतु अधिक बल देकर इस धारणा की दृढ़ता जैसा कि वह सुझाते हैं व्यवहारिक उपागम में निहित है। हम इसकी चर्चा निम्न प्रकार से करेंगे।

मानव सहायता के लिए महत्वपूर्ण आवश्यकता: सेवार्ट तर्क करते हैं कि दूरस्थ शिक्षा संस्थान/विश्वविद्यालय आवश्यक रूप से जन शिक्षा संस्थान हैं। सामग्री का एक विशेष पैकेज सैकड़ों विद्यार्थियों के पास भेजा जाता है और कई बार तो हजारों के पास भेजा जाता है। क्या ऐसा एक पैकेज शिक्षक के सभी कार्यों का निष्पादन कर सकता है? (जिसे, सबसे खराब स्थिति में लगभग सौ या अधिक विद्यार्थियों तक अपनी पहुँच को समायोजित करना होता है) और दूरस्थ शिक्षार्थियों की विविध आवश्यकताओं एवं विशिष्टताओं की पूर्ति कर सकता है? सेवार्ट द्वारा दोनों प्रश्नों के उत्तर 'नहीं' में प्रतीत होते हैं।

यदि इस प्रकार के गुणों वाली सामग्री के पैकेज का उत्पादन करना हो तो यह बहुत व्ययपूर्ण होगी क्योंकि इसे उन सभी परस्पर प्रक्रियाओं को दर्शाना होगा जो शिक्षक और प्रत्येक विद्यार्थी के बीच प्राप्त किया जा सकता है। आशय यह है कि ऐसी सामग्री का स्वरूप कितना ही परिष्कृत हो और इसकी पहुंच कितनी भी विशाल हो, शिक्षार्थियों को हमेशा अतिरिक्त मानव सहायता की आवश्यकता होगी, जो अकेले ही उन अनन्त विविध प्रकार की समस्याओं को दूर कर सके जो असन्हित शिक्षण/अधिगम में उत्पन्न होती है। दूरस्थ शिक्षण संस्थानों को एक मानव ऐजेंसी द्वारा यह सलाह और ट्यूटर सहायता प्रदान करनी होगी, जो अकेले ही दूरी पर विद्यार्थी अधिगम हेतु संस्था की निरंतरता का सुनिश्चयन/गारंटी दे सके। सामग्री के पूर्व नियोजित पैकेज नियत होते हैं। दूरस्थ शिक्षार्थियों को उनकी अनंत विविध आवश्यकताओं और कठिनाइयों की पूर्ति के लिए इस स्थिर सामग्री के उपयोग में सहायता हेतु मानव बहुविद्वता की आवश्यकता है।

प्रमुख मुद्दे एवं समझौतों : सेवार्ट द्वारा स्वयं के लिए संबोधित प्रमुख मुद्दे हैं :

i) तुरंत प्रतिपुष्टि का अभाव

ii) सहपाठी समूह अन्तर्क्रिया की लगभग पूर्ण अनुपस्थिति

यह ऐसा नहीं है कि अन्य विचारकों ने इस मुद्दों पर नहीं सोचा, परंतु उन्होंने इनके शिक्षण शास्त्रीय महत्त्व को उतना जोर देकर नहीं चुना जितना कि सेवार्ट ने चुना इसका आधार मूल रूप से मुद्दों के प्रति दृष्टिकोणों का है जिसके प्रति सेवार्ट अधिक जोर दे रहे थे। उसके लिए शिक्षाविद दो समूहों में विभाजित हैं:

i) वे जो ऐसी शिक्षा प्रणाली के लिए तैयार नहीं है, जिसमें सभी महत्त्वपूर्ण मानव तत्त्वों की स्वीकार्यता हो जो किसी भी अधिगम प्रक्रिया के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। दूरस्थ शिक्षा के प्रति सम्मान का अभाव, मुख्य रूप से इस संदेहजनक दृष्टिकोण का परिणाम है।

ii) वे, जो दूरस्थ शिक्षा के लिए बाहर हैं और दूरस्थ शिक्षा में मानव तत्त्व को न्यूनतम रखना चाहते हैं।

सेवार्ट दोनों विचारों को अस्वीकार करते हैं। वह प्रथम के साथ नहीं हैं, क्योंकि वे दूरस्थ शिक्षा की पुष्टि तीन बहुत दृढ़ तर्कों के साथ करते हैं :

i) नई संप्रेषण तकनीकों से शिक्षा को लाभ होना चाहिए और उनकी क्षमता पूर्ण रूप से प्रदर्शित हो। दूरस्थ शिक्षा ऐसी तकनीकों के उपयोग पर आधारित है और उपयोग के अवसर प्रदान करती है।

ii) शिक्षा का लोकतांत्रीकरण होना चाहिए, छूटे हुए व्यक्तियों का ध्यान रखना है, ऐसे कदम उठाने हैं कि समाज में कोई भी किसी भी प्रकार से नहीं छूटे। केवल दूरस्थ शिक्षा ही इस चुनौती का सामना कर सकती है।

iii) सीमित मानव, आर्थिक और स्थान संबंधी संसाधनों के साथ, शिक्षा का एकमात्र व्यवहारिक साधन दूरस्थ शिक्षा ही है।

वह दूसरे समूह के साथ भी नहीं हैं, क्योंकि वे दूरस्थ शिक्षा में मानव तत्त्व पर जोर देते हैं जैसा कि वे दूरस्थ शिक्षण/अधिगम पैंकेजेज की विशेषता आवश्यक रूप से स्थिरता बताते हैं, वे इसके लिए निम्नलिखित को प्रदान करना चाहते हैं:

i) शिक्षार्थी समस्याओं की अनंत विविधता;

ii) तुरंत प्रतिपुष्टि;

iii) तुरंत प्रतिपुष्टि।

इन तीनों मुद्दों को हल करने के लिए सेवार्ट; दूरस्थ शिक्षा में मानव तत्व के प्रवेश पर जोर देते हैं जिसके द्वारा दूरी पर शिक्षार्थी अधिगम के लिए संस्थान की निरंतरता को बनाए रखना संभव हो सकता है। यह देखा जा सकता है कि सेवार्ट उपरोक्त दो चरम विचारों के बीच एक समझौता प्रस्तुत कर रहे हैं और ये समझौते आगे जाकर अतिरिक्त समस्याएं (सैद्धांतिक और व्यवहारिक दोनों) लाने के लिए हैं।

सेवार्ट के विचारों द्वारा उठाई गई सैद्धांतिक समस्याएं दूरस्थ शिक्षा की बुनियादी विचारधारा से संबंधित है। दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों में आमने-सामने शिक्षण का अधिक भाग शब्दों के बीच विरोध प्रतीत हो सकता है। दूसरा ऐसी व्यापक मानव सहायता का प्रावधान, दूरस्थ शिक्षा के बारे में कुछ आर्थिक सिद्धांतों को असत्य सिद्ध करेंगे। व्यवहारिक रूप में, ऐसी मानव सहायता का विशाल तंत्र स्थापित करने और बनाए रखने

के लिए वह दूरस्थ शिक्षा के संपूर्ण प्रबंधन में काफी कार्य संबंधी जटिलताएं लाते हैं। सेवार्ट इन समस्याओं के समाधान प्रदान करते हैं। वह इसका विरोध करते हैं कि दूरस्थ शिक्षा में आमने सामने के तत्व को इसका न्यायसंगत भाग माना जाय, जैसे कि अन्य सभी मीडिया अंग और मानव सहायता के इस समेकन को प्रभावित करने के लिए कोई अनिवार्य कानूनी व्यय इसकी कार्यात्मक जटिलताओं के बावजूद इसके विपरीत असंतोष नहीं होना चाहिए। क्योंकि संपूर्ण व्यय, अर्थात् सामग्री के पैकेज और मानव सहायता को एक साथ रखकर, प्रदत्त विशाल संख्या में शिक्षार्थियों के लिए संवाद प्रणाली में किए जाने वाले व्यय की तुलना में अभी भी कम होगा।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

9) सेवार्ट द्वारा उठाए गए मुख्य मुद्दों को सूचीबद्ध कीजिए। इन मुद्दों के समाधान हेतु इनके क्या सुझाव थे?

.....

.....

.....

.....

.....

2.4.8 संप्रेषण एवं शिक्षार्थी नियंत्रण का सिद्धांत

यहां पर चर्चा किया जाने वाला अगला योगदान, स्पष्ट रूप से शैक्षिक अनुभवों के मूल में निरंतर वास्तविक द्विमार्गीय संप्रेषण को रखता है, शिक्षक और शिक्षार्थी के पृथक्करण की परवाह किए बिना दूरस्थ शिक्षा की एक पारिभाषिक विशेषता मध्यस्थ संप्रेषण है और यह एक महत्वपूर्ण स्वरूप संबंध भी है, इस ढ़ांचे को गैरिसन और बेयंटन (1989, गौरिसन, 2000 में बताया गया) द्वारा अद्यतन किया गया। इसने शिक्षण अधिगम संचालन की आवश्यक प्रकृति को पुनर्परिभाषित नहीं किया। उनके अनुसार;

- केन्द्रीय अवधारणा यह है कि शैक्षिक संचालन का आधार संवाद और वाद विवाद द्वारा समझ और ज्ञान का विकास करना है।
- अधिगम प्रक्रिया में शिक्षार्थी और शिक्षक के बीच द्विमार्गीय संप्रेषण की आवश्यकता होती है।
- स्वतंत्रता या स्वायत्तता की अवधारणा के स्थान पर शिक्षार्थी नियंत्रण है। घटनाक्रमों को प्रभावित करने और निर्देशित करने के अवसर और योग्यता, मात्र एक पार्टी द्वारा स्थापित नहीं हो सकती, परंतु स्वतंत्रता (स्व-निर्देशिता) और सहायता के बीच अन्तर्संबंधों पर आधारित होता है।
- अधिगम में प्राथमिक केन्द्र शैक्षिक संचालन की सहायता है।
- शैक्षिक संचालन की सहायता के लिए तकनीकी की आवश्यकता है।

- तकनीकी और दूरस्थ शिक्षा अविभाज्य हैं।

गैरिसन (1989) इस अवधारणात्मक परिवर्तन की मान्यताओं पर विचार करते हैं। दूरी पर शैक्षिक संचालन के इस माडल संचालन के केन्द्र में नियंत्रण की अवधारणा को स्थापित किया। शैक्षिक संचालन को प्रभावित करने के अवसर और योग्यता नियंत्रण' है। यह नियंत्रण की परिभाषा थी। इसका प्रयोजन स्वतंत्रता (स्व अध्ययन) की अवधारणा को प्रतिस्थापित करना था जो प्रायः दूरस्थ शिक्षा के अधिक व्यापक परिप्रेक्ष्य के साथ शैक्षिक संचालन का मूल तत्व है। साझा नियंत्रण शैक्षिक अनुभव संचालन प्रकृति के विचारात्मक रूप में दिखाई दी। द्विमार्गीय संप्रेषण नियंत्रण के केन्द्र में है और स्वतंत्रता के साथ परिवर्तित होता है, जिसके पास शिक्षक की न्यायसंगत और उचित भूमिका को कम करने का प्रभाव है और इस प्रकार पृथक्करण का संकट उत्पन्न करता है।

नियंत्रण प्रतिमान में सम्मिलित हैं : शिक्षक का सूक्ष्म संरचनात्मक स्तर, विद्यार्थी और विषय-वस्तु की निपुणता (योग्यता और प्रेरणा) के सूक्ष्म स्तरीय संचालक तत्त्व, सहायता (मानवीय और गैर मानवीय संसाधन) और स्वतंत्रता (चयन के अवसर) संरचनात्मक बाध्यताओं द्वारा उत्पन्न आवश्यक स्वतंत्रता, एक जटिल शैक्षिक संचालन में समझने के लिए चरों के मात्र एक युग्म को दर्शाती है। इन संचालन तत्वों पर विचार, नियंत्रण का उपयुक्त संतुलन का निर्धारण करेंगे, जिनका आँकलन और निरंतर समायोजन मात्र सतत् द्विमार्गीय संप्रेषण द्वारा ही किया जा सकता है।

2.4.9 शिक्षण एवं अधिगम क्रियाओं के पुनर्समाकलन का सिद्धांत

कीगन (1986, 1990) के अनुसार दूरस्थ शिक्षा मुख्य रूप से अंतर्व्यक्तिक संप्रेषण के लक्षण द्वारा नहीं पहचानी जाती है, परन्तु इसके बदले इसकी पहचान शिक्षण क्रियाओं का अधिगम क्रियाओं से समय और स्थान के संदर्भ में पृथक्करण द्वारा होती है। इस विचार में वे मूर से सहमत हैं, जो दूरस्थ शिक्षण और अधिगम तथा संस्पर्शी (समीपी) शिक्षण एवं अधिगम स्थितियों को विपरीत बताते हैं। इस अंतर के लिए कीगन का आधार परिणाम स्वरूप संप्रेषण की प्रकृति है। कीगन तर्क देते हैं कि दूरस्थ शिक्षा की विशेषता उद्योग के समान है जो शिक्षण संस्थान से विद्यार्थी के पृथक्करण पर जोर देती है, अतः शिक्षण और अधिगम क्रियाओं के पुनर्एकीकरण में दूरस्थ शिक्षा के लिए एक सैद्धांतिक औचित्य प्राप्त करना होगा। इस चरण में कीगन मूर और होलम्बर्ग दोनों से अलग हैं, जो पृथक्करण को स्वायत्त शिक्षार्थी के लिए लाभ और चुनौती, दोनों के रूप में देखने का विचार रखते हैं। कीगन कहते हैं (http://www.prof2000.pt/users/ajlopes/AF22_EAD/ teorias_ead/ Teorias_Amundsen_English.htm):

> ''शिक्षक और शिक्षार्थी की अन्तरआत्मीयता, जिसमें अधिगम शिक्षण द्वारा संपन्न होता है, को कृतिम रूप से पुनः सृजित करने की आवश्यकता है। एक दूर प्रणाली में स्थान और समय के साथ एक ऐसे क्षण के पुनर्रचना की जरूरत है जिसमें शिक्षण अधिगम परस्पर क्रिया द्वारा संपन्न होती है। अधिगम सामग्री को अधिगम के साथ जोड़ना इस प्रक्रिया के केंद्र में है'' (कीगन, 1986)।

कीगन तर्क करते हैं कि यह अधिगम संपर्क (जोड़) पारंपरिक शिक्षा में दिया गया है, क्योंकि शिक्षार्थी एक ऐसे वातावरण में है जो अधिगम के समर्थन हेतु सृजित है (अर्थात् विद्यालय और विश्वविद्यालय)। कीगन का विश्वास है कि दूरस्थ शिक्षार्थी के लिए शिक्षण और अधिगम के बीच संपर्क को अन्तर वैयक्तिक संप्रेषण द्वारा संपूरित किया जाना आवश्यक है जो विचारपूर्वक नियोजित हो। अन्तर वैयक्तिक संप्रेषण की थीम, होलम्बर्ग की थीम के

समान ही है, परंतु अधिक उचित रूप से सीधे शिक्षण या शिक्षार्थी पर केन्द्रित करती है। कीगन का केन्द्र अधिगम क्रिया पर है। होलम्बर्ग के समान ही कीगन भी मानते हैं कि मुद्रित अनुदेशनात्मक सामग्री के स्वरूपण में अन्तर वैयक्तिक संप्रेषण की कई विशेषताओं को सम्मिलित किया जा सकता है। अतः वे अपने अन्तर वैयक्तिक संप्रेषण को टेलीफोन, ट्यूटोरियल्स टेलीकांफ्रेंसेस या अन्य समान रूपों तक सीमित नहीं करते।

कीगन तर्क देते हैं कि दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम जितनी अधिक सफलतापूर्वक पुनर्ऐकीकरण का प्रबंध करते हैं, पाठ्यक्रम छोड़ने का दर उतनी ही कम होता है, अधिगम की गुणवत्ता अधिक उच्च और संस्थान का स्तर भी उतना ही ऊँचा होता है। इन परिकल्पनाओं के लिए कुछ समर्थन पाए गए हैं (अमुंडसन और बनोर्ड, 1989)। इस प्रकार जहां कीगन की दूरस्थ शिक्षा की अवधारणा में समय और स्थान के आधार पर शिक्षा की क्रियाओं का अधिगम क्रियाओं से पृथक्करण मुख्य केंद्र है, वहां वे विश्वास करते हैं कि सफल दूरस्थ शिक्षा में इन दो क्रियाओं के पुनर्ऐकीकरण की आवश्यकता है। सम्भवतः इसका जोर अधिगम अनुभवों को शिक्षार्थियों के लिए समतुल्य बनाना हो, जो शिक्षण और अधिगम के पुनर्मिलन को एक साथ होने वाली क्रियाओं के रूप में योगदान प्रदान करेंगे।

2.4.10 अधिगम अनुभवों की समानता का सिद्धांत

दूरस्थ शिक्षा में नई टेलीकौम्यूनिकेशन तकनीकों का प्रभाव काफी आगे बढ़ रहा है। वास्तविक समय टेलीविजन तंत्र जैसे आयोवा कौम्यूनिकेशंस नैटवर्क (साइमंसन और स्कौलोस्सर, 1995) शिक्षार्थियों और अनुदेशकों को देखने और दिखाई देने सुनने और सुनाई देने के अवसर प्रदान करते हैं, ठीक उसी प्रकार जैसे एक स्थानीय कक्षा-कक्ष में होता है। कीगन (1995) ने सुझाया कि अनुदेशक और विद्यार्थियों को विभिन्न स्थानों पर इलैक्ट्रॉनिक रूप से जोड़ने से आभासी कक्षा कक्ष का निर्माण होता है। वे आगे कहते हैं :

'आभासी शिक्षा का सैद्धांतिक विश्लेषण अभी तक साहित्य द्वारा संबोधित नहीं किया गया है : क्या आभासी शिक्षा (परस्पर संवादात्मक, टेलीविजन पर अनुदेश का सीधा प्रसारण), दूरस्थ शिक्षा का सब सैट हो या शैक्षिक प्रयास का एक अलग क्षेत्र माना जाय? (पृष्ठ 18)

दूरस्थ शिक्षण में शिक्षा अधिगम अनुभवों की समानता की अवधारणा पर निर्मित होनी चाहिए, दूरस्थ शिक्षार्थियों के अधिगम अनुभवों की जितनी अधिक समानता स्थानीय शिक्षार्थियों के साथ होगी, उतनी ही अधिक समानता सभी शिक्षार्थियों के शैक्षिक अनुभवों के प्रतिफलों में होगी, दूरस्थ शिक्षा का यह उपागम एक स्वरूप का समर्थन करता है कि अधिगम अनुभवों का एक संग्रह दूरस्थ और स्थानीय शिक्षार्थियों को प्रदान किया जाय, यद्यपि ये अनुभव प्रत्येक शिक्षार्थी के लिए भिन्न हो सकते हैं। दूरस्थ शिक्षा के अनुदेशनात्मक स्वरूप का उद्देश्य प्रत्येक विद्यार्थी के लिए उपयुक्त तथा समान अधिगम अनुभव प्रदान करना है।

इस सिद्धांत का विस्तार करते हुए साइमंसन (1995) कहते हैं कि किसी भी समूह के शिक्षार्थियों के लिए यह आवश्यक नहीं होना चाहिए कि वह विभिन्न निर्देशात्मक अधिगम अनुभवों की (संभवतः कम) क्षतिपूर्ति करे। विद्यार्थियों को वे अधिगम अनुभव मिलने चाहिए जो उनके वातावरण और स्थिति जिसमें वे रहते हैं के अनुरूप हों। इस प्रकार जो दूरस्थ शिक्षा प्रणालियों का विकास कर रहे हैं, वे सभी विद्यार्थियों के लिए समान अधिगम अनुभवों का प्रयास करें, भले ही वे संसाधनों और अनुदेशों, जिनकी उन्हें आवश्यकता है से कैसे भी जुड़े हों। समानता के सिद्धांत के कई मुख्य तत्व हैं : प्रमुख रूप से वे समानता की अवधारणाएं हैं, अधिगम अनुभव, उपयुक्त उपयोग, विद्यार्थी और प्रतिफल।

i) **समानता :** इस सैद्धांतिक उपागम में 'समानता' की अवधारणा केंद्र पर है। स्थानीय और दूरस्थ शिक्षार्थियों के पास मूल रूप से भिन्न वातावरण होते हैं, जिनमें वे सीखते हैं। दूरस्थ शिक्षक का यह उत्तरदायित्व है कि वह ऐसी अधिगम घटनाएं स्वरूपित करे जो शिक्षार्थियों को ऐसे अनुभव प्रदान करे जिनका सभी शिक्षार्थियों के लिए समान मूल्य हो। स्थानीय और दूरस्थ शिक्षार्थियों के अनुभवों का समान मूल्य होना चाहिए, यद्यपि ये अनुभव काफी भिन्न हो सकते हैं।

ii) **अधिगम अनुभव :** दूसरा महत्त्वपूर्ण बिंदु अधिगम अनुभव है। अधिगम अनुभव कोई चीज है जो विद्याार्थी के साथ अधिगम को बढ़ावा देने के लिए संपन्न होती हैं इसमें सम्मिलित है : जो कुछ भी अवलोकित अनुभव, सुना या किया जाय ऐसी संभावना है कि विभिन्न विद्यार्थी, भिन्न भिन्न स्थानों पर अलग-अलग समय पर सीख रहे हों, उन्हें भिन्न मिलजुले अनुभवों की आवश्यकता हो। कुछ को अधिक मात्रा में अवलोकन की आवश्यकता हो, जब कि कुछ अन्य को अधिक काम करने की आवश्यकता हो सकती है। अनुदेशनात्मक योजना का लक्ष्य प्रत्येक शिक्षार्थी के लिए अनुभवों के योग को समान बनाना है।

iii) **समुचित अनुप्रयोग :** अधिगम अनुभव, प्रत्येक व्यक्तिगत शिक्षार्थी की आवश्यकता के अनुकूल और अधिगम स्थिति उपलब्ध होनी चाहिए। अधिगम अनुभवों की उपलब्धता उपयुक्त और समय पर होनी चाहिए।

iv) **विद्यार्थी :** विद्यार्थियों को एक कोर्स में उनके नामांकन द्वारा निर्धारित करना चाहिए न कि उनके स्थान द्वारा। वे आवश्यक रूप से संस्थान आधारित शिक्षा चाहते हैं जो एक मान्यता प्राप्त और प्रमाणित संगठन द्वारा स्वीकृत हो।

v) **प्रतिफल :** एक अधिगम अनुभव के प्रतिफल वे हैं जो स्पष्ट और मापनीय होते हैं। ये महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हैं जो शिक्षार्थियों में कोर्स या इकाई में उनकी प्रतिभागिता के फलस्वरूप ज्ञानात्मक और प्रभावशाली ढंग से संपन्न होते हैं। प्रतिफलों में कम से कम दो वर्ग सम्मिलित हैं : जो अनुदेशक द्वारा निर्धारित होते हैं और वे जो शिक्षार्थी निर्धारित करते हैं। अनुदेशक निर्धारित प्रतिफल साधारणतया कोर्स लक्ष्य और उद्देश्य कहे जाते हैं और यह पहचान करते हैं कि अधिगम अनुभवों के बाद शिक्षार्थी क्या प्राप्त करने में समर्थ होने चाहिए, जो वे इसमें भाग लेने से पूर्व प्राप्त नहीं कर सके। शिक्षार्थी निर्धारित प्रतिफल, कम विशिष्ट अधिक व्यक्तिगत और शिक्षार्थी, सहभागिता के फलस्वरूप क्या प्राप्त करने की आशा करता है, से संबंधित है।

यदि शिक्षक, शिक्षार्थी और जनता सामान्य रूप से दूरस्थ अधिगम को पारंपरिक अधिगम के समान ही पाते हैं, तब दूरस्थ अधिगम मुख्य धारा बन जाती है। यदि जनता समाता का अनुभव नहीं करती, तो दूरस्थ शिक्षा, शिक्षा के क्षेत्र में परिधीय या गौण बनी रहेगी।

2.4.11 दूरस्थ शिक्षा सिद्धांतों का मूल्यांकन

दूरस्थ शिखा के सिद्धांतों पर लंबी चर्चा पर निष्कर्ष के रूप में हमें स्वीकार करना चाहिए कि हम व्यापक नहीं रहे हैं और हमने यह कभी चाहा भी नहीं तथापि विभिन्न विचारकों के विचारों को आपके लिए प्रस्तुत करने का उद्देश्य आपको विचारों के मुख्य बिंदुओं से परिचित कराना था जो आज दूरस्थ शिक्षा को दिशा प्रदान करने योग्य प्रतीत होते हैं। क्योंकि हमारा उद्देश्य सीमित है, हमने प्रत्येक सिद्धांत को उसके पक्ष और विपक्ष में तर्क द्वारा मूल्यांकन करने का प्रयास नहीं किया। न ही हमने उनकी एक दूसरे के साथ तुलना और/या विरोध किया।

यह एक मात्र घटना नहीं हो सकती कि यूरोपियन विचारक दूरस्थ शिक्षा के शिक्षण शास्त्रों के बारे में अधिक संबद्ध हैं, जब कि अमेरिकन दूरस्थ शिक्षा में प्रेरणा के पक्ष से अधिक संबद्ध है। सामाजिक सांस्कृतिक भिन्नता का इस प्रकार के विभिन्न झुकाओं में काफी योगदान है हम ऐसे अवसरों को यह देखने के लिए ढूंढेंगे कि किस प्रकार ये सिद्धांत या तो पहले से दृष्टिगोचर है और या इनका उपयोग दूरस्थ शिक्षा में आपके संदर्भ में हो सकता है।

एक ऐसा वातावरण जहां पर तकनीकी, समाज, अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र और अधिगम के उपागम सभी एक संक्रमण की स्थिति में हैं सुझाते हैं कि दूरस्थ शिक्षा के सिद्धांत परिभाषाएं और प्रथाएं निरंतर विवाद में रहेंगे। परिवर्तन की यह थीम दूर शिक्षकों और शोधकर्ताओं को चुनौती और प्रेरणा दोनों प्रदान करेंगे, क्योंकि वे विश्व में शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्रभावी तरीकों को समझने और विकसित करने के लिए प्रयासरत है।

2.5 सारांश

इस इकाई में हमने आपके लिए दूरस्थ शिक्षा की अवधारणा, उपयोग में आने वाले कुछ संबंधित, शब्द और आजीवन शिक्षा की अवधारणा एवं क्षेत्र का एक विहंगावलोकन प्रसतुत किया। इस विहंगावलोकन को प्रस्तुत करने का मूल उद्देश्य यह है कि आप उपरोक्त शब्दों और अवधारणाओं की न केवल व्याख्या करने और अंतर करने में सक्षम होंगे बलिक इन अवधारणाओं पर सामग्री को अधिक स्पष्टता से पढ़ने और समझने में भी योग्य बनेंगे। आगे हमने दूरस्थ शिक्षा के विभिन्न सिद्धांतों पर चर्चा की, ताकि आप उन बुनियादी आधारों को समझ सकें, जिन पर यह आधारित है। दूरस्थ शिक्षा के विभिन्न सिद्धांतों पर चर्चा के दौरान हमने दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में प्राथमिक विचारकों जैसे वेडमेयर, मूरे, डोहमेन, पीटर्स, होलम्बर्ग, बाथ, सेवार्ट, कीगन और अन्य के योगदान को भी प्रकाशित किया। इस चर्चा में हमने दूरस्थ शिक्षा की विकासवादी विशेषता पर वांछित फोकस रखा और स्वतंत्र अध्ययन से आरम्भ करके शिक्षण और अधिगम क्रियाओं के पुनर्एकीकरण तक के प्रासंगिक सिद्धांतों पर भी बल दिया। दूरस्थ शिक्षा का सैद्धांतिक स्तर और इस पर आगे सिद्धांत बनाने की आवश्यकता और विस्तार की व्यापक छवि आपके सम्मुख प्रस्तुत करने के विचार से हमने सिद्धांतों में विविधता को प्रकाशित किया।

2.6 'अपनी प्रगति जांचें' प्रश्नों के उत्तर

1) i) होलम्बर्ग।

   ii) स्वतंत्र अध्ययन, शिक्षार्थी स्वायत्तता और स्व अध्ययन।

2) पत्राचार शिक्षा में संगठित निर्देश और शिक्षा सम्मिलित हैं जो मुख्य रूप से शिक्षार्थियों के पास डाक द्वारा भेजी गई लिखित या मुद्रित सामग्री द्वारा संपन्न होती है। इसमें आमने सामने संपर्क का प्रावधान हो सकता है और नहीं भी। दूरस्थ शिक्षा में मल्टीमीडिया, प्रिंट, श्रृव्य, दृश्य, टेलीविजन, टेलीफोन, कंप्यूटर्स आदि का उपयोग शिक्षण अधिगम उपागम के रूप में होता है जिसमें आमने सामने संपर्क भी सम्मिलित है।

   मुक्त शिक्षा एक दर्शन है जो प्रवेश योग्यता में छूट, कोर्स के चयन में लचीलापन, शिक्षार्थियों की अधिगम गति और सुविधा के अनुसार सीखना, निर्देश के लिए

मल्टीमीडिया का उपयोग और इसी प्रकार अन्य के संदर्भ में मुक्तता का समर्थन करता है। दूरस्थ शिक्षा, शिक्षा की एक विधि है जो मुक्त हो सकता है और नहीं भी।

3) आजीवन शिक्षा एक विस्तृत अवधारणा है जो जीवन के सभी क्षेत्रों में संलग्न सभी आयु और अवस्था के लोगों की शिक्षा का लक्ष्य रखती है। सारांश में इसका लक्ष्य अधिगम शील समाज की ओर बढ़ना है : एक ऐसा समाज जिसमें प्रत्येक व्यक्ति जीवन भर अधिगम क्रियाकलापों में संलग्न रहता है। सभी अवधारणाएं और शब्द : औपचारिक, अनौपचारिक निरौपचारिक, पत्राचार, दूरस्थ और मुक्त शिक्षा आदि, आजीवन शिक्षा के अंग हैं।

आजीवन शिक्षा के कार्यान्वयन में शिक्षा की मुख्य अवधारणा में मूल परिवर्तन और शिक्षा प्रणाली में आमूल परिवर्तन की आवश्यकता है। शिक्षार्थियों और उनकी अधिगम प्रक्रियाओं, शिक्षकों एवं अनुदेशनात्मक विधियों, शैक्षिक संस्थानों और आजीवन शिक्षा के मूल्यांकन पर इसके व्यापक प्रभाव हैं।

4) एक स्वतंत्र अध्ययन में मुख्य रूप से शिक्षार्थी संस्कृति और शिक्षक संस्कृति को परिवर्तित करने की क्षमता होती है इसके निम्नलिखित दो कारण हैं :

i) एक स्वतंत्र अध्ययन प्रणाली में शिक्षार्थी को एक कार्यक्रम आरम्भ करने की स्वतंत्रता होती है, अपने अधिगम क्रियाकलापों की अपनी स्वतंत्रता होती है, अपने अधिगम क्रियाकलापों को अपनी स्वयं की गति से आगे बढ़ाने और जब चाहे रोकने की भी अर्थात् यह शिक्षार्थी ही है जो अपनी प्रगति और असफलता के लिए उत्तरदायी है। इसके विपरीत एक पारंपरिक शिक्षा प्रणाली में शिक्षार्थी कई चरों द्वारा नियंत्रित होता है– शिक्षक कक्षा-कक्ष की स्थिति, परीक्षा-पैटर्न, समय सारिणी आदि।

ii) एक स्वतंत्र अध्ययन प्रणाली में अधिगम को व्यक्तिगत आवश्यकताओं के प्रति अधिक से अधिक प्रासंगिक बनाया जा सकता हैं और यह अधिगम क्रियाकलाप ही है जो शिक्षण प्रयास से अधिक महत्त्वपूर्ण बन जाता है। इसलिए शिक्षक की भूमिका शिक्षण/अधिगम प्रक्रिया में पूर्णतः भिन्न है।

5) जहाँ तक 'कार चलाना' सीखने का संबंध है, उद्देश्यों का निर्धारण शिक्षार्थी द्वारा स्वयं किया जाता है; न कि किसी बाह्य संस्था द्वारा (आप इसकी तुलना किसी भी पारंपरिक शिक्षण कार्यक्रम से कर सकते हैं, जिसमें अधिगम उद्देश्यों का निर्धारण बाह्य संस्था द्वारा किया जाता है– सामग्री डिजाइनर, शिक्षक आदि) जबकि विधियाँ, सामग्री और मूल्यांकन का निर्धारण अनुदेशक द्वारा किया जाता है। इस प्रकार शिक्षार्थी स्वायत्त (A) है, जहाँ तक उसके उद्देश्यों का संबंध है, परंतु जहां तक अधिगम प्रविधियों और अंतिम मूल्यांकन का संबंध है, शिक्षार्थी गैर स्वायत्त (N) है। अतः हम कार्यक्रम को 'ANN' के रूप में अंकित करते हैं।

6) एक मुक्त विश्वविद्यालय और एक उद्योग में सामान्य चार विशेषताएं हैं :

अ) श्रम का विभाजन

ब) बड़े पैमाने में उत्पादन

स) व्यवस्थीकरण

द) खाका (ले आउट)

7) वार्तालाप 'निर्देशित' और 'शिक्षात्मक' होता है, क्योंकि कोर्स विकासकर्ता दूरस्थ शिक्षार्थी का निर्देशन (मार्गदर्शन) करते हैं- मुख्य रूप से सरलता से पठनीय और तर्कसंगत बोलचाल की भाषा-शैली के माध्यम से शैक्षिक और शिक्षण शास्त्रीय मुद्दों पर प्रस्तुतीकरण।

8) एक दूरस्थ शिक्षक अपनी टिप्पणियों का एक उपकरण के रूप में उपयोग द्वारा द्विमार्गीय संप्रेषण को प्रभावित करने में सहायता करता है। अर्थात् उत्तर पत्रक के सबसे ऊपर अंक या ग्रेड को एक संकेतक के रूप में अंकित करना कि उसने उन्हें देख लिया है; के प्रथागत तरीके को अपनाने के स्थान पर एक दूरस्थ ट्यूटर शिक्षार्थियों के निष्पादन में सर्वोत्कृष्ट सुधार लाने के लिए सहायता हेतु रचनात्मक समीक्षा और प्रोत्साहित करने वाली टिपणियां लिखती/ता है।

9) शिक्षार्थी की अंनत विविध समस्याओं के कारण हैं :

   अ) तुरंत प्रतिपुष्टि का अभाव; और

   ब) सहपाठी समूह की परस्पर क्रिया का अभाव।

सेवार्ट सुझाते हैं कि समस्याओं का समाधान हो सकता है, यदि 'मानव सहायता' दूरस्थ शिक्षा प्रणाली का एक महत्त्वपूर्ण अंग बन जाय।

2.7 संदर्भ

Amundsen, C., and Bernard, R. (1989). Institutional support for peer contact in distance education: an empirical investigation. *Distance Education*, 10(1):7-27.

Baath, J. A. (1980). *Postal Two-way Communication in Correspondence Education*, Lund, Sweden: Gleerup

Coombs, P. H., Prosser, R. C., and Ahmed M. (1973). *New Paths to Learning for Rural Children and Youth*, International Council for Educational Development (ICED), New York.

Cropley, A. J. (1982). "Some Psychological Reflections on Lifelong Education", in Dave, R. H. (ed.). (1982), Cited below, pp.98-100, 196-201.

Dave, R. H. (1973). *Lifelong Education and School Curriculum*: *Interim Findings of An Exploratory Study on School Curriculum, Structures and Teacher Education in the Perspective of Lifelong Education*, UNESCO Institute of Education, Hamburg.

Dave, R. H. (ed.) (1982). *Foundations of Lifelong Education.* UNESCO Institute of Education and Pergamon Press, Oxford, p.34.

Dixon. (1987). http://cdn.intechopen.com/pdfs-wm/39188.pdf — Retrieved on 09-10-2016.

Dohmen, G. (1977). *Das Fernstudium, Ein neves pedagogisches Forschungs - und Arbeitifeld Tubingen.* DIFF.

Escotet, M. (1983). Adverse Factors in the Development of an Open University in Latin America. *Programmed Learning and Educational Technology,* Vol.17, No.4, pp.262-70.

Evans, T. D., and Nation, D. E. (2003). "Globalisation and the Reinvention of Distance Education", in M.G. Moore and W. Anderson (eds). *The Handbook of Distance Education*, Lawrence Erlbaum and Associates, Mahwah, NJ, pp.767-782

Faure. E., et.al. (1972). *Learning to be*: *The Education of the World Today and Tomorrow,* UNESCO, Paris.

Garrison, D. R. (1989). *Understanding Distance Education: A framework for the future,* Routledge, London.

Garrison, D. R., and Anderson, T. (1999). Avoiding the Industrialization of Research Universities: Big and little distance education. The *American Journal of Distance Education, 13*(2), 48–63.

Garrison, D. R., and Baynton, M. (1987). Beyond independence in distance education: The concept of control. *The American Journal of Distance Education, 1*(3), 3 – 15.

Garrison, R. (2000). Theoretical Challenges for Distance Education in the 21st Century: A shift from structural to transactional issues. *The International Review of Research in Open and Distributed Learning*, Vol 1, No 1.

Hartnett, R. I. (1972). "Non-traditional Study: An Overview", in S. B. Gould and K. P. Cross (eds), *Explorations in Non-traditional Study,* Jossy-Bass, San Francisco.

Holmberg, B. (1981). *Status and Trends of Distance Education,* Kogan Page, London.

http://cdn.intechopen.com/pdfs-wm/39188.pdf — Retrieved on 09-10-2016.

http://newlearningonline.com/new-learning/chapter-2/ivan-illich-on-deschooling — Retrieved on 22-09-2016.

http://www.aect.org/edtech/ed1/13/13-03.html — Retrieved on 27-9-2016.

http://www.c3l.uni-oldenburg.de/cde/found/simons99.htm — Retrieved on 28-9-2016.

http://www.university.careers360.com/articles/list-of-approved-distance-education-universities-in-india

http://www.uwex.edu/disted/conference/wedemeyer/aboutcw.cfm — Retrieved on 01-09-2016.

IGNOU. (1995). *ES-311 Growth and Philosophy of Distance Education: Block 2 Philosophical Foundations.* Staff Training and Research Institute of Distance Education, IGNOU, New Delhi.

Illich, Ivan. (1973). *Deschooling Society.* Penguin, Harmondsworth, UK.. (http://newlearningonline.com/new-learning/chapter-2/ivan-illich-on-deschooling — Retrieved on 22-09-2016).

Jarvis, P. (1990). *Adult and Continuing Education: Theory and Practice.* Routledge, London.

Keegan, D. (1986). *The Foundations of Distance Education,* Croom Helm,

London.

Keegan, D. (1995). *Distance education technology for the new millennium: Compressed video teaching.* ZIFF (cited at http://www.c3l.uni-oldenburg.de/cde/found/simons99.htm).

Knapper, C. K., and Cropley, A. J. (1985). *Lifelong Learning and Higher Education,* Croom Helm, London.

Legge, D. (1982). *The Education of Adults in Britain,* The Open University Press, Milton Keynes, England.

Moore, M. G. (1972). Learning Autonomy: The Second Dimension of Independent Learning, *Convergence,* pp.576-87.

Moore, M. G. (1973). Towards a Theory of Independent Learning and Teaching. *Journal of Higher Education,* 4(4), pp.661-679.

Moore, M. (1997). "Theory of transactional distance", In Keegan, D. (ed). *Theoretical Principles of Distance Education*, Routledge, pp.22-38. (See http://www.c3l.uni-oldenburg.de/cde/found/ moore93.pdf — Retrieved on 22-09-2016).

Morris (2011) cited at http://cdn.intechopen.com/pdfs-wm/39188.pdf — Retrieved on 09-10-2016.

Perraton, H. (1988). "A theory for distance education", In D. Sewart, D. Keegan, and B. Holmberg (ed), *Distance education: International perspectives*, pp.34-45. New York: Routledge.

Peters, O. (1973). *Die didaktische ,'Strukture des Fernuntenrrichts Unterschungen Zu einer industrialisierten forin des lehrens and lernens. Weinheim,* Beltz.

Peters, O. (1988). "Distance teaching and industrial production: A comparative interpretation in outline", in D. Sewart, D. Keegan, and B. Holmberg. (ed). *Distance education: International perspectives,* Routledge, New York.

Radcliffe, D. J., and Colletta, N. J. (1989). *"Non-formal Education",* in C. J. Titmus (ed.) (1989) cited below.

Rowntree. (1992). Cited at http://cdn.intechopen.com/pdfs-wm/39188.pdf — Retrieved on 09-10-2016

Simonson, M. (1995). Does anyone really want to learn at a distance? *Tech Trends,* 40 (5): 12.

Simonson, M., and C. Schlosser. (1995). More than fiber: Distance education in Iowa. *Tech Trends,* 40 (3): 13-15.

Simonson, M., Schlosser, C., and Hanson, D. (1999). Theory and Distance Education: A New Discussion, *The American Journal of Distance Education, Vol.13, No.1.* (See http://www.c3l.uni-oldenburg.de/cde/found/simons99.htm — Retrieved on 28-9-2016).

Titmus, C. J. (ed.). (1989). *Lifelong Education for Adults: An International Handbook,* Pergamon Press, Oxford.

UNESCO. (1976). *Draft Recommendations on the Development of Adult Education,* UNESCO, Paris.

UNESCO. (1996). *Learning: The treasure within.* Report to UNESCO of the International Commission on Education for the Twenty-first Century (Chairman: Jacques Delors). UNESCO publishing, Paris.

Wedemeyer, C. A. (1977). "Independent Study", in Knowles, A.S. (eds.). *The International Encyclopedia of Higher Education,* North-Eastem University, Boston, pp.2114-2132.

2.8 इकाई अंत अभ्यास

अपने लाभ के लिए आप इन प्रश्नों के संक्षिप्त या लम्बे उत्तर लिख सकते हैं। ये आपको आपकी परीक्षा की तैयारी में सहायक हो सकते हैं।

1) दूरस्थ शिक्षा को परिभाषित कीजिए। इसकी विकासवादी प्रवृत्ति का पता लगाइए, यदि कोई है- विभिन्न दूरस्थ शिक्षाविदों द्वारा प्रदत्त परिभाषाओं में (100 शब्दों में)।

2) दूरस्थ शिक्षा से संबंधित विभिन्न शब्दों (टर्मस) को सूचीबद्ध कीजिए। इन शब्दों के बीच में, और दूरस्थ शिक्षा में भी समानताओं और असमानताओं की व्याख्या कीजिए (1000 शब्द)

3) दूरस्थ शिक्षा के विभिन्न सिद्धांतों की सूची बनाइए। दूरस्थ शिक्षा के अभ्यास की व्याख्या करने में इनके सापेक्षिक महत्त्व पर प्रकाश डालिए (1000 शब्द)

मुक्त चिंतन प्रश्न

1) क्या आप समझते हैं कि इस इकाई में प्रस्तुत सिद्धांतों में एक विकासवादी प्रवृत्ति है? उनके आवश्यक तत्त्वों के संदर्भ में अपने उत्तर की पुष्टि कीजिए।

क्रियाकलाप

भाग 2.3 को दोबारा इस विचार से पढ़े :

i) विभिन्न अवधारणाओं के बीच मुख्य समानताएं और विभिन्नताएं पहचानिए और लिखिए।

ii) कोई विशिष्ट अवधारणा (एं)/शब्द (टर्म्स) जिन्हें आप स्पष्ट रूप से न समझ पाए हों, पहचानिए और नोट कीजिए।

इन बिंदुओं पर अपने सहकर्मी, शैक्षिक परामर्शदाता और अन्य संसाधन व्यक्तियों के साथ, अपने कोर्स अध्ययन के दौरान अध्ययन केन्द्र पर प्राप्त अवसरों में चर्चा कीजिए ताकि आप इस पर अपनी समझ को बढ़ा सकें।

इकाई 3 भारतीय अनुभव

संरचना

3.0 प्रस्तावना

3.1 उद्देश्य

3.2 मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम द्वारा शिक्षा

- 3.2.1 शिक्षा का लोकतांत्रिकरण बनाम दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम
- 3.2.2 मुक्त विश्वविद्यालय व्यवस्था
- 3.2.3 मुक्त विद्यालय
- 3.2.4 अध्यापक शिक्षा

3.3 समस्याएँ एवं चुनौतियाँ

- 3.3.1 द्विपद्धतीय विश्वविद्यालय
- 3.2.2 एकल पद्धतीय विश्वविद्यालय

3.4 सारांश

3.5 ''अपनी प्रगति जाँचें'' प्रश्नों के उत्तर

3.6 संदर्भ ग्रंथ

3.7 इकाई अंत अभ्यास

3.0 प्रस्तावना

जैसा कि इकाई-1 में हम चर्चा कर चुके हैं कि भारत में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पद्धति विश्वविद्यालय स्तर पर आरंभ होकर विद्यालय स्तर की तरफ बढ़ी जो स्पष्टतः अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के इतिहास में सामान्य विशेषता रही है। परंतु पत्राचार पाठ्यक्रमों के माध्यम से दूरस्थ शिक्षा की शुरूआत के भारत में दोहरे उद्देश्य थे। प्रथम, उच्च शिक्षा के इच्छुकों के दबाव समूह को पत्राचार शिक्षा पाठ्यक्रमों की तरफ भेजना जो कि कम खर्चीले हैं; तथा दूसरा, समता एवं समानता के बढ़े हुए अवसरों द्वारा उच्च शिक्षा का लोकतांत्रिकरण करना। हम इन सभी पहलुओं के बारे में गहन चर्चा कर चुके हैं तथा इस संदर्भ में दी गई विभिन्न शैक्षिक संगठनों तथा नीतिगत दस्तावेजों में अनुशंसाओं एवं वक्तव्यों के बारे में उचित विवरण दे चुके हैं जो इस संबंध में समुचित आधार प्रदान किए हैं।

एक वैश्विक तथ्य यह है कि द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद शिक्षा के लोकतांत्रिकरण हेतु किए गए प्रयासों के कारण, दूरस्थ शिक्षा का प्रसार विश्व के सभी देशों में हुआ तथा यह तंत्र एक शताब्दी में विभिन्न अवस्थाओं से गुजरा। इसकी अवधारणा एवं प्रकार्य, सामान्यतः संप्रेषण तकनीकी तथा मुख्यतः शिक्षा तकनीकी के विकास से बहुत अधिक संबंधित रहे हैं।

हालांकि हम इकाई-4 में वैश्विक अभ्यासों के बारे में गहन चर्चा करेंगे। इस इकाई में आपको दूरस्थ शिक्षा के भारतीय अनुभवों के बारे में वर्णन प्रस्तुत किया जाएगा। इस संदर्भ में, इस इकाई को आगे पढ़ने से पहले हम आपको यह सुझाव देना चाहेंगे कि आप इकाई-1 के अनुभाग 1.3 में दिए गए नीति परिप्रेक्ष्यों के बारे में पुनः जानकारी प्राप्त कर लें।

3.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आपः

- मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के भारतीय अनुभव को समझ सकेंगे;
- मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के राष्ट्रीय स्तर पर परिदृश्य का वर्णन कर सकेंगे;
- भारत में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के मुद्दों, समस्याओं तथा चुनौतियों का विश्लेषण कर सकेंगे।

3.2 मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम द्वारा शिक्षा

हमें यह ज्ञात है कि भारतीय संविधान ने लोकतंत्र को सामाजिक व्यवस्था के महत्त्वपूर्ण अंश के रूप में अपनाया है। शिक्षा के लोकतांत्रिकरण द्वारा ही समाज में लोकतांत्रिक व्यवस्था अस्तित्व में रह सकती है। सैद्धांतिक तौर पर यह बल दिया गया था कि उच्च शिक्षा के इच्छुकों समेत सभी को समान अवसर प्रदान करने हेतु राष्ट्र में शिक्षा को लोकतांत्रिक मूल्यों को अपनाने चाहिए। सरकारी स्तर पर परंपरागत शिक्षा पद्धति के प्रसार में आने वाली कठिनाइयों के कारण तथा सभी स्तरों पर पारंपरिक शिक्षा की कमियों के कारण सामान्य शिक्षा एवं मुख्यतः उच्च शिक्षा का लोकतांत्रिकरण करना आज तक अधूरा सपना ही रह गया है।

3.2.1 शिक्षा का लोकतांत्रिकरण बनाम दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम

स्वतंत्रता के पश्चात उच्च शिक्षा की मांग तथा इसके परिणामस्वरूप शैक्षिक सुविधाओं में बढ़ोतरी ने योजना आयोग को भारत में शिक्षा के लोकतांत्रिकरण के लिए विभिन्न रणनीतियों के सृजन करने के लिए बाध्य किया। इसलिए दूरस्थ शिक्षा की दिशा में भारत सरकार की नीति, साठ के दशक के आरंभ से ही अनुकूल रही है। भारत में दूरस्थ शिक्षा की जड़ें, सभी स्तरों पर शिक्षा के लोकतांत्रिकरण के लिए शिक्षा के अन्य विकल्पों को ढूंढने एवं बढ़ाने के लिए किए गए राष्ट्रीय प्रयासों में आ रही विभिन्न समस्याओं, माँग एवं चुनौतियों में देखी जा सकती है। इकाई-1 के भाग 1.3 में भारत सरकार की दूरस्थ शिक्षा के प्रति अनुकूल नीतियों एवं निर्देशों के बारे में आपको अच्छे ढंग से समझाया जा चुका है। इकाई-1 के भाग 1.5 में दूरस्थ शिक्षा द्वारा शिक्षा के लोकतांत्रिकरण के बारे में चर्चा कर चुके हैं। दूसरे शब्दों में, शिक्षा के सभी स्तरों पर, शिक्षा के लोकतांत्रिकरण में दूरस्थ शिक्षा की भूमिका एवं महत्त्व के बारे में इसमें समझाया जा चुका है। इसके आगे इकाई-1 में उप-अनुभाग 1.2.2 में हमने आपको भारत में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के बारे में एक परिदृष्टि प्रस्तुत किया था।

इसलिए, अग्रिम अनुभागों में, हम मुक्त विश्वविद्यालयी व्यवस्था, मुक्त विद्यालय तथा मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा द्वारा अध्यापक शिक्षा के बारे में चर्चा करेंगे।

3.2.2 मुक्त विश्वविद्यालय व्यवस्था

भारत में मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना को ब्रिटेन में 1969 में आरंभ हुए मुक्त विश्वविद्यालय से जोड़कर देखा जा सकता है जो कि महान सफलता सिद्ध हुई थी। आप जानते हैं (इकाई-1 देखें) कि अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा वर्ष (1970) के दौरान शिक्षा एवं सामाजिक कल्याण मंत्रालय ने सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा यूनेस्को के साथ भारतीय राष्ट्रीय आयोग के सहयोग द्वारा दिसंबर 1970 में ''मुक्त विश्वविद्यालय'' पर

एक सेमिनार आयोजित किया था। इस सेमिनार में प्रायोगिक स्तर पर भारत में मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना की अनुशंसा की गई थी। इसके लिए भारत सरकार ने मुक्त विश्वविद्यालय के लिए आठ सदस्यों का कार्यसमूह गठित किया था जिसे जी. पार्थसारथी की अध्यक्षता में मुक्त विश्वविद्यालय के गठन के बारे में अपने विचार एवं अनुसंशाएं प्रस्तुत करनी थी। कार्यसमूह द्वारा ब्रिटेन के मुक्त विश्वविद्यालय पद्धति का गहन अध्ययन करने के पश्चात 1974 में भारत में मुक्त विश्वविद्यालय को स्थापित करने की संभावनाओं के बारे में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की थी जिसमें यह अनुशंसा की गई थी कि,

> "भारत सरकार को, जितना जल्दी संभव हो सके, संसद द्वारा पारित कानून के माध्यम से एक मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना करनी चाहिए। इस विश्वविद्यालय का कार्यक्षेत्र संपूर्ण देश में फैला होना चाहिए ताकि अब यह पूर्ण रूप से विकसित हो जाए तब किसी भी विद्यार्थी, चाहे वह देश के किसी भी सुदूर क्षेत्र में हो, तक इस विश्वविद्यालय की शिक्षा एवं डिग्री की पहुँच हो।"

तदोपरांत केंद्र सरकार द्वारा राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए मसौदा तैयार किया गया, परंतु इस प्रक्रिया में विलंब हो गया। इसी बीच आंध्रप्रदेश सरकार के प्रयासों से राज्य मुक्त विश्वविद्यालय (आंध्र प्रदेश मुक्त विश्वविद्यालय) की स्थापना 1982 में हुई जिसे बादे में डॉ. भीमराव अंबेडकर मुक्त विश्वविद्यालय (BRAOU) का नाम दिया गया।

केन्द्र सरकार के पुनः प्रयासों से, स्वर्गीय प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के नाम पर एक राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय 20 सितम्बर, 1985 को अस्तित्व में लाया गया। इग्नू अधिनियम (एक्ट), 1985 की प्रस्तावना में इग्नू के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित थेः

- राष्ट्र की शिक्षा व्यवस्था में मुक्त विश्वविद्यालय तथा दूरस्थ शिक्षा पद्धति को शुरू करना एवं बढ़ावा देना।
- ऐसे मुक्त विश्वविद्यालय पद्धति में विभिन्न मानकों को तय करना एवं समन्वय स्थापित करना।

वर्ष 1991 में, इग्नू ने दूरस्थ शिक्षा परिषद (DEC) की स्थापना की ताकि भारत में मुक्त विश्वविद्यालय तथा दूरस्थ शिक्षा पद्धति के संबंध में मानकों को तय किया जा सके एवं इस संदर्भ में गुणवत्ता को बढ़ावा देते हुए समन्वय स्थापित किया जा सके।

वर्तमान स्थिति

BRAOU तथा IGNOU की सफलता से प्रेरित होकर, अन्य राज्यों जैसे राजस्थान, बिहार, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, गुजरात, कर्नाटक और अन्य राज्यों ने मुक्त विश्वविद्यालयों की स्थापना की। अतः 1982 से लेकर अब तक, हमारे देश में कुल 15 मुक्त विश्वविद्यालय हैं जो पिछले 35 वर्षों में स्थापित हुए हैं। यह विश्वविद्यालय निम्नलिखित हैंः

राष्ट्रीय स्तर : इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू), नई दिल्ली (1985)

राज्य स्तरः

1) डॉ. बी. आर. अंबेडकर मुक्त विश्वविद्यालय (BRAOU), हैदराबाद (आ.प्र.), (1982)।
2) नालंदा मुक्त विश्वविद्यालय, पटना, बिहार (1982)।
3) कोटा मुक्त विश्वविद्यालय, कोटा, राजस्थान (1987)।
4) यशवंत राव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विश्वविद्यालय, नासिक, महाराष्ट्र (1989)।

5) मध्य प्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय, भोपाल, म.प्र. (1992)।

6) डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर मुक्त विश्वविद्यालय, अहमदाबाद, गुजरात (1994)।

7) कर्नाटक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय, मैसूर (1996)।

8) नेताजी सुभाष चंद्र बोस मुक्त विश्वविद्यालय, कलकत्ता, पश्चिम बंगाल (1997)।

9) उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश (1999)।

10) तमिलनाडु मुक्त विश्वविद्यालय, चेन्नई, तमिलनाडु (2002)।

11) पं. सुंदर लाल शर्मा मुक्त विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़ (2004)।

12) उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी (नैनीताल), (2005)।

13) कृष्ण कांत हांडिक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय, गुवाहाटी, असम (2005)।

14) ओडिशा राज्य मुक्त विश्वविद्यालय, संबलपुर, ओडिशा (2015)।

भारत में मुक्त शिक्षा पद्धति पर इग्नू का गहरा प्रभाव है। मुक्त विश्वविद्यालय पद्धति का वर्तमान में दूरस्थ शिक्षा में अद्वितीय स्थान है जो कि इसके स्वायत्त प्रकृति के कारण है। मुक्त विश्वविद्यालय की अनुदेशात्मक व्यवस्था में स्व-अनुदेशी बहु-माध्यम पैकेज, गहन विद्यार्थी सहायक सेवाओं के लिए सुविधाएं, वीडियो फिल्म, शैक्षिक दूरदर्शन, टेलीकॉफ्रेंसिंग, वीडियों कॉफ्रेंसिंग, कंप्यूटर नेटवर्किंग इत्यादि आधुनिक सूचना एवं संप्रेषण प्रौद्योगिकी का व्यापक उपयोग सम्मिलित हैं।

इग्नू के राष्ट्रीय स्तर का विश्वविद्यालय होने के कारण, इसका क्षेत्रीय केंद्रों एवं अध्ययन केंद्रों का सबसे बड़ा जाल है जो कि इसके विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रमों में नामांकित विद्यार्थियों को प्रभावी ढंग से सहायक सेवाएं प्रदान करने के लिए स्थापित किए गए हैं। उदाहरण के लिए 2011 तक जब इग्नू अपनी स्थापना की व रजत जयंती मना रही थी, तब इसका प्रारूप निम्न ढंग से था (तालिका 3.1 देखें)

तालिका 3.1: इग्नू एक नजर में

पहलू/पक्ष	संख्या
विद्यापीठ	21
प्रभाग/खंड	12
पीठ	5
केन्द्र	8
संस्थान	5
क्षेत्रीय केंद्र	67
अध्यापक एवं एकेडमिक स्टाफ	538
प्रशासनिक स्टाफ	1,303
विद्यार्थी सहायता सेवा केंद्र	3,252
पूर्वोत्तर शैक्षिक विकास परियोजना (क्षेत्रीय केंद्र)	9
विद्यार्थी सहायता केंद्र	552

विदेशी विद्यार्थी सहायता सेवा केंद्र	70
विदेशी विद्यार्थी नामांकन	43,500
शैक्षणिक परामर्शदाता	48,000
पी.एच.डी. कार्यक्रम	49
शैक्षणिक कार्यक्रम	511
ऑनलाइन कार्यक्रम	27
सामुदायिक महाविद्यालय	258
परिसर आधारित कार्यक्रम	26
ऑनलाइन अध्ययन सामग्री (मुक्त स्रोत)	95% (कुल)
एक्टिव रजिस्टर्ड यूजर रिपॉजिटरी (OER)	60,000
2011 में पंजीकृत विद्यार्थी	8.6 लाख
कुल नामांकित विद्यार्थी	2.9 मिलियन
2011 में प्रदत्त डिग्री, डिप्लोमा एवं सर्टिफिकेट	1.5 मिलियन
कोर्स सामग्री की संख्या	1,62,99,063
दृश्य-श्रव्य कार्यक्रम	3,718
2011-12 में सत्रांत परीक्षा में उपस्थित विद्यार्थी	28,73,147
201-12 में डिग्री प्राप्त करने वाले विद्यार्थी	14,80,393
मोबाइल एस.एम.एस. अलर्ट की सुविधा	संपूर्ण भारत
कैदियों के लिए निःशुल्क शिक्षा	4,110 (भारतीय जेलों में)

स्रोतः 1) इग्नू प्रोफाइल 2011, इग्नू, नई दिल्ली, अगस्त 2011

2) 24वां दीक्षांत समारोहः उपकुलपति रिपोर्ट, इग्नू, सितंबर, 2011

अन्य मुक्त विश्वविद्यालयों (राज्य मुक्त विश्वविद्यालयों) ने भी अपने क्षेत्रीय केंद्रों, अध्ययन केंद्रों इत्यादि को अपने-अपने राज्यों या अपने क्षेत्राधिकार में स्थापित किये हैं। अतः भारत में मुक्त विश्वविद्यालयों ने क्षेत्रीय केंद्रों एवं अध्ययन केंद्रों का व्यापक तंत्र स्थापित किये हैं।

इसके साथ ही, इन विश्वविद्यालयों ने इग्नू की दूरस्थ शिक्षा परिषद् (DEC, 2012 से यूजीसी के तहत वर्तमान दूरस्थ शिक्षा ब्यूरो के पूर्वर्ती) के अंतर्गत सहायता संघ उपागम को अपनाया है ताकि अध्ययन सामग्री, इलैक्ट्रॉनिक मीडिया आधारित सहयोग, टेलीकांफ्रेसिंग तथा विश्वविद्यालय स्तर पर अन्य सुविधाओं/संसाधनों को साझा किया जा सके। दुर्भाग्य से सहायता संघ उपागम पूर्ण आकार नहीं ले पाया तथा इसकी जड़ें मजबूत नहीं हो पाई ताकि दूरस्थ शिक्षा को अधिक मुक्त एवं लचीला बनाया जा सके जिससे इसकी पहुँच अधिक से अधिक विद्यार्थियों तक बेहतर संभव तरीकों से हो सके।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

1) भारत में कितने मुक्त विश्वविद्यालय हैं? उनके नाम लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3.2.3 मुक्त विद्यालय

जैसा कि इकाई-1 (भाग 1.2.2) में कहा जा चुका है कि विद्यालय स्तर पर दूरस्थ शिक्षा की शुरूआत, विश्वविद्यालय स्तर पर इसकी शुरूआत के बाद हुई। विद्यालय स्तर पर दूरस्थ शिक्षा को आरंभ करने का विचार 1964 में माध्यमिक शिक्षा बोर्डों के कांफ्रेंस की सिफारिशों के आधार पर आया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1968 ने इस विचार को और अधिक बढ़ावा दिया। स्कूल स्तर पर दूरस्थ शिक्षा को शुरू करने का मुख्य उद्देश्य विद्यालय छोड़ने वाले विद्यार्थियों/बाहरी विद्यार्थियों को माध्यमिक/उच्च माध्यमिक स्तर की परीक्षा में भाग लेने के अवसर प्रदान करना था। 1970 के आरंभ तक विभिन्न राज्यों के माध्यमिक शिक्षा बोर्डों ने पत्राचार के माध्यम से दिल्ली, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, ओडिशा तथा मध्य प्रदेश में कोर्स आरंभ कर दिए थे।

एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा अगस्त 1974 में मुक्त विद्यालय स्थापित करने की संभावनाओं को तलाशने के लिए एक कार्यसमूह गठित किया गया। नवंबर 1978 में CBSE और NCERT ने मुक्त विद्यालय पर अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किया। इन संस्थाओं की अनुशंसाओं के आधार पर CBSE ने जुलाई 1979 में मुक्त विद्यालय की स्थापना की। 1989 में मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय की स्थापना की तथा मुक्त विद्यालय को उसमें समाहित कर दिया गया। साथ ही 1991 में आंध्र प्रदेश मुक्त विद्यालय की स्थापना हुई। 1995-96 में किए गए प्रयासों के कारण उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश तथा राजस्थान में मुक्त विद्यालयों की स्थापना हुई। बाद में राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय द्वारा भारत में राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय संघ National Consortium of Open School in India – NCOS) को भी स्थापित किया गया।

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय का मुख्य उद्देश्य, सामान्य शिक्षा के कोर्स एवं कार्यक्रम, जीवन संवर्धन मॉड्यूल तथा व्यावसायिक कोर्स के माध्यम से इच्छुक विद्यार्थियों को सतत एवं विकासपूरक शिक्षा के अवसर प्रदान करना है। इसका मुख्य उद्देश्य यह भी है कि दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था तथा मुक्त विद्यालयों में अधिगम स्तर की पहचान करना तथा बढ़ाना भी है।

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय, विभिन्न स्तरों पर विभिन्न शैक्षिक कोर्स/कार्यक्रम आयोजित करता है। उदाहरण के लिए, सेतु कार्यक्रम (उनके लिए जो पांचवी कक्षा उत्तीर्ण हों), माध्यमिक कोर्स, उच्च माध्यमिक कोर्स, व्यावसायिक तथा जीवन संवर्धन कोर्स तथा विशेष प्राथमिकता

वाले समूहों के लिए अन्य कोर्स। राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय द्वारा शिक्षा, मुद्रित सामग्री, दृश्य-श्रव्य कार्यक्रम तथा व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रमों द्वारा प्रदान की जाती है। पूरे देश में विभिन्न सेवाएं जैसे नामांकन, व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रमों का आयोजन, विद्यार्थियों का निर्देशन एवं परामर्श, अध्ययन सामग्री का आवंटन तथा मूल्यांकन गतिविधियों को आयोजित करने के लिए राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय मान्यता प्राप्त संस्थानों की सहायता प्राप्त करता है।

स्कूल स्तर पर अन्य दूरस्थ शिक्षा संस्थान जो केवल माध्यामिक शिक्षा पर ही केंद्रित रहते हैं, आंध्र प्रदेश मुक्त विद्यालय प्रारंभिक शिक्षा पर बल देता है। आंध्र प्रदेश मुक्त विद्यालय परियोजना, औपचारिक विद्यालय छोड़ने वाले बच्चों को प्रोत्साहित करता है तथा उन्हें विद्यालय में वापस लाने का प्रयास करता है ताकि गांव के सभी बच्चों को शैक्षणिक सहायता प्रदान की जा सके। इस परियोजना में राज्य में चुने हुए जिलों के गांवों पर ही ध्यान केंद्रित किया जाता है। इस परियोजना के अंतर्गत विद्यार्थियों की सुविधानुसार, ग्रामीण केंद्र पर मुद्रित तथा श्रव्य सामग्री तथा अनुदेशक-निर्देशित गतिविधियों पर आधारित अधिगम मॉड्यूल प्रदान किए जाते हैं।

अन्य राज्यों में पत्राचार शिक्षा कार्यक्रम माध्यमिक स्कूल छोड़ने वाले बच्चों को शिक्षा के अवसर प्रदान करते हैं जैसे उत्तर प्रदेश में उच्च माध्यमिक स्तर पर। यह मुक्त विद्यालय राज्य माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा सुझाए गए पाठ्यक्रम को ही पढ़ाते हैं तथा मुद्रित सामग्री को ही शिक्षण का प्रमुख माध्यम मानते हैं। उनमें सत्रीय कार्य (assignments) तथा व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रमों का भी प्रावधान होता है।

बाद में राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय को राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान (NIOS) का नाम दिया गया। इसका मुख्य उद्देश्य सभी को विशेषकर लड़कियाँ एवं महिलाएं, ग्रामीण युवक, कामकाजी महिला एवं पुरूष, अनुसूचित जाति एवं जनजाति, विभिन्न योग्यताओं वाले व्यक्ति तथा अन्य वंचित व्यक्तियों, जो किन्हीं कारणों से अपनी शिक्षा पूरी नहीं कर पाए थे, को शिक्षा प्रदान करना है। एन.आई.ओ.एस. द्वारा पूरे देश में विभिन्न जेलों में स्थापित अध्ययन केंद्रों के माध्यम से कैदियों को शिक्षा प्रदान करने के प्रयास किए गए हैं जिसमें उनसे फीस भी नहीं ली जाती है। एन.आई.ओ.एस., भारत, नेपाल तथा मध्य पूर्व के देशों में स्थित 20 क्षेत्रीय केंद्रों, दो उप-क्षेत्रीय केंद्रों, एक उप-क्षेत्रीय प्रकोष्ठ तथा 6,620 मान्यता प्राप्त संस्थानों एवं मान्यता प्राप्त व्यावसायिक संस्थानों, जिन्हें अध्ययन केंद्र के नाम से जाना जाता है, के तंत्र के माध्यम से कार्य करता है। (NIOS प्रोस्पैक्टस 2016-17)।

NIOS, तीन राष्ट्रीय शिक्षा बोर्ड में से एक है। दो अन्य शिक्षा बोर्ड हैं; केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (CBSE) तथा भारतीय स्कूल प्रमाणपत्र परीक्षा परिषद् (CISCE), NIOS में पूर्व में अर्जित ज्ञान को महत्त्व दिया जाता है और इसके लिए किसी अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय तथा राज्य स्कूल बोर्ड या राज्य मुक्त विद्यालय की परीक्षा में उत्तीर्ण किन्हीं दो विषयों के क्रेडिट को NIOS द्वारा जोड़ लिया जाता है। वर्ष 2016 तक NIOS का स्वरूप निम्न प्रकार से था।

- विश्व का सबसे बड़ा मुक्त विद्यालय पद्धति जिसकी पिछले पाँच वर्षों में कुल नामांकन 2.78 मिलियन था।
- 1991 तक माध्यमिक, उच्च माध्यमिक तथा व्यावसायिक शिक्षा में 3.30 मिलियन विद्यार्थियों को प्रमाणीकृत किया गया।
- वर्ष 2014-15 में विभिन्न कोर्सों में 5,52,000 विद्यार्थियों को दाखिल किया गया।
- भारत और बाहरी देशों में स्थित 20 क्षेत्रीय केंद्रों, दो उप-क्षेत्रीय केंद्रों तथा 6,620 से अधिक अध्ययन केंद्रों के माध्यम से जनता तक पहुँच।

- शिक्षा को मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षण के माध्यम एवं विभिन्न माध्यमों जैसे स्व-अनुदेशन मुद्रित सामग्री, दृश्य-श्रव्य एवं व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रमों के द्वारा शिक्षण प्रदान करना। इसके साथ ही रेडियो एवं टी.वी. कार्यक्रमों तथा मुक्त विद्यावाणी (NIOS की वेबसाइट द्वारा इंटरनेट पर श्रव्य कार्यक्रम) का भी सहारा लिया जाता है।

3.2.4 अध्यापक शिक्षा

शिक्षा आयोग (1964-66) ने विज्ञान और तकनीकी के क्षेत्र में तथा दूरदराज के क्षेत्रों में कार्यरत अध्यापकों के व्यावसायिक विकास के लिए पत्राचार के माध्यम से कोर्स आरंभ करने की अनुशंसा की थी। वर्ष 1967 में उस समय के सोवियत संघ के पत्राचार माध्यम द्वारा चलाए जा रहे कोर्सों का अध्ययन करने के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) ने प्रथम प्रतिनिधिमंडल भेजा था। इस प्रतिनिधिमंडल ने इस व्यवस्था को सीमित आधार पर अपनाने की अनुशंसा की थी ताकि पूर्व के अप्रशिक्षित अध्यापकों, जो कि पहले से ही नियमित सेवाएं दे रहे हैं तथा अलग-अलग योग्यताओं वाले प्रशिक्षित अध्यापकों का व्यावसायिक विकास किया जा सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1968 में भी इन विचारों को बल देते हुए लिखा गया कि,: "विश्वविद्यालय स्तर पर अंशकालिक शिक्षा एवं पत्राचार कोर्स, अधिक से अधिक विकसित किए जाने चाहिए। ऐसी सुविधाएं, माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों, अध्यापकों, और कृषि, उद्योग तथा अन्य कर्मियों के लिए भी विकसित की जानी चाहिए।" (भारत सरकार, 1968)।

शिक्षा आयोग की संस्तुतियों तथा विश्वविद्यालय अनु. आयोग (UGC) प्रतिनिधिमंडल की रिपोर्ट के आधार पर गहन चर्चाएँ की गई। इसके बाद एन.सी.ई.आर.टी. ने 1967 में अपने चार क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों जो अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर तथा मैसूर में स्थित हैं, के माध्यम से अप्रशिक्षित अध्यापकों को पत्राचार के माध्यम से बी.एड. कोर्स शुरू किया। तदोपरांत इन महाविद्यालयों का परिदृश्य बदला। विभिन्न मुक्त विश्वविद्यालयों तथा दोहरी व्यवस्था वाले विश्वविद्यालयों के पत्राचार शिक्षा निदेशालयों के माध्यम से बी.एड. करने की भारी होड़ मच गई। वर्ष 1995-96 में, 13 विश्वविद्यालय पत्राचार शिक्षा माध्यम से तथा 3 राज्य मुक्त विश्वविद्यालय दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से बी.एड. कोर्स प्रदान कर रहे थे। इन विश्वविद्यालयों में, आंध्र, अन्नामलाई, भोपाल, बैरहमपुर, काकतीय, कश्मीर, कुरूक्षेत्र, महर्षि दयानंद, मदुरई कामराज, मैसूर, ओस्मानिया, शिवाजी, श्री वैंकटेश्वरा, बाबा साहेब अंबेडकर मुक्त विश्वविद्यालय (गुजरात), यशवंत राव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विश्वविद्यालय (महाराष्ट्र) तथा कोटा मुक्त विश्वविद्यालय (राजस्थान) शामिल थे। वर्ष 2000 में, इग्नू ने अप्रशिक्षित सेवारत अध्यापकों को बी.एड. कोर्स करवाने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर शुरूआत की।

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (NCTE), 1996 के दिशा निर्देशों के परिणामस्वरूप, पत्राचार कोर्स संस्थानों/ पत्राचार शिक्षा निदेशालयों ने बी.एड. कोर्स की शुरूआत की। वर्ष 1996-97 के दौरान UGC, NCTE तथा DEC की संयुक्त समिति की अनुशंसों पर दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से बी.एड. कोर्स में सुधार किए गए। अतः इसके अनुसार राज्य मुक्त विश्वविद्यालयों ने अपने-अपने राज्य में 1997 में बी.एड. कोर्स की शुरूआत की। वर्ष 1997 में UGC ने भी पत्राचार के माध्यम से बी.एड. कोर्स शुरू करने के लिए नियम बनाए।

बी.एड. कार्यक्रम के अतिरिक्त, कुछ विश्वविद्यालयों द्वारा पत्राचार एवं दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से एम.एड. कार्यक्रम आरंभ किया गया। इन विश्वविद्यालयों में, आंध्र, अन्नामलाई, हिमाचल प्रदेश, कुरूक्षेत्र, मदुरई कामराज, ओस्मानिया, पंजाब, कोटा मुक्त विश्वविद्यालय एवं इग्नू शामिल थे। इग्नू तथा अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा केंद्रीय संस्थान (CIEFL), हैदराबाद द्वारा भी देश में विश्वविद्यालय/ महाविद्यालय अध्यापकों तथा स्कूल स्तर पर

अध्यापकों के व्यावसायिक विकास के लिए दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से कोर्स शुरू किए गए थे। कुछ राज्यों जैसे मध्य प्रदेश ने अप्रशिक्षित प्राथमिक विद्यालय शिक्षकों के लिए दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों के माध्य से सर्टिफिकेट कोर्स शुरू किए थे। केंद्रीय शिक्षा तकनीकी संस्थान (CIET) तथा इग्नू के संयुक्त तत्वाधान में वर्ष 1996 में टेलीकांफ्रेंसिंग के माध्यम से प्राथमिक विद्यालय शिक्षकों को सेवाकालीन उन्मुखीकरण का प्रयोग दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण की दिशा में ऐतिहासिक घटना सिद्ध हुआ। जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (DPEP) में इग्नू ने प्राथमिक विद्यालय शिक्षकों को टेलीकांफ्रेंसिंग के माध्यम से क्षेत्रीय भाषाओं में सतत् उन्मुखीकरण देने के लिए देशव्यापी परियोजना की शुरूआत की।

शिक्षा प्रणाली के विभिन्न स्तरों जैसे पूर्व-प्राथमिक, प्राथमिक, माध्यमिक, वरिष्ठ माध्यमिक और उच्च स्तर पर अध्यापकों की व्यावसायिक विकास एवं योग्यता निर्माण के लिए अध्यापक शिक्षा में चलाए जा रहे एम.एड, बी.एड, डिप्लोमा तथा सर्टिफिकेट कार्यक्रमों से इग्नू भारत में अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों को प्रदान करने वाला मुख्य प्रदाता बन गया है। वर्तमान में इग्नू ने जुलाई 2016 से अपना संशोधित बी.एड. कार्यक्रम शुरू किया है जो NCF 2005, NCFTE, 2009 तथा राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (NCTE) के 2014 के नियमों के अनुसार विकसित किया गया है।

3.3 समस्याएँ एवं चुनौतियाँ

जैसा कि आपने जाना कि मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा ने शिक्षा की कुछ समस्याओं एवं चुनौतियों को हल करने में योगदान दिया है। परंतु मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा स्वयं भी विभिन्न प्रकार की समस्याओं एवं चुनौतियों से जूझ रही है। आइए, इन्हें एकल पद्धतीय एवं द्विपद्धतीय विश्वविद्यालयों के संदर्भ में समझने का प्रयास करें।

3.3.1 द्विपद्धतीय विश्वविद्यालय

जैसा कि आप जानते हैं कि दिल्ली विश्वविद्यालय, पहला विश्वविद्यालय था जिसने 1962 में पत्राचार के माध्यम से कोर्स शुरू करने का प्रयोग किया था जो कि विशेषज्ञ समिति द्वारा 1961 में दी गई रिपोर्ट के आधार पर था। बाद में दिल्ली विश्वविद्यालय ने एक उपसमिति का गठन किया ताकि प्रथम डिग्री स्तर पर विभिन्न कोर्स शुरू करने के लिए सुझाव दिए जा सकें। इस विश्वविद्यालय के दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों की सफलता ने अन्य विश्वविद्यालयों तथा राष्ट्रीय महत्त्व वाले संस्थानों को पत्राचार के माध्यम से विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम आरंभ करने के लिए प्रेरित किया।

इसी दौरान UGC ने पत्राचार माध्यम से कोर्सों को एकरूप बनाने के लिए दिशा निर्देश तैयार करने का प्रयास किया। शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार ने लगातार, 1967, 1968 तथा 1971 में तीन प्रतिनिधिमंडलों का गठन किया तथा उन्हें तत्कालीन सोवियत संघ में पत्राचार शैक्षिक कार्यक्रमों का अध्ययन करने के लिए भेजा। वर्ष 1969 में UGC ने पत्राचार कार्यक्रमों के लिए दिशानिर्देश जारी किए। इसके अनुसार पत्राचार पाठ्यक्रमों का मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित को शिक्षा के अवसर प्रदान करना था:

- आर्थिक या अन्य कारणों से जिन विद्यार्थियों ने औपचारिक शिक्षा छोड़ दी थी।
- भौगोलिक रूप से दूरदराज क्षेत्रों के विद्यार्थी।
- ऐसे विद्यार्थी जिन्होंने अभिप्रेरणा या रूझान की कमी के चलते शिक्षा छोड़ दी लेकिन बाद में वे प्रेरित हो गए।

- ऐसे विद्यार्थी जिन्हें नियमित महाविद्यालय या विश्वविद्यालय में प्रवेश नहीं मिला या वे प्रवेश नहीं लेना चाहते थे हालाँकि उनके पास उच्च शिक्षा के लिए आवश्यक योग्यता है।
- ऐसे व्यक्ति जो शिक्षा को जीवन पर्यन्त गतिविधि मानते हैं तथा अपने ज्ञान को अद्यतन करना चाहते हैं या नए क्षेत्र में ज्ञान अर्जित करना चाहते हैं। (UGC, 1988)

उपरोक्त विकास के कारण, बहुत सारे विश्वविद्यालयों ने विभिन्न विषयों में डिग्री, डिप्लोमा तथा प्रमाणपत्र वाले कोर्स की शुरूआत की। ये विश्वविद्यालय, देश के सभी क्षेत्रों जैसे पूर्व, पश्चिम, उत्तर तथा दक्षिण में स्थित हैं। मार्च 2015 तक विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के दूरस्थ शिक्षा ब्यूरो (2014 तक दूरस्थ शिक्षा परिषद्) द्वारा अनुमोदित किए गए द्विपद्धतीय विश्वविद्यालय भारत में कुल 210 थे जो पिछले चालीस वर्षों (1968-2015) के दौरान विकसित हुए ताकि दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम शुरू किए जा सकें।

समस्याएँ एवं चुनौतियाँ

इन विश्वविद्यालयों तथा संस्थानों की दूरस्थ शिक्षा ईकाइयाँ दो पद्धतियों से चलती रहीं अर्थात परिसर में विद्यमान नियमित तथा पत्राचार/दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम बढ़ती हुई प्रतिस्पर्धा के परिणामस्वरूप, कुछ संस्थान जैसे क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों ने इन कोर्सों को बंद कर दिया था। राजस्थान और कर्नाटक राज्यों में पारंपरिक विश्वविद्यालयों जैसे राजस्थान, उदयपुर तथा मैसूर इत्यादि ने राज्य मुक्त विश्वविद्यालयों की स्थापना के कारण अपने दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों को बंद कर दिया था।

भारत में द्विपद्धतीय विश्वविद्यालयों/संस्थानों की मुख्य चुनौती यह है कि इन विश्वविद्यालयों में विद्यमान दूरस्थ शिक्षा की ईकाइयाँ नीति नियोजन, प्रशासन, प्रबंधन, पाठ्यक्रम विकास, विद्यार्थी सहयोग, गुणवत्ता निर्धारण, सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी के उपयोग इत्यादि से संबंधित मुद्दों पर संपूर्ण रूप से स्वायत्त नहीं हैं। इसके अलावा, इनकी भावी चुनौती यह है कि द्विपद्धतीय विश्वविद्यालयों, एकल पद्धतीय विश्वविद्यालयों तथा मुक्त विश्वविद्यालयों में बढ़ती आपसी प्रतिस्पर्धा के कारण दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों को कैसे आगे बढ़ाया जाए।

वर्तमान में द्विपद्धतीय संस्थानों तथा समर्पित दूरस्थ शिक्षा संस्थानों को शिक्षा की पहुँच वंचित वर्ग तक पहुँचाने के ध्येय को पूरा करने के लिए निरंतर प्रयास करते रहना चाहिए।

3.3.2 एकल पद्धतीय विश्वविद्यालय

अपनी स्वायत्त प्रकृति के कारण, मुक्त विश्वविद्यालय व्यवस्था का दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में अद्वितीय स्थान है। मुक्त विश्वविद्यालयों में अनुदेशन के लिए स्व-अनुदेशन मुद्रित सामग्री तथा अन्य बहुमाध्यम मॉडयूल, व्यापक विद्यार्थी सहायता सेवाएँ के आधुनिक संचार प्रौद्योगिकी जैसे शिक्षक, टी वी टेलीकांफ्रेंसिंग, कंप्यूटर कांफ्रेंसिंग, इत्यादि का बहुतायत उपयोग करता है। इस तरह की अनुदेशन व्यवस्था या तो द्विपद्धतीय विश्वविद्यालयों में नहीं होती है या उनमें इसे इतना महत्त्व नहीं दिया जाता है। इस कारण से यह विश्वविद्यालय, मुक्त विश्वविद्यालयों से भिन्न होते हैं।

उपरोक्त भाग 3.2.2 में हमने भारत में मुक्त विश्वविद्यालयों के विकास के बारे में चर्चा की। आपने जाना कि आंध्र प्रदेश राज्य मुक्त विश्वविद्यालय के 1982 में स्थापना के बाद तथा 1985 में इग्नू के स्थापित होने के बाद आज तक देश में कुल 15 मुक्त विश्वविद्यालय हैं। यह मुक्त विश्वविद्यालय, एकल पद्धति के रूप में चले, लेकिन 2009-13 के दौरान इग्नू ने दोहरी प्रणाली अपनाई जब इसने दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों के साथ-साथ परिसर में कुछ

नियमित कार्यक्रम भी चलाए। आप 2011 तक इग्नू के विभिन्न पहलूओं के बारे में जान चुके हैं। बाद में इग्नू पुनः एकल पद्धति वाले विश्वविद्यालय में परिवर्तित हुई तथा केवल दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से ही कार्यक्रम चलाने लगी जो वर्तमान में भी उसी प्रकार से चल रहे हैं।

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा ने भारत में उच्च शिक्षा में गुणवत्ता, समता तथा समानता के अवसरों को बढ़ाते हुए मानव संसाधनों के विकास में एक ऐतिहासिक भूमिका निभाई है। केवल 11वीं पंचवर्षीय योजना के दौरान केवल इग्नू, राज्य मुक्त विश्वविद्यालय तथा दूरस्थ शिक्षा संस्थानों का नामांकन में क्रमशः 6.97 लाख, 3.03 लाते तथा 9.28 लाख का योगदान था। उच्च शिक्षा में कुल नामांकन का 12.15% दूरस्थ शिक्षा संस्थानों का था जिसमें से 45.39% नामांकन लड़कियों/महिलाओं का था (भारत सरकार, 2015)।

समस्याएँ एवं चुनौतियाँ

केवल शिक्षा तक पहुँच ही काफी नहीं है। बहुत दूरस्थ शिक्षा लेखकों एवं शोधकर्त्ताओं ने 'मुक्त द्वार बनाम भ्रमणशील द्वार' स्थिति को वर्णित किया है जो तब घटित होती है जब संस्थान सभी विद्यार्थियों को नामांकित कर लेते हैं परंतु उन्हें सफलता प्राप्त करने के लिए सहायता प्रदान नहीं करते हैं। यह आवश्यक नहीं है कि शिक्षा के मूल्य-संवर्धित अवधारणा का समर्थन किया जाए, परंतु मान्यता के लिए एक याचिका है की दूरस्थ माध्यम से प्रौढ़ शिक्षा की विशेष आवश्यकताएं हैंः अधिगम नियोजन, नामांकन एवं पंजीकरण सहायता, महिलाओं को वित्तीय सहायता, विशेषकर शैक्षिक जगत में पुनःप्रवेश करने वाली समन्वयक ईकाई पुस्तक भंडार, पुस्तकालय तथा अनुदेशनात्मक मीडिया केन्द्र से आवश्यक सामग्री तक पहुँच, स्रोत से समयानुसार सही सूचना, कार्यक्रम हेतु सतत् एवं उचित शैक्षणिक परामर्श एवं विद्यार्थियों की आवश्यकतानुसार पाठ्यक्रम सामग्री के साथ शिक्षण बल्कि संस्थान की सुविधा के अनुसार नहीं (http://web.worldbank.org/archive/website00236B/61EB/UNI_03.HTM)।अतः केवल उत्तम गुणवत्ता वाली कोर्स सामग्री तैयार कर लेने से मुक्त विश्वविद्यालयों द्वारा शिक्षा की गुणवत्ता की गारंटी नहीं दी जा सकती है। विद्यार्थी सहायक सेवाएं जैसे विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम सामग्री का वितरण, विद्यार्थियों को सही समय पर प्रतिपुष्टि प्रदान करना, परामर्श आयोजन, मल्टी-मीडिया का उपयोग, परीक्षाओं का आयोजन, एवं समय पर परीक्षा परिणाम की घोषणा इत्यादि एकल व्यवस्था वाले विश्वविद्यालयों के लिए मुख्य चुनौतियाँ हैं जो मुद्रित सामग्री को अनुदेशन के मुख्य माध्यम के रूप में अपनाते हैं। इन सभी पहलूओं का विद्यार्थियों की धारण दर तथा उत्तीर्णता दर पर गहरा प्रभाव होता है। लक्ष्मी रेड्डी (2002) द्वारा इग्नू कार्यक्रमों पर किए गए व्यक्तिपरक अध्ययन में यह पाया गया कि पिछले 15 वर्षों में विभिन्न कार्यक्रमों में नामांकित विद्यार्थियों की औसत उत्तीर्णता दर केवल 8.85 प्रतिशत है। वास्तव में, इस संदर्भ में सभी एकल पद्धतीय (मुक्त) विश्वविद्यालयों को सुधार हेतु क्रियान्वयन की रणनीतियों को मजबूत करने की आवश्यकता है।

इसके अतिरिक्त सामान्यतः मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा तथा मुख्यतः इग्नू एवं राज्य मुक्त विश्वविद्यालयों की भावी चुनौतियाँ ही भारत में पूर्णतः मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था के भविष्य को तय करेंगी। यह अधिकांशतः नीतियों तथा दिशा निर्देशों पर निर्भर करता है। 12वीं पंचवर्षीय योजना में भारत सरकार ने मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा को बहुत महत्त्व दिया है जो कि शिक्षा के क्षेत्र में इसके योगदान से संबंधित बनाई गई उच्च आकांक्षाओं में देखा जा सकता है (तालिका 3.2 देखें)।

वैश्विक स्तर पर मूक्स (MOOCS) के उद्य के कारण, भारत भी इसे अपनाने का प्रयास कर रहा है। इसके लिए भारत सरकार के स्वदेशी सूचना तकनीकी पर आधारित 'स्वयं'

(SWAYAM) प्लेटफार्म की सहायता ली जा रही है ताकि शिक्षा नीति के तीन आयामों–पहुँच, समता तथा गुणवत्ता– को प्राप्त किया जा सके। इस प्रयास का मुख्य उद्देश्य यह है कि वंचित विद्यार्थियों सहित सभी के लिए शिक्षण-अधिगम के सर्वोत्तम संसाधन उपलब्ध कराया जा सके। यह उन विद्यार्थियों के मध्य डिजिटल अंतर को कम करने का प्रयास है जो किन्हीं कारणों से डिज़िटल क्रांति से अछूते रहे हैं तथा ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था की मुख्यधारा में जुड़ नहीं पाए हैं। 'स्वयम' (SWAYAM) में करवाए जाने वाले कोर्स चार भागों में हैं – (1) वीडियो आधारित भाषण, (2) विशेष रूप से तैयार की गई पाठ्य सामग्री, जो डाउनलोड या मुद्रित किया जा सकता है, (3) स्व– मूल्यांकन परीक्षण, तथा (4) अपनी शंका–समाधान के लिए चर्चा करने हेतु ऑनलाईन चर्चामंच। इन अधिगम अनुभवों को रोचक एवं सशक्त बनाने के लिए दृश्य-श्रव्य सामग्री एवं मल्टी-मीडिया तकनीकी तथा अत्याधुनिक शिक्षण शास्त्र और प्रौद्योगिक का उपयोग किया जाता है। उच्च स्तर की गुणवत्तापरक सामग्री विकसित करने एवं वितरण हेतु सात राष्ट्रीय स्तर के समन्वयकों की नियुक्ति की गई है। यह सात समन्वयक हैं: अभियांत्रिकी के लिए NPTEL, स्नातकोत्तर शिक्षा के लिए UGC, स्नातक स्तर की शिक्षा के लिए CEC, विद्यालय शिक्षा के लिए NCERT तथा NIOS, विद्यालय से बाहर विद्यार्थियों के लिए IGNOU तथा प्रबंधन शिक्षा के IIM, बंगलूरू।

अब आप शायद मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में किए गए प्रयासों के बारे में समझ चुके हैं जो निकट भविष्य में मुक्त ऑनलाईन शिक्षा की तरफ बढ़ रहा है। परंतु नेटवर्क कनेक्टिविटि तथा इसकी गुणवत्ता, उपलब्धता, खर्चीलापन/सस्तापन इत्यादि मुद्दे एवं चुनौतियों जो पाठ्यक्रम और विद्यार्थियों के परिप्रेक्ष्य से संबंधित है पर गहन ध्यान देने की आवश्यकता होगी।

हालाँकि स्थानीय स्तर पर अध्ययन केंद्रों के माध्यम से कुछ समस्याएँ हल हो सकती हैं परंतु इनको शुरूआत में स्थापित करने तथा आगे चलाने में आवश्यक धनराशि के अनुसार बहुत सारे विद्यार्थियों को एक अध्ययन केंद्र द्वारा यह सुविधा नहीं प्रदान की जा सकती है। आर्थिक रूप से कमजोर होने के कारण बहुत सारे लोग शिक्षा की इस सुविधा से वंचित रह जाएंगे क्योंकि उनके पास आवश्यक उपकरणों या स्रोतों की उपलब्धता नहीं होगी। इस स्थिति में क्या 'स्वयम' की पहुँच सभी लोगों तक हो पाएगी, यह भविष्य में बहुत बड़ी चुनौती होगी जिससे निपटना बहुत आवश्यक है।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

2) भारत में एकल पद्धतीय तथा द्विपद्धतीय विश्वविद्यालयों की प्रमुख भावी चुनौती क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

3.4 सारांश

इस ईकाई में आपने मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के भारतीय अनुभव के बारे में जाना। आपने यह समझा कि पिछले साढ़े पाँच दशकों में भारत में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों ने अपनी उपस्थिति तथा योग्यता प्रदर्शित कैसे की। इस ईकाई में एकल एवं द्विपद्धतीय विश्वविद्यालयों के वर्तमान एवं भावी चुनौतियों पर भी चर्चा हुई जोकि हालाँकि इस देश में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का भविष्य बहुत सुनहरा है।

3.5 "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर

1) भारत में 15 मुक्त विश्वविद्यालय हैं : इग्नू, डॉ. बी. आर. अम्बेडकर मुक्त विश्वविद्यालय (हैदराबाद), नालंदा मुक्त विश्वविद्यालय, कोटा मुक्त विश्वविद्यालय, यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विश्वविद्यालय, मध्य प्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय, डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर मुक्त विश्वविद्यालय, कर्नाटक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय, नेताजी सुभाष चंद्र बोस मुक्त विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, तमिलनाडु मुक्त विश्वविद्यालय, पंडित सुंदरलाल शर्मा मुक्त विश्वविद्यालय, उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, कृष्ण कांत हांडिक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय, ओडिशा राज्य मुक्त विश्वविद्यालय।

2) भारत में एकल पद्धतीय एवं द्विपद्धतीय विश्वविद्यालयों की प्रमुख भावी चुनौती यह है कि विद्यार्थी सहायक सेवाओं की पहुँच एवं गुणवत्ता बढ़ाने के लिए किस प्रकार से समन्वय स्थापित हो तथा प्रतिस्पर्धा के दौर में कैसे आगे बढ़ा जाए।

3.6 संदर्भ ग्रंथ

Association of Indian Universities. (1997). *Handbook of Distance Education*, AIU, New Delhi.

Distance Education Council. (1995). *Open Universities in India*, IGNOU, New Delhi.

Government of India. (1986). Nat*ional Policy on Education* Ministry of Education, New Delhi.

Government of India. (2013). (See http://planningcommission.nic.in/plans/planrel/fiveyr/12th/ pdf/12fyp_vol3.pdf — Retrieved on 11-09-2016).

Government of India. (2015). *All India Survey on Higher Education (2013-2014).* Ministry of Human Resource Development, Department of Higher Education, New Delhi. (See http://aishe. nic.in/aishe/viewDocument.action?documentId=196).

http://planningcommission.nic.in/plans/planrel/fiveyr/12th/pdf/12fyp_vol3.pdf

http://web.worldbank.org/archive/website00236B/WEB/UNI_03.HTM — Retrieved on 22-04-2017.

http://www.university.careers360.com/articles/list-of-approved-distance-education-universities-in-india — Retrieved on 27-08-2016.

https://swayam.gov.in/About — Retrieved on 23-4-2017.

IGNOU. (1985). *IGNOU Act.* IGNOU, New Delhi.

IGNOU. (2011). *IGNOU Profile 2011*. IGNOU, New Delhi.

IGNOU. (2011). *24th Convocation: Vice-chancellor's Report.* IGNOU, New Delhi.

Lakshmi Reddy, M. V. (2002). Students' Pass Rates: A Case Study of Indira Gandhi National Open University Programmes. *Indian Journal of Open Learning.* Vol.11, No.1, January, pp.103-125. (See http://cemca.org.in/ckfinder/userfiles/Lakshmi%20Reddy_MV__0249. pdf).

NIOS. (2016). *Prospectus 2016-17.* Noida: NIOS. (See http://www.nos.org/media/documents/ prospectus/AcadProspectus_2016_17.pdf — Retrieved on 08-10-2016).

Suggested Readings

Commonwealth of Learning. (2003). Three Year Plan 2003-2006 Available at www.col.org/programmes/reporting/TYP_2003.pdf

Koul, B.N. (2000). "Dystopia to Utopia and Beyond: A Case for Distance Education (DE) in Small States" in Proceedings of the University of West Indies Small States Conference, 27-28 July 2000, Ocho Rios, Jamaica. Available at www.col.org/resources/publications/ SmallStates00/2_conf_proc_master.pdf

Rumble, G. (1992). "The competitive vulnerability of distance teaching universities" in Open Learning, Vol. 7, No. 2, June 1992.

Ryan, Y. and Stedman, L. (2002). The Business of Borderless Education: 2001 update Canberra: Department of Education, Training and Youth Affairs. Available at http://www.dest.gov.au/archive/highered/eippubs/eip02_1/eip02_1.pdf

Taylor, J. C. (1997). "A dual mode model of distance education: The University of Southern Queensland". Open Praxis, Vol. 2, 9-13. 23

Taylor, J. C. (2000). "New Millenium Distance Education", in The World of Open and Distance Learning (Eds V Reddy and S Manjulika), Viva Books Private Ltd, India (475-480), ISBN 81 7649 155 1.

UNESCO. (2002). Open and Distance Learning – Trends, Policy and Strategy Considerations. Paris: UNESCO.

3.7 इकाई अंत अभ्यास

इकाई अंत प्रश्न

आप अपनी रूचि के अनुसार एवं अपने लाभ हेतु इन प्रश्नों के विस्तृत उत्तर या संक्षिप्त उत्तर लिख सकते हैं। यह आपको परीक्षा में तैयारी के लिए सहायक हो सकते हैं।

1) भारत में उच्च शिक्षा के लोकतांत्रिकरण में मुक्त विश्वविद्यालय व्यवस्था के योगदान पर चर्चा करें। (1000 शब्द)

2) भारत में विद्यालयी शिक्षा तथा अध्यापक शिक्षा के लिए मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का क्या योगदान रहा है? (1000 शब्द)

3) भारत में एकल तथा द्विपद्धतीय विश्वविद्यालयों की समस्याएँ एवं चुनौतियाँ क्या हैं? (1000 शब्द)

आलोचनात्मक टिप्पणी हेतु प्रश्न

1) आपके अनुसार भारत में मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम के माध्यम से विद्यालयी एवं अध्यापक शिक्षा की क्या समस्याएँ एवं चुनौतियाँ हैं? इनके समाधान के लिए अपने सुझाव देने का प्रयास करें।

क्रियाकलाप

भारत में दूरस्थ माध्यम से अध्यापक शिक्षा प्रदान करने हेतु नियामक संस्था/संस्थाओं की भूमिका पर टिप्पणी लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 4 वैश्विक अभ्यास

संरचना

4.0 प्रस्तावना

4.1 उद्देश्य

4.2 अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं की भूमिका

- 4.2.1 अंतर्राष्ट्रीय मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा परिषद
- 4.2.2 राष्ट्रमंडल अधिगम

4.3 क्षेत्रीय संघ/निकाय

- 4.3.1 अफ्रीकी दूरस्थ शिक्षा परिषद
- 4.3.2 एशियाई मुक्त विश्वविद्यालय संघ
- 4.3.3 आस्ट्रेलियाई मुक्त, दूरस्थ एवं ई-अधिगम परिषद
- 4.3.4 यूरोपीय दूरस्थ शिक्षण विश्वविद्यालय संघ
- 4.3.5 यूरोपीय दूरस्थ ई-अधिगम तंत्र
- 4.3.6 आस्ट्रेलिया मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम संघ
- 4.3.7 संयुक्त राज्य दूरस्थ अधिगम संघ

4.4 प्रत्यायन अभिकरण

4.5 क्षेत्रीय परिप्रेक्ष्य

- 4.5.1 अफ्रीका
- 4.5.2 अमेरिका
  - 4.5.2.1 उत्तरी अमेरिका
  - 4.5.2.2 दक्षिण एवं मध्य अमेरिका
  - 4.5.2.3 कैरेबिया
- 4.5.3 एशिया
- 4.5.4 आस्ट्रेलिया एवं प्रशांत
- 4.5.5 यूरोप

4.6 वृहत (मेगा) मुक्त विश्वविद्यालय

4.7 चयनित महत्त्वपूर्ण अभ्यास

- 4.7.1 पाठ्यक्रम समूह उपागम (UKOU)
- 4.7.2 दूरवर्ती अधिगमकर्त्ताओं को बहु-सहायक प्रक्रिया द्वारा सेवाएँ प्रदान करना (अथाबास्का)
- 4.7.3 नवाचारी पाठ्यक्रम (AIOU, YCMOU)
- 4.7.4 माँग आधारित प्रकाशन एवं परीक्षा में तकनीकी (टेरबुका यूनिवर्सिटी)
- 4.7.5 द्विपद्धतीय शिक्षण (डीकीन यूनिवर्सिटी व USQ)
- 4.7.6 विज्ञान एवं तकनीकी शिक्षण (IGNOU व OUSL)

4.8 सारांश

4.9 ''अपनी प्रगति जाँचें'' प्रश्नों के उत्तर

4.10 सन्दर्भ ग्रंथ

4.11 इकाई अन्त अभ्यास

4.0 प्रस्तावना

बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में विश्वव्यापी शिक्षा तंत्र का एक नया काल देखने को मिला। पूरे यूरोप में कई पत्राचार अनुदेशन विद्यालय स्थापित किये गये और विश्व के कई अन्य भागों में इसकी शुरूआत हुई। इंगलैंड में कई निजी पत्राचार कॉलेज स्थापित किये गये जहाँ पर विभिन्न कॉलेजों व विश्वविद्यालय परीक्षाओं के लिए विद्यार्थियों को पढ़ाया जाता था। रूस में (प्राचीन रूस गणराज्य), 1960 तक पत्राचार माध्यम, विश्वविद्यालय स्तर के लिए मुख्य स्तर का शिक्षण माध्यम बन चुका था। नियमित कक्षाओं से ज्यादा छात्र पत्राचार माध्यम से पढ़ने लगे। जापान में पत्राचार पाठ्यक्रम लाखों विद्यार्थियों की आवश्यकताओं की पूर्ति कर लोकप्रिय हुआ। ऑस्ट्रेलिया व न्यूज़ीलैण्ड में पत्राचार संस्थाएँ उन बच्चों को पढ़ाने के काम आई जिन्होंने कभी कक्षा-कक्ष का रूख न किया था। संयुक्त राज्य अमेरिका में दूरस्थ शिक्षा ने प्रौढ़ एवं सतत् शिक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह की। दूरस्थ शिक्षा पूरे विश्व में धीरे-धीरे फैल गई है तथा शैक्षिक विकास का एक अपरिहार्य एवं अभिन्न घटना है।

सूचना एवं संप्रेषण प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्रगति ने नवीन संचार माध्यमों के एकीकरण की ओर निर्देशित किया है जैसे नये प्रकार के दूरस्थ शिक्षण संस्थाएँ - प्रसारण करने वाले विश्वविद्यालय, दूरस्थ विश्वविद्यालय, मुक्त विश्वविद्यालय, आभासी विश्वविद्यालय आदि, इनमें से कुछ बड़ी मुक्त विश्वविद्यालय के रूप में उभरी हैं। साथ ही साथ मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा सम्बन्धित संस्थाओं में बढ़ोतरी हुई है तथा उनके राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय, क्षेत्रिय व विश्वव्यापी स्तर पर सहयोगी संस्थाएँ भी बढ़ी हैं। इस इकाई में हम मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा को जानने की कोशिश करेंगे वो भी क्षेत्रिय दृष्टिकोण से जो अफ्रीका, एशिया, आस्ट्रेलिया, प्रशांत (पेसिफिक) क्षेत्र, मध्य पूर्व, तथा उत्तर, दक्षिण व मध्य अमेरिका के संदर्भ में होगी।

4.1 उद्देश्य

इस इकाई की समाप्ति के पश्चात् आप :

- मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं/निकायों की भूमिका को समझ सकेंगे;
- मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के विश्वव्यापी अभ्यासों में क्षेत्रीय दृष्टिकोण की प्रशंसा कर सकेंगे;
- कुछ चयनित मुक्त विश्वविद्यालयों को जान सकेंगे अथवा विभिन्न क्षेत्रों के चयनित मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थाओं को जान सकेंगे;
- विश्व की वृहत (मेगा) मुक्त विश्वविद्यालयों को पहचान कर सकेंगे; तथा
- चुने हुए मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थाओं के महत्त्वपूर्ण अभ्यासों की चर्चा कर सकेंगे।

4.2 अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं की भूमिका

इस भाग में आप के समक्ष कुछ महत्त्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय तथा क्षेत्रीय संस्थाओं/निकायों आदि की मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा क्षेत्र में भूमिका की समीक्षा करेंगे।

4.2.1 अन्तर्राष्ट्रीय मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा परिषद्

अन्तर्राष्ट्रीय पत्राचार शिक्षा परिषद् की स्थापना कनाडा में 1938 में हुई थी, जिसका बाद में नाम बदल कर अन्तर्राष्ट्रीय 'दूरस्थ शिक्षा परिषद् रखा गया, जो बाद में अन्तर्राष्ट्रीय

'मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा परिषद्' 1988 से स्थायी रूप से कार्य कर रहा है। इसका सहयोग नॉर्वे के शिक्षा मंत्रालय द्वारा सदस्यता शुल्क से किया जाता है।

अंतर्राष्ट्रीय दरूस्थ शिक्षा परिषद, मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा समुदाय का प्रमुख विश्वव्यापी सदस्यता संस्था है तथा संस्थाओं, शैक्षिक प्राधिकारों, व्यावसायिक कलाकारों तथा व्यक्तियों हेतु खुले हैं। वर्तमान में अंतर्राष्ट्रीय दूरस्थ शिक्षा परिषद में 156 सदस्य हैं (मुक्त विश्वविद्यालय सहित अन्य); 90 व्यक्तिगत सदस्य तथा 20 सहयोगी सदस्य (http://www.icde.org/icde-members)।

अंतर्राष्ट्रीय दूरस्थ शिक्षा परिषद आधिकारिक रूप से UNESCO से वर्ग 'अ' अन्तर्राष्ट्रीय गैरसरकारी संबंध में संबद्ध है तथा संयुक्त राष्ट्र (UN) के साथ समीपता से सहयोग करता है। यूनेस्को (UNESCO) के साथ परामर्शदाता सहयोगी के रूप में इसका स्थान है। इसका मुख्य कार्य है 'शिक्षा के अधिकार' को प्रोत्साहित करना। अंतर्राष्ट्रीय दूरस्थ शिक्षा परिषद, मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के सुधार व विकास हेतु, निरन्तर कार्यरत है। यह अपने सदस्यों के लिए यह कम शुल्क पर सुझाव व परामर्श देता है। यह मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा से संबंधित अन्य अन्तर्राष्ट्रीय सहयोगियों के साथ भी मिलकर कार्य करते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय दूरस्थ शिक्षा परिषद, अपने विश्व भर के सदस्यों से अनोखे ज्ञान व अनुभवों के कारण एक स्थान बनाया है। यह सभी के लिए बेहतर शैक्षिक अवसरों को प्रोत्साहित करता है, शैक्षिक प्रावधान के उच्च मापदण्ड तय करता है, उत्तम अभ्यासों को अपनाता है, नई प्रविधियों के विकास में तथा नई तकनीकों के प्रयोग में सहयोग करता है। यह व्यावसायिक अन्तःक्रिया, अंतर्सांस्कृतिक सहयोग व समझ को प्रोत्साहन, भाषा-वैज्ञानिकों को प्रोत्साहन व सहयोग तथा राष्ट्रीय, क्षेत्रीय व विश्व स्तर पर प्रसार के अवसर प्रदान करता है।

अंतर्राष्ट्रीय दूरस्थ शिक्षा परिषद की मुख्य गतिविधियों में उनकी मीटिंग तथा सम्मेलन होते हैं जैसे द्वैवार्षिक विश्व सम्मेलन, वार्षिक स्टेंडिंग सम्मेलन (जहाँ राष्ट्रपति सम्मिलित होते हैं), तथा क्षेत्रीय सम्मेलन जो सदस्य संस्थानों द्वारा आयोजित होते हैं। पहला विश्व सम्मेलन, 1938 में विक्टोरिया, बी.सी. में आयोजित हुआ था। परन्त, कुछ व्यावहारिक कारणों से यह सम्मेलन आगे समय पर आयोजित नहीं हो सका, किन्तु 2015 तक 26 विश्व सम्मेलन आयोजित हो चुके थे। 26वीं कॉन्फरेन्स साउथ अफ्रीका (UNISA) द्वारा आयोजित की गई थी।

1999 से अंतर्राष्ट्रीय दूरस्थ शिक्षा परिषद ने मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में उत्तम उपलब्धि को पहचानना शुरू किया। इसने विभिन्न 'रूचि समूह' स्थापित किये हैं। इनमें से एक समूह है अन्तर्राष्ट्रीय को मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा महिला तंत्र (Women's International Network), जो महिलाओं को विशिष्ट मुद्दों अर्थात् उनसे विशेष रूप से संबंधित की पूर्ति एवं विचार विमर्श हेतु मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के विभिन्न अवसर प्रदान करता है।

अंतर्राष्ट्रीय दूरस्थ शिक्षा परिषद एक ऑनलाईन जर्नल 'ओपन प्रेक्सीस' प्रकाशित करता है तथा वेबसाइट भी है व मासिक न्यूज़लैटर भी निकालता है जो सदस्य व अन्य संबंधित लोगों को जानकारी प्रदान करता है।

4.2.2 राष्ट्रमंडल अधिगम (Commonwealth of learning - COL)

COL एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्थान है जिसे कॉमनवेल्थ सरकारों द्वारा सितम्बर, 1988 में एक मीटिंग (1977) के बाद में स्थापित किया गया। इसका मुख्यालय वैंकूवर में है और यह अपने आप में एकल कॉमनवेल्थ अन्तर्शासकीय संस्थान है जो ब्रिटेन से बाहर है।

राष्ट्रमंडल सरकारों के समझौत ज्ञापन 'Memorandum of Understanding-MOU' के अनुसार COL का उद्देश्य है –

- शिक्षा की अभिगम्यता का सृजन व विस्तार तथा
- दूरस्थ शिक्षा तकनीकों का प्रयोग कर इसकी गुणवत्ता सुधारना तथा सदस्य देशों की विशिष्ट आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु, संप्रेषण तकनीकी का प्रयोग संघटित करना।

अतः COL अपने सदस्य देशों की आर्थिक एवं सामाजिक उन्नति के लिए वांछित मानव संसाधनों के विकास द्वारा क्षमता में मजबूती का लक्ष्य रखता है। COL के कार्य व उद्देश्य–

- सदस्य देशों में दूरस्थ शिक्षा में संस्थागत क्षमता की रचना व विकास में सहयोग करना।
- दूरस्थ शिक्षा में परियोजनाओं तथा कार्यक्रमों हेतु संसाधनों के प्रसारण में सहयोग करना।
- दूरस्थ शिक्षा के किसी भी आयाम में जानकारी व परामर्श देना, साथ ही उपयुक्त तकनीक का चयन भी करना।
- दूरस्थ शिक्षा में मूल्यांकन व व्यवहारिक अनुसन्धान को करना व सहयोग प्रदान करना।
- शिक्षण सामग्री का सुगमता से प्राप्तीकरण व उनके प्रयोग में सहयोग।
- शैक्षणिक विश्वसनीयता के रूपांतरण व विकास को प्रोत्साहित करना;
- विद्यार्थियों को क्षेत्रीय सहयोग सेवाएँ विकसित करना;
- अन्य गतिविधि जो संस्था के लिए लाभप्रद हों को प्रेरणा व सहयोग देना ऐसे साधन गवर्नर के बोर्ड द्वारा स्वीकृत किए जा सकते हैं।

हमने अंतर्राष्ट्रीय दूरस्थ शिक्षा परिषद एवं राष्ट्रमंडल अधिगम के भूमिका की चर्चा कर ली, अब हम मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की कुछ क्षेत्रीय निकायों की भूमिकाओं पर अपनी चर्चा को केन्द्रित करेंगे।

4.3 क्षेत्रीय संघ/निकाय

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों का विश्व के विभिन्न भागों में विस्तार के साथ-साथ मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के राष्ट्रीय व क्षेत्रीय संघों का भी आविर्भाव हुआ है। इस भाग में हम इन मुख्य क्षेत्रीय संघों के परिवर्णीय शब्दों को वर्णानुक्रम के अनुसार जानेंगे।

4.3.1 अफ्रीकी दूरस्थ शिक्षा परिषद्

औपचारिक तौर पर अफ्रीकी दूरस्थ शिक्षा परिषद का प्रारंभ जनवरी, 2004 में इगरटन यूनिवर्सिटी, केन्या में किया गया। अफ्रीका में ODL प्रदान करने वाली एकलीकरण निकाय है। यह अफ्रीकन विश्वविद्यालयों का महाद्वीपीय शैक्षिक संगठन है। इसमें वो भी संस्थान हैं जो ODL के द्वारा ई-लर्निंग सहित उत्कृष्ट शिक्षा व प्रशिक्षण प्रदान करते हैं। अफ्रीकी दूरस्थ शिक्षा परिषद का शासनादेश मुख्यतः अनुसन्धान को बढ़ावा देना, नीति व उत्कृष्टता, शिक्षा में विस्तार आदि को प्रोत्साहन देना है (http://www.acdeafrica.org/about)।

4.3.2 एशियाई मुक्त विश्वविद्यालय संघ

इसकी स्थापना 1900 में किया गया था। यह उच्च अधिगम संस्थानों की एक लाभ निरपेक्ष संस्थान है जिसका मुख्य कार्य मुक्त तथा दूरस्थ शिक्षा से संबंधित है। इस संघ के उद्देश्य हैं: (http://www.ouhk.edu.hk/~AAOUNet/main.html)

- मौजूद शैक्षिक अवसरों को बढ़ाना तथा उस क्षेत्र के लोगों को लाभान्वित करना तथा सदस्य संस्थानों में जानकारियों, शिक्षण सामग्री, तथा अनुसंधान के आदान प्रदान द्वारा लागत प्रभावशीलता को बढ़ाना;
- दूरस्थ शिक्षण तंत्र को शिक्षा विस्तार के लिए सहयोग लेना तथा उनके सामर्थ्य को विकसित करना;
- दूरस्थ शिक्षकों में व्यावसायिक तथा नैतिक स्तर को प्रोत्साहित करना;
- आधिकारिक निकायों तथा अन्य लोगों के साथ प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सहयोग करना जो दूरस्थ शिक्षा में रूचि रखते हों; तथा
- अन्य क्षेत्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय निकायों के साथ सहयोग तथा ऊपर दिये गये, उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु सहायक व प्रासंगिक कार्य करना।

AAOU सदस्यता में पूर्ण व सहयोगी सदस्यों, जो समान धारणा रखते हों, सम्मिलित होते हैं। इनका मानना है कि दूरस्थ शिक्षा का विकास तभी हो सकता है जब सौहार्दपूर्ण व निकटतम सहयोग व विचार का आदान-प्रदान हो। AAOU वैयक्तिक, समूह, संस्थान, संगठन सदस्य के व्यावसायिक व शैक्षणिक प्रसार को बढ़ाने में सहयोग करता है। यह अन्तर्क्षेत्रीय व अन्य समान संस्थानों के संबंधों को प्रोत्साहित करता है।

सदस्य संस्थाएँ क्रमवार से AAOU वार्षिक कॉन्फ्रेन्स आयोजित करते हैं। यह एक ऐसा मंच है जहाँ एशिया में मुक्त व दूरस्थ शिक्षा से संबंधित सदस्य आते हैं विशेषकर शिक्षाविद्, संचालक तथा विद्यार्थी। मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम से संबंधित मुद्दों, विचारों व विकास पर चर्चा करने हेतु यह एक केन्द्र बिन्दु प्रदान करता है।

4.3.3 आस्ट्रेलियाई मुक्त, दूरस्थ एवं ई-अधिगम परिषद

जो विश्वविद्यालय तकनीक आधारित अधिगम-शिक्षण बढ़ाने में संलग्न हैं उनके लिए यह एक चोटी की संस्था है। इसका मुख्य उद्देश्य है– मुक्त, दूरस्थ, लचीला एवं ई-लर्निंग को आस्ट्रेलियन उच्च शिक्षा के अन्तर्गत उसकी नीतियों व प्रथाओं को विकसित करना। आस्ट्रेलियाई मुक्त, दूरस्थ एवं ई-अधिगम परिषद इन नीतियों व अभ्यासों को प्रभावित करने की चेष्टा करता है (http://www.acode.edu.au/) :

- ज्ञान एवं दक्षता का प्रचार एवं साझेदारी;
- व्यावसायिक विकास व प्रसार के अवसर प्रदान करने में सहयोग;
- नये उपागमों की खोज, विकास तथा मूल्यांकन करना;
- उच्च शिक्षा में मुख्य निकायों को परामर्श देना व सशक्त करना; तथा
- उत्तम अभ्यासों को बढ़ावा देना।

इसकी सदस्यता आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड एवं दक्षिण-पश्चिमी प्रशांत (पेसिफिक) क्षेत्र के विश्वविद्यालय के लिए खुली है। ACODE, ICDE (मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का अन्तर्राष्ट्रीय परिषद्) का सहयोगी सदस्य है।

4.3.4 यूरोपीय दूरस्थ शिक्षण विश्वविद्यालय संघ

इसकी स्थापना यूरोप के मुख्य दूरस्थ शैक्षिक संस्थानों के प्रमुखों द्वारा 23 जनवरी, 1987 में हुआ था। इसका उद्देश्य विभिन्न यूरोपीय संस्थानों के बीच सामंजस्य से दूरस्थ शिक्षा प्रविधि द्वारा उच्च शिक्षा प्रदान करना है। इस संघ के सदस्य लाभनिर्पेक्ष संस्थान या लाभनिर्पेक्ष संघ हैं तथा स्वतंत्र उच्च शिक्षा शिक्षण संस्थानों तथा विश्वविद्यालय के विभागों जो दूरस्थ शिक्षा में शैक्षिक कोर्स व अनुसन्धान के लिए जिम्मेदार हैं उनको सम्मिलित करता है।

EADTU, यूरोप में मुक्त व दूरस्थ उच्च शिक्षा की एक अग्रणी संस्थागत संघ है तथा यूरोपीय विश्वविद्यालय के आधुनिकीरण एजेन्डा का हृदय भाग है। इसकी शुरूआत ग्यारह संस्थापक संदस्यों से हुई थी जो आज लगभग पच्चीस देशों के पंद्रह संस्थाओं व चौदह राष्ट्रीय संघों तक हो चुके हैं। आज इसकी सदस्यता में 200 विश्वविद्यालयों व लगभग 3 मिलियन छात्र हैं (http://www.distancelearningportal.com/partners/eadtu)।

EADTU का लक्ष्य निम्नलिखित द्वारा अपने सदस्यों को सशक्त व सहयोग करना है :

- राष्ट्रीय व यूरोपीय स्तर पर संबंधित नेतृत्व को विकसित एवं पोषित करना;
- यूरोप में मुक्त व लचीले उच्च शिक्षा के विकास को प्रोत्साहन देना; तथा
- संस्थाओं के बीच सहयोग व प्रसार द्वारा अधिगम अवसरों तथा विद्यार्थी गतिशीलता को बढ़ाने में सहयोग तथा विस्तार करना।

EADTU यूरोपीय देशों में विस्तृत है तथा दूरस्थ उच्च शिक्षा में आजीवन, मुक्त व लचीले अधिगम के संबंध में यूरोपीय आयोग का मुख्य सहयोगी माना गया है। बोलोग्ना घोषणा पत्र एवं ई.टी. 2020 योजना के तहत यूरोपीय अधिगम स्थान के सृजन हेतु यह वचनबद्ध है। EADTU ने यूरोपीय मुक्त एवं दूरस्थ उच्च शिक्षा के तीन समीक्षात्मक विशेषताओं द्वारा अपने आप को परिभाषित करता है :

- उच्च गुणवत्ता ऑनलाइन वातावरण पर आधारित छात्र-केन्द्रित अधिगम;
- लचीले, समावेशी संरचनाओं व विधियों द्वारा अधिगमकर्त्ताओं हेतु मुक्तता जो विद्यार्थियों हेतु उच्च शिक्षा को कब और कहाँ जरूरत है वहाँ ले जाती है।
- तंत्र आधारित शिक्षा तथा गतिशीलता जहाँ विद्यार्थी राष्ट्रीय, क्षेत्रीय व संस्थागत सीमाओं को पार कर सीख सकें।

EADTU की गतिविधियाँ, एक सुदृढ़ पद-शीर्ष उपागम से आरम्भ होती हैं जो संस्थागत आवश्यकताओं पर आधारित तथा विश्वविद्यालयों या संघों द्वारा अनुभूत होती हैं। EADTU का इसके सदस्यों की कई उपलब्धियाँ हैं :

- ऑनलाइन तथा लचीले शिक्षा के लिए गुणवत्ता मानदण्ड जैसेः उत्कृष्टता
- मुक्त शैक्षिक संसाधन (Open Educational Resources-OER) तथा MOOC/ जैसे - MOOC में open uped
- सहयोगी पाठ्यक्रम व आभासी गतिशीलता। जैसे-आभासी गतिशीलता में मौलिक प्रश्न प्रस्ताव।
- इसके अतिरिक्त EADTU सदस्य छात्र-केंन्द्रित ऑनलाइन शिक्षा के सन्दर्भ में अपनी दक्षता प्रस्तुत करते हैं। जिससे प्रत्येक यूरोपीय विश्वविद्यालय में शिक्षण-अधिगम द्वारा उच्च गुणवत्ता स्तर बनाया जा सके।

4.3.5 यूरोपीय दूरस्थ ई-अधिगम तंत्र

मूलतः इसकी स्थापना यूनाइटेड किंगडम (UK) में 1991 में यूरोपीयन डिस्टेन्स एजूकेशन नेटवर्क (यूरोपीय दूरस्थ शैक्षिक तंत्र) के नाम से हुई जो बाद में यूरोपीयन दूरस्थ ई-लर्निंग तंत्र के रूप में पुनः 2003 में नामित किया गया। यूरोपीय दूरस्थ ई-अधिगम तंत्र व्यावसायिक समुदाय के लिए उत्तम तंत्र है तथा बेहतर अधिगम के लिए एक व्यवसायिक समुदाय है। इसका लक्ष्य मुक्त, दूरस्थ, लचीले तथा ई-लर्निंग का विकास करना तथा प्रत्येक क्षेत्र व यूरोपीय देशों की संस्थाओं, कम्पनियों व अन्य संगठन में सहयोग के लिए एक मंच प्रदान करना है। यह संघ गैर-यूरोपीय संघों व संस्थाओं के साथ संबंध स्थापित करता है।

यूरोपीय दूरस्थ ई-अधिगम तंत्र प्रयत्न करता है (http://www.eden-online.org/about-us/):

- मौजूदा सस्थाओं व तंत्रों के बीच सहयोग व संबंध बढ़ाना, जो विश्व स्तर पर दूरस्थ व ई-लर्निंग में संलग्न हैं;
- यूरोप में कॉन्फरेन्स, कार्यशाला तथा सेमिनार आदि का आयोजन व सहयोग करना जिससे दूरस्थ व ई-लर्निंग के व्यावसायिक विकास में सहयोग हो सके;
- दूरस्थ व ई-लर्निंग से विकास व अनुसन्धान सुगम बनाना;
- दूरस्थ व ई-लर्निंग में सूचना व वर्तमान प्रगति की सूचना देना;
- विश्वव्यापी अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग में भागीदारी करना तथा वी परियोजना जो सदस्य को प्रोत्साहित व सहयोग करे उनमें भाग लेना;
- यूरोप में दूरस्थ व ई-लर्निंग विधि द्वारा शिक्षा व प्रशिक्षण के लिए उचित राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय निकायों, सरकारी व गैर-सरकारी संगठनों को सलाह देना।

यूरोपीय दूरस्थ ई-अधिगम तंत्र यूरोप में मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम का एक बहुत व्यापक संघ है। 200 से अधिग संस्थानिक सदस्यों तथा शिक्षाविदों एवं व्यवसायकों के तंत्र में 44 देशों से विश्वविद्यालयों, कंपनियों, राष्ट्रीय एवं व्यावसायिक दूरस्थ एवं ई-अधिगम संघों से 1200 सदस्यों के साथ यह व्यावसायिक सूचना एवं नेवटर्किंग गतिविधियों में सम्मिलित होने हेतु संस्थानो, नेटवर्कों तथा व्यक्तियों के एक विस्तृत प्रसार की सहायता करता है। इसका अस्तित्व दूरस्थ तथा ई-अधिगम में व्यवसायकों के मध्य ज्ञान की साझेदारी तथा समझ की सुधार हेतु तथा यूरोप एवं इसके बाहर नीति एवं अभ्यास को प्रोत्साहित करने हेतु है) यह स्वीकृत यूरोपीय सम्मेलनों के आयोजन, अपने प्रकाशन तथा सूचना सेवाओं तथा महत्वपूर्ण यूरोपीय संघ परियोजनाओं के व्यापक प्रसार में सक्रिय भूमिका द्वारा ऐसा करता है। यह यूरोपियन जर्नल ऑफ ओपन, डिस्टेन्स तथा ई-लर्निंग की विस्तृत सचिवालयी सहातया भी प्रदान करता है। (http://www.openeducationeuropa.eu/en/institution/european-distance-and-e-learning-network)

4.3.6 आस्ट्रेलिया मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम संघ

आस्ट्रेलिया मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम संघ (ODLAA) के अग्रदूत 'द ऑस्ट्रेलिय एण्ड साउथ पेसिफिक एक्सटर्नल स्टडीज़ एसोसियशन्स' (ASPESA) की स्थापना 1974 में हुई थी (https://odlaa.org/about/life-members/)। ODLAA, शिक्षकों, अनुदेशन स्वरूपकर्ता शैक्षिक परामर्शदाता तथा प्रशासकों का लाभनिरपेक्ष व्यावसायिक सहयोगी है जो पूरे ऑस्ट्रेलिया तथा बाहरी क्षेत्र में विकास के लिए कार्य कर रहा है चाहे वो अनुसन्धान हो, अभ्यास हो अथवा शिक्षा में सहयोग।

ODLAA के लक्ष्य हैं (http://odlaa.org/about/who-we-are/) :

- समय व स्थान में सर्वत्र, अनुसन्धान, अभ्यास व सहयोग को विकिसत करना।
- समय व स्थान में सर्वत्र, शिक्षा में शामिल अधिगम समुदाय को निरन्तर संलग्न, सहयोग व विकसित करना।
- अधिगम समुदाय का संघ बनना, जो समय व स्थान में सर्वत्र शिक्षा से सम्बन्धित हो।

ODLAA, मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम के संबंध में अनुभव साझा करने तथा सूचना के प्रसार के क्रम में व्यवसायकों से संपर्क स्थापित करता है। इसके सदस्य भिन्न-भिन्न शैक्षिक क्षेत्र तथा व्यावसायिक प्रशिक्षण देने वाले, तथा बहुपद्धतीय स्तर पर प्रबन्धन, प्रशासन, डिजाईन, विकास, अनुसंधान तथा शिक्षण में शामिल प्रशिक्षण इकाइयों के सदस्य होते हैं जिसे 'परंपरागत कक्षाकक्ष के बाहर' के रूप में बेहतर ढंग से वर्णित किया जा सकता है। ODLAA समय-समय पर कॉन्फ्रेंसेस, दूरस्थ शिक्षण प्रकाशन का भी आयोजन करता है।

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की अन्य क्षेत्रीय संघों की तरह ODLAA की आजीवन सदस्यता नहीं खरीदी जा सकती। यह उन्हें ही दी जाती है जिन्होंने मुक्त, दूरस्थ तथा लचीले अधिगम के क्षेत्र में अत्यधिक कार्य किया हो। ODLAA समुदाय की तीन सदस्य सदस्यों के लिए इनमें से विशिष्ट व्यक्तिओं को नामांकित करते हैं। ODLAA में वर्तमान समय में तीन आजीवन सदस्य हैं।

4.3.7 संयुक्त राज्य दूरस्थ अधिगम संघ

इसकी स्थापना 1987 में हुई थी। इसकी स्थापना अधिगम समुदाय की बढ़ती हुई आवश्यकताओं को पूरी करने हेतु की गई। इसे संचार तकनीकी व विस्तृत बहु-आयामी प्रयोग के सम्मिश्रण से किया गया।यहअधिगम समुदाय हैं- प्री K-12, उच्च शिक्षा, सतत् शिक्षा, प्रशिक्षण, मिलिट्री व सरकारी प्रशिक्षण, गृह-विद्यालयीकरण तथा टेलीमेडिसीन आदि। संयुक्त राज्य दूरस्थ अधिगम संघ का मुख्य केन्द्र है राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय तकनीक-आधारित दूरस्थ अधिगम। संयुक्त राज्य दूरस्थ अधिगम संघ का उद्देश्य दूरस्थ अधिगम को सहयोग करना तथा उसके उपयोग को बढ़ाना है, इसके अतिरिक्त दूरस्थ अधिगम समुदाय तथा उसके विभिन्न क्षेत्र के कानूनी प्रभाव पर ध्यान केन्द्रित करना है (https://www.usdla.org/about/history/)।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

1) ऐसी दो मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों के नाम बताइए जिन्हें सरकार वित्तीय सहायता देते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2) कम से कम सात मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा/अधिगम संघ के नाम बताइए।

.....

.....

.....

.....

.....

4.4 प्रत्यायन अभिकरण

आप को शायद जानकारी होगी कि प्रमाणन अथवा प्रत्यायन किसी उच्च शैक्षिक संस्थान की शैक्षणिक गुणवता के मानदण्ड निर्धारित करने की प्रक्रिया है जो एक संवैधानिक व आधिकारिक प्रमाणन संस्था/निकाय द्वारा किया जाता है। शैक्षिक संस्थान की गुणवत्ता का अर्थ शिक्षण, अधिगम व अनुसंधान की गुणवत्ता है। इसके अन्तर्गत भौतिक संरचना, मानव संसाधन, पाठ्यक्रम, प्रवेश तथा मूल्यांकन विधियाँ एवं संचालन संरचना सम्मिलित हैं। प्रमाणन की प्रक्रिया द्वारा हम एक शैक्षिक संस्थान को उसकी गुणवत्ता संकेतक के आधार पर श्रेणी प्रदान करते हैं। अतः प्रमाणन को उच्च शिक्षा एक स्व-नियंत्रक तंत्र माना जाता है जो एक संस्थान के शैक्षिक उद्यम में लोगों के विश्वास को पोषित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। चूँकि प्रमाणन एक स्व-मूल्यांकन अभ्यास है जो संस्थान को अपने समीक्षात्मक स्वविश्लेषण तथा पुनः परीक्षण करने का अवसर देता है जो उसके कार्यवाही में गुणात्मक सुधार लाता है।

मूल्यांकन व प्रमाणन सरकारी तथा निजी संस्थाओं द्वारा किया जाता है, परन्तु अधिकतर स्थितियों में सरकार ने संस्थएँ स्थापित की हैं जो मूल्यांकन एवं प्रत्यायन द्वारा किसी संस्थान की शिक्षा की गुणवत्ता व स्तर की प्रोत्साहित व जाँच करता है। सामान्यतः प्रमाणन प्रक्रिया हेतु समितियाँ बनाई जाती हैं तथा सामूहिक व्यावसायिक निर्णय लिया जाता है। यह समिति, वस्तुनिष्ठ व्यावसायिक निर्णय प्रमाणन संस्थान व निकाय को देने की जिम्मेदारी निर्वाह करता है। समिति, अन्य शिक्षा सुधार के क्षेत्र में सुझाव भी देती है।

वैश्विक प्रतिमान

अंतर्राष्ट्रीय दूरस्थ शिक्षा परिषद की रिर्पोट श्रृंखला (Ossiannilsson, 2015), गुणवत्ता मानक मॉडल इस उद्देश्य के साथ शामिल करता है, कि गुणवत्ता वृहत (macro), मध्यम (meso) तथा सूक्ष्म (micro) स्तर पर सम्बोधित की जायें। एक अध्ययन ने चालीस से ज्यादा मानक प्रतिमान (मॉडल) अथवा मार्गदर्शक को पुनः निरीक्षित किया तथा वर्तमान के मुक्त, दूरस्थ, लचीले तथा ऑनलाईन शिक्षा (ई-लर्निंग) का विश्वव्यापी संक्षिप्त विवरण दिया। यह अन्तर्राष्ट्रीय गुणवत्ता मानक मॉडल की समीक्षा करता है तथा बताता है कि कुछ मॉडल में प्रदर्शन मूल्यांकन की आवश्यकता है। समीक्षा बताती है कि गुणवत्ता के संप्रत्यय को वृहत (राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय), मध्यम (संस्थागत) तथा सूक्ष्म (व्यक्तिगत अभ्यास) स्तर पर लागू किया जा सकता है।

आपको प्रमाणन संस्थाओं के बारे में और जानकारी देने हेतु यू.स. व यू.के. तथा भारत के अनुभव की चर्चा करेंगे।

यू.एस. का अनुभव

निःसंदेह यूनाइटेड स्ट्रेटस ही शैक्षिक संस्थाओं के प्रमाणन के प्रसार व सहयोग में सबसे आगे है तथा दूरस्थ शिक्षा में मौजूद विभिन्न गुणवत्ता समीक्षा व सुधारात्मक प्रक्रिया में भी आगे हैं।

यू.एस. का शिक्षा विभाग किसी शैक्षिक संस्थान एवं/कार्यक्रम का प्रमाणन नहीं करता। परन्तु, शिक्षा सचिव को विधि द्वारा स्वीकृत राष्ट्रीय प्रमाणित संस्थाओं की सूची को प्रकाशित करना आवश्यक होता है जिन्हें सचिव उच्च शिक्षा संस्थानों द्वारा प्रदत शिक्षण तथा प्रशिक्षण की गुणवत्ता तथा उच्च शिक्षा कार्यक्रम जिन्हें वे प्रत्यायन करते हैं के लिए विश्वसनीय प्राधिकरण सुनिश्चित करते हैं। कार्यक्रम को प्रमाणित करता है (http://www.online-education.net/online-accreditation.html)। प्रमाणन संस्थाओं को पहचानने हेतु यू.एस. के पास दो रास्ते हैं- वह जो यू.एस. शिक्षा विभाग द्वारा मान्यता प्राप्त तथा वह जो अप्रत्यक्ष रूप से मान्यता प्राप्त निजी संस्थान जिन्हें 'उच्च शिक्षा प्रमाणन परिषद्' (The Council for Higher Education Accreditation) कहा जाता है जो यू.एस. शिक्षा विभाग से संबंधित है। इन दो रास्तों से की गई सौ मान्यता प्राप्त प्रमाणित संस्थाएँ हैं (जिसमें से अधिकांश दोनों संगठनों द्वारा प्रमाणित हैं)।

यू.एस. शिक्षा विभाग द्वारा मान्यता प्राप्त कुछ जानी-मानी प्रमाणन संस्थाएँ हैं –

- मिडिल स्ट्रेटस कमिशन ऑन हायर एजूकेशन (MSA)
- नॉर्थ-वेस्ट एसोसियेशन ऑफ स्कूल एण्ड कॉलेज एण्ड यूनिवर्सिटिज़ (NASC)
- हायर लर्निंग कमिशन ऑफ नॉर्थ सेन्ट्रल रीजन (NCA)
- न्यू इंग्लैण्ड एसोसिएशन ऑफ स्कूल एण्ड कॉलेज (NEASC)
- साउथर्न एसोसिएशन ऑफ कॉलेज एण्ड स्कूल्स (SACS)
- वेस्टर्न एसोसिएशन ऑफ स्कूल एण्ड कॉलेज (WASC)

यू.एस. के अन्दर ही छः एजेन्सी ज्यादातर भौगोलिक क्षेत्र तय करते हैं।

अन्य मान्यता प्राप्त राष्ट्रीय प्रमाणन संस्थाएँ जो दूरस्थ शैक्षिक कार्यक्रम व संस्थानों को प्रमाणित करते हैं, वे हैं :

- नेशनल डिस्टेन्स एजुकेशन एण्ड ट्रेनिंग काउंसिल (DETC)
- ऐक्रेडीटिंग काउंसिल फॉर इंडिपेन्डेन्ट कॉलेज व स्कूल (ACICS)

दोनों ही संस्थाओं की प्रमाणित करने की अपनी ही मूल्यांकन कसौटियाँ हैं। अतः यू.एस.ए. में दोनों ही क्षेत्रीय प्रमाणन एवं राष्ट्रीय प्रमाणन निकाय जैसे दूरस्थ शिक्षा तथा ट्रेनिंग काउंसिल है। DETC जैसी क्षेत्रीय संस्थाएँ दूरस्थ अधिगम मूल्यांकन के लिए विशेषज्ञ नहीं हैं। यह संस्थाएँ दोनों-दूरस्थ शिक्षा एवं पारंपरिक आवासीय स्कूल व कॉलेजों का मूल्यांकन करते हैं। परन्तु DETC अधिक मान्य प्रमाणन संस्था है जो दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम व संस्थानों को प्रमाणित करता है। DETC ने इस क्षेत्र में लगभग 80 वर्षों से अधिक समय दिया है तथा यह इकलौती संस्था है जो यू.एस. शिक्षा विभाग द्वारा विशेष निकाय का पद दिया है (http://www.online-education.netonline-accreditation.html)।

DETC की स्थापना 1926 में राष्ट्रीय गृह अध्ययन परिषद् (National Home Study Council-NHSC) के रूप में हुआ था। इसकी स्थापना तब हुई जब कानीज़ कॉरपोरेशन अध्ययन द्वारा मानकों में कमी पाई गई अतः विद्यालयों में गुणवत्ता बढ़ाने में तथा विद्यार्थियों

को किसी प्रकार के धोखे से बचाने हेतु इसकी स्थापना हुई (http://www.worldlibrary.org/articles/national_home_study_ council)।

यू.के. अभ्यास

मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम गुणवत्ता परिषद् (The Open and Distance Learning Quality Council-ODLQC) की स्थापना यू. के. सरकार द्वारा 1969 में किया गया था, जो मुक्त व दूरस्थ शिक्षा की गुणवत्ता पर ध्यान देती है। ODLQC, प्रशासनिक व शैक्षणिक विधियों, शिक्षण सामग्री तथा शिक्षा देने वालों का प्रचार प्रसार आदि का कड़ा मूल्यांकन करता है। अतः यू.के. में प्रमाणन ODLQC द्वारा निर्धारित मानदण्डों पर किया जाता है जिससे ODL में गुणवत्ता सुनिश्चित किया जाये, चाहे वह पत्राचार कोर्स हो, ई-लर्निंग, मिश्रित अधिगम, गृह-अध्ययन या कार्य आधारित अधिगम हो। प्रमाणन प्राप्त करने हेतु एक प्रदाता को ODLQC द्वारा नियमित आँकलन कराना चाहिए तथा यह साबित करना कि शिक्षा अथवा प्रशिक्षण विशिष्ट मानदण्डों को पूर्ण करते हैं। यह प्रक्रिया लगभग दो से छः महीने लेती है।

भारतीय अनुभव

भारत में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) एक संवैधानिक निकाय है जिसकी स्थापना केन्द्र सरकार ने 1956 में की थी। इसका उत्तरदायित्व है देश के संस्थानों में उच्च शिक्षा में समन्वयन, प्रचार तथा शिक्षण के मानदण्ड, परीक्षा व अनुसंधान का अनुरक्षण करना।

1987 में अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् (All India Council for Technical Education-AICTE) की स्थापना भी केन्द्र सरकार ने की थी। इसका कार्य मुख्यतः तकनीकी शिक्षा अभियांत्रिकी, प्रबन्धन तथा औषधीय शिक्षा के विकास के लिए सुझाव व सहयोग देना है। 1990 में AICTE ने नेशनल बोर्ड ऑफ ऐक्रेडीटेशन (NBA) को संवैधानिक प्राधिकारी के अनुसार प्रमाणन हेतु स्थापित किया। यह प्रत्येक तकनीकी संस्थान के लिए आवश्यक है कि वह NBA से प्रमाणन प्राप्त करें। बाद में UGC ने 1994 में एक स्वायत्त निकाय, राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (National Assessment & Accreditation Council-NAAC) की स्थापना की जो गैर-तकनीकी उच्च शिक्षा के संस्थानों को प्रमाणन प्रदान करता है तथा UGC की सीमा में आता है।

किन्तु NAAC किसी भी ODL संस्थानों का प्रमाणन नहीं कर सकता है। इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (IGNOU), जिसे भारत में दूरस्थ शिक्षा के स्तर को बढ़ावा देने व कायम रखने का कार्य सौंपा गया है। इग्नू 1992 में दूरस्थ शिक्षा परिषद् (DEC) की स्थापना की थी। तब से, सभी मुक्त विश्वविद्यालय व अन्य दूरस्थ शिक्षा संस्थानों को किसी भी पाठ्यक्रम को प्रदान करने हेतु DE C से पूर्व सहमति लेना आवश्यक है। DEC ने अपनी स्वयं की योजनाएँ बनाई हैं जिनके अनुसार, ODL संस्थानों का आँकलन व प्रमाणन होता है (DEC, 2009) DEC योजना के अनुसार जो संस्थान पिछले पाँच सालों से सफलता पूर्वक अस्तित्व में हैं तो वह प्रमाणन के आवेदन के लिए योग्य हैं। उस संस्थान को स्व-मूल्यांकन हेतु कठिन प्रक्रिया से गुजरना होगा जिससे वे एक विस्तृत रिर्पोट जमा कर सकें। इस रिर्पोट का निरीक्षण विशेषज्ञों की टीम करती है जो संस्थान में जाकर उसके क्षमताओं व कमजोरियों का आँकलन मूल्यांकन करते हैं तब उस संस्था की प्रमाणन की सिफारिश करते हैं। प्रमाणन उसी संस्थान को दिया जाता है जो निर्धारित मानदण्डों या कसौटियों पर खरा उतरता है और यह मानदण्ड DEC द्वारा निर्धारित होते हैं। DEC द्वारा प्रस्तावित गुणवत्ता संकेतक के आधार पर ODL संस्थाओं को श्रेणी/ग्रेड दी जाती है। परन्तु 2012 से स्थितियाँ कुछ बदल गई हैं।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा जारी दिशा निर्देश का अनुसारण करते हुए उच्च शिक्षा विभाग (भारत सरकार, 29/12/2012) के नियंत्रक कार्य जो दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम से संबंधित हैं, वह UGC में निहित कर दी गई हैं। दूरस्थ शिक्षा परिषद् (UGC के अधीन पूर्ववर्ती दूरस्थ शिक्षा ब्यूरो) जो पहले दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों का नियंत्रक था, अब समाप्त कर दिया गया है तथा सभी आधिकारिक कार्य का उत्तरदायित्व UGC ने ले लिया है (http://www.ugc.ac.in/deb/)

4.5 क्षेत्रीय परिप्रेक्ष्य

इस खण्ड में हम मुक्त व दूरस्थ शिक्षा में महाद्वीपीय या क्षेत्रीय दृष्टिकोण आधारित अनुभवों की समीक्षा करेंगे। सुविधा के लिए हम क्षेत्रों को वर्णानुक्रमी रूप में पढ़ेंगे।

4.5.1 अफ्रीका

अफ्रीकी क्षेत्र के बहुत सारे देशों के लोगों में शिक्षा का स्तर अपेक्षाकृत कम है। इसके फलस्वरूप, कुछ देशों ने तय किया कि लोगों का शैक्षिक स्तर बढ़ाने के लिए प्राथमिक शिक्षा अनिवार्य किया जाए। परन्तु जो सबसे बड़ी समस्या का सामना किया जा रहा है वह शिक्षकों के प्रशिक्षण से संबंधित है। ज्यादातर शिक्षक या तो कम प्रशिक्षित अथवा अप्रशिक्षित थे। सेवारत शिक्षकों को प्रशिक्षित करने तथा बड़ी संख्या में समुचित रूप में प्रशिक्षित शिक्षकों के नियुक्ति हेतु पत्राचार शिक्षा की आवश्यकता समझी गई जिससे भविष्य में होने वाले शिक्षा-विस्तार का सामना किया जा सके।

दक्षिण अफ्रीका विश्वविद्यालय ने 1946 से पत्राचार कोर्स प्रदान करना प्रारम्भ कर दिया था। परन्तु 1960 तक बहुत सारे अफ्रीकी देश ने पत्राचार शिक्षा के रूप में दूरस्थ अधिगम पाठ्यक्रम प्रदान करना शुरू कर दिया था। 1962 में पहला पत्राचार कॉलेज अफ्रीका में शुरू किया गया और उसके पश्चात कई देशों जैसे- नाइजीरिया, ज़िम्बाबे, तन्जानिया, कीनिया, बोट्स्वाना, लीसोथो, स्वाजीलैण्ड, गुआना, इथोपिया तथा घाना में दूरस्थ शिक्षा पाठ्यक्रम प्रदान किया जाने लगा। इन संस्थानों की संख्या समय के साथ कई गुना बढ़ती चली गई जहाँ दूरस्थ शिक्षा तंत्र का प्रयोग किया जा रहा है। यह वही समय था जब कई अफ्रीकी देशों को राजनैतिक स्वतंत्रता प्राप्त हो रही थी तथा वे शिक्षकों के सुधार व औपचारिक शिक्षा के विस्तार हेतु दूरस्थ शिक्षा का प्रयोग युवा (जो स्कूल नहीं जाते) व प्रौढ़ों के लिये किए। अफ्रीका में दूरस्थ/पत्राचार शिक्षा की मुख्य धारणा थी शिक्षा के लिए सबको समान अवसर। पहले पत्राचार कॉलेज की स्थापना के बाद-सेन्टर डी' एनसीनेमेन्ट सुपीरीयोर इन ब्राज़ाविले (Centre d' Enseignement Superieur in Brazzaville-Republic of the Congo) ने 1962 में कई समान संस्थाओं की स्थापना की। अफ्रीका के कई देशों ने समझा कि नागरिकों के शिक्षा के अवसरों का विस्तार करने के लिए पत्राचार शिक्षा का अमूल्य योगदान है। परिणामस्वरूप 1972 में लगभग 36 ऐसी संस्थाऐं स्थापित हुईं जो विभिन्न स्तर की शिक्षा पत्राचार द्वारा प्रदान करने लगे (Kobwasa एवं Kaunda, 1973, Richard Siaciwera, 2000)।

अफ्रीकी पत्राचार शिक्षा संघ की शुरूआत 1973 में दूरस्थ शिक्षा संस्थानों के कार्य-कलाप में समन्वयन हेतु हुआ था, परन्तुयहहाल ही में सक्रिय हुआ है। कुछ देश UNESCO (यूनेस्को) तथा अन्य अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों से स्व–अनुदेशन सामग्री प्राप्त करने हेतु तकनीकी सहयोग प्राप्त करने में सफल हुए। आरंभ में पाठ्यक्रम में मुख्यतः स्वःअनुदेशन मुद्रित सामग्री एवं रेडियो, दूरदर्शन कार्यक्रम, श्रव्य दृश्य टेप, फिल्म, आमने-सामने सत्र, अवकाश कार्यशाला आदि जैसे सामग्रियों से संपूरित था।

ज़िम्बाबवे ने दूरस्थ (पत्राचार) शिक्षा कॉलेज की 1980 में स्थापना की। 1981 में दक्षिण अफ्रीकी शरणार्थियों को सरकारी परीक्षाओं की तैयारी के लिए शैक्षिक संसाधन केन्द्र ने दूरस्थ शिक्षा विधि का प्रयोग किया। शरणार्थियों की बढ़ती संख्या की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु (इथोपिया आदि से) सूडान ने मुक्त अधिगम इकाई की स्थापना 1984 में की। इसका आधार 1982 में किये गये निरीक्षण व अध्ययन पर था और इसके लिए यू.के. के अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा विस्तार कॉलेज से सहायता ली गई।

घाना, कीनिया तथा नाइजीरिया ने शिक्षकों के लिए विश्वविद्यालयी दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम की शुरूआत कर ली है। नामीबिया, स्वाजीलैण्ड तथा यूगांडा ने भी दूरस्थ शिक्षा इकाईयों की स्थापना की है। परन्तु अभी भी अपेक्षाकृत कम विश्वविद्यालय शामिल हैं और बहुत ही सीमित कोर्स प्रदान करते हैं- वर्तमान में द. अफ्रीका विश्वविद्यालय का पूरे अफ्रीका में दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में प्रभुत्व है (Perraton, 2007)।

दक्षिण अफ्रीका विश्वविद्यालय

इसका इतिहास बहुत पहले का है जब केप ऑफ गुड होप विश्वविद्यालय की स्थापना 1893 में हुई थी। शुरूआत में यह एक शिक्षण न हो कर परीक्षण विश्वविद्यालय था जिससे कुछ शैक्षणिक कॉलेज संबंधित थे। 1946 में इस विश्वविद्यालय का पुनः नामकरण हुआ 'द. अफ्रीका विश्वविद्यालय' तथा इसे प्रीटोरिया में स्थानान्तरित कर दिया गया। जनवरी, 1964 में द. अफ्रीका विश्वविद्यालय परिसर के बाहर के विद्यार्थियों को दूरस्थ शिक्षा प्रदान करने लगी।

सम्पूर्ण द. अफ्रीका, अफ्रीका तथा विश्व के अन्य क्षेत्रों के लगभग 400,000 विद्यार्थियों से अधिक को अध्ययन के अवसर प्रदान करते हुए, यह विभिन्न स्तर पर (सर्टीफिकेट्से डॉक्टर की उपाधि तक) अध्ययन हेतु विविध विकल्प प्रदान करता है। देश की लगभग 23 सार्वजनिक विश्वविद्यालयों व तकनीकी विश्वविद्यालयों की उपाधियों में 12.8% उपाधि इस विश्वविद्यालय ने प्रदान की हैं।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

2) अफ्रीका में दूरस्थ शिक्षा संगठनों द्वारा सेवाएँ प्रदान करने के मुख्य उद्देश्य क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

4.5.2 अमेरिका

यहाँ आप ध्यान दें कि यू.एस.ए., अमेरिका नहीं; अपितु अमेरिका महाद्वीप है। सामूहिक तौर पर अमेरिका कहा जाने के अंतर्गत उत्तरीय अमेरिका तथा दक्षिणी अमेरिका सम्पूर्ण रूप से सम्मिलित है। आइये अब हम अमेरिका के दूरस्थ शिक्षा की चर्चा करें।

4.5.2.1 उत्तरी अमेरिका

दूरस्थ शिक्षा ने उत्तरी अमेरिका (यू.एस.ए. व कनाडा) के शैक्षिक तंत्र को बहुत प्रभावित किया है। उ. अमेरिका का दूरस्थ शिक्षा संस्थानों का काफी बड़ा प्रसार है जो स्कूल व विश्वविद्यालय स्तर के कोर्सज़ प्रदान करते हैं तथा विभिन्न प्रकार के सतत् व बिना क्रेडिट के कोर्स भी प्रदान करते हैं। इन देशों में दूरस्थ शिक्षा का विभिन्न दिशाओं में बहुत विकास हुआ है।

कनाडा

कनाडा में, 1889 में पत्राचार शिक्षा का प्रयोग ग्रामीण शिक्षकों (जो मेक गिल विश्वविद्यालय नहीं जा सकते) को डिग्री देने के लिए प्रयोग किया गया था। 1912 तक सेसकेचेवान (Saskatchewan) विश्वविद्यालय तथा अल्बर्टा (Alberta) विश्वविद्यालय ग्रामीण अधिगमकर्ताओं को परिसर से बाहर स्व-अध्ययन कार्यक्रम प्रदान करने लगे।

कनाडा में कई पत्राचार स्कूल इसलिए स्थापित किये गये क्योंकि स्कूल शिक्षकों की कमी थी। 1921 में पत्राचार शिक्षा पहले प्राथमिक स्कूल स्तर पर और फिर माध्यमिक स्तर पर प्रारम्भ की गई। आज पूरे देश भर में विकास हो रहा है तथा लगभग K-12 दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम प्रदान करते हैं (http://www.thecanadianencyclopedia.ca/en/article/distance-learning/)।

वैसे तो दूरस्थ शिक्षा के प्रथम विकास का आधार मुद्रित सामग्री थी। कनाडा, पहला था जिसने प्रौढ़ अधिगम हेतु नई तकनीकियाँ अपनाई। 1941 में CBC, कैनेडियन प्रौढ़ शिक्षा संघ तथा फेडेरेशन ऑफ एग्रीकल्चर ने साथ में फार्म रेडियो फोरम की शुरूआत की जिसके लिए रेडियो कार्यक्रम तथा अध्ययन समूह का प्रयोग किया। 1960 से आगे की शिक्षा हेतु माँग बढ़ी और विश्वविद्यालयों ने तकनीक आधारित कार्यक्रमों की शुरूआत की। इससे श्रव्य फिर दृश्य कॉनफ्रेन्सिंग साइट व्यापक रूप से विकसित की जाने लगी।

1970 में दूरस्थ शिक्षा की आवश्यकताओं को ज्यादा पहचान मिलने लगी, इससे प्रांतीय सरकारों द्वारा तीन संस्थाओं (जो दूरस्थ शिक्षा पर केन्द्रित हो) स्थापित किये गये। 1972 में अलबर्टा विश्वविद्यालय ने अथाबास्का विश्वविद्यालय (AU) की स्थापना की जहाँ विज्ञान व कला वर्ग के कोर्स तथा 'मुक्त प्रवेश तंत्र' प्रदान किये गये। AU मुद्रित सामग्रीयों तथा छात्र-शिक्षक पारस्परिक क्रिया (दूरभाष द्वारा) पर भरोसा करते थे। क्यूबेक् (Quebec) में टेले-विश्वविद्यालय (Tele-universite) की स्थापना की गई जहाँ क्रेडिट व बिना क्रेडिट वाले कोर्स प्रदान किये जाते थे। ब्रिटिश कॉलम्बिया ने मुक्त अधिगम संस्थान (Open Learning Institute-OLI) की 1978 में स्थापना की थी जहाँ पूरे क्षेत्र के विद्यार्थियों को मूल, तकनीकी, पेशा, व्यवसाय तथा विश्वविद्यालयी शिक्षा प्रदान की जाती थी।

ब्रिटिश कॉलंम्बिया विश्वविद्यालय (University of Biritsh Columbia-UBC) ने डिग्री, डिप्लोमा, सर्टिफिकेट कोर्स प्रदान करने हेतु मुक्त विश्वविद्यालय संघ (Open University Consortium) की स्थापना 1984 में की थी। यह संघ विद्यार्थियों को डिग्री के लिए कोर्स चुनने की अनुमति देता है जो संघ की तीनों विश्वविद्यालय व मुक्त अधिगम अभिकरण से

हो सकते हैं। अतः उसने क्रेडिट स्थानांतरण का संप्रत्यय व अभ्यास बढ़ाया है तथा क्रेडिट जमा करने का प्रस्ताव भी रखा है एवं क्षेत्रीय संघ का निर्माण जहाँ विकास, प्रावधान तथा सहायक नवाचार हेतु लागत का बंटवारा करना भी है। ऑनटेरियो लर्न (OntarioLearn) ने 1995 ने 28 कॉलेजों के संसाधनों को इक्ट्ठा किया है जिससे उ. अमेरिका में वह सबसे बड़ा कॉलेज स्तर के कोर्स प्रदान करने वाला बन जाये। अन्य है कैम्पस मैनीटोबा (Campus Mnaitoba, 1998) बी.सी. कैम्पस (2002), तथा ई-कैम्स अलबेर्टा (2003) (http://www.thecanadianencyclopedia.ca/en/article/distance-learning/)।

पूरे कनाडा में लगभग 100 सार्वजनिक विश्वविद्यालयों व कॉलेजों में दूरस्थ व ऑनलाइन शिक्षा में प्रतिस्पर्धा बढ़ रही है। ज्यादातर विश्वविद्यालय तथा कॉलेज दूरस्थ अधिगम व समिश्रित अधिगम विकल्प, अपने विद्यार्थियों को देते हैं। वर्तमान में जो विकास हुआ है वह है विश्वविद्यालयों द्वारा ऑनलाईन अधिगम, मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER) तथा व्यापक मुक्त ऑनलाइन कोर्स (MOOC) प्रदान करना।

यू.एस.ए

अन्य देशों की तुलना में यू.एस.ए. में दूरस्थ शिक्षा की भूमिका ज्यादा विस्तृत है। यू.एस.ए. में प्रौढ़ व सतत् शिक्षा के क्षेत्र में दूरस्थ शिक्षा की अहम भूमिका है। यू.एस.ए. में दूरस्थ शिक्षा का यह विलक्षण विकास वहाँ की तेजी से बढ़ते ज्ञान, उभरती तकनीकी, सतत् व आजीवन शिक्षा के कारण हुआ है। 1900 तक शिकागो विश्वविद्यालय में पत्राचार शिक्षण का पहला विभाग स्थापित हुआ। किन्तु इसका सबसे ज्यादा प्रयोग यू.एस. संघीय सरकार विशेष तौर पर सशस्त्र बल करते हैं।

यूनाइटेड स्टेट्स सशस्त्र बल संस्थान

इसकी स्थापना 1942 में मेडिसन (विस्कोन्सीन) में हुई थी। यह द्वितीय विश्व युद्ध तथा युद्धोत्तर काल में एक विशेष अभियान के साथ ससत्र सेवा के हजारों सदस्यों को शैक्षिक अवसर प्रदान करने हेतु विस्कोंसिन विश्वविद्यालय तथा 70 अन्य शैक्षिक संस्थानों के साथ कार्य किया। यह कार्य पर नियुक्त सेवा के दौरान दूरस्थ अधिगम द्वारा पाठ्यक्रम कार्य पूर्ण करने की अनुमति दिया। वायु सेना दूरस्थ अधिगम का पहला ग्रहणकर्ता था।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान USAFI ने छः लाख से ज्यादा अमेरिकी सैनिकों व महिलाओं के पत्राचार कार्यक्रम/कोर्स प्रदान किया। युद्ध के दौरान तथा जर्मनी व जापान के व्यवसाय के समय, संस्थान ने सेना चौकियों, जहाज पर तथा शल्य कक्ष तक में कक्षा कक्ष अनुदेशन प्रदान किये। संस्थान के कार्यक्रम, उच्च निरक्षरता तथा आरेखकार के निम्न कौशल दर के लिए अनिवार्य, बड़ा, विस्तृत सेवा युक्त शैक्षिक कार्यक्रम, को संपूरित किया। इस शैक्षिक प्रयास का उद्देश्य था अशिक्षित को शिक्षित करना जिसके लिए उन्हें कुछ हफ्तों की बुनियादी प्रशिक्षण देना अनिवार्य था तद्पश्चात उन्हें ऑटो, ट्रक तथा वायुयान मैकेनिक, लेखाकार, बढ़ई, डॉक्टर तथा औषधी विक्रेता सहायक, क्वाटर मास्टर, संकेतकारक, टॉपीडो-कारक तथा कई और विशिष्टताएँ में प्रशिक्षण देना। यहाँ तक कि जो बहुत शिक्षित तथा बहुत अच्छे आरेखकार हों उन्हें भी अभियांत्रिकी, मौसम विज्ञान, नौसंचालन, भाषा अनुवाद तथा ट्रॉमा औषधि में शिक्षण की आवश्यकता पड़ती है (http://us-education.et/2292-united-states-armed-forces-institute.html)।

इतिहास में किसी राष्ट्र ने कभी ऐसा कार्यक्रम नहीं खड़ा किया होगा जितना USAFI के विशाल शैक्षिक कार्यक्रमों के निर्माण में किया है। यह प्रत्येक छावनी में सेना द्वारा संचालित संयुक्त राज्य तथा तकनीक विद्यालयों में अभिनंदन केन्द्रों पर साक्षरता पाठ्यक्रमों को

सम्मिलित किया। साथ ही सशस्त्र बल ने संवीदात्मक व्यवस्था की स्थापना की जिसमें व्यावसायिक स्कूल, कॉलेज तथा विश्वविद्यालयों की सुविधा प्रदान की; जाँच सेवा कार्यकर्त्ता जो विशेष तौर पर विदेशी भाषा, अभियांत्रिकी, औषधीय, दन्तचिकित्सा, फौजी सरकार तथा अन्य व्यावसायिक कौशलों में विकसित हैं। अतः यह एक अनूठा दूरस्थ शिक्षा संगठन है जहाँ व्यापक श्रृंखला के पत्राचार कोर्स प्रदान करता है जहाँ सशस्त्र बलों को माध्यमिक तथा परा-माध्यमिक, व्यावसायिक तथा पारंपरिक शिक्षा प्राप्त करने में समर्थ बनाना है। दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम का (USAFI) का मुख्य उद्देश्य है सिपाहियों, नाविकों तथा वायुसैनिकों को सक्रिय सेवाओं से सेवानिवृति के पश्चात पुनः बहाली को सुगम बनाना।

विश्वविद्यालयों के विस्तार शिक्षा विभाग व स्वतन्त्र अध्ययन संस्थान

विश्वविद्यालयों के विस्तार शिक्षा विभाग एवं स्वतंत्र अध्ययन संस्थान दूरगामी व्यावसायिक, तकनीकी एवं पेशा-केन्द्रित कार्यक्रम प्रदान करते हैं, इसके अतिरिक्त लोगों को अपने व्यवसाय में स्वयं को अद्यतन रखने हेतु सतत शिक्षा कार्यक्रमों को भी प्रदान करना है। यह ऐसे विश्वविद्यालय हैं जो अपने पत्राचार संस्थानों/विभागों के लिए जाने जाते हैं- ब्रींघम यंग युनिवर्सिटी; युनिवर्सिटी ऑफ मिसौरी, युनिवर्सिटी ऑफ नेब्रासका; इंडियाना यूनिवर्सिटी; पेनसिलवेनिया स्टेट युनिवर्सिटी; टेक्सास टेक्निकल यूनिवर्सिटी; यूनिवर्सिटी ऑफ विस्कॉनसिन; लुइसियाना स्टेट यूनिवर्सिटी; यूनिवर्सिटी ऑफ मिन्नेसोटा तथा यूनिवर्सिटी ऑफ कैलीफोर्निया।

दृष्टिबाधित हेतु हैडले स्कूल

विलियम हैडले तथा डा.इ.वी.एल. ब्राउन ने इसकी स्थापना 1920 में इल्लीनॉयस (विन्नेटका) में की थी जहाँ दृष्टिबाधित व मंद दृष्टि वाले विद्यार्थियों व उनके परिवारों को मुफ्त शिक्षा दी जाती है तथा दृष्टिहीन व्यावसायी को शिक्षण हेतु वहन करने योग्य शुल्क ही देना होता है। इस विद्यालय का अभियान है– दृष्टिहीन या मंद दृष्टि वाले लोग उनके परिवारों तथा सेवायें प्रदान करने वालों को आजीवन दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों द्वारा स्वतंत्र जीवन के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

आज हैडले स्कूल, दृष्टिबाधित व मंद दृष्टि वाले लोगों को दूरथ शिक्षा प्रदान करने वाली सबसे बड़ी संस्थान है जो दुनिया भर में 90,000 से ज्यादा विद्यार्थियों को वार्षिक, सेवाएँ प्रदान करते हैं। (http://www.hadley-edu/About Hadley.asp)।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

3) ब्रिटिश कॉलाम्बिया द्वारा दी जा रही 'अधिगम स्वायत्ता' का विवरण दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

4.5.2.2 दक्षिण एवं मध्य अमेरिका

दक्षिण व मध्य अमेरिका में दूरस्थ शिक्षा के अभ्यास के बारे में अंग्रेजी में जानकारी कम है। इस क्षेत्र में कुछ देश जैसे कोस्टा, रिका, वेनेजुयेला, अर्जेन्टीना तथा ब्राजील ने दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में अच्छा विकास किया है। इस भाग में हम इन देशों में दूरस्थ शिक्षा की स्थिति का संक्षिप्त विवरण देंगे।

ब्राजील

पहला ब्राजीलियन विश्वविद्यालय जहाँ दूरस्थ शिक्षा का विकास हुआ वह था युनिवर्सिटी ऑफ ब्रेसीलिया जिसमें मेल, व्यक्तिगत मीटिंग तथा मुद्रित सामग्री द्वारा विद्यार्थियों को पढ़ाया जाता था। 1980 में ब्राजील के मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना हुई थी। 90 के दशक में बाहीया के फेडेरल विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ एजूकेशन ने वैकल्पिक दूरस्थ शिक्षा (Distance Education-D.E.) की शुरूआत की तथा बाहीया राज्य के दूर दराज़ क्षेत्रों के पब्लिक स्कूल में कार्यरत शिक्षकों के लिए स्नातक कोर्स भी शुरू किया। (फ्रीटास, 2004, http://www.davidpublisher.org/Public/uploads/contribute/5658177481e2f.pdf)।

2006 में ब्राज़ील के शिक्षा मंत्रालय ने मुक्त विश्वविद्यालय तंत्र का सृजन इस विचार से किया कि वे सभी संस्थान जो पहले से ही दूरस्थ माध्यम से कोर्स प्रदान कर रहे हैं उन्हें एकत्र करना जिससे दूरस्थ शिक्षा क्षेत्र में कोई नई संस्थान बनाने की आवश्यकता न हो। इस तरह से ब्राज़ील मुक्त विश्वविद्यालय (अर्थात यूनिवर्सिडेड एबेर्टा डो ब्रासील, UAB) नगर पालिका में उच्च शिक्षा लाने का लक्ष्य रखता है जिसमें वह कॉलेज जो आवश्यकताओं की पूर्ति करने में अपर्याप्त है नहीं शामिल हैं। ऐसे शिक्षक जो स्नातक तो हैं पर प्रारम्भिक प्रशिक्षण प्राप्त नहीं किया है उन्हें सतत् शिक्षा प्रदान करना ही इसका उद्देश्य है। UAB उन सार्वजनिक/राजकीय विश्वविद्यालयों के साथ एकीकरण व समन्वयन के साथ कार्य करती है जिससे ब्राज़ीलियन नगर पालिका को उच्च शिक्षा प्रदान की जा सके तथा शिक्षकों को बुनियादी शिक्षा के प्रशिक्षण की आवश्यकता की पूर्ति हो। इसके लिए तंत्र ने क्षेत्रिय, राजकीय एवं नगर निगम सरकारों के साझेदारी की स्थापना की (कैस्ट्रो नेटो एट आल, 2009, p.72, at http://www.davidpublisher.org/Public/uploads/contributs/5658177481e2f.pdf)।

इसके अतिरिक्त कई ऐसे विश्वविद्यालय हैं जो पुर्तगाली माध्यम में दूरस्थ शिक्षण कोर्स/प्रोग्राम प्रदान करते हैं।

कोस्टा रिका

विकासशील देशों में से एक कोस्टा रिका में दूरस्थ शिक्षा का महत्त्व शिक्षा के क्षेत्र में बढ़ता जा रहा है। कोस्टा रिका में सबसे ज्यादा जाना-माना दूरस्थ शिक्षा की सुविधा देने वाली संस्थाएँ हैं – UNED (La Universidad Estaal a Distancia)। इसकी स्थापना 1977 में कुछ उद्देश्यों की पूर्ति के लिये किया गया, जैसे – ग्रामीण जनसंख्या को शिक्षित करना तथा युवाओं का बड़े शहरों की ओर पलायन को दबाना, एवं विशिष्ट क्षेत्रों में लोगों को शिक्षित करना जैसे शिक्षा एवं स्वास्थ्य। नियोक्ता व विद्यार्थियों द्वारा इसको सम्मानजनक माना जाता है। UNED ने व्यावसायिक अनुकूलन डिप्लोमा व डिग्री की श्रृंखला का विकास किया; इसमें सामान्य अध्ययन तथा शैक्षिक विज्ञान, शैक्षिक प्रशासन, व्यावसायिक प्रशासन, लोक प्रशासन तथा बैंकिंग, कृषि प्रबन्धन व परिचर्या, स्वास्थ्य सेवाएं व बाल समाज सेवाएँ जैसे व्यावसायिक अध्ययन भी शामिल हैं।

UNED ने कुछ विस्तार शिक्षा के कार्यक्रम प्रारंभ किये जैसे- पर्यावरणीय अध्ययन, भूगोल शिक्षण, व्यावसायिक शिक्षा, स्वास्थ, पारिवारिक जीवन, कृषि, शिल्प आदि जैसे वैज्ञानिक रूचियों व विस्तार अध्ययन का विकास। इसके अलावा विश्वविद्यालय मुक्त अध्ययन करने की सुविधा देता है जिसमें (छात्र कोई भी डिप्लोमा या डिग्री स्तर के प्रोग्राम को ले सकता है। 1980 से विश्वविद्यालय, लोक-शिक्षा मंत्रालय के साथ सहयोग से कोर्स सामग्री के विकास तथा मंत्रालय के लिए शिक्षकों को प्रशिक्षित करता है।

वेनेजूयेला

वेनेजूयेला की सरकार ने यूनिवर्सिडेड नेशीयोनल एबीयर्टा (Universidad Naicional Abierta-UNA) की स्थापना 1977 में मुक्त विश्वविद्यालय के सिद्धान्तों पर किया। विश्वविद्यालय के मुख्य लक्ष्य एवं उद्देश्य हैं:

- राष्ट्रीय विकास की प्राथमिकता वाले क्षेत्र को देखते हुए व्यावसायिकों को प्रशिक्षित करना।
- जो पारंपरिक उच्च शिक्षा के संस्थानों में नहीं जा सके उन्हें शिक्षा के अवसर प्रदान करना।

इसका एक राष्ट्रीय केन्द्र केरेकास (Caracas) में है तथा क्षेत्रीय केन्द्र पूरे देश भर में हैं। UNA में दूरस्थ शिक्षा को श्रेष्ठता का केन्द्र स्थापित है। यह ज्यादातर औपचारिक शैक्षिक पाठ्यक्रम प्रदान करता है किन्तु इनमें दाखिले से पूर्व विद्यार्थियों को आरंभिक/प्रावेशिक कोर्स को पूरा करना आवश्यक है जो दूरस्थ अधिगम अभ्यास के लिए अनुकूलन कर सकें। आरंभिक कोर्स पूरा करने पर छात्र आगे के डिग्री कार्यक्रमों के लिए जा सकते हैं जिसमें सामान्य अध्ययन के बाद व्यावसायिक अध्ययन की ओर अग्रसर होते हैं। जहाँ सामान्य अध्ययन अन्त-अनुशासनीय बुनियाद प्रदान करता है जो बाद के लम्बे व्यावसायिक अध्ययन के लिए मार्ग सुगम बनाता जैसे- प्रशासन, शिक्षा, अभियांत्रिकी, गणित आदि।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

4) (वेनेजूयेला) दूरस्थ शिक्षा तंत्र का मध्यएंव दक्षिण. अमेरीका के अन्य देशों विशेषकर कोस्टा रिका में क्या उल्लेखनीय अंतर है?

.....

.....

.....

.....

.....

4.5.2.3 कैरेबिया

कैरीबियन विश्व का वह क्षेत्र जिसके अन्तर्गत केरीबियन सागर व सारे द्वीप आते हैं (कुछ स्वतन्त्र देश हैं तथा अन्य विदेशी देशों के क्षेत्र हैं)। केरिबीयन क्षेत्र में लोकप्रिय विश्वविद्यालय जो मुक्त व दूरस्थ शिक्षा में कार्यक्रम प्रदान करते हैं वे हैं :

वेस्ट इंडीज़ विश्वविद्यालय जिसका दूरस्थ शिक्षा केन्द्र है – UWIDEC; एन्टोन डी कॉम यूनिवर्सिटी ऑफ सुरीनेम (AdeKUS); यूनिवर्सिटी क्यूसक्या इन हैटी (Universite Quisqueya in Haiti-UniQ); गूयाना विश्वविद्यालय; तकनीकी विश्वविद्यालय, जमैका (UTech)। यह सारे विश्वविद्यालय विकास के विभिन्न स्तर पर थे तथा गुणवत्ता शिक्षा प्रदान की अलग-अलग क्षमता रखते थे (UNESCO, 2012, http://unesdoc.unesco.org/images/0021/002197/210711e.pdf)।

यद्यपि, तीन देशों में राष्ट्रीय दूरस्थ शिक्षण संगठन हैं परन्तु इस क्षेत्र के अन्य देशों में नहीं हैं। इस क्षेत्र में दूरस्थ शिक्षा को विकसित करने व सहयोग देने के लिए एक क्षेत्रीय दूरस्थ शिक्षा तंत्र 'द केरिबीयन रीजनल एसोसियेशन फॉर डिस्टेन्स एण्ड ओपन लर्निंग' (CARADOL) की 2004 रूपरेखा, तैयार की गई, प्रचार किया गया तथा विकसित किया गया तथा फरवरी, 2005 में शुरू किया गया। इस तरह के राष्ट्रीय संगठनों द्वारा CARADOL जैसे क्षेत्रीय संस्थानों के कार्य को मजबूत करते हैं।

4.5.3 एशिया

पिछले छः दशकों से एशिया में मुक्त व दूरस्थ शिक्षा का जबरदस्त विकास हुआ है। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा, पारंपरिक की तुलना में व्यवहार्य, प्रभावी, पूरक या वैकल्पिक तंत्र की तरह पहचाना गया है,। इस क्षेत्र के कई देशों ने मुक्त विश्वविद्यालयों की शुरूआत कर ली है। जगह व उद्देश्यों की कमी के कारण हम कुछ चुने हुए देशों के दूरस्थ शिक्षा के बारे में चर्चा करेंगे।

बाँग्लादेश

देश के शैक्षिक आवश्यकताओं के औचित्य को समझते हुए बाँग्लादेश इंस्टीट्यूट ऑफ डिस्टेन्स एजूकेशन (BIDE) की स्थापना शिक्षा मंत्रालय ने 1985 में की थी जिसने NIEMT की जगह ली।

BIDE द्वारा कुछ महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम हैं :

- सेवारत विद्यालय शिक्षकों के लिए स्नातक (शिक्षा) कोर्स;
- विद्यालय शिक्षकों के लिए नियमित प्रसारण व विडियो;
- प्राथमिक शिक्षकों का प्रशिक्षण संस्थान व राष्ट्रीय एकेडमी को सहयोग; तथा
- सेवा-पूर्व व सेवारत प्राथमिक विद्यालय शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए प्राथमिक शिक्षा।

BIDE की सफलता ने नीति निर्धारकों को प्रोत्साहित किया कि वे मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए मुख्य नियोजन करें। अक्टूबर, 1992 में बाँग्लादेश मुक्त विश्वविद्यालय (BOU) एक सच्चाई बन कर उभरा। BIDE का BOU में विलय हो गया, जो देश का अकेला लोक संस्थान है जो दूरस्थ माध्यम से शिक्षा प्रदान करता है। इसकी कोशिश हर वर्ग के लोगों को शिक्षा का अवसर प्रदान करना तथा शिक्षा की गुणवत्ता को सुधार कर कुशल एवं प्रशिक्षित जन बल तैयार करना है।

विश्वविद्यालय का मुख्य उद्देश्य है, प्रत्येक स्तर के शिक्षा को विभिन्न आयाम जैसे विज्ञान, कृषि, मानविकी, सामाजिक विज्ञान आदि को डिजिटल तकनीक सहित विविध साधनों से दिया जाये। इस प्रकार BOU ने केवल उच्च शिक्षा प्रदान करता है अपितु मानव संसाधन विकास के शैक्षिक व प्रशिक्षण की आवश्यकताओं को भी पूरा करता है। यह 26 औपचारिक कार्यक्रम तथा 16 अनौपचारिक कार्यक्रम प्रदान करता है जहाँ चार लाख दस हजार छः सौ चौरानबे विद्यार्थियों का नामांकन हो चुका है (http://www.bou.edu.bd)।

चीन

चीन का दूरस्थ/पत्राचार शिक्षा की पुरानी परंपरा है लगभग बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से ही बढ़ती हुई जनसंख्या तथा लोगों का शैक्षिक आधार का विस्तार करने की बढ़ती हुई मांग, श्रमिकों के कौशल में सुधार के लिए तथा सांस्कृति क्रांति की जागरूता का विस्तार आदि ने चीन के द्विपद्धतीय विश्वविद्यालयों में दूरस्थ शिक्षा की स्थापना की अनिवार्यता बढ़ाई। 1960 में दूरदर्शन विश्वविद्यालय की स्थापना बीजिंग, शंघाई, शेनयेंग तथा अन्य शहरों में हुई थी जहाँ प्रौढ़ विद्यार्थियों के शिक्षा के सुधार के लिए सुविधाजनक साधन देना था। शंघाई नगर निगम के अंतर्गत संघाई दूरदर्शन विश्वविद्यालय प्रौढ़ उच्च शिक्षा का एक संस्थान है तथा चीन का सबसे पहल रेडियो व टेलीविजन विश्वविद्यालय भी है। STVU ने एशिया, ब्रिटेन व संयुक्त राज्य (यू.एस.) के विश्वविद्यालयों के साथ सहयोगपूर्ण संबंध बनाये हैं।

चीन सेंट्रल रेडियो व दूरदर्शन विश्वविद्यालय (CCRTVU/CRTVU) : CCRTVU/CRTVU, एक समर्पित दूरस्थ शिक्षा संस्थान है जो चीन में बहु-माध्यमों द्वारा कोर्स प्रदान करते हैं जैसे- रेडियो, टी.वी., मुद्रित, श्रव्य-दृश्य सामग्री एवं कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर। 28 क्षेत्रिय टी.वी. विश्वविद्यालय (PRTVU) संगठनों के साथ CCRTVU की स्थापना 6 फरवरी, 1979 को हुई। यह विभिन्न स्तर पर चलाया जाता है, केन्द्रिय व स्थानीय स्तर पर जहाँ CCRTVU केन्द्र में रहता है तथा सारे नियोजन का समस्त आधार होता है (http://www.uirtualschools and college.eu/index.php/open_Unitversity_of_China)।

CCRTVU चीन के श्रमिकों को शैक्षिक अवसर प्रदान करता है। इस विश्वविद्यालय में प्रवेश मुख्यतः परीक्षा द्वारा होती है। सभी अनुदेशन मुख्यतः टेलीविजन, सहायक लिखित सामग्री तथा आमने-सामने सत्र द्वारा दिये जाते हैं। विश्वविद्यालय, विज्ञान, तकनीकी, सामाजिक विज्ञान आदि में डिग्री कार्यक्रम भी प्रदान करता है। 2009 में इसने अपना नाम बदल कर युनिवर्सिटी ऑफ चाइना (OUC) रख लिया।

चीन मुक्त विश्वविद्यालय : चीन मुक्त विश्वविद्यालय 'मुक्तता, उत्तरदायित्व, गुणवता, विविधता व अन्तर्राष्ट्रीकरण' के शैक्षिक धारणा का समर्थन करता है। यह विश्वविद्यालय बिना डिग्री के सतत् शिक्षा का तेजी से विस्तार कर रही है यद्यपि आजीवन शिक्षा हेतु एक 'उपरगामी सेतु' निर्माण हेतु शिक्षा के साथ आधुनिक तकनीक के समाकलन द्वारा डिग्री सतत् शिक्षा के विकास हेतु निरंतर प्रयासरत है। ये दोनों ही डिग्री व बिना डिग्री की शिक्षा को बराबर का महत्त्व देते हैं। वर्तमान में 3.59 बिलियन छात्र पंजीकृत हैं जिनमें से 1.05 मिलियन पूर्व स्नातक तथा 2.54 मिलियन जूनियर कॉलेज छात्र हैं। इनमें से 200,000 ग्रामीण छात्र, 100.000 फौजी कर्मचारी तथा 6000 विकलांग छात्र हैं। OUC की स्थापना, RTVU तंत्र के इतिहास में एक नयी सफर का आगाज़ है (http://en.ouchn.edu.cn/index.php/about-v2/new-style-university)।

क्रेडिट बैंकः OUC की सबको आजीवन अधिगम प्रदान करने की कोशिश है। इसके अनुसार ही, विश्वविद्यालय ने क्रेडिट बैंक तंत्र की स्थापना की है। जिसमें क्रेडिट प्रत्यायन, स्थानांतरण व अभिगम्यता जैसे कार्य शामिल हैं। प्रत्येक अधिगमकर्त्ता को अपना एक आजीवन अधिगम का पोर्टफोलियो होता है। अधिगमकर्ता एकत्रीकरण नियम के अनुसार अपने क्रेडिट एकत्र करते हैं। जब वे काफी क्रेडिट एकत्र कर लेते हैं तो समरूपी सर्टिफिकेट के लिए आवेदन कर सकते हैं। क्रेडिट बैंक, क्रेडिटस का विभिन्न संस्थानों व प्रशिक्षण संस्थानों में आपसी पहचान व स्थानांतरण को आधार देने का प्रयास करता है। सामाजिक सदस्यों को यह क्रेडिट एकत्र करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है जिससे

डिग्री की शिक्षा तथा बना-डिग्री की शिक्षा को जोड़ा जा सके। इस प्रकार के 'सरल मार्ग' के निर्माण से, OUC आजीवन अधिगम के लिए आगे बढ़ रहा है।

वृद्ध प्रौढ़ों हेतु मुक्त विश्वविद्यालय : इस विश्वविद्यालय का OUC आर्थिक संरक्षक है तथा इसका निर्माण संयुक्त रूप से राष्ट्रीय वृद्धता कार्यकारिणी समिति जो नागरिक मामलों मंत्रालय के अधीन आता है तथा व्यावसायिक कौशल परीक्षण विशेषज्ञ जो मानव संसाधन व सामाजिक सुरक्षा मंत्रालय के अधीन है। इसका लक्ष्य है डिग्री व बिना उपाधि (डिग्री) शिक्षा को वृद्ध प्रौढ़ों को प्रदान करना तथा पेन्शन स्टाफ संस्थान के व्यावसायिक स्टाफ को भीयहसुविधा देना। चीन की वृद्ध होती जनंसख्या की समस्या कोयहसक्रिय रूप से संबोधित करता है – वृद्धों की विविध अधिगम आवश्यकताओं की पूर्ति; व्यावसायिक स्टाफ के प्रशिक्षण व विकास को गतिमान करना; आजीवन अधिगम तंत्र का निर्माण व समाज का विकास करना तथा उन्हें महसूस कराना कि इस सूक्ति द्वारा 'व्यक्ति का सीखने के लिए कोई उम्र नहीं होती न ही खुशी से जीने के लिए कोई उम्र बाधा है, ख्याल रखने की कोई उम्र नहीं होती और न ही योगदान देने की कोई उम्र है' (http://en.ouchn.edu.cn/index.php/the-open-university-for-older-adults)।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

5) चीन के दूरस्थ शिक्षा तंत्र का एशिया के अन्य देशों से अंतर स्पष्ट करें?

.....

.....

.....

.....

.....

हाँगकाँग

हाँगकाँग मुक्त विश्वविद्यालय (पूर्वर्ती मुक्त अधिगम संस्थान) के अतिरिक्त हाँगकाँग में लगभग 40 संस्थान है। जो विभिन्न विषयों में दूरस्थ शिक्षा पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं।

हाँगकाँग मुक्त विश्वविद्यालय : इसकी स्थापना 1989 में हाँगकाँग सरकार द्वारा किया गया था। यह पूरे तौर पर प्रत्यापित व मान्यता प्राप्त अकेला विश्वविद्यालय है जो दूरस्थ अधिगम द्वारा अपने कार्यक्रम पहुँचाता है। HKSAR सरकार के एजुकेशन ब्यूरो के संरक्षण में यह एक स्ववित्तपोषित लोक संस्थान के तौर पर विश्वविद्यालय डिग्री तथा अन्य अहर्ताएँ जो हाँगकाँ सरकार द्वारा स्थापित विश्विविद्यालय के बराबर है, प्रदान की जाती हैं (http://www.distancelearningportal.com/universities/10512/open-university-of-hong-kong.html)।

भारत

भारत में दूरस्थ शिक्षा के बारे में इकाई-1 व 3 में बहुत विस्तारपूर्वक चर्चा की गई है। हम इसकी पुनरावृत्ति नहीं करेंगे। आप इकाई-1 व 3 को पढ़ कर स्मृति को अद्यतन कर सकते हैं।

इंडोनेशिया

इंडोनेशिया एक द्वीप-समूह है जिसमें 8,000 द्वीप शामिल हैं, जहाँ शैक्षिक प्रावधान/व्यवस्था में एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में गंभीर असमानताएँ हैं। जो छोटे प्रान्तों या ग्रामीण इलाके में रहते हैं उनको अपने गृह क्षेत्र को छोड़े बिना अच्छी शिक्षा पाने में मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। देश में 200 से ज्यादा विश्वविद्यालय हैं जो पंजीकृत विद्यार्थियों के मुकाबले बहुत कम हैं (http://unlcanpost.com9791/future-distance-learning-indonesia)।

इंडोनेशिया के प्रत्येक कोने में 1984 से 1997 तक लगभग 1800 निजी विश्वविद्यालय बना दिये गये थे। वे निजी विश्वविद्यालय तथा 86 लोक परंपरागत विश्वविद्यालय अब दूरस्थ शिक्षा की ओर तेजी से अग्रसर हो रहे हैं क्योंकि वे इसे आर्थिक रूप से लाभप्रद मान रहे हैं तथा वेयहभी मानते हैं कि दूरस्थ शिक्षा तंत्र तुलनात्मक तौर पर सरल व सुगम हैं' (http://citeseers.ist.psu.edu/viewdoc/download?doi=10.1.1.582.596&rep.=repl&type=pdf)। इंडोनेशिया का लोकप्रिय मुक्त विश्वविद्यालय, युनिवर्सिटास टर्ब्यूका (Universitas Teruka) है। इसकी संक्षिप्त में चर्चा करेंगे।

टर्ब्यूका विश्वविद्यालय : 1984 में स्थापित इस मुक्त विश्वविद्यालय का लक्ष्य है सेवारत शिक्षकों, कामकाजी व्यस्कों तथा नये हाई स्कूल स्नातकों के लिए विश्वविद्यालयी शिक्षा के अवसर व प्रवेश में वृद्धि करना। मुद्रित सामग्री पर निर्भरता के अतिरिक्त, यह रेडियो व टेलिविज़न द्वारा विभिन्न रूपों में अनुदेशन प्रारम्भ कर बहु-माध्यम अनुदेशन सामग्री भी दे रहा है। 2006 में इस ने 320,000 से भी अधिक विद्यार्थियों को, जो देश के विभिन्न क्षेत्रों से आते हैं तथा जिनमें 95% कार्यरत वयस्क हैं; पंजीकृत किया है। अपनी स्थापना के दिन से ही इसने 1.2 मिलियन विद्यार्थियों को पंजीकृत किया है तथा 600,000 भूतपूर्व विद्यार्थियों को निकाला है जो अब विभिन्न क्षेत्रों में काम करते हैं (http://files.eric.ed.gov/fulltext/ED496534.pdf)।

जिनके पास भी उच्च माध्यमिक विद्यालय का डिप्लोमा है उन्हें यह विश्वविद्यालय 'मुक्त प्रवेश' प्रदान करता है। विद्यार्थियों को किसी भी प्रकार की परीक्षा अथवा साक्षात्कार का सामना करने की आवश्यकता नहीं है। 'मुक्त प्रवेश' के लिए एक ही अपवाद है कि उन्हें प्रवेश के लिए शिक्षा संकाय में पंजीकृत होना होता है। इंडोनेशिया व विश्वभर में यह स्नातक व परास्नातक स्तर पर विद्यार्थियों को कई शैक्षिक उपाधि के पाठ्यक्रम प्रदान करता है। राष्ट्रीय विकास हेतु यह व्यावसायिक व शैक्षिक कार्यक्रम प्रदान करता है। इनमें अग्रलिखित विषय शामिल हैं – प्रबन्ध, लेखा शास्त्र, शिक्षक प्रशिक्षण, जीव-विज्ञान तथा अर्थशास्त्र तथा अन्य (https://www.lean4good.com/colleges/online-courses-universities-iondonesia.htm)।

ईरान

1979 की क्रांति के बाद ईरान देश की 16 विश्वविद्यालयों को बंद कर दिया जो परंतु इस्लामी निरीक्षण के अधीन 1982 व 1983 में धीरे-धीरे पुनः खोले गये। जब तक विश्वविद्यालय बंद थे उस दौरान कल्चरल रेवोल्यूशन कमिटी ने प्रोफेसरों व शिक्षकों की जाँच-पड़ताल की तथा जो मार्क्सवाद, उदारतावाद व अन्य साम्राज्यवादी विचारधारा के समर्थक थे उन्हें हटा दिया गया। यूनिवर्सिटी, इस्लामी पाठ्यक्रम के साथ पुनः खुली। (https://en.wikipedia.org/wiki/Education-in-Iran)।

पयामे नूर विश्वविद्यालय :

यूनिवर्सिटी ऑफ एबूरीहेने बिरौनी तथा ईरान मुक्त विश्वविद्यालय को समाहित करने के पश्चात् 1988 में एक अनोखी ODL संस्थान, के रूप में पयामे नूर विश्वविद्यालय को स्थापित किया गया। इसकी स्थापना, विद्यालय में स्टाफ की कमी तथा तृतीय स्तर पर सदस्यों के दबाव की चुनौतियों को पूरा करने के लिए हुई थी। यह उच्च शैक्षिक स्तर पर ईरान के लोगों की सांस्कृतिक, वैज्ञानिक, धार्मिक तथा भाषायी आवश्यकताओं को पूरा करने का लक्ष्य रखता है। जो शैक्षिक उपाधि वह प्रदान करता है, वे सभी किसी भी अन्य राज्य विश्वविद्यालयों के दर्जे जैसे ही मान्य हैं। इसने 28 अध्ययन केन्द्रों पर पहली भर्ती पाँच डिग्री कार्यक्रमों में किया। वर्तमान में इसके 502 स्थानीय अध्ययन केन्द्र तथा परिसर हैं जो पूरे देश भर में फैले हैं तथा 31 क्षेत्रीय केन्द्र इनकी व्यवस्था/प्रशासन देखते हैं। उसका एक दफ्तर विश्वविद्यालय के मुख्यालय तेहरान में है जो 'समन्वयन व नियोजन का अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन केन्द्र है'। यहाँ लगभग 3,148 संकाय सदस्य हैं तथा 940,515 विद्यार्थी हैं (http://pnu.ac.ir/ortal/Home/Default.aspx?CategoryID= 07bf5d3d-96de-4f9a-ac79-61e5704dc4d9)।

इज़राइल

इज़राइल मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना 1974 में हुआ था जिसका ध्येय था इज़राइली समाज में उच्च शिक्षा हेतु अवसर का विस्तार करना। यह इस महत्त्वपूर्ण उद्देश्य को उपलब्ध कराने के लिए अनोखी मुक्त दाखिले की नीति तथा कड़े शैक्षिक स्तर को व्यापक लाभदायक दूरस्थ अधिगम विधियों के साथ मिश्रित करके किया जा सकता है। यह पूर्व-शैक्षिक व्यावसायिक तथा प्रौढ़ शिक्षा कोर्स प्रदान करता है। अन्य विश्वविद्यालय से भिन्न, इज़राइल में प्रवेश के लिए कोई हाई-स्कूल डिप्लोमा या परीक्षा की आवश्यकता नहीं होती है। यह पंजीकरण में लचीलापन दर्शाता है। विद्यार्थियों को किसी विशेष डिग्री कार्यक्रम के लिए आवेदन करने की आवश्यकता नहीं होती है। वे कोर्स के आधार पर पंजीकृत हेते हैं तथा अपनी ही गति से उस डिग्री के लिए आगे बढ़ते हैं। जो कार्य अथवा वैयक्तिक उत्तरदायित्व के कारण पारंपरिक विश्वविद्यालय नहीं जा पाते, उनके लिए पाठ्यक्रम के अनुसार लचीला पंजीकरण उच्च शिक्षा का मार्ग प्रदान करता है। इसमें युवा प्रौढ़ जो कार्य करते है, सिपाही/फौजी जो सक्रिय ड्यूटी में लगे हैं, प्रतिभावान हाई स्कूल विद्यार्थी, व्यावसायिक जो उच्च डिग्री प्राप्त करना चाहते हैं, अति कट्टरपंथी हरेडी पुरूष व महिलाएँ तथा ड्रज़, इसाई व मुसलमान अरबी जैसे विद्यार्थी हैं (http://afoui.org/about-the-open-university-of-israel/open-university-of-israel)।

इसकी नवीन शिक्षण विधि, स्वतंत्र, अध्ययन पर आधारित है। विद्यार्थी संपूर्ण कोर्स सामग्री प्राप्त करते हैं तथा कोर्स वेबसाईट दिशाबोधकों, सहपाठियों तथा अतिरिक्त संसाधन हेतु ऑनलाईन सहायता प्रदान करते हैं। छात्र घर में पढ़ते हैं तथा प्रदत्त कार्य भी ऑनलाईन ही जमा करते हैं। वे शिक्षण व अन्तःक्रिया अध्ययन केन्द्र (जो इज़राइल में सभी जगह है) में पा सकते हैं। शैक्षिक सत्यनिष्ठा सुनिश्चित करने के लिए विद्यार्थी अंततः परीक्षा केन्द्र पर निश्चित समय में स्वतः परीक्षा दे सकते हैं।

जापान

अगर इतिहास पलटे तो, जब जापान में कोई पाठ्यक्रम पुस्तक नहीं थी (19वीं शताब्दी के अंत में), जब 'लेक्चर नोट्स' उच्च शिक्षा के लिए प्रयोग होते थे तब दूरस्थ शिक्षा वहाँ थी। प्रोफेसरों द्वारा दिये गये नोट्स ही अधिगम सामग्री थी जिन पर छात्र निर्भर थे। जापान की जानी-मानी वसेदा विश्वविद्यालय ने सबसे पहले इस तंत्र को लागू किया था। जो किसी

पाठ्यक्रम को पढ़ने हेतु टोक्यो नहीं आ सकता वे इस माध्मय से पढ़कर परीक्षा देकर सर्टिफिकेट पा सकते थे। इसे जापान में दूरस्थ शिक्षा या 'पत्राचार शिक्षा' का जन्म समझा जाता है (Kumiko Aoki, 2012)।

1950, मौजूदा परिसरीय विश्वविद्यालय द्वारा मूलतः दूरस्थ शैक्षिक कार्यक्रम प्रदान किये जाते थे तथा इनसे पाये क्रेडिट को परिसरीय विश्वविद्यालय के कार्यक्रमों में स्थानांतरण किया जा सकता था। 1978 में राष्ट्रीय 'प्रसारण शिक्षा विकास केन्द्र' (National Centre for Development of Broadcast Education) की एक राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों की सहयोगी संस्थान के तौर पर स्थापना हुई थी जो शिक्षा मंत्रालय के प्रत्यक्ष-नियंत्रण में था। यह यूनिवर्सिटी ऑफ द एयर ऑफ जापान (UAJ) के स्थापना की तरफ पहला नियोजित कदम था। यह जापान का पहला स्वतन्त्र एक मात्र दूरस्थ शिक्षा का शैक्षिक संस्थान था। वर्तमान में शिक्षण व अधिगम को चार तरीके से प्रदान किया जा सकता हैः (1) मुद्रित सामग्री-आधारित, (2) प्रसारण-आधारित, (3) आमने-सामने विद्यालयीकरण तथा (4) संचार-माध्यम आधारित।

1998 में, दूरस्थ शिक्षा द्वारा स्नातक कार्यक्रम को भी आधिकारिक रूप से पहचाना जाने लगा। 2003 में दूरस्थ शिक्षा द्वारा डॉक्टर उपाधि वाले कोर्स भी आधिकारिक तौर पर शुरू किये गये। 2011 में, लगभग 270,236 पूर्व स्नातक छात्र दूरस्थ शिक्षा द्वारा स्नातक उपाधि लेने लगे जो 44 विश्वविद्यालयों में प्रदान किया जा रहा है। पूरे उच्चतम शिक्षा पंजीकृत विद्यार्थियों में इनकी संख्या 7.57 थी। साथ ही 8,241 स्नातक छात्र 27 विश्वविद्यालयों से परा-स्नातक डिग्री के लिए आगे बढ़ रहे हैं।

जापान मुक्त विश्वविद्यालय : इसकी स्थापना 1981 में हुई थी तथा अप्रैल, 1985 में अपना टेलीविजन व रेडियो प्रसारण से शिक्षा शुरू किया। जापान में यह अकेला दूरस्थ शिक्षा विश्वविद्यालय है जिसे सरकार द्वारा शासनाधिकार दिया गया है कि वह प्रसारण के हवाई तरंगों का प्रयोग कर सकता है। इसके उद्देश्य व लक्ष्य थे – (Kumiko Aoki, 2012):

a) कार्यरत लोगों व गृहणियों को आजीवन विश्वविद्यालय स्तरीय शिक्षा को प्रदान करना;

b) हाई स्कूल स्नातकों को विश्वविद्यालय स्तरीय शिक्षा के लिए नवीन व लचीला तंत्र प्रदान करना; और

c) मौजूदा विश्वविद्यालयों के साथ सहयोग करना तथा नवीन शैक्षिक तकनीक व नवीनतम वैज्ञानिक ज्ञान का भरपूर प्रयोग करना जिससे ऐसे उच्च शिक्षा का तंत्र प्रदान किया जाये जो समकालीन/आधुनिक आवश्यकताओं से मेल खा सके।

डिजिटल कम्यूनिकेशन सैटेलाईट द्वारा 1998 में यह विश्वविद्यालय पूरे देश में भर प्रसारण शुरू कर दिया। परन्तु पाठ्य पुस्तकें अध्ययन सामग्री के तौर पर मुख्य रूप से प्रयोग हो रही थी। इसके अतिरिक्त प्रसारण कार्यक्रम, आमने-सामने सत्र भी 57 स्थानीय अध्ययन केन्द्रों तथा देशभर के सहायता कार्यालयों में प्रदान किया जा रहा है जो प्रत्येक प्रशासकीय प्रान्त में कम से कम एक है।

2012 में OUJ ने 'मूडल' (ऑनलाइन अधिगम प्रबन्धन तंत्र) को अपनाया जो एक अधिगम मंच था। आगे, 2012 में उसने JMOOC (जापान मैसिव ओपन ऑनलाईन कोर्स) की स्थापना में योगदान दिया है तथा विभिन्न कार्यक्रमों को चलाने में मुख्य भूमिका निभाता है। 2014 के शैक्षिक सत्र से OUJ ने अंतःक्रियात्मक ऑनलाईन व्याख्यान आरंभ किया जिसमें विद्यार्थी भी भाग ले सकते हैं। OUJ, जापान का दूरस्थ शिक्षा का सबसे बड़ा संस्थान बन गया है। आज की तारीख तक लगभग 1,400,000 लोगों ने OUJ से शिक्षा प्राप्त की है

जिनमें 84,000 ने डिग्री से स्नातक किया है (http://www.ouj.ac.jp/eng/pdf/OUJ_Brochure.pdf)।

कोरिया गणराज्य

कोरिया में पत्राचार शिक्षा, बिना क्रेडिट व बिना शैक्षिक उपाधि कार्यक्रमों के रूप में हुआ। जब पारंपरिक विश्वविद्यालय निरन्तर बढ़ते हुए विश्वविद्यालयी शिक्षा के महत्वाकांक्षियों को समायोजित नहीं कर सके तब सियोल राष्ट्रीय विश्वविद्यालय ने 1972 में पत्राचार कोर्स के विभाग की स्थापना की जो जूनियर कॉलेज स्तर के कार्यक्रम प्रदान करता था। 1982 में, इस विभाग को स्वतंत्र विश्वविद्यालय स्तर पर उन्नत किया गया- 'द कोरियन एयर तथा कोरेसपोन्डेन्स यूनिवर्सिटी'। वर्तमान में इसका नाम है 'द कोरिया नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी'।

कोरियन राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय टेलीविजन, रेडियो (शैक्षिक प्रसारण प्रणाली), सीडीरोम (CD-ROM), इंटरनेट तथा विडियो कैसेट टेप आदि द्वारा वयस्कों को दूरस्थ शिक्षा प्रदान करता है। अपने 43 सालों के अस्तित्व में इसने 600,000 से ज्यादा प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को प्रशिक्षित व स्नातक किया जिसका कोरिया के समाज पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा है (http://www.knou.ac.ko/enknou2/)।

कोरियन राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय दक्षिण कोरिया का पहला दूरस्थ एवं आजीवन शैक्षिक संस्थान है तथा पंजीकरण के मामले में देश में सबसे बड़ा भी है। 2014 में 180,000 से भी ज्यादा विद्यार्थियों ने पंजीकरण कराया तथा जिनमें 700 परा-स्नातक छात्र हैं। अपने स्थापना दिवस से अब तक 500,000 विद्यार्थी पंजीकृत हो चुके हैं तथा 350,000 विद्यार्थियों ने इस विश्वविद्यालय से स्नातक किया है (https://en.wikipedia.org/wiki/Korea_National_Open_University)।

मलेशिया

1971 में मलेशिया में यूनिवर्सिटी सेन्स मलेशिया (USM) की स्थापना पिनाँग (Penang) में हुई जिसने परिसर से अलग शैक्षिक कार्यक्रम चलाने की पहल की। इससे वयस्कों को विश्वविद्यालय शिक्षा के अवसर, शिक्षा का प्रजातंत्रीकरण तथा उच्च शिक्षा के लिए बढ़ती हुई माँग को पूरा करने में सहायता हुई। छपे हुए मोड्यूल ही मुख्य शिक्षण सामग्री हैं। इसके अतिरिक्त बहु-माध्यम स्व-अनुदेशन शिक्षण सामग्री जैसे विडियो टेप, कैसेट, ऑडियो ग्रेफिक तथा स्लाइड भी प्रदान की जाती हैं।

विश्वविद्यालय के भीतर ही समर्पित इकाइयाँ या केन्द्र बनाये गये जो कार्यक्रमों को समन्वित करते थे। मलेशिया में दूरस्थ शिक्षा के दृश्य को और आगे बढ़ाने के लिए 'METE OR' नाम का संघ, 1998 में 11 लोक विश्वविद्यालयों द्वारा बनाया गया। 'METE OR' की शुरूआत के आधार पर, UNITEM (Universiti Terbuka Malaysia) भी 2001 में स्थापित किया गया जिसका बाद में नाम बदल कर मुक्त विश्वविद्यालय मलेशिया (Open University Malaysia) रख दिया गया (http://library.oum.edu.my/repository/204/1/open_distance_ education_in_Malaysia.pdf)।

पाकिस्तान

अल्लामा इकबाल मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना मई, 1974 में हुई थी जिसको पहले पीपल्स मुक्त विश्वविद्यालय (People's Open University) के नाम से जाना जाता था। यह देश का सबसे बड़ा विश्वविद्यालय है जहाँ औसतन 1.2 मिलियन छात्र प्रत्येक वर्ष पंजीकृत होते हैं। विश्वविद्यालय ने कई पूर्व स्नातक, स्नातक, एम.फिल तथा डॉक्टर

उपाधि जैसे कार्यक्रमों को प्रस्तावित किया है। विश्वविद्यालय बुनियादी व्यावहारिक/कार्यक्रम भी प्रदान करता है जो निरक्षर व अर्ध-साक्षर लोगों के लिए है। पाकिस्तान में यह सबसे बड़ा शिक्षा शिक्षण संस्थान है जहाँ औसतन 400,000 से ज्यादा पंजीकृत छात्र हैं (http://www.aiou.edu.pk/ourview.asp)।

फिलिपीन्स

फिलिपीन्स में दूरस्थ अध्ययन तंत्र 1976 में प्रारम्भ हुआ था जिससे कि इस द्वीप-समूह के 7,100 द्वीपों के 35,000 शिक्षकों तक पहुँचा जा सके। फिलिपीन्स के दूरस्थ शिक्षा की विशेषता है कि उसकी पाठ्यक्रम सामग्री सामान्यतः 'उपभोक्ता' द्वारा बनाई जाती है जिसे विशेषज्ञ बाद में निरीक्षण कर संपादित करते हैं। कार्यक्रम अथवा कोर्स का विकास सामाजिक आवश्यकताओं के औचित्य पर आधारित होता है तथा अनुप्रयोगात्मक होते हैं जैसे-पोषण, कुटीर उद्योग, पर्यावरणीय नियोजन, मुर्गीबाड़ा, पशुधन, सब्जी उत्पादन, फल उत्पादन आदि। कार्यक्रम पूर्ण करने के पश्चात प्राप्त आवश्यक क्रेडिट संख्या से डिग्री ली जा सकती है। फिलिपीन्स के दूरस्थ शिक्षण तंत्र में कोई अधिगमकर्त्ता असफल नहीं होता क्योंकि इसमें अधिगमकर्त्ता स्वयं की गति से अधिगम करता है जहाँ एक अधिगम मोड्यूल खत्म होने पर अंतिम मूल्यांकन प्राप्त होता है। शिक्षकों को सामाजिक महत्त्व से संबंधित समस्याओं का ज्ञान देने पर बल देता है जिससे वे उन्हीं क्रम पर आगे शिक्षा प्रदान कर सकें।

फिलिपीन्स में और भी मुक्त विश्वविद्यालय हैं। मुक्त विश्वविद्यालय, पूर्वस्नातक, स्नातक व डॉक्टर उपाधि के लिए डिग्री व बिना डिग्री के कार्यक्रम भी प्रदान करते हैं तथा सर्टिफिकेट व डिप्लोमा कोर्स भी प्रदान करते हैं (http://education.okfn.org/open-education-phillippines)।

थाईलैण्ड

थाईलैण्ड का पहला विश्वविद्यालय 'रामखेमहैंग विश्वविद्यालय' (Ramkhamhaeng University-RU) की स्थापना 1971 में हुई थी। यह दोनों दूरस्थ व कक्षा कक्ष आधारित अधिगम कार्यक्रम प्रदान करता है।

सुखोथाई थम्माथीराट मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना 1978 में हुई थी। यह नागरिकों के वैयक्तिक विकास, शैक्षिक अवसरों का विस्तार, आजीवन आवर्ती शिक्षा, शिक्षक शिक्षा व प्रशिक्षण, कुशल जनबल का प्रशिक्षण, आर्थिक विकास, राष्ट्रीय विकास, राजनैतिक व आर्थिक विचारधारा व प्रजातंत्र के बढ़ावा आदि के योगदान के लिए लक्ष्य रखता है। विश्वविद्यालय तीन प्रकार के कोर्स प्रदान करता है- स्नातक डिग्री कोर्स, अल्पावधि व्यावसायिक समृद्धि कोर्स तथा बुनियादी ग्रामीण विकास कोर्स। इस विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान किये गये कोर्स के दो उल्लेखनीय विशेषताएँ हैं :

i) वैयक्तिक विकास के लिए विभिन्न सरकारी संस्थानों को प्रशिक्षण संसाधनों का प्रावधान; और

ii) नये शिक्षण कार्यक्रम जैसे कृषि विस्तार तथा सहकारी समिति, स्वास्थ, विज्ञान, प्रबन्ध, सम्प्रेषण, कला आदि।

सरकार से STOU को राजस्व इसके शिक्षण शुल्क निवेश तथा सरकार से प्राप्त होता है।

अन्तर्राष्ट्रीय ई-लर्निंग संस्थान के रूप में मान्य विश्वविद्यालय के विश्वविद्यालय परिषद द्वारा 2002 में स्थापित 'ग्रेजुएट स्कूल ऑफ ई-लर्निंग (GSeL) तीन मास्टर्स डिग्री कार्यक्रम तथा 2 डॉक्टर उपाधि कार्यक्रम भी पूरे थाईलैण्ड तथा वैश्विक स्तर पर विद्यार्थियों हेतु दूरस्थ माध्यम से प्रदान करता है। GSeL, इंटरनेट जो केन्द्रिय अंतरापृष्ठ के तौर पर प्रयोग दूरस्थ कार्यक्रम के लिए ऑफ लाइन ई-अधिगम, एम-अधिगम, श्रव्य-दृश्य माध्यम तथा आमने-सामने अन्तःक्रिया द्वारा भी प्रदान किया जाता है। दूरस्थ शिक्षा विद्यार्थियों को कहीं भी तथा कभी भी अध्ययन की सुविधा देता है (https://www.learn4good.com/colleges/online-courses-universities-thailand.htm)।

तुर्की

तुर्की आधिकारिक रूप से रिपब्लिक ऑफ टर्की है तथा यूरेशिया का महाद्विपीय (यूरोपीय) देश है।

निजी शैक्षिक संस्थानों (FONO एवं लीमासोल्ल नासी) द्वारा 1950 में दूरस्थ शिक्षा प्रारम्भ किया गया जो अंग्रेजी शिक्षण तथा लोकसेवा के लिए था। (Cevat Geray, http://www.todaie.edu.tr/resimler/ekler/a4aa9982266677e_ekpdf?dergl=Turkish%20Public%20 administration%20annual)। 1954 में इंस्टीट्यूट ऑफ बैंकिंग व कॉमर्स द्वारा दूरस्थ शिक्षा के अन्तर्गत पहला पत्राचार कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया (Karayalcyn, 1957 in Cevat Geray, op.cit) एस्कीसेहिर एकेडमी ऑफ इकोनोमिक व कॉमर्शियल साइंसेस (Eskisechir Academy of Economic and Commercial Sciences) की स्थापना 1954 में अनाडोलू विश्वविद्यालय (Anadolu Univ.) द्वारा किया गया। एकेडमी का स्थान, 1982 में अनोडोलू विश्वविद्यालय ने ले लिया है जिसने न केवल तुर्की अपितु पूरे विश्व में एक आधुनिक, सक्रिय व नवीन संस्थान के रूप में बड़े विश्वविद्यालयों में अपनी एक योग्य जगह बनाई है। 1982 में MEB ने अनाडोलू विश्वविद्यालय में मुक्त दूरस्थ शैक्षिक कार्यक्रम की स्थापना की। इसका सहयोग रेडियो व टेलीविजन संस्थान (तुर्की) में किया जिसने सारे चैनल प्रयोग करने दिया। आज, तीन दूरस्थ शिक्षा संकाय में 2 मिलियन से ज्यादा योग्य छात्र हैं। विभिन्न देशों की कई संस्थानों ने इस सफल तंत्र को अपना लिया है (https://www.anadolu.edu.tr/en/about-anadolu/institutional/anadolu-at-a-glance)।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

6) फिलीपीन्स में खासकर पाठ्यक्रम सामग्री के विकास से संबंधित दूरस्थ शिक्षा की विशेषताएँ क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

4.5.4 आस्ट्रेलिया एवं प्रशांत (पैसीफिक)

आस्ट्रेलिया व पैसीफिक में आस्ट्रेलिया के महाद्वीप तथा उसके पैसीफिक पड़ोसी शामिल हैं जो हैं – मैलेनेसीया, पॉलीनेसीया तथा माइकोनेसीया। यह तीन द्वीप समूह, आस्ट्रेलिया व न्यूज़ीलैण्ड साथ में 'ओशीनीया' कहलाते हैं। जहाँ छोटी जनसंख्या, विस्तृत क्षेत्र में बिखरी हुई है। वहाँ दूरस्थ शिक्षा एक वरदान के रूप में साबित हुई है।

आस्ट्रेलिया

बीसवीं शताब्दी के शुरूआत में दूरस्थ शिक्षा, विश्वविद्यालयों व संस्थानों का अभिन्न अंग बन गयी। द्वितीय विश्वयुद्ध में दूरस्थ शिक्षा का विकास हुआ क्योंकि अमेरिकी फौजी बल के सिपाहियों के बढ़ती शिक्षा की माँग को पूरा करना था।

विश्वविद्यालय स्तर पर दूरस्थ शिक्षा 'समाकलित मॉडल' का अनुसरण करता है अर्थात सामान्य पाठ्यक्रम, सामान्य संकाय, सामान्य परीक्षा परिसर व उनके बाहर दोनों ही विद्यार्थियों के लिए। जो विश्वविद्यालय/संस्थान दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम प्रदान करते है वहाँ एक विशेष वर्ग, इकाई, विभाग या विद्यालय होते हैं जो इन कार्यक्रमों की व्यवस्था करते हैं। तकनीकी तथा सतत् शिक्षा (Technical and Further Education-TAFE), एक प्रकार की तृतीय शिक्षा का नया रूप है जो आस्ट्रेलिया के कॉलेजों में बाह्य अध्ययन की सुविधा देता है। आस्ट्रेलिया की कुछ जानी-मानी संस्थान/विश्वविद्यालय हैं- डीकन, न्यू-इंलैण्ड, मर्डोक, क्वींसलैण्ड, रॉयल मैर्बोन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलोजी तथा गीप्पसलैण्ड इंस्टीट्यूट ऑफ एवांसड एजूकेशन।

न्यूज़ीलैण्ड

न्यूज़ीलैण्ड में दूरस्थ शिक्षा 1922 में पहले प्रस्तावित हुआ जब न्यूज़ीलैण्ड पत्राचार स्कूल (NZCS) की स्थापना हुई। 1931 में NZCS में पहला रेडियो प्रसारण दूरस्थ विद्यार्थियों के लिए किया था तथा 1935 में शिक्षकों ने दूरस्थ शिक्षार्थियों के घरों में जाना भी शुरू किया। सभी तरह के विद्यार्थियों के स्थान हेतु सशक्त शिक्षक निर्देशन की व्यवस्था है – पूर्व विद्यालय से वयस्क सतत् शिक्षा तक। अनुदेशन सामग्री में मुद्रित सामग्री, दृश्य-श्रव्य टेप, किट, प्रदत्त कार्य आदि सम्मिलित होते हैं। शिक्षकों द्वारा दूरभाष, दृश्य-श्रव्य टेप, पत्र आदि का प्रयोग विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने व वैयक्तिक सहयोग करने के लिए होता है। कंप्यूटर समर्थित अधिगम कार्यक्रम का भी निर्माण होता है जिससे वैयक्तिक अधिगम प्रदान किया जाये तथा प्रत्येक विद्यार्थी का रिकार्ड रखा जा सके जिससे उनकी प्रगति की जाँच हो सके।

इसके अतिरिक्त यह दूर–दराज क्षेत्र के विद्यार्थियों की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु सेवाएँ प्रदान कर रहा है इसके लिए पत्राचार पाठ, विद्यालय प्रसारण तथा टेलीविजन प्रसारण किया जाता है। इसने शिक्षकों के लिए भी प्रगतिशील अध्ययन की शुरूआत की है। इसके अलावा कई संस्थान व न्यू-ज़ीलैण्ड रेडियो भी दूरस्थ शिक्षा प्रदान करते हैं।

द सेन्टर फार यूनिवर्सिटी इक्स्ट्रामूरल स्टडीज़ (मैसी विश्वविद्यालय), द ओपन पॉलीटेक्निक तथा यूनिवर्सिटी ऑफ ओटैगो भी दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम प्रदान करते हैं। इन संस्थानों के अतिरिक्त रेडियो कार्यक्रम, टेलीविजन, विडियो-पत्र, कम्प्यूटर संचार तथा टेली-कॉन्फ्रेन्सिंग द्वारा भी दूरस्थ शिक्षा प्रदान की जाती है।

न्यूज़ीलैण्ड को अपने प्रत्येक स्तर के विकसित तंत्र के लिए जाना जाता है। सबसे अच्छी जानने योग्य बात यह है कियहप्रतिस्पर्धा के पीछे नहीं पड़ते तथा सारी संस्थायें सहयोग से

कार्य करते हैं। आस्ट्रेलिया क्षेत्र में न्यूज़ीलैण्ड टेक्निकल कॉरेस्पोन्डेन्स इंस्टीट्यूट जैसे सबसे बड़ा दूरस्थ शिक्षा केन्द्र, कई तकनीकी व व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करता है।

पापुआ न्यू-गिनी

यह अपने विविध समुदाय को उनके भौगोलिक कारकों के आधार पर दूरस्थ शिक्षा के लिए विस्तृत क्षेत्र प्रदान करता है। 1974 में पापुआ न्यू-गिनी विश्वविद्यालय में बाह्य अध्ययन के विभाग की स्थापना हुई। इसके अतिरिक्त ग्यारह विश्वविद्यालय प्रसार केन्द्र हैं। पोर्ट मोरेसबी के कॉलेज ऑफ एक्सटर्नल स्टडीज़ के साथ कई और दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम लोगों की शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं।

1984 में यूनिवर्सिटी एट गोरोका टीचर्स कॉलेज कैम्पस ने शिक्षण में एडवांस डिप्लोमा आरम्भ किया जो हाई स्कूल सेवारत शिक्षकों के लिए था। यह शिक्षकों के शिक्षण के लिए एक महत्त्वपूर्ण नवीन कार्यक्रम है। यह शिक्षकों को अपने कार्य को अधिक व्यावसायिक व आत्मविश्वास से करने को प्रेरित व सहयोग करने की क्षमता रखता है।

प्रशांत (पैसिफिक) द्वीप

1970 तक, तीसरे स्तर की शिक्षा प्राप्त करने के लिए पैसिफिक द्वीप के विद्यार्थियों को आस्ट्रेलिया या न्यू-ज़ीलैण्ड जाना पड़ता था। दक्षिण पैसिफिक विश्वविद्यालय की स्थापना (USP) इन सभी सुविधाओं को विद्यार्थियों के द्वार पर तथा परिसर के बाहर लाया गया जिसका सहयोग उपग्रह नेटवर्क से लिया गया। यह 1996 में सुवा, फिजि में स्थापित किया था। जो छात्र परिसर तक नहीं आ सकते, वह USP की विस्तार योजना के किसी एक केन्द्र से अपना अध्ययन/शिक्षा शुरू कर सकते थे। संचार के विभिन्न साधनों जैसे- पाठ्यक्रम संबंधित पुस्तक, लिखित कार्य, श्रव्य टेप, USP NET उपग्रह का उपयोग करके विश्वविद्यालय परिसर व उसके बाहर के विद्यार्थी के बीच की दूरी पाटने में सक्षम हो जाते हैं।

4.5.5 यूरोप

यूरोप में विशेष रूप से इंगलैण्ड, जर्मनी, स्वीडन, फ्रांस, नॉर्वे, नीदरलैण्ड और स्पेन में बीसवीं सदी के दौरान दूरस्थ शिक्षा में तेजी से प्रगति हुई। इस अवधि के दौरान जो महत्त्वपूर्ण विकास यूरोप में हुए वह निम्नलिखित हैं :

- प्रणाली उपागम और शैक्षिक प्रौद्योगिकी ने संस्थागत दूरस्थ शिक्षा के विकास को प्रभावित किया है। इसके परिणाम हैं – विभिन्न संचार माध्यमों के विवकेपूर्ण चयन का विस्तृत विश्लेषण, साधन समूह, पूर्व-परीक्षण प्रक्रिया और पाठ्यक्रम/योजना का मूल्यांकन आदि।
- दूरस्थ शिक्षा में अनुसंधान एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र जिसमें पश्चिमी यूरोप ने सार्थक योगदान दिया है।
- मुक्त विश्वविद्यालय के अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग व सेवा केन्द्र को सहयोग देने के लिए 1978 में सूचना व संसाधन केन्द्र स्थापित किया गया। यह भाग मूल रूप से संयुक्त राष्ट्र विश्वविद्यालय का दूरस्थ ज्ञान प्रलेखन केन्द्र बना
- विदेशी विकास प्रकाशन और मुक्त शिक्षा केन्द्र द्वारा वित्तपोषित दूरस्थ अधिगम अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र; आँकड़े और सूची की सेवा उपलब्ध कराने के लिए स्थापित किया गया था। यह केन्द्र शैक्षिक तकनीकी मुक्त विश्वविद्यालय संस्थान (यू.के.) में स्थापित है।

आइये कुछ यूरोपीय देशों के मुक्त दूरस्थ शिक्षण को समझते हैं।

इंग्लैण्ड

लंदन विश्वविद्यालय, वह पहला विश्वविद्यालय था जिसने 1828 में अपना बाह्य कार्यक्रम स्थापित करके दूरस्थ अधिगम डिग्री प्रदान की। लंदन विश्वविद्यालय को अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रम को अहर्ता देते हुए 150 साल से ऊपर हो गये हैं। यहाँ विद्यार्थियों को लंदन में रहे बिना अपने परिवार की प्रतिबद्धताओं के साथ अध्ययन करने की अनुमति देता है। यह उपाधि भी परिसर में रहकर अध्ययन करके प्राप्त उपाधि के समान होता है (http://www.london.ac.uk/distance.learning)। मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना (मिल्टन केनिस, 1969) दूरस्थ शिक्षा के विकास में बहुत महत्त्वपूर्ण साबित हुई। यह विश्वविद्यालय उन वयस्कों को दूसरा अवसर प्रदान करता है जो उच्च शिक्षा नहीं प्राप्त कर पाये। जो कार्य करते हुए उच्च शिक्षा अथवा व्यावसायिक प्रशिक्षण चाहते हैं, उन्हें भी सहयोग प्रदान करता है। दूरस्थ शिक्षा के लिए मुक्त विश्वविद्यालय प्रत्येक विद्यार्थी की सहायता करता है चाहे वह किसी भी परिस्थिति में हो, कहीं भी रहता हो, किसी भी उम्र का हो तथा कैसी भी पृष्ठभूमि से हो। प्रत्येक विद्यार्थी जो विश्वविद्यालय स्तर का अध्ययन चाहता हो या वे लोग जो अपना कौशल विकसित करना चाहते हैं या उपाधि/डिग्री चाहते हैं या सेवानिवृत लोगों को शिक्षा प्रदान करता है।

मुक्त विश्वविद्यालय का ध्येय है प्रत्येक व्यक्ति, स्थान, विधि तथा विचार के लिए खुला रहना (http://www.open.ac.uk/about/main/mission)।

- उच्च गुणवत्ता से पूर्ण विश्वविद्यालय शिक्षा प्रदान कर शैक्षिक अवसर व सामाजिक न्याय को प्रोत्साहित करना जिससे जो अपनी महत्त्वाकांक्षा व क्षमता को परिपूर्ण करना चाहते हैं उन्हें सहयोग मिले।
- शैक्षिक अनुसंधान, शिक्षा शास्त्र के नवाचार तथा सहयोगपूर्ण साझेदारी द्वारा आरेख, विषय-वस्तु व सहयोगी मुक्त अधिगम में विश्वनेता बनना।

विश्वविद्यालय आयु, लिंग, निवास स्थान तथा औपचारिक योग्यताओं के भेदभाव के बिना सभी प्रकार के लोगों हेतु प्रभावशाली पाठ्यक्रम सामग्री के उत्पादन द्वारा विश्वव्यापी प्रभाव निर्मित किया है। स्नातक कोर्स के लिए कोई अहर्ता की आवश्यकता नहीं है परन्तु वो अठारह वर्ष का होना चाहिए तथा यूरोपीय सामुदायिक देश का रहने वाला होना चाहिए (या यूरोपीय देशों में किसी अन्य में जिसमें यह विद्यार्थी पंजीकरण हेतु सहमत है)। परा स्नातक कोर्स के लिए सरल प्रवेश परीक्षा देनी होती है जो यू.के. के नियमित विश्वविद्यालयों के समान होती है। मुक्त विश्वविद्यालय में कई प्रकार के कार्यक्रम प्रदान किये जाते हैं। मुख्यतः मुद्रित सामग्री दी जाती है परन्तु श्रव्य कैसेट, टी.वी., रेडियो, ग्रीष्म स्कूल, क्षेत्र भ्रमण आदि द्वारा सहयोग लिया जाता है। उपस्थिति भी इन सत्रों में वैकल्पिक है।

अन्तर्राष्ट्रीय विस्तार कॉलेज, कैम्ब्रिज

यह एक जाना-माना दूरस्थ शिक्षण संस्थान है जो दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम के अतिरिक्त विकासशील देशों विशेषतः अफ्रीका को दूरस्थ शिक्षा संस्थानों के संगठन हेतु परामर्श व दक्षता प्रदान करता है।

इंग्लैण्ड में ऊपर दिये गये संस्थानों के अतिरिक्त कई और विश्वविद्यालय तथा निजी पत्राचार संस्थान हैं जो बाहरी विद्यार्थियों को विभिन्न स्कूलों/विश्वविद्यालय परीक्षाओं की तैयारी करवाते हैं साथी ही विविध पत्राचार कोर्स भी प्रदान करते हैं।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

7) मुक्त विश्वविद्यालय यू.के. के अभियान को बतायें। आपके विचार से क्या यह अपना लक्ष्य पा सका है?

.....

.....

.....

.....

.....

फ्रांस

1939 में फ्रांस में युद्ध के कारण हुये व्यवधान की भरपाई करने के लिए पत्राचार द्वारा एक शिक्षा सेवा बनाई गई। स्वतन्त्रता (1944) के दौरान इसके उद्देश्य की पुष्टि राष्ट्रीय पत्राचार शिक्षण केन्द्र के अन्तर्गत हुई। 1953 में यह 'पत्राचार, रेडियो और टेलीविजन द्वारा शिक्षण का राष्ट्रीय केन्द्र' बन गया। इसके तथा शैक्षणिक राष्ट्रीय केन्द्र के विलय ने दूरस्थ शिक्षण केन्द्र (CNTE) को जन्म दिया जो कई लोगों के मस्तिष्क में आज भी विद्यमान है। 1979 में CNTE राष्ट्रीय 'पत्राचार शिक्षण केन्द्र' (CNEC) बन गया। यह एक राष्ट्रीय सार्वजनिक संस्थान थी जो प्रशासनिक कर्त्तव्य और वित्तीय स्वायत्तता निभाती थी। इसका उद्देश्य दूरस्थ शिक्षा को विशेष रूप से आधुनिक संचार संसाधनों के उपयोग के माध्यम से प्रदान करना व उसको बढ़ावा देना था। इसके बाद 1986 में CNEC 'राष्ट्रीय दूरस्थ शिक्षा केन्द्र' बन गया।

यह शिक्षा मंत्रालय के अधिकार के तहत एक राज्य संस्था है। यह आठ अलग-अलग केन्द्रों को समाविष्ट करता है। यह फ्रांस और विदेश में उच्च स्तर के सभी वर्गों पर उच्च शिक्षा कार्यक्रम, एकल पाठ्यक्रम और बुनियादी पाठ्यक्रम में शामिल होने के अवसर प्रदान करता है। यह प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों की एक विस्तृत श्रृंखला भी प्रदान करता है। यह वास्तव में एक मात्र सार्वजनिक ऑपरेटर है जो बचपन से वयस्क तक आजीवन शिक्षण तथा प्रशिक्षण प्रदान करता हैं। CNEB सभी प्रकार के लोगों के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम जारी करता हैः अर्हकारी परीक्षार्थी, नौकरी चाहने वाले, प्रशिक्षुओं के कर्मचारी के लिए तैयारी कर रहे लोग आदि।

हालाँकि फ्रांस में दूरस्थ के विश्वविद्यालय शिक्षण मूल रूप से शिक्षकों का अभियुत्थान करने के लिए प्रारंभिक प्रशिक्षण के तौर रूपांकित किया गया था; धीरे-धीरे पाठ्यक्रम को विस्तृत कर दिया गया। कुछ विश्वविद्यालयों में दूरस्थ शिक्षा केन्द्र हैं जो विभिन्न प्रारूपों में दूरस्थ के पाठ्यक्रम प्रदान करते हैंः पत्राचार, डी.वी.डी., रेडियो और टेलीविजन/भाग लेने के लिए विद्यार्थियों के विश्वविद्यालय में प्रवेश मिलना चाहिए। 1986 तक अट्ठारह औपचारिक विश्वविद्यालयों को रेडियो और विश्वविद्यालय का नाम दिया गया।

1 जुलाई, 2014 के बाद से, CNED 'Scolorite Complementaire International' नामक एक फ्रांसीसी भाषा में दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम का संचालन कर रहा है। इस पहल का लक्ष्य

युवा प्रवासी/नागरिकों के लिए फ्रांसीसी भाषा और संस्कृति के साथ संबंध बनाना है और फ्रांसीसी स्कूल प्रणाली के भीतर संभावित अध्ययन की सुविधा प्रदान करना है। यह निम्न स्तरीय कार्यक्रम विद्यार्थियों को एक पूर्ण दूरस्थ पाठशाला कार्यक्रम की तुलना में अध्ययन का एक कम प्रतिबंधात्मक पाठ्यक्रम बनाने की अनुमति देता है, जिसका अर्थ है कि विद्यार्थियों को प्रस्तुत करने के लिए सौंपे गये कार्य की संख्या कम होना (http://frenchlanguage.francecanadaculture.org/en/news/french-national-centre-distance-education-international-distance-education)।

जर्मनी

तत्कालीन जर्मन लोकतांत्रिक गणराज्य (GSR) ने 1976 में सामाजिक विकास के एक नये चरण में प्रवेश किया था। जब विद्यार्थियों के जीवन में एक उत्पादक चरण होने और सामाजिक विकास में सकारात्मक भूमिका निभाने हेतु आपेक्षित थी। दूरस्थ शिक्षा और संध्या पाठशाला के माध्यम से काम कर रहे लोगों की शिक्षा पर विशेष बल दिया गया था, जो एक विश्वविद्यालय की तकनीकी उपाधि के लिए अग्रणी है। दूरस्थ शिक्षा का भी कई वर्षों से इस्तेमाल किया गया था ताकि कृषि, अर्थशास्त्र और प्रौद्योगिकी क्षेत्र में तकनीकी स्कूलों के स्नातक को आगे की शिक्षा प्रदान की जा सके। सलगभग 40% तकनीकी विद्यालय के विद्यार्थियों को दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से प्रशिक्षित किया गया। चिकित्सा के अतिरिक्त, पारंपरिक विश्वविद्यालयों में परिसर क विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध अन्य सभी विषयों को दूरस्थ शिक्षा और संध्या कॉलेजों द्वारा भी शामिल किया गया था।

वाणिज्यिक पत्राचार विद्यालय, जर्मनी के संघीय गणराज्य, जो की पहले पश्चिम जर्मनी के नाम से जाना जाता था, में बहुत लोकप्रिय थे।

लोगों की बढ़ती माँगों को ध्यान में रखते हुए, राज्य और संघीय सरकारों ने दूरस्थ शिक्षा के विकास में अपनी भागीदारी की आवश्यकता महसूस की। इसके परिणामस्वरूप 1966 में टूविंगन (Tubingen) में जर्मन इंस्टीट्यूट ऑफ डिस्टेन्स एजुकेशन (DIFF) की स्थापना हुई। इसका लक्ष्य सतत शिक्षा में अनुकूलन करना है, विशेषतः निर्देशित संचार समर्थित स्व-अध्ययन के लिए, जो दूरस्थ शिक्षा में भी एक प्रमुख भूमिका निभाता है। DIFF, निरन्तर शिक्षा के विभिन्न प्रदाताओं के साथ अनुसंधान और विकास में सहयोग करता है, जैसे उच्च शिक्षण संस्थान और उद्योग तथा वाणिज्य के साथ।

नवम्बर, 1974 हेगन (Hagen) में स्थापित फर्न महाविश्वविद्यालय, जर्मन भाषायी 20,000 में अधिक विद्यार्थियों को उपाधि व अन्य पाठ्यक्रम प्रदान करता है। इस महाविश्वविद्यालय ने एक दूरस्थ शिक्षण पाठ्यक्रम 'दूरस्थ शिक्षकों के लिए दूरस्थ शिक्षा की अनिवार्यता की स्थापना करके नये आयामों का स्वरूप दिया'। मुद्रित सामग्री, टेप, कैसेट, कम्प्यूटर, दूरभाष आदि संचार का प्रयोग जानकारी के प्रसार के लिए किया जाता है और आमने-सामने के शिक्षण पर दिया गया बल अब महत्त्वहीन हो गया है।

इटली

इटली में 'Consorzio per I'Universita a Distanza (दूरस्थ शिक्षा विश्वविद्यालय-CUD), दूरस्थ विश्वविद्यालय प्रणाली प्रदान करने के उद्देश्य से 1984 में स्थापित किया गया था। सबसे पहले विद्यार्थियों को 1986 में दाखिल करवाया गया था। यह इटली कानून के तहत स्थापित एक सहायता संघ है। सदस्यों में विश्वविद्यालय, बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ और सरकार से संबंधित अंग शामिल हैं। शिक्षण सामग्री और छात्र-सहायता सेवाएँ, विश्वविद्यालय के सदस्यों की ओर से, CUD द्वारा आयोजित की जाती हैं। श्रव्य-दृश्य कैसेट और कम्प्यूटर

सॉफ्टवेयर, मुद्रित सामग्री को परिपूर्ण करते हैं। अध्ययन केन्द्रों पर विद्यार्थियों को सामग्री प्रदान की जाती है, जहाँ व्याख्यान, ट्यूशन और परामर्श के साथ नियमित कम्प्यूटर प्रयोग उपलब्ध हैं।

पहले कार्यक्रमों की शुरुआत सूचना विज्ञान में डिप्लोमा (इटली में पहला डिप्लोमा प्रदान), आधुनिक भाषाओं (त्रिवर्षीय और अंशकालिक) तथा अर्थशास्त्र में एक विद्वान (इटली के चार वर्षीय पूर्णकालिक के समान ही अंशकालिक डिग्री है)। माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों को सतत् शिक्षा व पुनश्चर्या कोर्स भी प्रदान करता है।

नीदरलैण्डस

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में प्रौढ़ आबादी की आवश्यकताओं पर विचार करने के उपरान्त, डच सरकार ने लोगों को लचीले और विविध शिक्षा प्रदान करने हेतु एक नीति निर्णय लिया। अंततः नीदरलैण्डस मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना का नेतृत्व किया गया। यह सितम्बर 1984 में अट्ठारह अध्ययन केन्द्रों के एक प्रसार के साथ क्रियात्मक रहा, जिनमें से कुछ ऐसी जगह स्थित हैं जहाँ उच्च शिक्षा के लिए शायद ही कोई सुविधा मौजूद थी। यह विश्वविद्यालय बुनियादी कानून, सांस्कृतिक विज्ञान, प्राकृतिक विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, सांख्यिकी और प्रणालियों के लिए पाठ्यक्रम प्रदान करता है। विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम हेतु नामांकित किया जाता है डिग्री या डिप्लोमा कार्यक्रम हेतु नहीं। हालाँकि एक सुविधाजनक अवधि के दौरान पाठ्यक्रमों के संयोजन के माध्यम से वह एक डिग्री या डिप्लोमा प्राप्त कर सकते हैं।

नॉरवे

नॉरवे में पत्राचार शिक्षा गैर-सार्वजनिक पत्राचार विद्यालय द्वारा प्रदान की जाती है। पूरे देश में पत्राचार शिक्षा विनियमित करने के लिए 1949 में सरकार ने पत्राचार शिक्षा पर एक कानून पारित किया। इसके परिणामस्वरूप पत्राचार शिक्षा परिषद, एक सरकारी निकाय की स्थापना की गई। यह पत्राचार शिक्षा से संबंधित मामले पर सरकार को सलाह देने के लिए बनाया गया, जो कि राज्य द्वारा वित्तपोषित है और जो पाठ्यक्रम की कीमत का 60% विद्यार्थियों को देता है।

पत्राचार स्कूलों ने स्वयं मिलकर 1967 में 'नॉर्वीजियन एसोसियेशन ऑफ कॉरेस्पोन्डैंस स्कूल' का गठन किया जिससे सार्वजनिक संगठनों के साथ वार्तालाप और सहयोग करने के लिए एक समान मंच बनाया जा सके। यह संघ नॉर्वे में दूरस्थ शिक्षा के विकास में बहुत प्रभावी भूमिका निभा रहा है। 1985 में इस संघ ने अपना नाम नॉर्वीजीयन एसोसियेशन फॉर डिस्टेन्स एजूकेशन (NADE) में बदलने का निर्णय लिया।

यद्यपि 1811 में स्थापित, दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में ओसलो विश्वविद्यालय की गतिविधियों की हाल ही में शुरूआत हुई थी। यह दूरस्थ साधन के माध्यम से अट्ठारह पाठ्यक्रम प्रदान करता है।

रूस

पूर्व सोवियत संघ में दूरस्थ शिक्षा उन हजारों स्वयं सेवकों को प्रशिक्षित करने की आवश्यकता से पैदा हुई थी जिन्होंने देश भर के अशिक्षित वयस्कों को सीखने का अवसर दिया। यहाँ लगभग 1920 के दशक में तकरीबन 76% जनसंख्या निरक्षर थी। विशेष रूप से तैयार 'लोगों के शिक्षकों' को पत्राचार पाठ्यक्रम के माध्यम से प्रशिक्षित किया गया। इस विशाल अभियान के परिणामस्वरूप, 1917 की क्रांति के बाद से दो दशक के भीतर ही निरक्षरता पूरी तरह समाप्त हो गई थी।

तब तक यू.एस.एस.आर. में पत्राचार पाठ्यक्रम समस्त संघ आधार पर आयोजित किये गये, जहाँ तक पाठ्यवस्तु तथा पाठ्यक्रम सामग्री का सरोकार था। विश्वविद्यालय या पॉलिटेक्निक राष्ट्रीय पाठ्यक्रम का पालन करते थे और पाठ्यक्रम सामग्री का निर्माण व वितरण शिक्षा मंत्रालय द्वारा किया गया था। विभिन्न गणराज्यों में विश्वविद्यालयों/संस्थानों को पाठ्यक्रम सामग्री का अनुवाद कराया तथा स्थानीय पाठ्यक्रमों के अनुसार बुनियादी पाठ्यक्रम सामग्री को पूरक किया गया था। 1970 के दशक के दौरान पत्राचार पाठ्यक्रम ने औपचारिक कार्यक्रमों की तुलना में ज्यादा विद्यार्थियों को आकर्षित किया (लगभग 55:45 का अनुपात)। तत्कालीन सोवियत संघ में विभिन्न विश्वविद्यालयों या संस्थाओं से संबंद्ध 500 से अधिक पत्राचार संकाय या विभाग तथा पत्राचार अध्ययन के 16 स्वायत्त संस्थान/पोलिटेक्निक जो डिप्लोमा के साथ उच्च शोध पाठ्क्रम प्रदान कर रहे थे। तीन लाख से अधिक विद्यार्थियों के लिए पाठ्यक्रम की एक विस्तृत श्रृंखला उपलब्ध की।

पत्राचार के विद्यार्थियों को औपचारिक डिप्लोमा कोर्स के विद्यार्थियों की तुलना में एक साल और पढ़ने की आवश्यकता थी जिसका अर्थ है, पत्राचार छात्र पाँच साल नहीं अपितु छः साल डिप्लोमा कोर्स में लगायेंगे। हालाँकि उन्हें भुगतान सहित अवकाश और सर्म्पक सत्र में भाग लेने और परीक्षाएँ लेने के लिए शैक्षिक वर्ष में यात्रा सहायता भी दी जाती थी। इसके साथ उनको पाँचवे व छठे वर्ष में, हफ्ते में एक दिन का अवकाश मिलता था। अन्य विद्यार्थियों की तरह वह भी उच्चतम स्तर मुक्त शिक्षा के हकदार थे।

अक्टूबर, 1990 में स्थापित रूस मुक्त विश्वविद्यालय एक वैज्ञानिक व शैक्षिक संगठन है। विश्वविद्यालय का ध्येय शोध, परियोजनाओं का रूपांकन करना और वैज्ञानिक उपलब्धियों को लागू करना। इसका प्राथमिक उद्देश्य सभी उम्र के लोगों को उच्च शिक्षा तक पहुँचने का साधन प्रदान करना है, कारण जो भी हो। वर्तमान में उद्योग व निजी क्षेत्र को शामिल करने का प्रयास चल रहे हैं ताकि वो गुणवत्ता वाले पाठ्यक्रमों की शुरुआत कर सकें जो एक बदलते व्यापार संचालित अर्थव्यवसथा में स्पर्धा कर सकें।

स्वीडन

स्वीडन में दूरस्थ शिक्षा की जड़े 160 वर्ष पुरानी हैं। 1833 में स्वीडन के एक अखबार में एक विज्ञापन ने 'नियुक्ति माध्यम से रचना' का अध्ययन करने का अवसर माँगा। 1840 में इंग्लैण्ड की नवनिर्मित 'पेनी पोस्ट' ने आइजैक़ पिट्टमैन को पत्राचार के माध्यम से आशुलिपि अनुदेश देने की अनुमति दी। तीन साल बाद फोनोग्रेफिक कॉरेसपोन्डेन्स सोसाईटी की स्थापना के साथ शिक्षा को एक अनौपचारिक रूप दिया गया। आइजैक़ पिट्टमैन इस कॉलेज के अग्रदूत थे। 1886 स्वीडन के एच.एस हेरमोड ने पत्राचार द्वारा अंगेजी की शिक्षा देनी शुरू की। 1898 में उन्होंने 'हरमोड' की स्थापना की, जो दुनिया के सबसे बड़े और प्रभावशाली दूरस्थ शिक्षण संगठनों में से एक बन गई।

'हरमोडस' की सफलता से प्रोत्साहित होकर कई अन्य स्कूल अस्तित्व में आये। 1966 तक लगभग 150,000 विद्यार्थियों के नामांकन के साथ, हरमोड्स दुनिया की सबसे बड़ी दूरस्थ शिक्षा संस्थान बन गया। यह हजारों, पत्राचार के छात्र की जरूरतों को पूरा करने लगा। परन्तु आधिकारिक विद्यालय प्रणाली में सभी स्वीडन के विद्यार्थियों की बढ़ती पहुँच के साथ, एक साथ सीखने और समाज के निम्न विशेष अधिकार प्राप्त वर्गों के प्रौढ़ शिक्षा के लिए अधिक अवसर पर बल दिया जाने लगा। इसी के कारण दूरस्थ शिक्षा को स्वीडन में एक झटका लगा।

स्वीडिश विश्वविद्यालयों ने 1968 में विश्वविद्यालय स्तर पर पाठ्यक्रम के लिए दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम शुरू किये। 1984 में स्वीडिश मुक्त शिक्षण संघ (SAD) की स्थापना हुई। उच्च

शिक्षा स्तर पर दूरस्थ शिक्षा एक एकीकृत, विभागीय गतिविधि है जो मुख्य रूप से एक द्विपद्धतीय विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में संरचना पर काम करती है।

परामाध्यमिक स्तर पर दूरस्थ शिक्षा अब स्वीडन में बेहतर तरीके से स्थापित हो चुकी है। स्वीडिश उच्च शिक्षा का एक सत्तारूढ़ और वैद्यानिक सिद्धान्त यह है कि उच्च शिक्षा के सभी संस्थान ऐसे संगइित किये जाने चाहिए जिससे शिक्षा के अवसरों का उचित, भौगोलिक और सामाजिक वितरण और आवर्तक शिक्षा सुनिश्चित हो सके। माध्यमिक के बाद दूरस्थ शिक्षा एक विकेन्द्रीकृत प्रणाली की विशेषता है। संस्थागत संरचनाएँ, उत्पादन और वितरण प्रणाली, विश्वविद्यालयों में भिन्न-भिन्न होती हैं। दूरस्थ शिक्षा में लगे प्रत्येक विभाग, स्वतंत्र रूप से पाठ्यक्रम के लिए मीडिया व विधियों के लिए उत्तरदायी हैं।

दूरस्थ शिक्षा में विभिन्न पाठ्यक्रमों का प्रभुत्व है, हालांकि इसमें पूर्णकालिक अध्ययन कार्यक्रम भी प्रदान किये जाते हैं। उदाहरण के लिए लुंड विश्वविद्यालय के पास एकाकी पाठ्यक्रम और पूर्ण डिग्री कार्यक्रम व दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से कुछ मास्टर डिग्री प्रोग्राम हैं। डिग्री प्रोग्राम परिसर पाठ्यक्रम और दूरस्थ शिक्षा पाठ्यक्रम को संयोजित कर सकते हैं (http://www.lunduniversity.lu.se/international_admissions/distance_learning)।

4.6 वृहत (मेगा) मुक्त विश्वविद्यालय

खण्ड चार में हमने मेगा विश्वविद्यालयों का उल्लेख किया है। इस खण्ड में आप यह समझेंगे कि एक मेगा विश्वविद्यालय क्या है। एक मेगा विशविद्यालय की परिभाषा में तीन मापदण्ड सम्मिलित हैंः दूरस्थ शिक्षण, उच्च शिक्षा और आकार। इसे ध्यान में रखते हुए डेनियल (1996) ने एक मेगा-विश्वविद्यालय को इस प्रकार परिभाषित किया है- 'एक दूरस्थ शिक्षण संस्थान जिसमें डिग्री स्तर पाठ्यक्रम में 100,000 से अधिक सक्रिय छात्र हैं'। तदुनुसार उन्होंने ग्यारह संस्थानों को सूचीबद्ध किया जो 1996 में इन मानदण्डों को पूरा करते थे (तालिका 4.1 देखें)।

इसके बाद बीते वर्षों में इस सूची में कई और शामिल हुए हैं। उनमें से ज्यादातर का जन्म हाल ही में हुआ है लेकिन वह न केवल अपने संबंधित राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली में बल्कि वैश्विक स्तर पर भी सबसे बड़े विश्वविद्यालय बन चुके हैं। हमने पूर्ववर्ती अनुभाग में इन विश्वविद्यालयों की पहले ही चर्चा कर ली है।

तालिका 4.1: मेगा विश्वविद्यालय

देश	संस्थान का नाम	संक्षेप में	स्थापना का वर्ष
चीन	चीन टी.वी. यूनिवर्सिटी तंत्र	CTVU	1979
फ्रांस	सेन्टर नेशनल डी एनसेनमेन्ट अडिक्टेन्स	CNED	1939
भारत	इंदिरा गाँधी नेशनल ओपन विश्वविद्यालय	IGNOU	1985
इंडोनेशिया	यूनिवर्सिटास टर्बयूका	UT	1984
ईरान	पायेगे नूर यूनिवर्सिटी	PNU	1987
कोरिया	कोरिया नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी	KNOU	1982

दक्षिण अफ्रीका	यूनिवर्सिटी ऑफ साउथ अफ्रीका	UNISA	1973
स्पेन	यूनिवर्सिडेड नेसीओनल डे एड्केसीओन	UNED	1972
थाईलैण्ड	सूखोथाई थम्माथीराट ओपन यूनिवर्सिटी	STOUV	1978
तुर्की	एनाडोलू यूयनिवर्सिटी	AU	1982
यूनाईटेड किंगडम	द ओपन यूनिवर्सिटी	UKOU	1969

नोटः i) कोरिया एयर तथा कॉरेसपोन्डेन्स यूनिवर्सिटी।

ii) यूनिवर्सिटी ऑफ द केप ऑफ गुड होप।

स्रोतः जॉन. एस. डेनियल (1996) मेगा यूनिवर्सिटी नोलेज मीडियाः टेक्नोलॉजी स्ट्रेटिजीज फॉर हाइर एजूकेशन लंदनः इटलेज. p 30

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

8) मेगा-मुक्त विश्वविद्यालय की परिभाषा लिखें। उसको परिभाषित करते हुए किन मापदण्डों व कसौटियों को ध्यान में रखा जाता है?

.....

.....

.....

.....

.....

4.7 चयनित महत्त्वपूर्ण अभ्यास

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षण संस्थानों की सफलता का श्रेय उनकी कुछ महत्त्वपूर्ण, नवीन अभ्यासों को जाता है, जिनके कारण उनकी विश्वसनीयता, स्वीकृति और कार्य क्षमता धीरे-धीरे बढ़ चुकी है। यह अभ्यास कार्यक्रम और पाठ्यक्रम के स्वरूप, निर्देश योजना, पाठ्यक्रम की रूपरेखा और विकास, और/या मीडिया का अध्ययन-ज्ञान में नवीन प्रयोग जैसे कि मूल्यांकन आदि हैं। इस भाग में हम कुछ विश्वविद्यालय के महत्त्वपूर्ण अभ्यास पर ध्यान केन्द्रित करेंगे।

4.7.1 पाठ्यक्रम समूह उपागम (UKOU)

1976 में मुक्त विश्वविद्यालय के प्रथम, कुलपति, सर वॉल्टर पेरी ने अपनी यादें ताजी कीः 'पाठ्यक्रम वर्ग की अवधारणा, मुझे विश्वास है, मुक्त विश्वविद्यालय का सबसे महत्त्वपूर्ण

योगदान है जो तृतीय स्तर पर अभ्यास सिखाता है' (पेरी, 1976: 91, मार्टिन वेल्लर, 2002 में)। वास्तव में, विभिन्न विषय क्षेत्र (शिक्षाविद्, शिक्षक, शोधकर्त्ता), संपादकों, शैक्षिक प्रोद्योगिकीविदों, मीडिया विशेषज्ञों, सजीव कलाकरों, उत्पादन-स्टाफ वर्ग, विशेषज्ञों के विभिन्न प्रकार, के स्तर के साथ समाविष्ट हैं। टाईट के अनुसार (1985) पाठ्यक्रम वर्ग का अर्थ है 'एक समूह जिसमें प्रत्येक व्यक्ति की अपनी भूमिका व उत्तरदायित्व होते हैं जैसे- केन्द्रिय शैक्षिक कर्मचारी, पाठ्यक्रम समन्वयक/प्रबन्धक, शिक्षक प्रौद्योगिक, संपादक, अधिकारीगण, शिक्षा (BBC) उत्पादक, संपर्क पुस्तकालयाध्यक्ष, उत्पादन कर्मचारी, अनुसंधान सहायक, प्रयोगशाला तकनीकज्ञ-समय तथा लागत की निश्चित सीमा के साथ दिए गए विषय पर पाठ्यक्रम उत्पादन के साझा लक्ष्य तथा अर्द्ध-लोकतांत्रिक चर्चा तथा सहमती की साझा लक्ष्य के साथ अब IGNOU सहित कई मुक्त विश्वविद्यालय, इस पद्धति का पालन करते हैं।

4.7.2 दूरवर्ती अधिगमकर्त्ताओं को बुह.सहायक प्रक्रिया द्वारा सेवाएँ प्रदान करना (Athabsca)

मूल रूप से 1970 में एक पारंपरिक परिसर आधारित संस्थान के रूप में स्थापित किया 'Athabosca विश्वविद्यालय' ने एक मुक्त, दूरस्थ विश्वविद्यालय की अवधारणा का परीक्षण करने के लिए एक पायलट प्रोजेक्ट के माध्यम से 1972 में पाठ्यक्रम बदल दिया। AU (Athabasca University) पूरे कनाडा में, अलबर्टा में और दुनियाभर के विद्यार्थियों को सेवा प्रदान करता है। AU के शैक्षणिक, पेशेवर और सहायक कर्मचारी, स्थानीय, प्रांतीय, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर शिक्षा प्रणाली के भीतर पेशेवर सेवा में संलग्न हैं। विश्वविद्यालय अपने सदस्यों को अपनी विस्तृत समुदाय की सेवा करने हेतु प्रोत्साहित करता है जैसे- स्वयंसेवावाद, समुदाय आधारित अनुसंधान, स्थानीय सामुदायिक संगठनों तथा आभासी अधिगम समुदाय में भागीदारी आदि। 1980 के दशक में इस विश्वविद्यालय ने विद्यार्थियों को प्रथम शैक्षिक अनुभव सहायता सेवाओं को प्राप्त करने व अन्वेषित परीक्षायें लिखने के लिए सैटेलाइट परिसर स्थापित किये।

1973 में AU ने अपना पहला कोर्स -वर्ल्ड इकोलॉजी' (विश्व पारिस्थितिकी) की शुरुआत की। AU का पहला दीक्षांत समारोह 1977 में दो स्नातकों के लिए आयोजित किया गया। 2013-2.14 के दौरान AU ने एक व्यापक श्रेणी की डिग्री में 879 पाठ्यक्रम (647 पूर्व स्नतक व 232 स्नातक), डिप्लोमा व सर्टिफिकेट प्रोगाम प्रदान किये। AU ने 1720 शैक्षणिक प्रमाण पत्र, स्नातक स्तर पर 836 और पूर्व-स्नातक स्तर 884 उपाधियों से सम्मानित किया (http://etext.athabascau.ca)।

'ई-टेक्सट इनीशीयेटिव' का उद्देश्य AU को ऑनलाइन अध्ययन के माहौल में सुधार लाने और सभी पाठ्यक्रम सामग्री के लिए एकल अधिगम प्रदान करने हेतु सहायता करना है। जहाँ ई-टेक्सट को अपनाया जाता है, वहाँ AU पाठ्य पुस्तक प्रदान नहीं करता (आवास के अतिरिक्त)। प्रकाशक वेबसाईट के लिए एक लिंक 'MOODLE' पाठ्यक्रम में डाला गया है जिससे विद्यार्थियों को पुस्तक मँगाना सरल हो जाता है (अकसर छूट पर मिलती है)। वैकल्पिक रूप से, सभी ई-टेक्सट विद्यार्थियों द्वारा पूरी तरह से छापने योग्य है (http://etext.athabascau.ca/logins)।

AU अपने विद्यार्थियों को एकल प्रवेश सुविधा प्रदान करता है- AU के तीन तंत्र अर्थात MOODLE कोर्स (MOODLE LMS पेज (1)), लौन्डिंग सोशल नेटवर्किंग साईट ओर माहरा एकल प्रवेश। एक बार छात्र व्यवस्था में प्रवेश करता है तो वह फिर से उपयोग करने वाले का नाम और पासवर्ड को टाइप किये बिना सरलता से प्रवेश कर सकता है। उसका

उपयोग 'My AU' पोर्टल में लॉग इन करने के लिए भी किया जा सकता है। यह एक वेब पोर्टल प्रणाली है जो AU विद्यार्थियों की व्यक्गित वेब सेवाओं और सूचनाओं के साथ प्रदान करता है ई-लैब में 'महारा' पोर्टफोलियो शैक्षणिक उपलब्धियाँ, व्यावसायिक विकास, विश्वविद्यालय के काम के लिए तत्परता, पाठ्यक्रम के विकास और संशोधन के लिए विचार और शोध की प्रगति के प्रतिबिंबित और रिकार्ड करने के लिए एक सुरक्षित, सुगम और विश्वसनीय साधन प्रदान करती है (htt;://ede.athabsca.co/logins/)।

4.7.3 नवाचारी पाठ्यक्रम (AIOU, YCMOU)

पारंपरिक कार्यक्रमों के अतिरिक्त, मई 1974 में स्थापित 'अल्लामा इकबाल मुक्त विश्वविद्यालय' (AIOU) ने कई गैर-परंपरागत और नवीन कार्यक्रम व पाठ्यक्रम प्रदान किये। कुछ उदाहरण निम्न हैं (http://cemca.org.in/new allama_iqbal_open_university_ developed_flexible_curricula_ skill_training#WA30gNR95kh):

- निरक्षर व अर्द्ध-साक्षरता के लिए बुनियादी कार्य पाठ्यक्रम;
- ट्रेक्टर, ऑटो, बिजली के तारों और घर पर सब्जी खेती आदि के रख-रखाव जैसे क्षेत्रों में तकनीकी व व्यावसायिक पाठ्यक्रम;
- राष्ट्रमण्डल युवा कार्यक्रम, राष्ट्रमण्डल सचिवालय के सहयोग से 'युवा व विकास' में CYP.डिप्लोमा को सेमेस्टर में प्रदान करना; और
- एम.एड (M.Ed), विज्ञान शिक्षा, एम.एड (स्पेशल एजुकेशन), एम.ए. (दूरस्थ व अनौपचारिक शिक्षा), एम.ए (शैक्षिक योजना व प्रबंधन) तथा शिक्षा शास्त्र में उपाधि।

1989 में स्थापित **यशवंतराव चव्हाण, महाराष्ट्र मुक्त महाविद्यालय (YMCOU)**, वंचित समूहों सहित जनसंख्या के बड़े वर्गों के बीच उच्च, व्यावसायिक, तकनीकी और भूमिका-आधारित शिक्षा उपलब्ध कराने का प्रयास कर रही है। यह निरन्तर प्रौढ़ और विस्तारित शिक्षा कार्यक्रम को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा का नवीन, लचीली और मुक्त व्यवस्था प्रदान करने का प्रयास कर रहा है। तेजी से विकासशील और बदलते समाज में ज्ञान के अधि ाग्रहण को बढ़ावा देने के लिए और मानव प्रयासों के सभी क्षेत्रों में नवाचारों, शोध और खोज के संदर्भ में ज्ञान, प्रशिक्षण तथा कौशल को उन्नत करने का लगातार अवसर प्रदान करने के लिए उपयुक्त कार्यक्रम प्रस्तुत करने का प्रयास किया। इसमें कुछ महत्त्वपूर्ण, नवाचारी कार्यक्रम शामिल हैः बी.एस.सी (B.Sc), मीडिया ग्राफिक्स तथा एनिमेशन, भूमिका आधारित डिग्री प्रोग्राम जैसे बी.बी.ए. (BBA). व्यापार प्रक्रिया प्रबंधन में, बी.एस.सी/एम.एस.सी (खाद्य संरक्षण), बी.एस.सी/एम.एस.सी (होटल प्रबन्धन व केटरिंग कार्य)।

4.7.4 माँग आधारित प्रकाशन एवं परीक्षा में तकनीक (Terbuka University)

टरबूका विश्वविद्यालय, इंडोनेशिया में 1984 में स्थापित एक मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थान है। इसके संस्थापन से टरबूका विश्वविद्यालय ने 1.4 मिलियन विद्यार्थियों का प्रवेश लिया है तथा 900,000 से अधिक पूर्व छात्र का उत्पादन किया जो विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों में कार्य कर रहे हैं। TU अपने शिक्षण प्रणाली में उचित प्रौद्योगिकी के एकीकरण से इंडोनेशिया के द्वीप समूह तथा विदेश में गुणवत्ता शिक्षा प्रदान करने में सक्षम है (http:// www.winne.com/country/sea/indonesia/2009/cr/ep/universitas_terbuka/)।

इंटरनेट आधारित शिक्षण के उपयोग में UT की नवीनता इंडोनेशिया के उच्च शिक्षा क्षेत्र में एक अग्रणी पहल के रूप में देखी जा सकती है, हालाँकि एक पर्याप्त छात्र खण्ड के पास अभी भी इंटरनेट की पहुँच नहीं हैं जबकि इंटरनेट के उपयोग में TU के अनुभव के मामले

को स्पष्ट रूप से समझाया जा सकता है, जहाँ एक दूरी पर शिक्षण के लिए इंटरनेट का प्रयोग लगातार बढ़ाया गया हैं। TU, विद्यार्थियों द्वारा ऑनलाइन सीखने की सेवाओं का उपयोग करने की बढ़ती प्रवृत्ति का भी प्रदर्शन करता है।

आधारिक संरचना विकास का उद्देश्य, विद्यार्थी शैक्षिक सेवा की पहुँच को बढ़ाने में सक्रिय सहायता देना है, जिसमें पंजीकरण, भुगतान और शिक्षण के लिए ऑनलाइन तंत्र शामिल हैं। सीखने की सामग्री, खरीदने की इच्छा रखने वाले छात्र, विभिन्न उपलब्ध अधिगम MMS, इंटरनेट, कॉल सेन्टर या क्षेत्रीय कार्यलय (Regional Office-RO) द्वारा प्रदान किये गये आवेदन के माध्यम से उपयोग कर सकते हैं।

पुस्तक प्रकाशन, डिजिटल तकनीक साथ, प्रिंट-ऑन-डिमांड को प्रत्येक निश्चित लागत के लिए मुद्रण वस्तुओं का एक तरीके के रूप में उपयोग किया जाता है, क्रम के आकार के बावजूद/POD के पास कम लागत के अलावा अन्य व्यावसायिक लाभ हैं। ऑफसेट प्रिंटिंग की तुलना में तकनीकी रूपरेखा आमतौर पर शीघ्र होता है।

विद्यार्थियों को अधिक लचीली और सुरक्षित परीक्षा की प्रक्रिया प्रदान करने के लिए TU ने एक इंटरनेट आधारित परीक्षा प्रणाली विकसित की है जिसे 'ऑनलाइन परीक्षा' कहा जाता है। ऑनलाइन परीक्षा के लिए पद का एक निश्चित उप-समूह अलग-अलग सर्वर पर अपलोड़ किया जाता है जो पद-बैंक के दर्पण के रूप में कार्य करता है। पदों की पुनः प्राप्ति और परीक्षणों का निर्माण सीधे -सर्वर के माध्यम से किया जाता है जिसे सीधे 'RO' द्वारा पहुँचा जा सकता है। परीक्षा की वस्तुओं को सीधे सर्वर से निकाला जायेगा और छात्र 'RO' में ऑनलाइन परीक्षा दे सकता है या किसी 'RO' के पर्यवेक्षण के तहत किसी चयनित जगह में जा सकते हैं। ऑनलाइन सेवा की उपलब्धता को तय करने के लिए और मुख्य सर्वर के लिए बोझ कम करने के लिए, TU ने तीन 'RO' में तीन सर्वर लगा रखे हैं (http://www.winne.com/country/sea/indonesia/2009/cr/cp/universitas_terbuka/)।

4.7.5 द्विपद्धतीय शिक्षण (डिकीन युनिवर्सिटी व USQ)

मूल विश्वविद्यालय जो 1975 में स्थापित था उसकी विरासत को डीकीन विश्वविद्यालय के शिक्षण व सहायक सेवाओं ने बढ़ाया है। एक 'मुक्त परिसर' का दृष्टिबोध किया गया था जहाँ छात्र परिसर अथवा उसके बाहर भी उसी प्रकार की गुणवत्ता शिक्षा प्राप्त कर सकें तथा स्टाफ व अपने समकक्ष से अन्तःक्रिया करने का अवसर मिले (जीवॉन्स, 1982)। इस प्रकार परिसर के छात्र न केवल कक्षाओं में सम्मिलित होंगे अपितु सामान्यतः दूरस्थ शिक्षा को प्रदान करने वाली सामग्री भी प्राप्त करेंगे। परिसर के बाहर रहने वाले विद्यार्थियों को इन पारंपरिक दूरस्थ शिक्षण के संसाधन प्राप्त होंगे और आवासीय स्कूलों, शिक्षक या बाद में श्रव्य टेली-कॉन्फ्रेन्स तक पहुँचा देंगे। मुक्त परिसर मॉडल, अध्ययन के सभी कार्यक्रमों में लागू नहीं किया गया था। परिसर के विद्यार्थियों के लिए अधिक परंपरागत कक्षाओं पर बल था। परिसर के बाहर के विद्यार्थियों के लिए सीखने के संसाधनों पर ज्यादा निर्भरता नहीं थी। महत्त्वपूर्ण रूप से, यह शैक्षणिक सहायता व प्रशासन के संगठन में बढ़ा दिया गया था। प्रत्येक भाग में समतुल्य (अगर समान नहीं) उत्तरदायित्व दिया गया जिससे प्रत्येक छात्र को सेवाएँ प्रदान की जा सके चाहे उनका अध्ययन का माध्यम कुछ भी हो (जोसीलिन केल्वर्ट, 2001)।

डीकीन हमेशा से एक ही प्रशासनिक और सहायक बुनियादी संरचना के माध्यम से परिसर व उसके बाहर के विद्यार्थियों को सेवा प्रदान करता हैः ऑफ-कैम्पस सेवाओं की व्यापक श्रेणी के लिए जिम्मेदार एक अलग इकाई कभी नहीं रही है। संगठन के इस रूप में एक

निश्चित लाभ रहा है क्योंकि ऑनलाइन प्रौद्योगिकी के उपयोग से सर्वव्यापी हो जाते हैं। विश्वविद्यालय की बहु-परिसर स्वरूप एक और महत्त्वपूर्ण संरचनात्मक विशेषता है। विभिन्न परिसर और ऑफ-कैम्पस में एक ही पाठ्यक्रम को पढाने की आवश्यकता है। जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके कि सभी विषयों के समान रूप से सम्मिलित किया जा सके तथा मानक को भी माना जाये। इस चरण ने विश्वविद्यालय में सीखने के संसाधनों का उपयोग और ऑन लाइन संचार को तेजी से अपनाने को प्रोत्साहित किया है (जोसीलीन, 2001)।

1967 में आस्ट्रेलिया के संघीय सरकार द्वारा स्थापित,यहपरिसर में डार्लिंग डाउनस के इलाके (दक्षिणी क्वींसलैण्ड के लोगों को यूनिवर्सिटी ऑफ सदर्न क्वींसलैण्ड (USQ) से उच्च शिक्षा दी जा सके। यह 1977 में 'द्विपद्धतीय' संस्थान बन गया।

USQ ने कक्षा आधारित शिक्षण जारी रखते हुए दूरस्थ शिक्षा प्रदान की है और इसी कारणवस उसको 'द्विपद्धतीय' का नाम दिया जाता है। USQ, 36 में से उन 30 विश्वविद्यालयों में से एक है जो द्विपद्धतीय शिक्षण प्रदान करता है (टेलर व स्वेनेल्ल, 1997; http://www.usq.edu.au/ucicde.htm; उल्लेख किया पर http://ausweb.scv.edu.au/aw99/papers/mcdonald/paper.htm). USQ, एक दोहरे माध्यम संस्था है जिसमें 'तीन विकल्प' शिक्षण माध्यम (ऑन-कैम्पस, दूरस्थ शिक्षा व ऑन-लाइन) है। यह अभी आस्ट्रेलिया में दूसरी सबसे बड़ी दूरस्थ शिक्षा प्रदाता है जिसमें करीब 90 देशों का प्रतिनिधित्व किया जा सकता है (सेन्की, 2006; http://www.usq.edu.au/)।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

9) डीकीन विश्वविद्यालय किस प्रकार परिसर व उसके बाहर के विद्यार्थियों को एक समान शैक्षिक, प्रशासनिक और अन्य सहायता सेवाएँ प्रदान करता है? व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

4.7.6 विज्ञान एवं प्रौद्यौगिकी शिक्षण (IGNOU व OUSL)

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (IGNOU), 1985 में स्थापित हुआ। इसने चार विज्ञान विषयों-भौतिक, रसायन, गणित, जीव विज्ञान में अच्छी गुणवत्ता, सैद्धान्तिक व व्यावहारिक शिक्षा प्रदान करने की चुनौती ली। 1991 में इग्नू ने विज्ञान और प्रयोगशाला पाठ्यक्रम को दूरस्थ व मुक्त माध्यम से देश का पहला विज्ञान स्नातक का प्रयोग शुरू किया। कार्यक्रम को शुरू में B.Sc (सामान्य डिग्री) के तौर पर स्वरूपित किया गया परन्तु बाद में इसे उन्नत किया गया।यहइसीलिए किया गया क्योंकि B.Sc. (मेजर)-वनस्पति, रसायन, गणित, भौतिकी और जन्तु में डिग्री प्रदान की जा सके। कम्प्यूटर विज्ञान में

आवेदन के साथ गणित में परास्नातक कार्यक्रम (M.Sc-M.A.(CS)) 2008 में शुरू किया गया। इग्नू इसी तरह से विश्लेषणात्मक रसायन विज्ञान में पी.जी. डिप्लोमा (पी.जी.डी.ए.सी), मत्स्य-पालन में डिप्लोमा (DAQ), प्रयोगशाला तकनीक में सर्टिफिकेट कार्यक्रम (CPLT) के रूप में व्यावसायिक व कौशल विकास के लिए कई बेहतरीन कार्यक्रम प्रदान करता है। (http://www.ignou.ac.in/ignou/aboutignou/school/sos/introduction)

दुग्ध तकनीक में डिप्लोमा, मत्स्य उत्पाद प्रौद्यौगिकी डिप्लोमा, मांस प्रौद्यौगिकी डिप्लोमा, फलों-सब्जियों के उत्पादन का डिप्लोमा, अनाज, दाल, तिलहन के उत्पादन का डिप्लोमा, स्नातक व स्नातकोतर (कम्प्यूटर एप्लीकेशन में), पुस्तकालय विज्ञान में स्नातक, बी.एस.सी. नर्सिंग (उपचार), स्नातकोत्तर डिप्लोमा (खाद्य, सुरक्षा एवं गुणवत्ता प्रबंधन), वृद्धावस्था चिकित्सा में स्नातकोत्तर डिप्लोमा, HIV चिकित्सा में पी.जी. डिप्लोमा, स्वास्थ्य प्रबंधन में पी.जी. डिप्लोमा, ऊर्जा प्रौद्यौगिकी में सर्टिफिकेट, कोर्स, सूचना प्रौद्यौगिकी में प्रमाण पत्र, नवजात शिशु उपचार में सर्टिफिकेट तथा कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम हैं। (http://www.ignou.ac.in/ignou/aboutignou/school/)।

श्रीलंका मुक्त विश्वविद्यालय

1980 में स्थापित यह बेहतरीन विश्वविद्यालयों में से एक है। यह डिग्री, डिप्लोमा, सर्टिफिकेट कार्यक्रम प्रदान करता है। इसमें पाँच संकाय हैं:- प्राकृतिक विज्ञान, अभियांत्रिक, प्रौद्यौगिकी, मानवीकी और सामाजिक विज्ञान, शिक्षा शास्त्र, स्वास्थ्य विज्ञान। यह विश्वविद्यालय क्षेत्रीय और अध्ययन केन्द्रों के एक नेटवर्क के माध्यम से छात्र जनसंख्या की सेवाएँ प्रदान करता है (http://www.ou.ac.lk/home/images/Programmes/FurtherInformation/BSc%20programme/%20guide%202015pdf)।

आजीवन अधिगम के अवसर प्रदान करने के लिए तथा उत्कृष्टता पाने हेतु, अभियांत्रिकी तथा तकनीकी के क्षेत्र में प्रौद्यौगिकी व सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम की सहायता ली जाती है। इसकी सहायता हेतु उचित संसाधनों जैसे अनुसंधान में सहायता छात्रवृत्ति दी जाती है। अभियांत्रिकी तकनीक संकाय विभिन्न कोर्स प्रदान करता है जैसे- सर्टिफिकेट, उच्च डिप्लोमा, स्नातक (आनर्स) तथा स्नातकोत्तर डिप्लोमा आदि। इसके अतिरिक्त कई विशिष्ट अभियांत्रिकी व औद्योगिकी डिग्री भी प्रदान की जाती है। कई अनुसंधान कार्यक्रम जो M.Phil तथा Ph.D डिग्री प्रदान करते हैं, भी चलाये जाते हैं (http://www.ou.ac.lk/home/index.php/ousl/faculties_institutes/engineering_technology)।

OUSL नर्सिंग, मेडिकल लैबोरेटरी विज्ञान तथा फार्मेसी डिग्री भी प्रदान करता है। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य है ऐसे विशेषज्ञों को तैयार करना जो शैक्षिक व चिकित्सकीय क्षेत्र में सफलता से कार्य करें। अभियांत्रिकी व विज्ञान के विभिन्न बुनियादी कोर्स भी प्रदान करता है। आज पर्यावरण की चिंता के चलते M.Sc (पर्यावरणीय विज्ञान) भी कराया जाता है। इसके अन्तर्गत चार संकाय हैं- प्राकृतिक विज्ञान, अभियांत्रिकी तकनीकी, मानविकी व सामाजिक विज्ञान तथा शिक्षा शास्त्र।यहकार्यक्रम बहु-विषयी प्रकृति दर्शाता है।

4.8 सारांश

इस इकाई के अन्तर्गत हमने राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं की महत्वपूर्ण भूमिका की चर्चा की तथा उनकी मुक्त व दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्रीय, दृष्टिकोण व विश्वव्यापी अभ्यासों को जाना। हमने मेगा-मुक्त विश्वविद्यालय के संप्रत्यय को समझा तथा चयनित मुक्त विश्वविद्यालयों

के महत्त्वपूर्ण कार्यक्रमों व अभ्यासों को जाना। इस इकाई ने बढ़ते हुए मुक्त व दूरस्थ शैक्षिक संस्थानों/विश्वविद्यालयों की राष्ट्रीय, क्षेत्रीय, तथा अन्तराष्ट्रीय स्तर पर विस्तृत चित्रण किया। दृढ़ अन्तर्राष्ट्रीय फोरम (मंच) जैसे अंतर्राष्ट्रीय दूरस्थ शिक्षा परिषद, COL आदि जैसे बढ़ते हुए संस्थानों को भी जाना। विश्व में विस्तृत विकास को देखते हुए हमें नए अभ्यासों को समझने में सरलता तो हुई साथ ही इसके भविष्य से संबंधित निष्कर्ष तक पहुँचने में भी आसानी हुई।

4.9 "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर

1) i) अ) मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की अन्तर्राष्ट्रीय परिषद-अंतर्राष्ट्रीय दूरस्थ शिक्षा परिषद (International Council for Open and Distance Education)

ब) द कॉमनवेल्थ ऑफ लर्निंग (COL)

ii) कुछ महत्त्वपूर्ण मुक्त व दूरस्थ शैक्षिक अधिगम संघ –

- अफ्रीकी दूरस्थ शिक्षा परिषद (ACDE)
- एशियन मुक्त विश्वविद्यालय संघ (AAOU)
- आस्ट्रेलियन मुक्त, दूरस्थ तथा ई-अधिगम परिषद (ACODE)
- यूरोपियन दूरस्थ अधिगम विश्वविद्यालय संघ (EADTU)
- यूरोपियन दूरस्थ ई-लर्निंग नेटवर्क (EDEN)
- आस्ट्रेलियाई मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम संघ (ODLAA)

2) अफ्रीका में दूरस्थ शैक्षिक कोर्स के आयोजन के उद्देश्य हैं :

- लोगों के सामान्य शैक्षिक स्तर को बेहतर करना
- सेवारत व भावी शिक्षकों को सही प्रशिक्षण देना
- शरणार्थियों की शैक्षिक आवश्यकताओं को पूर्ण करना

3) ब्रिटिश कॉलम्बिया का दूरस्थ शिक्षा तंत्र, विद्यार्थियों को किसी उपाधि को प्राप्त करने हेतु किसी विशेष कोर्स समूह को ही चुनने का बंधन नहीं डालते। विद्यार्थियों पर ही विकल्प चुनने की जिम्मेदारी डाल दी जाती है। लेकिन विद्यार्थियों को उन्हीं कोर्स से चुनना होता है जो संघ की तीन यूनिवर्सिटी व मुक्त अधिगम संस्थान द्वारा प्रदान किये जा रहे हैं।

4) वेनेज्यूएला के दूरस्थ शैक्षिक तंत्र में विद्यार्थियों को प्रारंभिक कोर्स करना आवश्यक है इससे पहले वो औपचारिक शैक्षिक कोर्स में प्रवेश लें। इस तरह के प्रतिबंध कई मुक्त विश्वविद्यालयों में नहीं होते है। उदाहरण के तौर पर जो कोस्टा रिका के मुक्त अध्ययन तंत्र से पढ़ते हैं उन्हें डिप्लोमा या डिग्री पाने के लिए पंजीकरण की आवश्यकता नहीं है।

5) कई एशियाई देशों के विपरीत चीन में दूरस्थ शिक्षा, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से दी जाती है। सूक्ष्मता से देखा जाये तो शिक्षा के लिए ज्यादातर रेडियो व टेलीविजन का प्रयोग होता है तथा सहयोग के लिए मुद्रित सामग्री तथा आमने-सामने सत्र के कार्यक्रम की भी व्यवस्था होती है। अन्य देशों में मुद्रित माध्यम को ही प्राथमिक तौर बल दिया जाता है तथा इलेक्ट्रानिक माध्यम की सहायक के रूप में प्रयोग करते हैं।

6) फिलीपिन्स में पाठ्यक्रम सामग्री को उपभोगता शुरूआत करता है तथा विशेषज्ञ फिर उसका संपादन करते हैं। अतः पाठ्यक्रम का विकास सामाजिक आवश्यकता व अनुप्रयोग के आधार पर किया जाता है। जैसे : पोषण, कुटीर उद्योग, पर्यावरणीय नियोजन, कुकुट (मुर्गी) पालन तथा पशु-पालन, साग-सब्जी उत्पादन, फल-उत्पादन आदि।

7) मुक्त विश्वविद्यालय का लक्ष्य है लोगों, स्थानों, विधियों व विचारों में मुक्तता तथा :

- शैक्षिक अवसरों को बढ़ावा तथा उच्च गुणवत्ता विश्वविद्यालयी शिक्षा द्वारा सामाजिक न्याय को प्रोत्साहित करना जिससे लोगों की महत्त्वकांक्षाओं व क्षमता की पूर्ति हो सके।
- सहयोगपूर्ण मुक्त अधिगम को प्रारूप, विषयवस्तु व प्रदात्ता में विश्व भर में अग्रणी बनाना। इसके लिए शैक्षिक अनुसंधान, नवीन शिक्षण शास्त्र व सहयोगपूर्ण साझेदारी आवश्यक है।
- UKOU ने विश्व भर में प्रभाव बनाया है उसका कारण है प्रभावशाली पाठ्यक्रम सामग्री जो प्रत्येक व्यक्ति चाहे किसी भी उम्र, लिंग, निवासी व औपचारिक शिक्षा के लिए उपयोगी। पूरे विश्व में मुक्त व दूरस्थ शिक्षा का प्रयास कर यह अपने आप को संस्थापित कर सकती है।
- मेगा-विश्वविद्यालय की परिभाषा में तीन मापदण्ड सम्मिलित करता हैः
- दूरस्थ शिक्षण, उच्च शिक्षा व आकार। डेनियल (1996) की परिभाषा हैः- 'मेगा-विश्वविद्यालय वह है जहाँ 100,000 सक्रिय छात्र डिग्री स्तर पर इस दूरस्थ-शिक्षण संस्थान से शिक्षा प्राप्त करते हैं।'

9) डीकिन विश्वविद्यालय का समिश्रित संरचनात्मक शिक्षण व सहायक सेवाएँ ही उसकी विरासत है। एक 'मुक्त परिसर' का स्वप्न जहाँ सब छात्र चाहे परिसर में या बाहर, एक उच्च गुणवत्ता पूर्ण अधिगम संसाधन प्रयोग कर सकें तथा वहाँ के स्टाफ व समकक्ष से बातचीत करने का अवसर प्राप्त कर सकें। अतः परिसर के विद्यार्थियों को न केवल शिक्षण ही मिलेगा अपितु दूरस्थ अधिगमकर्त्ता को मिलने वाली शिक्षण सामग्री भी मिलेगी। परिसर के बाहर के विद्यार्थियों कोयहपारंपरिक दूरस्थ अधिगम संसाधन प्राप्त करेंगे तथा प्रवासी विद्यालय, शिक्षक तथा बाद में टेली-कान्फ्रेन्सिंग भी प्रयोग कर सकेंगे या मिलेंगे।

डीकिन विश्वविद्यालय ने परिसर ने भीतर तथा बाहर के विद्यार्थियों को समान प्रशासन, शिक्षक व अधिगम तथा सहायक आधारिक संरचना की सेवाएँ प्रदान करता हैं विश्वविद्यालय का बहु-परिसरीय स्वरूप को जरूरी है कि वह अलग कैम्पस में वहीं पाठ्यक्रम पढ़ाये तथा परिसर के बाहर भी। यह भी सुनिश्चित करना आवश्यक है कि सारे परिसरों का समान स्तर हो जहाँ पहले विविध संस्थानों ने समान अधिगम संसाधनों पर बल दिया था। विश्वविद्यालयों में प्रशासन के कार्यों के लिए ऑन लाइन तकनीक को तेजी से अपनाया जा रहा है तथा साथ ही शिक्षण व अधिगम में भी इसका प्रयोग बढ़ा है।

4.10 सन्दर्भ ग्रंथ

Castro Neto et al., 2009, p.72, at http://www.davidpublisher.org/Public/uploads/Contribute/ 5658177481e2f.pdf — Retrieved on 14-10-2016.

Cevat Geray, available at http://www.todaie.edu.tr/resimler/ekler/a4aa99822b6b77e_ek.pdf?dergi=Turkish%20Public%20Administration%20Annual —Retrieved on 01-12-2016.

Daniel, John S. (1996). *Mega-Universities and Knowledge Media: Technology Strategies for Higher Education.* London: Routledge, p.30.

EACEA, 2011; Available at https://estudandoeducacao.files.wordpress.com/2011/05/franc3a7a.pdf — Retrieved on 22-10-2016.

Freitas, 2005, Available at http://www.davidpublisher.org/Public/uploads/Contribute/5658177481e2f.pdf — Retrieved on 14-10-2016.

http://afoui.org/about-the-open-university-of-israel/open-university-of-israel/ — Retrieved on 3-12-2016.

http://cde.athabascau.ca/logins/ — Retrieved on 23-10-2016.

http://cemca.org.in/news/allama-iqbal-open-university-developed-flexible-curricula-skill-training#.WA30gNR95kh – Retrieved on 24-10-2016.

http://citeseerx.ist.psu.edu/viewdoc/download?doi=10.1.1.582.596&rep=rep1&type=pdf — Retrieved on 11-10-2016.

http://education.okfn.org/open-education-philippines/ — Retrieved on 10-12-2016.

http://en.ouchn.edu.cn/index.php/about-v2/new-style-university — Retrieved on 10-10-2016.

http://en.ouchn.edu.cn/index.php/the-open-university-for-older-adults — Retrieved on 10-10-2016.

http://etext.athabascau.ca/ — Retrieved on 23-10-2016.

http://files.eric.ed.gov/fulltext/ED496534.pdf — Retrieved on 11-10-2016.

http://frenchlanguage.francecanadaculture.org/en/news/french-national-centre-distance-education-international-distance-education -— Retrieved on 22-10-2016.

http://library.oum.edu.my/repository/204/1/Open_distance_education_in_Malaysia.pdf — Retrieved on 12-10-2016.

http://odlaa.org/about/who-we-are/ — Retrieved on 6-10-2016.

http://pnu.ac.ir/portal/Home/Default.aspx?CategoryID=07bf5d3d-9bde-4f9a-ae79-61e5704dc4d9 – Retrieved on 02-12-2016.

http://portal.uned.es/portal/page?_pageid=93,24305391&_dad=portal&_schema=PORTAL — Retrieved on 22-10-2016.

http://us-education.net/2292-united-states-armed-forces-institute.html — Retrieved on 14-10-2016.

http://www.acdeafrica.org/about — Retrieved on 06-11-2016.

http://www.acode.edu.au/ — Retrieved on 06-11-2016.

http://www.aect.org/pdf/DistED/CH_2.pdf — Retrieved on 22-10-2016.

http://www.aiou.edu.pk/overview.asp — Retrieved on 12-10-2016.

http://www.athabascau.ca/aboutau/documents/cip/2015-18.pdf — Retrieved on 23-10-2016.

http://www.bou.edu.bd/— Retrieved on 10-10-2016.

http://www.davidpublisher.org/Public/uploads/ Contribute/5658177481e2f.pdf — Retrieved on 14-10-2016.

http://www.distancelearningportal.com/partners/eadtu/ — Retrieved on 15-11-2016.

http://www.distancelearningportal.com/universities/10512/open-university-of-hong-kong.html - Retrieved on 19-11-2016.

http://www.eden-online.org/about-us/ — Retrieved on 06-10-2016.

http://www.lmi.ub.es/teeode/thebook/files/english/html/6spain.htm — Retrieved on 22-10-2016.

http://www.lunduniversity.lu.se/international-admissions/distance-learning Retrieved on 22-10-2016.

http://www.hadley.edu/AboutHadley.asp — Retrieved on 14-10-2016.

http://www.icde.org/icde-members — Retrieved on 06-10-2016.

http://www.ignou.ac.in/ignou/aboutignou/school/ — Retrieved on 31-10-2016.

http://www.ignou.ac.in/ignou/aboutignou/school/sos/introduction — Retrieved on 31-10-2016.

http://www.knou.ac.kr/engknou2/ — Retrieved on 25-11-2016.

http://www.london.ac.uk/distance_learning.html – Retrieved on 24-11-2016.

http://www.ou.ac.lk/home/index.php/ousl/faculties-institutes/engineering-technology – Retrieved on 31-10-2016.

http://www.ou.ac.lk/home/images/Programmes/FurtherInformation/Bsc%20programme %20guide%202015.pdf – Retrieved on 31-10-2016.

http://www.ouj.ac.jp/eng/pdf/OUJ_Brochure.pdf — on 12-10-2016.

http://www.online-education.net/online-accreditation.html — Retrieved on 06-10-2016.

http://www.open.ac.uk/about/main/mission — Retrieved on 17-10-2016.

http://www.openeducationeuropa.eu/en/institution/european-distance-and-e-learning-network — Retrieved on -06-10-2016.

http://www.ouhk.edu.hk/~AAOUNet/main.html — Retrieved on 24-04-2017.

http://www.thecanadianencyclopedia.ca/en/article/distance-learning/ — Retrieved on 13-10-2016.

http://www.ugc.ac.in/deb/ — Retrieved on 29-11-2016.

http://www.virtualschoolsandcolleges.eu/index.php/Open_University_of_China — Retrieved on 10-10-2016.

http://www.unisa.ac.za/sites/corporate/default/About — Retrieved on 02-12-2016.

http://www.winne.com/country/sea/indonesia/2009/cr/cp/universitas_terbuka/ — Retrieved on 26-10-2016.

http://www.worldlibrary.org/articles/national_home_study_council — Retrieved on 06-10-2016.

http://www1.american.edu/TED/costaricadl.htm — Retrieved on 13-10-2016.

https://en.wikipedia.org/wiki/Distance_education#University_correspondence_courses – Retrieved on 24-11-2016.

https://en.wikipedia.org/wiki/Education_in_Iran — Retrieved on 03-12-2016.

https://en.wikipedia.org/wiki/Korea_National_Open_University — Retrieved on 12-10-2016.

https://en.wikipedia.org/wiki/Open_University_of_Sri_Lanka — Retrieved on 12-10-2016.

https://odlaa.org/about/life-members/ — Retrieved on 24-04-2017.

https://vulcanpost.com/9791/future-distance-learning-indonesia/ — Retrieved on 11-10-2016.

https://www.anadolu.edu.tr/en/about-anadolu/institutional/anadolu-at-a-glance — Retrieved on 24-11-2016.

https://www.learn4good.com/colleges/online-courses-universities-indonesia.htm — Retrieved on 11-10-2016.

https://www.learn4good.com/colleges/online-courses-universities-thailand.htm — Retrieved on 13-10-2016.

https://www.usdla.org/about/history/ — Retrieved on 13-10-2016.

Jevons, F. R. (1982). How different is the distance student? In J. S. Daniel, M. A. Stroud, M. A. and J. R. Thompson (Eds.). *Learning at a Distance: A world perspective* (pp.126-128). Edmonton, Canada: Athabasca University.

Jocelyn Calvert. (2001). Deakin University: Going online at a dual mode university. IRRODL. Vol.1, No.2 at http://www.irrodl.org/index.php/irrodl/article/view/20/360 — Retrieved on 26-10-2016.

Kumiko Aoki. (2012). "Generations of Distance Education and Challenges of Distance Education Institutions in Japanese Higher Education" in Paul Birevu Muyinda (Ed). *Distance Education*. ISBN 978-953-51-0756-9, at http://www.intechopen.com/books/distance-education/ generations-of-distance-education-and-challenges-of-distance-education-institutions-in-japanese-high — Retrieved on 12-10-2016.

Martin Weller. (2002). *Delivering Learning on the Net: The why, what & how of online education.* London: RoutledgeFalmer, p.99.

Perraton, Hilary. (2007). *Open and Distance Learning in the Developing World.* London: Routledge.

Richard Siaciwena, (ed.) (2000). *Case Studies of Non-formal Education by Distance and Open Learning.* Vancouver: The Commonwealth of Learning. (See http://www.edu.ru.ac.th/ coved/pdf/nfe/pub_Case_Studies_Non-Formal_Education.pdf — Retrieved on 8-10-2016).

Sankey. (2006). Available at http://www.usq.edu.au/.

Taylor & Swannell. (1997). In http://www.usq.edu.au/vc/icde.htm, cited in http://ausweb. scu.edu.au/aw99/papers/mcdonald/paper.htm — Retrieved on 31-10-2016.

Tight, Malcolm. (1985). Unit 4 Do We Really Need Course Teams. Teaching at a Distance, 26,

pp.48-50. Available at http://www.egyankosh.ac.in/bitstream/123456789/24909/1/Unit-4.pdf — Retrieved on July 24, 2010.

UNESCO (2012). See http://unesdoc.unesco.org/images/0021/002197/219711e.pdf — Retrieved on 15-10-2016.

सुझाव पाठन सूची

DETC (2011) *एक्रेडीटेशन हैण्डबुक,* वाशिंगटन, डी.सीः DETC एक्रेडीटींग कमिशन, 2 मई, 2011, http://www.dete.org/about.html

ओलाफ जवाकी-रीचटर एण्ड एन्ना कौरोटचकीना (2012) 'द डेवेलपमेन्ट ऑु डिस्टेन्स एजूकेशन इन द रसीयन फेडरेशन एण्ड द फार्मर सोवियत यूनियन' द *इंटरनेशनल रिव्यू ऑफ रिसर्च इन ओपन एण्ड डिस्ट्रव्यूहेड लर्निंग* (IRRODL) - http://www.irrodd.org/index.php/irrodl/article/view/1165/2216-16.10.2016

ओसीयनील्लरसन, ई., विलियम, के., केमिल्लेरी, ए. एण्ड ब्राउन (2015) क्वालिटी मॉडल इन ऑन लाईन एण्ड ओपन एजूकेशन अराउंड द ग्लोब स्टेट ऑफ द आर्ट एण्ड रिकमेन्डेशन्स, ऑस्लोः इंटर्नेशनल काउंसिल फॉर ओपन एण्ड डिस्टेन्स एजूकेशन - अंतर्राष्ट्रीय दूरस्थ शिक्षा परिषद

वाल्टर पैरी (1987) ओपन यूनिवर्सिटीः ए पर्सनल अकाउंट बाइ द फर्स्ट वाइस चैन्सलर, ओपन यूनिवर्सिटी, प्रेस मिलटन कीन्स

ओट्टो पीटरस (2001) *लर्निंग एण्ड टीचिंग इन डिस्टेन्स एजूकेशनः* पेडागोजीकल एनालिसेस एण्ड इंटरप्रेटेशन्स

लंदनः एटलेज फाल्यर

4.11 इकाई अन्त अभ्यास प्रश्न

1) मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की अन्तर्राष्ट्रीय संस्थानों की भूमिका पर प्रकाश डालिए (500 शब्द)

2) मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में अभ्यासों के किन्ही दो क्षेत्रीय दृष्टिकोणों की तुलना करें (1000 शब्द)

3) मेगा-विश्वविद्यालय की परिभाषा लिखें। दस मेगा-विश्वविद्यालय के नाम व उनके स्थापना के वर्ष के साथ लिखें।

4) मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में किन्हीं पाँच महत्त्वपूर्ण अभ्यासों की चर्चा करें। उन प्रथाओं को चयनित मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों के साथ पहचान कर लिखें (1000 शब्द)

समीक्षात्मक चिन्तन के लिए प्रश्न

1) खण्ड 4.7 पढ़ने के बाद क्या कोई ऐसी अभ्यास है जिसका जिक्र न हुआ हो? अगर है तो सूचीबद्ध करें तथा संस्थानों का नाम लिखें जहाँ ये हैं।

2) इस इकाई का कौन सा भाग मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में अग्रगामी है? अपने उत्तर को उचित सिद्ध करें।

क्रिया-कलाप

कोई पाँच महत्त्वपूर्ण अभ्यासों को पहचाने व लिखें जो भाग 4.7 में उल्लेख नहीं किये गये हों।

.....

.....

.....

.....

.....

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY